ख़ुतबात ज़ुलफ़क़ार फ़क़ीर

4

इफ़ादात

हज़रत मौलाना ज़ुलफ़क़ार अहमद साहब नक़्शबंदी

तर्तीब

प्रोफ़ेसर मुहम्मद असलम नक़्शबंदी

ख़ुत्बात

ज़ुलफ़क़ार फ़क़ीर

इफ़ादात

हज़रत मौलाना ज़ुलफ़क़ार अहमद साहब नक़्शबंदी

तर्तीब

प्रोफ़ेसर मुहम्मद हनीफ़ नक़्शबंदी मुजद्दी

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

नाम किताब

खुत्बात जुलफ़क़ार 'फ़क़ीर'

4

लेखकः मुहम्मद हनीफ़ नक़्शबंदी मुजद्दी

पहला एडीशनः 2010 साइज़ः 23X36X16

पेजः 295 क़ीमतः

प्रस्तुतकर्ताः जनाब मुहम्मद नासिर ख़ान

प्रकाशक

فرید بُک ڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp Off.: 2158, M.P. Street, Pataudi House Darya Ganj, N. Delhi-2
Phones. 23247075, 23289786, 23289159 Fax 23279998 Res.: 23262486
E-mail: farid@ndf.vsnl.net.in Websites: faridexport.com, faridbook.com

Name of the book

KHUTBAT ZULFIQAR *FAQEER* Vol. 4

By: Prof. Muhammad Haneef Naqshbandi Mujaddi

Pages: 295 Price Rs.100/- Size: 23x36/16

Composed at: QAYAM GRAPHICS, Dehra Dun-248001
Ph.: 9675042215, 09990438635

Printed at Farid Enterprises, Delhi-6

विषय सूची

क़ुरआन और तफ़्सीर

❋ ❋ ❋

पैग़म्बर-ए-इंक़लाब

❁ ❁ ❁

निस्बत का मुक़ाम

❋ ❋ ❋

फ़लसफ़ा-ए-इल्म

❋ ❋ ❋

तसनीफ़ व तालीफ़ की अहमियत

❁ ❁ ❁

ख़शियते इलाही

❋ ❋ ❋

शबे बरा'त की फ़ज़ीलत

❋ ❋ ❋

इंसान की चार बड़ी ग़लतियाँ

❁ ❁ ❁

पेश-ए-लफ़्ज़

الحمد لله الذی نور قلوب العارفین بنور الایمان وشرح

صدور الصادقین بالتوحید والایقان وصلی اللّٰہ تعالٰی علٰی

خیر خلقہ سیدنا محمد وعلٰی الہٖ واصحابہٖ اجمعین اما بعد.

इस नेक लोगों की कमी के इस दौर में नफ़्स के तज़्किए और दिल के सफ़ाई का काम बहुत अहमियत चाहता है। इंसान को क़दम-क़दम पर गुनाह की दावत मिल रही होती है। दिल व दिमाग़ सोच के ज़रिए ख़राब हो रहे होते हैं, आँखों को बेपर्दा औरतें बदनज़री के गुनाह में सान रही होती हैं, कान संगीत के ज़रिए ज़िना कर रहे होते हैं, ज़बान अपने महबूब से बातचीत करके मिलाप की लज़्ज़त हासिल कर रही होती है। यूँ पूरा जिस्म सरापा गुनाह बनकर अल्लाह तआला के अज़ाब को दावत दे रहा होता है मगर यह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की सिफ़्त सत्तारी का सदक़ा है कि उसने अपने बंदों को रहमत की चादर में से ढांपा हुआ है। इन ख़राब हालात में अल्लाह वालों का वजूदे मसऊद एक क़ीमती नेमत है। उनके मल्फ़ूज़ात (बातों) को पढ़कर और उनको सुनकर दिल में जगह देना गोया रहमते इलाही को दिल में भरना होता है।

यह किताब आलमे इस्लाम के रूहानी पेशवा, दुनिया के अज़ीम स्कॉलर, मारिफ़त के दरिया के तैराक, अल्लाह के जमाल

के आशिक़, नक़्शबंद के ख़ासाने ख़ास, ख़ानदान नक़्शबंदिया की पूंजी, शरिअत व तरीक़त के जामेअ हज़रत मौलाना ज़ुलफ़क़ार अहमद नक़्शबंदी मुजद्दी दामत बरकातुहुम के क़ीमती ख़ुत्बात का मजमुआ है। इन ख़ुत्बात शरीफ़ को पढ़ना पढ़ने वालों को इंशाअल्लाह इल्म व हिकमत, सोज़े इश्क़, ज़ौक़ अदब, अक़ीदे की इस्लाह, रहन-सहन में सुधार, अच्छे अख़्लाक़, दिल की सफ़ाई और सुधार, पिछले बुज़ुर्गों के हालात व वाक़िआत और कई दूसरें पहलुओं मे फ़िक्री और रूहानी बेदारी अता करेगा और सरापा तक़्वा बनकर रहने की रहनुमाई करेगा। इस आजिज़ ने तमाम ख़ुत्बात को लिखकर सही करने के लिए हज़रत अक़्दस दामत बरकातुहुम की ख़िदमत में पेश किया। आपने अपनी आलमी सतह की बहुत ज्यादा मसरूफ़ियतों के बावजूद न सिर्फ़ इन ख़ुत्बात को ठीक किया बल्कि उनकी तर्तीब और ख़ूबसूरती को पसंद भी फ़रमाया।

पढ़ने वालों की ख़िदमत में गुज़ारिश है कि ख़ुत्बात शरीफ़ की तर्तीब में अगर कोई सुधार के लायक़ बात नोट फ़रमाएं तो इत्तिला फ़रमाकर अल्लाह के यहाँ अज्र हासिल करें ताकि आइंदा एडिशन में इस्लाह की जा सके।

इस किताब तर्तीब में हज़रत मौलाना ज़ुलफ़क़ार अली साहब, जनाब मुहम्मद सलीम साहब, मुरत्तिब की अहलिया और बहन ने पूरा साथ दिया है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उनके बेहतरीन अज्र नसीब फ़रमाए। अल्लाह रब्बुइलज़्ज़त इस आजिज़ को सारी ज़िंदगी हज़रत अक़्दस दामत बरकातुहुम के साथ नत्थी रहकर इस

फ़रीज़े को अच्छे अंदाज़ से अंजाम देने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए।

(आमीन सुम्मा आमीन)

फ़क़ीर मुहम्मद हनीफ़ अफ़ी अन्हु

एम०ए०, बी०एड०, मौज़ा बाग़ ज़िला छंग

क़ुरआन और तफ़्सीर

الحمد لله وكفى وسلام على عباده الذين اصطفى اما بعد

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيمo بسم الله الرحمن الرحيمo

ولقد يسرنا القران للذكر فهل من مدكر o سبحان ربك رب العزة

عما يصفونo وسلام على المرسلين oوالحمد لله رب العالمين o

क़ुरआन मजीद कलामुल्लाह है

क़ुरआन मजीद, फ़ुरक़ाने हमीद अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का कलाम है। इंसानों की हिदायत के लिए अल्लाह तआला का पैग़ाम है। जिस तरह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को मख़्लूक़ पर फ़ज़ीलत हासिल है उसी तरह अल्लाह तआला के कलाम को मख़्लूक़ के कलाम पर फ़ज़ीलत हासिल है। अरबी का मशहूर मक़ूला है «كلام الملوك ملوك الكلام» बादशाहों का कलाम कलामों का बादशाह होता है। यह किताब इंसानों को अंधेरों से निकालकर रोशनी की तरफ़ लाने वाली है। भूले-भटकों को सीधा रास्ता दिखाने वाली है। ज़िल्लत के गढ़ों में पड़े हुओं को बुलंदियों पर पहुँचाने वाली है बल्कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से पिछड़े हुए लोगों को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से मिलाने वाली किताब है।

क़ुरआन मजीद सच्ची किताब है

इस किताब को नाज़िल करने वाला ख़ुद परवर्दिगार है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त अपने बारे में इर्शाद फ़रमाते हैं ﴿ومن اصدق من الله قيلا﴾ उससे ज़्यादा सच्ची बात भला किसकी हो सकती है। दूसरी जगह फ़रमाया ﴿قل صدق الله﴾ कह दीजिए अल्लाह ने सच कहा है। लिहाज़ा जिस ज़ात का यह कलाम है वह सबसे ज़्यादा सच्ची ज़ात है।

इस कलाम को आगे पहुँचाने वाले जिब्राईल अलैहिस्सलाम हैं जिनकी अमानत व दयानत की गवाही ख़ुद अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त यूँ दे रहे हैं कि ﴿ذی قوة عند ذی العرش مكين مطاع ثم امين﴾ अमानत कहते है कि अगर कोई चीज़ किसी ने सुपुर्द की हो तो उसे हू-ब-हू आगे पहुँचा देना। लिहाज़ा इस आयत में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने जिब्राईल अमीन की सदाक़त व अमानत की गवाही खुद दी है। जिस हादी बरहक़ रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह कलाम अता किया गया उनके बारे में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿وانك لعلى خلق عظيم﴾ आप तो अख़्लाक़ के आला मर्तबे पर फ़ाएज़ हैं। यह वह ज़ात है जिसकी आँख ऐब से पाक है। लिहाज़ा फ़रमाया ﴿ما زاغ البصر وما طغى﴾ जो अपनी मर्ज़ी से लब कुशाई नहीं फ़रमाते, ﴿وما ينطق عن الهوى﴾ वह अपनी ख़्वाहिश से नहीं बोलते। क़िस्सा मुख़्तसर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त भी सच्चे, लाने वाले जिब्राईल अमीन भी सच्चे और साहिबे क़ुरआन पैग़म्बरे इस्लाम भी सच्चे। बस सच्चे का कलाम, सच्चे के ज़रिए, सच्चे तक पहुँचा।

क़ुरआन मजीद अल्लाह तआला की अमानत है

परवरदिगार की यह अमानत उसके बंदों तक ठीक-ठीक पहुँच चुकी है। जिस तरह ये अल्फ़ाज़ अल्लाह तआला ने नाज़िल फ़रमाएं हैं उसी तरह इसके मायने भी अल्लाह तआला ने बयान फ़रमा दिए हैं। लिहाज़ा 'वही' नाज़िल होने के इब्तिदाई दौर में जब क़ुरआनी आयतें उतरती थीं तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम याद करने में जल्दी फ़रमाते थे। अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿لا تحرك به لسانك لتعجل به. ان علينا جمعهٗ وقرانهٗ﴾

आप अपनी ज़बान को जल्दी न हिलाइए। क़ुरआन का जमा करवाना हमारे ज़िम्मे हैं।

क़ुरआन मजीद का जमा करवाना भी अल्लाह तआला ने अपने ज़िम्मे ले लिया और इसका बयान करना भी अपने ज़िम्मे ले लिया। यह नुक्ता बड़ा अहम है। जिस तरह क़ुरआन मजीद के अल्फ़ाज़ अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की ज़िम्मेदारी से उसके बंदों तक पहुँचे है। उसी तरह उनके मायने व मतलब भी अल्लाह तआला के महबूब ने अल्लाह तआला के हुक्म से पहुँचा दिए। अब क़ुरआन दो तरह से हमारे पास मौजूद है। उसके अल्फ़ाज़ भी 'वही' उसके मायने भी 'वही'। किसी बंदे को यह इजाज़त नहीं है कि क़ुरआन मजीद को पढ़कर अपनी तबियत से माइने निकाले क्योंकि साहिबे कलाम ही अपने कलाम को बेहतर समझता है। यह कहाँ का इंसाफ़ है कि बात किसी और की हो और मुराद हम

अपनी बयान करते फिरें। लिहाज़ा अल्फ़ाज़ भी वही एतिबार के क़ाबिल हैं जो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने नाज़िल फ़रमाए और मायने भी वही बेहतर एतिबार के क़ाबिल जो अल्लाह तआला के महबूब ने बताए।

क़ुरआन के समझने में ग़लती

आजकल कुछ लोग अरबी दानी के नशे में क़ुरआन मजीद में अपनी मंशा ढूंढना शुरू कर देते हैं हालाँकि क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला की मंशा ढूंढना चाहिए किसी बंदे की मंशा को नहीं। जिसने यह नुक्ता समझ लिया वह आजकल के बड़े-बड़े फ़ितनों से महफ़ूज़ हो गया क्योंकि क़ुरआन मजीद के माइने अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने ख़ुद अपने महबूब के ज़रिए अपने बंदों तक पहुँचा दिए हैं। अब क़ुरआन की तफ़्सीर वही कहलाएगी जो सहाबा किराम ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सीखी और यूँ ऊपर से नीचे तक उम्मत में चली आई हो। लिहाज़ा जो उलूम नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि से हमें मिल चुके हैं उन्हीं उलूम को आगे पहुँचाने का नाम तफ़्सीर है।

अपनी राय से तफ़्सीर

अपनी राय से क़ुरआन मजीद की किसी आयत का कोई मतलब ठहरा लेना 'तफ़्सीर-बिर्राय' कहलाता है और 'तफ़्सीर-बिर्राय' के बारे में इर्शादे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है :

﴿من فسر القرآن برايه فقد كفر﴾

जिसने अपनी राय से क़ुरआन की तफ़्सीर की उसने कुफ़्र किया।

उलमा ने लिखा है कि अगर किसी आदमी को तफ़्सीर मालूम न थी और उसने अपनी अक़्ल से मायने सोच लिए और वह मायने ठीक भी निकले मगर उसने कहा कि मेरे ख़्याल में यह तफ़्सीर है तो इस कलाम में भी उसने ग़लती कर दी। उसने तफ़्सीर की निस्बत अपनी तरफ़ क्यों की हम कौन होते हैं यह कहने वाले कि मेरे नज़दीक ऐसा है?

डाक्टर का वाक़िआ

क़ुरआन पाक की इस आयत से अंग्रेज़ी चाहने वाले तब्क़े को धोका लगता है :

﴿ولقد يسرنا القرآن للذكر فهل من مدكر﴾

हमने क़ुरआन को समझने के लिए आसान कर दिया है है कोई समझने वाला।

एक एम०बी०बी०एस० डाक्टर साहब मेरे पास आए और कहने लगे जिस किताब को अल्लाह तआला ने आसान बनाया है बंदे उसको क्यों मुश्किल बनाते हैं? मैंने कहा क्या मतलब है? कहने लगा ﴿ولقد يسرنا القرآن﴾ में। मैंने कहा ﴿فهل من مدكر﴾ में ﴿مدكر﴾ का लफ़्ज़ है क्या है? किस क़ानून से 'ज़ाल' का हर्फ़ 'दाल' से तब्दील किया गया। उसको इस हर्फ़ की हक़ीक़त का पता ही न था। फिर मैंने उसको समझाया कि क़ुरआन ज़िक्र है, नसीहत है। क़ुरआन नसीहत के तौर पर तो समझना आसान है

लेकिन जहाँ तक अहकाम और मसाइल निकालने का ताल्लुक़ है यह काम सिर्फ़ उलमाए किराम का है जिनको अल्लाह तआला ने उलूम में गहराई अता की हो।

फ़ुक़्हा (आलिम) का मुक़ाम

क़ुरआन पाक की आयतों में ग़ौर-ख़ौज़ करके मायने और मतलब बयान करना फ़ुक्हाए उम्मत का काम है। वुज़ू वाली आयत से एक सौ से ज़्यादा मसाइल निकाले हैं। क़ुरआन मजीद की गहराई देखें कि एक आयत से एक सौ से ज़्यादा मसाइल निकाले हैं। क़ुरआन मजीद की गहराई देखें कि एक आयत से सौ से ज़्यादा मसाइल का हल मिल गया है मगर इसके लिए इल्मे दीन और दानिश की ज़रूरत है और अल्लाह तआला जिसे यह दौलत अता फ़रमाते हैं उसे बड़ी ख़ैर अता फ़रमाते हैं। और यह हर बंदे के बस की बात नहीं होती। इस मौक़े पर मुहद्दिसीन भी फ़ुक़्हा के सामने सीखने वालों की तरह घुटने टेक देते हैं कि जो समझ क़ुरआन हदीस के बारे में फ़ुक़्हा रखते हैं वह हमारे पास नहीं है क्योंकि मुहद्दिसीन ने हदीस पाक के अल्फ़ाज़ की हिफ़ाज़त की और फ़ुक़्हा ने मायने हदीस की हिफ़ाज़त की है।

इसीलिए इमाम आज़म रह०, इमाम शाफ़ई रह० और दूसरे फ़ुक्हाए इल्म व दानिश में बहुत बुलंद मुक़ाम रखते थे। वे उम्मत के मोहसिन थे। उम्मत के हर आदमी की ज़िम्मेदारी बनती है कि वह उनके लिए मग़फ़िरत की दुआ किया करें।

इमाम अबू हनीफ़ा रह० और सत्रह हदीसें

बाहर के मुल्क में एक साहब मेरे पास आए और कहने लगे

कि मैंने सुना है कि इमाम अबू हनीफ़ा रह० को कुल सत्रह हदीसें याद थीं तो क्या इसके बावजूद आप लोग अपने आपको हन्फ़ी कहते हैं? आजिज़ ने जवाब दिया आपकी बात से पहले तो हो सकता है कि आजिज़ सौ फ़ीसद हनफ़ी हो लेकिन आपकी बात सुनकर एक सौ एक फ़ीसद हनफ़ी हो गया। वह कहने लगे कि यह कैसे? आजिज़ ने कहा कि यह बात तो पक्की है कि इमाम साहब रह० की सरबराही में छः लाख मसाइल निकाले गए। तो जो शख़्स सत्रह हदीसों से छः लाख मसाइल निकाले आजिज़ उसे अपना इमाम न माने तो क्या करे। जो बंदा सत्रह हदीसों से छः लाख मसाइल निकाले आजिज़ उसकी अज़्मत को सलाम करता है। आजिज़ तो अपनी अक़्ल को उनके क़दमों में डालता है। फिर उनकी अक़्ल ठिकाने आई। कहने लगे अब बात समझ में आई। हक़ीक़त यह है कि अल्लाह तआला ने इमामे आज़म रह० को वह मर्तबा दिया था जो आम आदमी की समझ से बाहर है। तफ़्सीर क़ुरआन के बारे में यह बात अच्छी तरह ज़हन में बिठा लेनी चाहिए। इस किताब के वही मायने क़ुबूल होंगे जो अल्लाह तआला ने फ़रमाए हैं। उनको समझने के लिए उलमा के पास जाना पड़ेगा और उनकी सोहबत में बैठकर सीखना पड़ेगा। सिर्फ़ किताब पढ़कर हम नहीं समझ सकते। हर बंदे की समझ व बूझ अलग होती है। जो समझ हमारे बड़ों को हासिल थी वह हमें तो हासिल नहीं है। इसलिए हमें अपने बड़ों के साथ नत्थी रहना चाहिए। इसी में भलाई है। जैसा कि हदीस नबवी है ﴿البركة مع اكابركم﴾। तुम्हारे बड़ों के साथ रहने में बरकत है।

इसलिए अपने बड़ों के साथ इल्मी तौर पर नत्थी रहना बंदे की हिदायत के लिए ज़रूरी है। जिसका इल्मी रिश्ता बड़ों से टूट गया वह कटी पतंग बन गया। शैतान किसी वक़्त भी उसे वरग़ला सकता है। ये 'तफ़हीम' और 'तदब्बुर' के लफ़्ज़ बंदे को गुमराह करते फिर रहे हैं। यह तफ़हीम क़ुरआन और तदबीर क़ुरआन नहीं है कि इंसान अरबी दानी के ज़ोर पर क़ुरआन समझने की कोशिश करे।

उलमाए किराम और फ़हमे क़ुरआन

आम लोगों का दर्जा तो यह है कि क़ुरआन के सुनने से उन्हें इतना पता चल जाए कि इसमें जन्नत व जहन्नम का ज़िक्र है यानी मोटी-मोटी नसीहत की बातें समझ में आनी चाहिएं। रहे उलमा ﴿والراسخون فی العلم﴾ जिनको अल्लाह तआला ने इल्म में गहराई का दर्जा अता फ़रमाया है। वे आयतों के समुंदर में ग़ोता मारकर मायने और मतलब के मोती निकाला करते हैं। अहकाम की बात करना, मसाइल का निकालना उलमा का काम है। आम लोगों को इस से वास्ता ही नहीं है। यह वही कर सकता है जिसकी ज़िंदगी इस इल्म को हासिल करने में गुज़री हो।

अरबी ग्रामर क़ुरआन के फ़हम के लिए काफ़ी नहीं

हज़रत शेख़ुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़क्रिया रह० फ़रमाते हैं कि क़ुरआन पाक को समझने के लिए पंद्रह उलूम की ज़रूरत है।

सिर्फ़ अरबी दानी के ज़ोर पर या सिर्फ़ किताब पढ़कर उसके मायने को समझना गुमराही का सबब है। देखिए क़ुरआन पाक की आयत है ﴿والنجم والشجر يسجدان﴾ तीन अल्फ़ाज़ हैं नज्म, शजर, और यस्जुदान। ये तीनों अल्फ़ाज़ उर्दू में भी इस्तेमाल होते हैं। इसका ज़ाहिर मफ़हूम यह है कि सितारे और पेड़ सज्दा करते हैं और यह बिल्कुल ग़लत है क्योंकि मुफ़स्सिरीन ने लिखा है 'नज्म' के मायने जिस तरह सितारे के हैं उसी तरह बे-तना पेड़ को भी नज्म कहते हैं। मतलब आयत का यह हुआ कि बे-तना पेड़ (बेल) और तने वाले पेड़ दोनों अपने परवरदिगार को सज्दा करते हैं। इसी तरह क़ुरआन पाक की एक आयत है :

يايها الذين آمنوا اتقوا الله وقولوا قولا سديدا.
يصلح لكم اعمالكم ويغفر لكم ذنوبكم.

इस आयत में ﴿يصلح لكم اعمالكم﴾ का मतलब क्या है? ज़ाहिर में मफ़हूम यह है कि तुम्हारे आमाल की इस्लाह करेगा लेकिन यह मतलब मुराद नहीं है बल्कि ﴿يصلح لكم اعمالكم﴾ का मतलब है कि तुम्हारे आमाल को क़ुबूल करेगा और तुम्हारे गुनाहों को माफ़ करेगा। लफ़्ज़ इस्लाह है मगर मुफ़स्सिरीन ने इसके मायने क़ुबूल करना बयान फ़रमाए हैं। यह बात वाज़ेह हो गई कि ज़ाहिरी अल्फ़ाज़ से मक़सूद खुदावंदी नहीं समझा जा सकता। मंशाए खुदावंदी को समझने के लिए आक़ा के दर पर जाना पड़ेगा जिसको परवरदिगारे आलम ने इसी मक़सद के लिए भेजा है। उसके दर की चाकरी करना पड़ेगी। हमें इधर रुजू करना पड़ेगा।

डाक के ज़रिए क़ुरआन फ़हमी

आज वह वक़्त आ गया है कि डाक के ज़रिए क़ुरआन समझने समझाने का सिलसिला शुरू हो गया है। फ़ौज के एक मेजर साहब सिलसिल में दाख़िल हुए। उन्होंने ख़त लिखा कि हज़रत! मेरी ज़िंदगी तो बदल गई है। अब मैं क़ुरआन सीखना और समझना चाहता हूँ। फ़लां एकेडमी ख़त व किताब के ज़रिए सिखाती है। आजिज़ सुनकर हैरान हुआ कि यह एक नया तमाशा है। इस क़िस्म की तहरीकें आम लोगों का ताल्लुक़ उलमा से काटने का ज़रिया बनती हैं। गोया आम लोगों को उलमा से काट दो और कहो कि ख़ुद किताब का समझना तुम्हारे लिए काफ़ी है। यही चीज़ आम लोगों के लिए गुमराही का सबब बनती है।

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम और क़ुरआन फ़हमी

सहाबा किराम ने क़ुरआन मजीद ख़ुद नहीं समझा बल्कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने समझाया वरना अरबी तो उनकी मादरी ज़बान थी। सर्फ़ की गरदानें और नह्व के क़ायदे उन्हें पढ़ने की ज़रूरत न थी। यह क़ुरआन उनकी ज़बान में नाज़िल हुआ ﴿بلسان عربى مبين﴾ इसके बावजूद सहाबा किराम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछते थे कि फ़लां आयत से मुराद क्या है?

उम्मुल मोमिनीन सैय्यदा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा इस उम्मत की फ़क़ीहा और उलूमे नबुव्वत को हासिल करने वाली ख़ातून

थीं। उनको क़ुरआन पाक की एक आयत के मफ़हूम को समझने में ग़लती लगी। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एक बार पूछा ﴿من يعمل سوء يجز به﴾ जिस आदमी ने कोई बुरा अमल किया हो उसको उसकी सज़ा मिलेगी। इसका मतलब यह हुआ कि हर बंदे को जहन्नम की सज़ा मिलेगी क्योंकि हम में से कोई बंदा ऐसा नहीं है जिससे कोई ग़लती न हुई हो। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इसका मतलब यह है कि इस दुनिया में किसी बंदे को जो परेशानी या मुसीबत आ जाती है या बीमारी आ जाती है वह उस बंदे के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाती है। तब उनका मुग़ालता दूर हुआ।

भला जिनके सामने क़ुरआन नाज़िल होता था, जिनके बिस्तर पर क़ुरआन नाज़िल होता था जिनको नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सोहबत नसीब थी अगर उनको क़ुरआन का मफ़हूम समझने में ग़लती लग सकती है और उन्हें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ रुजू करना पड़ता है तो आज हम कैसे कह सकते हैं कि हम अरबी दानी के ज़ोर पर क़ुरआन समझ सकते हैं या आज तफ़्सीरों में सब कुछ आ गया है। मौलाना के पास मस्जिद में जाने की क्या ज़रूरत है?

आइए आपको पिछले बुज़ुर्गों के फ़हम और दानिश के कुछ वाक़िआत सुनाएं।

इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रह० की दानिश

एक बार इमाम अबू हनीफ़ा रह० तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक

बूढ़ा आदमी आया और कहने लगा ﴿واؤ او واوبـــــن﴾ 'वाव अव वावैन'? इमाम अबू हनीफ़ा रह० ने फ़रमाया ﴿واوبــــن﴾ 'वावैन'। वह ﴿لا, لا﴾ 'ला व ला' कहकर चला गया। मजलिस में शरीक लोगों के पल्ले कुछ न पड़ा हालाँकि उनका इल्मी मर्तबा बड़ा बुलंद था। उनमें इमाम अबू यूसफ़ जैसे कसीरुल हदीस मुहद्दिस भी थे, क़ासिम बिन मअन रह० और मुहम्मद बिन हसन रह० जैसे अरबी अदब के माहिर थे, इमाम ज़फ़र रह०, आफ़िया बिन यज़ीद रह० जैसे क़यास और इस्तेहसान के बादशाह थे और इमाम दाऊद ताई जैसे ज़ोहद व तक़्वा के पहाड़ थे मगर इशारों की यह बात किसी के समझ में न आई। आख़िर इमाम अबू हनीफ़ा रह० से पूछा गया कि इस बूढ़े ने क्या पूछा था? आपने रह० ने फ़रमाया कि उसने 'अत्तहिय्यात' के बारे में सवाल किया था कि ﴿التحيات لله والصلوت والطيبات﴾ में दो 'वाव' हैं। वह पूछना चाहता था कि मैं दो 'वाव' वाला 'अत्तहिय्यात' पढ़ूं या एक 'वाव' वाला तो मैंने कहा 'वावैन' यानी दो 'वाव' वाला। उसने ख़ुश होकर कहा कि वाक़ई आपका इल्म शजरए तैय्यबा की तरह है। ﴿اصلها ثابت وفرعها فى السماء.﴾ फिर कहने लगा ﴿لا شرقية ولا غربية﴾ और 'ला व ला' कहकर इशारा कर दिया कि आपके इल्म की मिसाल न पूरब में है न पश्चिम में है।

इमाम आज़म रह० एक बार दर्स दे रहे थे। एक औरत आई जो कोई मस्अला पूछना चाहती थी मगर मर्दों की वजह से शर्मा गई और एक बच्चे के हाथ सेब भेज दिया जिसका कुछ हिस्सा सुर्ख़ था और कुछ पीला। हज़रत ने सेब काटकर वापस कर दिया

तो वह औरत चली गई। लोगों ने माजरा पूछा फ़रमाया, वह औरत हैज़ का मस्अला पूछने आई थी मगर तुम्हारी वजह से शर्म व हया रुकावट बनी। इसलिए अल्फ़ाज़ में मस्अला पूछने के बजाए सेब पेश कर दिया कि क्या औरत के हैज़ की रंगत ज़र्द हो जाए तो गुस्ल कर सकती है या नहीं? मैंने सेब काटकर सफ़ेदी दिखा दी कि जब तक ज़र्दी सफ़ेदी में न बदले उस वक़्त तक गुस्ल नहीं कर सकती। इन बातों को कौन समझेगा? ऐसे हज़रात से जलने वाले भी ज़्यादा होते हैं। दुनिया में जितना कोई बड़ा होगा उससे जलने वाले भी ज़्यादा होंगे।

इमाम आज़म इमाम अबू हनीफ़ा रह० और हसद करने वाले

इमाम आज़म रह० से हसद करने वाले दो तरह के थे। बाज़ लोग उनकी इल्मियत और क़ुबूलियत की वजह से जलते थे। ऐसे लोगों का कोई ईलाज नहीं हुआ करता। जैसे एक आदमी आया और कहने लगा, हज़रत! हमने सुना है कि आप मसाइल का जवाब देते हैं। फ़रमाया, हाँ पूछो। कहने लगा कि आप बता सकते हैं कि पाख़ाने का ज़ाएक़ा कैसा होता है? कोई शरीफ़ इंसान भला ऐसा सवाल कर सकता है? मगर हसद करने वाला था। इमाम साहब रह० को अल्लाह तआला ने बड़ी समझ दी थी। फ़रमाया, इसका ज़ाएक़ा मीठा होता है। वह हैरान हुआ और दलील पूछी। फ़रमाया नमकीन चीज़ पर मक्खी नहीं बैठती।

इसी तरह एक बार हसद करने वालों ने इमाम अबू हनीफ़ा

रह० की ज़िल्लत व रुसवाई (Public insult) का प्रोग्राम बनाया क्योंकि आख़िरी वार यही होता है। यही काम मुनाफ़िक़ों ने किया था कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मोहतरम बीवी हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर बोहतान बांधा था। इसी तरह क़ारून ने भी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के लिए इसी क़िस्म का बहाना किया था कि एक औरत को तैयार किया कि जब हज़रत मूसा अलैहिस्लाम बयान करने के लिए खड़े हों तो मजमे में कह देना कि उन्होंने मुझसे गुनाह करने को कहा था। बेइज़्ज़ती हो जाएगी तो मुझे ज़कात नहीं देनी पड़ेगी। तारीख़ में इस तरह के वाक़िआत बहुत हैं। लिहाज़ा जलने वालों ने सोचा कि इमाम अबू हनीफ़ रह० के दामन पर ऐसा धब्बा लगा दिया जाए कि लोग बदज़न हो जाएं। लिहाज़ा उन्होंने जवान उम्र बेवा औरत से राब्ता किया कि किसी बहाने से इमाम साहब को अपने घर बुला, हमें तुम्हें इसके बदले में एक भारी रक़म अदा करेंगे। औरत बेचारी फिसलती भी जल्दी है और फिसलाती भी जल्दी है। वह झांसे में आ गई। इमाम साहब जब रात को घर जाते हुए उस औरत के घर के सामने से गुज़रे तो औरत पर्दे में होकर निकली और कहने लगी, अबू हनीफ़ रह०! मेरा ख़ाविंद मर रहा है और वह कोई वसीयत करना चाहता है और वह वसीयत मेरी समझ में नहीं आ रही है। ख़ुदा के लिए आप वह सुन लें। आप घर में दाख़िल हुए, औरत ने दरवाज़ा बंद कर दिया। कमरे में छिपे हुए हासिदीन बाहर आ गए और कहने लग, अबू हनीफ़ा आप रात के वक़्त एक अलैहिदा मकान में अकेली नौजवान औरत के पास बुरे इरादे से आए हो।

लिहाज़ा उस औरत को और इमामे आज़म रह० को लोगों ने पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया। हाकिमे वक़्त तक बात पहुँची तो तो उसने कहा उन्हें फ़िलहाल में बंद कर दिया जाए। मैं सुबह के वक़्त कार्यवाही पूरी करूंगा। इमाम साहब और उस औरत को एक अंधेरी कोठरी में बंद कर दिया गया। इमाम साहब वुज़ू से थे लिहाज़ा नफ़्लें पढ़ने में मशग़ूल हो गए। जब काफ़ी देर गुज़र गई तो उस औरत को अपनी ग़लती का एहसास हुआ कि मैंने इतने पाकदामन आदमी पर इल्ज़ाम लगाया है। जब इमाम आज़म रह० ने नमाज़ का सलाम फेरा तो वह औरत कहने लगी आप मुझे माफ़ कर दें। फिर उसने सारी राम कहानी सुना दी। इमाम आज़म रह० ने फ़रमाया अच्छा जो होना था वह तो हो चुका है। अब मैं तुम्हें एक तरीक़ा बताता हूँ ताकि हम इस मुसीबत से छुटकारा हासिल कर सकें। उसने पूछा वह कैसे? आपने फ़रमाया कि तुम इस पहरेदार की मिन्नत समाजत करो कि लोग मुझे अचानक पकड़कर ले आए हैं, मुझे ज़रूरी काम समेटने के लिए घर जाना है तुम मेरे साथ चलो ताकि मैं वह काम कर सकूं। फिर जब पहरेदार मान जाए तो तुम मेरे घर चली जाना और मेरी बीवी को हालात बता देना ताकि वह तुम्हारे इसी बुर्क़े में लिपट कर यहाँ मेरे पास आ जाए। औरत ने रो-धो कर पुलिस वाले का दिल मोम कर लिया और यूँ इमाम साहब की बीवी हवालात में उनके पास पहुँच गईं। जब सुबह हुई तो वक़्त के हाकिम ने तलब किया कि इमाम आज़म और उस औरत को मेरे सामने पेश किया जाए। हासिदों की भीड़ मौजूद थी। जब पेशी

हुई तो हाकिम ने कहा कि अबू हनीफ़ा! तुम इतने बड़े आलिम होकर भी गुनाहे कबीरा करते हो? इमाम साहब ने कहा आप क्या कहना चाहते हैं? हाकिम ने कहा कि आप एक ग़ैर औरत के साथ रात के वक़्त एक मकान में अकेले देखे गए हैं। इमाम साहब ने फ़रमाया कि वह ग़ैर औरत नहीं है। हाकिम ने पूछा वह कौन है? आपने अपने ससुर की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया, इनको बुलाओ ताकि पहचान लें। वह आए तो उन्होंने देखा तो फ़रमाने लग यह तो मेरी बेटी है। मैंने फ़लां मजमे में इनका निकाह अबू हनीफ़ा से कर दिया था। इस तरह इमाम आज़म की ख़ुदा दाद फ़हम की वजह से हसद करने वालों की चाल कामयाब साबित न हुई और उनकी साज़िश ख़ाक में मिल गई।

इमाम आज़म रह० के कुछ मुख़ालिफ़ ऐसे थे जो मुख़्लिस थे मगर उड़ती अफ़वाहों और सुनी सुनाई बातों की वजह से बदज़न हो गए थे। हदीस शरीफ़ में है कि आदमी के झूठा होने के लिए यही काफ़ी है कि वह सुनी सुनाई बातें नक़ल करता फिरे। मशाइख़ ने यहाँ तक फ़रमाया है कि अगर तुम्हारे सामने कोई आदमी कहे कि फ़ला आदमी ने मेरी आँख फोड़ दी है और उसकी आँख वाक़ई फूट चुकी हो तो भी उस वक़्त फ़ैसला न करना जब तक दूसरे को देख न लेना। हो सकता है कि उसे बंदे ने उसकी दो आँखें फोड़ दी हों। आइए इमाम आज़म रह० के मुख़ालिफ़ों का दूसरा रुख़ देखें।

इमाम औज़ाई रह० शाम में रहते थे। उन्होंने इमाम आज़म रह० के बारे में ऐसी वैसी बहुत सी बातें सुन रखी थीं। एक बार

इमाम अबू हनीफ़ा रह० के शार्गिद अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० इमाम औज़ाई रह० की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो उन्होंने पूछा ऐ ख़ुरासानी! (अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० की निस्बत है) अबू हनीफ़ा कौन आदमी है, मैंने सुना वह बहुत गुमराह है। अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० फ़रमाते हैं कि मैं ख़ामोश हो गया। घर आया और इमाम अबू हनीफ़ा रह० के बयान किए हुए मसाइल जिस किताब में थे वह उठाई और इमाम औज़ाई रह० की ख़िदमत में पेश कर दी। उन्होंने पढ़ा तो फ़रमाने लगे, ऐ ख़ुरासानी यह नौमान कौन शख़्स है? उसका इल्मी पाया तो बहुत बुलंद है। उससे तुम्हें फ़ायदा उठाना चाहिए। मैंने कहा यह वही इमाम अबू हनीफ़ा है जिनके बारे में आप बातें सुनते रहते हैं। उनका चेहरा फ़क़ हो गया और कहने लगे, हमने क्या सुना था, हक़ीक़त क्या थी। फ़रमाया ऐ ख़ुरासानी! उसकी सोहबत इख़्तियार कर और फ़ायदा उठा।

नया रुज्हान

इस वक़्त अंग्रेज़ी चाहने वाले तब्क़े में यह बात बड़ी तेज़ी से फैलाई जा रही है कि किताबें मौजूद हैं, डिक्शनरियाँ मौजूद हैं, तफ़्सीरें मौजूद हैं। लिहाज़ा युनिर्वसिटी के तलबा को मस्जिद के इमाम के पास जाने की क्या ज़रूरत है। अपने निजी मुताले से क़ुरआन समझा जा सकता है। कुछ तो इंटरनेट पर बैठकर तफ़्सीर क़ुरआन सीख रहे हैं। इस मुल्क के एक वज़ीर साहब कहने लगे, मेरा बेटा माशाअल्लाह रोज़ाना इंटरनेट पर बैठकर एक सफ़्हे की तफ़्सीर समझ लेता है और वह इसको कमाल समझकर ख़ुशी से

बयान कर रहे थे हालाँकि हिदायत पर रहने के लिए उन्हीं मायनों को समझना ज़रूरी है जो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने ख़ुद अपने कलाम के तय फ़रमाए हैं। हम तय करने वाले कौन हैं? हमारी क्या हैसियत है?

ग़ैर-मुस्लिम अंग्रेज़ का वाक़िआ

मुझे एक बार एक अंग्रेज़ कहने लगा कि मैं नया-नया मुसलमान हुआ हूँ। मेरे कुछ सवालात हैं, आप मुझे उन सवालों का जवाब सिर्फ़ क़ुरआन मजीद से दें। मैंने कहा, क्या मतलब? कहने लगा हदीस तो कभी सही होती है, कभी ज़ईफ़ होती है और क़ुरआन तो हमेशा सही होता है। अब ज़ईफ़ का मतलब आजकल के अंग्रेज़ी तालीम याफ़्ता लोगों ने ग़लत समझ लिया है। यह अरबी का लफ़्ज़ है।

ज़बान के फ़र्क़ से मायने बदल जाते हैं

कभी-कभी एक लफ़्ज़ अरबी में और अंदाज़ से इस्तेमाल होता है और वही लफ़्ज़ उर्दू में और अंदाज़ में इस्तेमाल होता है। एक मिसाल से समझ लें। अरबी में बंदर ख़ूबसूरत इंसान को कहते हैं जबकि उर्दू में एक जंगली जानवर का नाम है। लिहाजा इस वक़्त अमरीका में सऊदी अरब के सफ़ीर (राजदूत) हैं उनका नाम है बंदर बिन सुल्तान मगर जनाब वह उर्दू के बंदर नहीं हैं बल्कि अरबी के बंदर हैं। हम उर्दू वाले जब यह नाम सुनते हैं तो हैरान हो जाते हैं कि अरबी शहज़ादा और नाम बंदर है। बताना सिर्फ़ यह है कि लफ़्ज़ एक है मगर ज़बान के फ़र्क़ की वजह से मायने बदल गए।

इसी तरह ज़लील का लफ़्ज़ अरबी और उर्दू दोनों ज़बानों में इस्तेमाल होता है। उर्दू में इसका मायने रुसवाई है मगर अरबी में इसके मायने हैं कमज़ोर। जैसे क़ुरआन मजीद में है ﴿لقد نصركم الله ببدر وانتم اذلة﴾ तहक़ीक़ अल्लाह तआला ने बदर में तुम्हारी मदद फ़रमाई इस हाल में कि तुम कमज़ोर थे। अगर यहाँ कोई ﴿اذلة﴾ से मतलब रुसवाई लेगा तो गुमराह हो जाएगा बल्कि वह काफ़िर हो जाएगा क्योंकि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए ऐसा लफ़्ज़ इस्तेमाल करना कुफ़्र है। यहाँ ﴿اذلة﴾ के मायने कमज़ोरी है। इसी तरह ﴿دلــــه﴾ 'दल्ला' का लफ़्ज़ उर्दू ज़बान में एक गाली है अगर किसी को यह लफ़्ज़ कह दिया जाए तो मरने मारने पर तुल जाता है लेकिन अरबी में इतने ग़लत मायने के लिए इस्तेमाल नहीं होता चुनाँचे सऊदी अरब में एक ﴿دله﴾ 'दल्ला' कंपनी है जो हरम शरीफ़ की सफ़ाई करती है। मालूम हुआ कि लफ़्ज़ एक है, ज़बान के बदलने से मायने बदल गया। अब सोचिए कि उर्दू तर्जुमे को पढ़कर हम क़ुरआन कैसे समझ पाएंगे। इसीलिए उलमा की ख़िदमत में बैठकर क़ुरआन को समझना पड़ेगा कि क़ुरआन पाक में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का मंशा क्या है। इसलिए क़ुरआन के बारे में फ़रमाया ﴿يضل به كثيرا ويهدى به كثيرا﴾ यह वह किताब है जो हिदायत भी बहुत से लोगों को देती है और गुमराह भी बहुत से लोगों को करती है। जो आदमी अपनी मंशा क़ुरआन में ढूंढेगा गुमराह हो जाएगा। जो अल्लाह तआला की मंशा तलाश करेगा वह हिदायत पा जाएगा। इसलिए तफ़्सीर क़ुरआन के बारे में ये कुछ बातें बहुत अहम हैं। इनको अपने दिल व दिमाग़ में महफ़ूज़ कर लें।

इस्तिलाही (मुरादी) अल्फ़ाज़ का मफ़हूम

जब कोई लफ़्ज़ इस्तिलाह बन जाता है तो उसके एक ख़ास मायने तय हो जाते हैं। आम मायनी नहीं रहते। मुझे याद है कि हम जब कालेज में पढ़ते थे तो एक प्रोफ़ेसर फिजिक्स का लैक्चर देने लगे तो उन्होंने पढ़ाया (Wheat Stone Bridge) यह इंगलिश का लफ़्ज़ है। एक तालिब इल्म कहने लगा Wheat का मतलब गेहूँ Stone का मतलब है पत्थर और Bridge के मायने पुल तो मतलब यह बना कि गेहूँ पत्थर पुल। फिर उस्ताद ने बताया कि Wheat Stone एक साइंसदान था जिसने साइंस का एक आइडिया पेश किया जो साइंस के बारे में था। इसलिए उसका नाम Wheat Stone Bridge रखा। इसके मायने गेहूँ पत्थर और पुल नहीं है।

यहूद की ग़लती

इस्तिलाही अल्फ़ाज़ का तर्जुमा नहीं किया जाता मगर यूहदियों ने नामों का तर्जुमा करने की ग़लती की है। उनकी किताबों में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम अहमद है जिसके मायने उन्होंने किए The praised one 'तारीफ़ किया गया'। इससे कौन मुराद है इसका पता कहाँ चलेगा। मसलन एक बंदे का नाम है मिस्टर ब्लैक उसे मिस्टर काला तो नहीं कहेंगे। इसी तरह जिसका नाम मिस्टर ब्राउन है उसे मिस्टर ज़र्द नहीं कह सकते। मिस्टर ब्लैक और मिस्टर ब्राउन ये नाम हैं और नामों का तर्जुमा नहीं किया जाता। इसी तरह जो लफ़्ज़ इस्तिलाह बन जाता है उसके मायने तय हो जाते हैं तो ज़ईफ़ हदीस एक इस्तिलाह है।

आम लोग यह समझते हैं कि ज़ईफ़ हदीस का मतलब है ग़लत हदीस हालाँकि ग़लत हदीस या घढ़ी हुई हदीस के लिए मौज़ू का लफ़्ज़ इस्तेमाल होता है। इस्लाम के दुश्मनों ने जो हदीसें घढ़कर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जोड़ दी हैं, मुहद्दिसीन ने उन्हें छांटकर अलग कर दिया है और उनका नाम मौज़ूआत रखा।

ज़ईफ़ हदीस भी अमल के क़ाबिल होती है

लेकिन हदीसों की किताबों में कुछ हदीसें ऐसी भी मिलेंगी जिनके वारे में ज़ईफ़ लिखा हुआ होगा। सनद पढ़ते ही बिदकने की ज़रूरत नहीं है। ज़ईफ़ हदीस और मौज़ू हदीस में वही फ़र्क़ है जो बीमार, ज़िंदा और मुर्दा इंसान में होता है। कमज़ोर और मुर्दा इंसान में फ़र्क़ साफ़ है। ज़ईफ़ हदीस में रावी पर जिरह की गई होती है वरना होती वह भी हदीस ही है। इतना है कि ज़ईफ़ हदीस से फ़राईज़ और वाजिबात का इस्तिंबात (साबित) नहीं कर सकते वरना फ़ज़ाइल में यह हदीस उसी तरह अमल के क़ाबिल होती है जैसे सही हदीस क़ाबिले अमल होती है। इसलिए साहा सित्ता में भी आपको कुछ हदीसे ऐसी मिल जाएंगी।

नया फ़ित्ना

आजकल एक नया फ़ितना पैदा हो गया है कि अब तिर्मिज़ी शरीफ़ भी दो तरह की छाप दी गई है। एक सही तिर्मिज़ी दूसरी ज़ईफ़ तिर्मिज़ी।

सही तिर्मिज़ी का नुस्ख़ा देखा, उसकी मोटाई कम देखकर

हैरानी हुई। नीचे यह इबारत लिखी हुई थी, "हमने ज़ईफ़ हदीसें इससे निकाल दी हैं।" उन्होंने ज़ईफ़ हदीसों को मौज़ू हदीसें समझकर सिरे से किताब से भी निकाल दिया। जब ये लोग लफ़्ज़ ज़ईफ़ हदीस को नहीं समझ रहे हैं तो हदीस के मायने समझने में क्या गुल खिलाएंगे।

जिरह का मैयार

मुहद्दिसीन के हाँ जिरह का जो मैयार है उस पर अगर तोला जाए तो हम सब मजरूह हैं। उनका मैयार बहुत बुलंद था। अगर किसी बंदे की ज़िंदगी में एक दफ़ा भूल हो गई तो मुहद्दिसीन उसे हदीसे लेने के क़ाबिल नहीं समझते। उससे कभी हदीस नहीं लेते। इसी तरह किसी आदमी को देखा कि नंगे सर बाज़ार में फिर रहा है। यह फ़ासिक़ों का तर्ज़ है इस अमल की वजह से मुहद्दिसीन उस आदमी से हदीस नहीं लेते थे।

एक मुहद्दिस दूर दराज़ का सफ़र करके किसी दूसरे मुहद्दिस के पास गए। वह घोड़ा पकड़ रहे थे मगर कपड़े या किसी बर्तन में कुछ कंकड़ डालकर घोड़े को इशारा किया। घोड़ा दाना समझा कि दाना है वह आ गया तो उसने शख़्स ने पकड़ लिया। मेहमान मुहद्दिस ने जब यह देखा तो हदीस की रिवायत लिए बग़ैर वापस हो गए। किसी ने पूछा, हदीस क्यों न ली? फ़रमाया जो बंदा हैवान को धोका दे सकता है, वह बंदा हदीस के बयान करने में भी धोका-धड़ी से काम ले सकता है, सुब्हानअल्लाह। अस्माए रिजाल के फ़न में सात लाख मुहद्दिसीन के ज़िंदगी के हालात महफ़ूज़ हैं, सुब्हानअल्लाह। यह सच्चे का कलाम था। अल्लाह

तआला ने सच्चों की ज़बानी रिवायत कराके हम तक पहुँचाया। हदीस रसूल भी उसी ज़बान से निकली है जिस ज़बान से हमें अल्लाह का कुरआन मिला। यह कैसे हो सकता है कि हम कुरआन को तो सच्चा मानें और हदीस पर यक़ीन न करें। हालाँकि क़ुरआन व हदीस एक ही ज़बाने नबुव्वत से मिले हैं। इसलिए इंकार हदीस दरअसल इंकार क़ुरआन है। हुज्जियत हदीस, हक़ीक़क़त में हुज्जियत पैग़म्बर का दूसरा नाम हैं क़ुरआन के मायने व मतलब को बयान करना फ़रीज़ा नबुव्वत है। क़ुरआन के उन्हीं मायने व मतलब का दूसरा नाम हदीस है। खुशनसीब है वे लोग जो उलूमे नबुव्वत के हासिल करने के लिए अपना वक़्त फ़ारिग़ करते हैं और उलमा की ख़िदमत में बैठकर इस किताब को समझने की कोशिश करते हैं। आइए क़ुरआन मजीद, फ़ुरक़ाने हमीद के बारे में कुछ बातें समझ लीजिए।

इस किताब को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने कई खुसूसियतों से नवाज़ा है। कुछ बड़ी-बड़ी ये हैं–

1. क़ुव्वते तासीर

यह किताब क़ुव्वते तासीर में दुनिया की तमाम किताबों पर फ़ज़ीलत रखती है। ऐसी तासीर कि काफ़िर भी सुनते हैं तो मुतवज्जेह हो जाते हैं। इसलिए कहते थे,

﴿لا تسمعوا لهٰذا القران و الغوا فيه لعلكم تغلبون.﴾

इस क़ुरआन को न सुनो और शोर मचाओ ताकि तुम ग़ालिब आ जाओ।

क़ुव्वते तासीर में यह किताब अपनी मिसाल नहीं रखती। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आदत मुबारक यही थी कि जो भी आता उसके सामने क़ुरआन पढ़ते थे ﴿قرا عليهم القرآن تلا عليهم القرآن.﴾ लिहाज़ा अकाज़ के मेले में जब लोग वापस जा रहे होते तो आप रास्ते पर बैठकर क़ुरआन पढ़ते। लोग सुनते और ऐसे मुतास्सिर होते कि घरों की बजाए आपके क़दमों में बैठ जाते। दुनिया में ऐसी कोई किताब नहीं जिसमें अल्लाह तआला नें ऐसी तासीर रखी हो। उसके अल्फ़ाज़ और मायने सीनों में उतरते चले जाते हों। हमारे हज़रत मुर्शिदि आलम रह० फ़रमाते थे कि दरियाओं का रास्ता कौन बनाता है। जिस तरह दरिया अपना रास्ता खुद बना लेता है उसी तरह यह क़ुरआन वह दरियाए रहमत है कि जो लोगों के सीनों में अपना रास्ता खुद बना लेता है। क़ुव्वते तासीर में यह किताब दुनिया की तमाम किताबों पर हावी और बुलंद है।

उतर कर हिरा से सूए क़ौम आया
और इक नुस्ख़ाए कीमिया साथ लाया
वह बिजली का कड़का था या सूते हादी
अरब की ज़मीं जिसने सारी हिला दी

2. हिफ़्ज़ करने की सहूलत

हिफ़्ज़ करने की सहूलत में भी इस किताब का कोई जोड़ नहीं है। दुनिया की कोई किताब ऐसी नहीं है जिसके हाफ़िज़ मौजूद हों मगर यह वह किताब है जिसके लाखों हाफ़िज़ मौजूद हैं। बड़ी उम्र के भी और छोटी उम्र के भी। कुछ अरसे पहले कराची के

एक बूढ़े आदमी ने हिफ़्ज़ पूरा किया जिसकी भवें और पलकें तक सफ़ेद हो चुकी थीं। मुझे उसके जिस्म पर कोई काला बाल नज़र नहीं आया था। इस बुढ़ापे की उम्र में उन्होंने क़ुरआन पाक का हिफ़्ज़ पूरा किया। यह इस क़ुरआन पाक का ऐजाज़ है। हारून रशीद के सामने एक ऐसा बच्चा लाया गया जिसकी उम्र पाँच साल थी और वह क़ुरआन पाक का हाफ़िज़ था, सुब्हानअल्लाह। किताब में लिखा है कि जब उसका वालिद उस बच्चे को हारून रशीद के सामने क़ुरआन पाक सुनाने के लिए लाया तो वह अपने अब्बू से झगड़ रहा था कि मुझे गुड़ की डली लेकर दोगे या नहीं। बाप कहता कि हाकिमे वक़्त को क़ुरआन सुनाओ और बच्चा कहता है कि पहले यह बताओ कि गुड़ दोगे या नहीं। सुब्हानअल्लाह! उम्र इतनी छोटी और हिफ़्ज़ का यह आलम कि हारून रशीद ने पाँच जगहों से सुना, उस बच्चे ने ठीक-ठीक सुना दिया। पाँच साल का बच्चा जो गुड़ लेने पर बाप से झगड़ रहा है अल्लाह का शुक्र है कि 'अल्हम्दु' से लेकर 'वन्नास' तक क़ुरआन का हाफ़िज़ है। यह क़ुरआन का मौजिज़ा नहीं तो और क्या है। इतनी छोटी उम्र के बच्चे भी हाफ़िज़ और इतनी बड़ी उम्र के बूढ़े भी क़ुरआन के हाफ़िज़ हैं। यह ऐजाज़ सिर्फ़ इसी किताब का है।

3. तिलावत की कसरत

इस किताब की जितनी कसरत से तिलावत की गई है दुनिया इतनी तिलावत किसी और किताब की नहीं की गई। लिहाज़ा इमाम आज़म रह० के बारे में या किसी और बुज़ुर्ग के बारे में

मंक़ूल है कि अपनी वफ़ात से पहले अपने बेटे को बुलाकर मकान के एक कोने में ले गए और फ़रमाया बेटा इस जगह पर गुनाह न करना मैंने इस जगह पर छः हज़ार बार क़ुरआन मजीद पूरा किया है। इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रह० रमज़ानुल मुबारक में तिरेसठ बार क़ुरआन पूरा करते थे। तीस दिन में, तीस रात में और तीन तरावीह में। कुछ लोगों को क्योंकि इमाम आज़म रह० से बिला वजह का बैर है। वे इस बात पर बड़ा ऐतिराज़ करते हैं कि जी देखो. तिरेसठ (63) क़ुरआन कौन पढ़ सकता है। यह तो दूर के ज़माने की बात है आइए हम आपको क़रीब के ज़माने के बड़ों का अमल पेश करते हैं। हज़रत शेख़ुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़क्रिया रह० ने अपनी ज़िम्मेदारी पर जो किताब लिखवाई उसका नाम 'यादे अय्याम' है। उसमें फ़रमाते हैं कि रमज़ान में जो पारा मैंने तरावीह में सुनाना होता था, दिन में उसे तीस बार पढ़ लिया करता था।

فاولئك ابائی فجئنی بمثلهم　　　اذا جمعتنا یا جریر المجامع

बुक आफ रिकार्ड इन्साइक्लोपिडिया आफ़ ब्रिटानिका में पढ़ा की तुर्की के एक अब्दुल्लाह नाम के आदमी ने तीस आदमियों की मौजूदगी में आठ घंटों में क़ुरआन पाक पढ़ा मगर हमारे मुल्क में रिकार्ड इससे ज़्यादा बेहतर है। एक बार बन्नू के दीनी मदरसे में हाज़िरी हुई। वहाँ एक आलिम बड़े मुत्तक़ी परहेज़गार और अल्लाह वाले इंसान हैं और इस आजिज़ से मुहब्बत का ताल्लुक़ रखते हैं। उनके मदरसे में ज़ब्ते क़ुरआन के लिए गरदान बड़ी मज़बूत और मशहूर है। मैंने उनकी शोहरत का सबब पूछा तो कहने लगे हम

मेहनत इतनी करवाते हैं कि पूरा क़ुरआन अच्छी तरह याद हो जाता है। मैंने पूछा कि इम्तिहान कैसे लेते हैं? कहने लगे हमारा तो यह उसूल है कि हम पाँच उस्ताद बैठ जाते हैं और बच्चे से कहते हैं कि पूरा क़ुरआन सुनाओ। आसान टैस्ट है। क़ुरआन सुनाने में जितनी जगह ग़लती होती है या अटकन पेश आती है। अटकन कहते हैं रवानी में पढ़ते-पढ़ते बंदा अटक जाए तो फिर दोबारा पढ़ते हैं। वे उस्ताद ग़लती भी लिखते हैं और अटकन भी लिखते हैं और वक़्त भी नोट करते हैं। उन्होंने मुझे एक बच्चा दिखाया जिसके रिकार्ड में लिखा था कि उस बच्चे ने पाँच उस्तादों की मौजूदगी में छः घंटे और पैंतीस मिनट में इस तरह क़ुरआन सुनाया कि न कोई मुशाबा लगा, न कोई अटकन पेश आई। सुब्हानअल्लाह! यह भी क़ुरआन का मौजिज़ा है। यह क़ारियों का कमाल नहीं है यह क़ुरआन का कमाल है कि इतने अच्छे अंदाज़ में पढ़ा जाता है।

अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम से इल्ज़ामों को दूर करने वाली किताब

अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम पर जो इल्ज़ाम लगाए गए अल्लाह तआला ने इस किताब के ज़रिए उन इल्ज़ामों के जवाबात दे दिए। क़ौम ने हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम पर इल्ज़ाम लगाया, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को भी निशाना बनाया गया। इस किताब के ज़रिए कुफ़्फ़ार के इल्ज़ामों और एतिराज़ों क़ी क़लई खोल दी गई। यहाँ तक कि एक झूठे ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर कुछ बातें कीं। अल्लाह तआला ने अपने

महबूब को तसल्ली दी और इल्ज़ाम लगाने वाले की अवक़ात भी खोल दी।

ولا تطع کل حلاف مهین ० هماز مشآء' بنمیم०

مناع للخير معتد اثيم ० عتل 'بعد ذلك زنيم ०

आप किसी ऐसे शख़्स के कहने में न आएं जो बहुत क़स्में खाने वाले ज़लील अवक़ात है, ताना आमेज़ शरारतें करने वाला, चुग़लियाँ लिए फिरने वाला, माल में बुख़्ल करने वाला, हद से बढ़ा हुआ बदकार, सख़्त ख़ू इसके आलावा वह बदज़ात है।

क़ुव्वते इस्तिदलाल में बेमिसाल

यह किताब दलील की क़ुव्वत में भी बेजोड़ है। ऐसा दलीलें कि अक़्ल दंग रह जाए। ﴿فبهت الذی کفر﴾ यक़ीन करो बड़े-बड़े कुफ़्फ़ार इस क़ुरआन के जवाब से आजिज़ आ गए। यह अल्लाह का कलाम है, शाहाना कलाम है। तिलावत के दौरान अंदाज़ बयान बताता है, यह शाहाना कलाम है। ﴿هو الذی خلق من الماء بشرا﴾ अंदाज़ तो देखो! कैसा शाहाना है ﴿فجعله نسبا صهرا و کان ربك قدیرا﴾ क्या अजीब कलाम है। एक-एक बोल दिल में उतर जाता है, कैसी अज़मत है तो क़ुव्वते इस्तिदलाल में भी इसका कोई जोड़ नहीं। ﴿کیف تکفرون بالله﴾ कैसी ठोस बात है। यह अंदाज़ सिर्फ़ अल्लाह तआला ही इख़्तियार फ़रमा सकते हैं। ऐसी ठोस बात जिसमें कमज़ोरी का कोई हिस्सा ही नहीं है।

کیف تکفرون بالله و کنتم امواتا فاحیاکم ثم

یمیتکم ثم یحییکم ثم الیه ترجعون०

महबूब को तसल्ली दी और इल्ज़ाम लगाने वाले की अवक़ात भी खोल दी।

ولا تطع کل حلاف مهین○ هماز مشآء' بنمیم○

منـاع للخیر معتد اثیم ○ عتل 'بعد ذٰلك زنیم ○

आप किसी ऐसे शख़्स के कहने में न आएं जो बहुत क़स्में खाने वाले ज़लील अवक़ात है, ताना आमेज़ शरारतें करने वाला, चुग़लियाँ लिए फिरने वाला, माल में बुख़्ल करने वाला, हद से बढ़ा हुआ बदकार, सख़्त ख़ू इसके आलावा वह बदज़ात है।

क़ुव्वते इस्तिदलाल में बेमिसाल

यह किताब दलील की क़ुव्वत में भी बेजोड़ है। ऐसा दलीलें कि अक़्ल दंग रह जाए। ﴿فبهت الذی کفر﴾ यक़ीन करो बड़े-बड़े कुफ़्फ़ार इस क़ुरआन के जवाब से आजिज़ आ गए। यह अल्लाह का कलाम है, शाहाना कलाम है। तिलावत के दौरान अंदाज़ बयान बताता है, यह शाहाना कलाम है। ﴿هو الذی خلق من الماء بشرا﴾ अंदाज़ तो देखो! कैसा शाहाना है ﴿فجعله نسبا وصهرا وكان ربك قديرا﴾ क्या अजीब कलाम है। एक-एक बोल दिल में उतर जाता है, कैसी अज़मत है तो क़ुव्वते इस्तिदलाल में भी इसका कोई जोड़ नहीं। ﴿كيف تكفرون بالله﴾ कैसी ठोस बात है। यह अंदाज़ सिर्फ़ अल्लाह तआला ही इख़्तियार फ़रमा सकते हैं। ऐसी ठोस बात जिसमें कमज़ोरी का कोई हिस्सा ही नहीं है।

کیف تکفرون باللہ و کنتم امواتا فاحیاکم ثم

یمیتکم ثم یحییکم ثم الیه ترجعون○

दिल बहलाने और ग़मख़्वारी करने वाली किताब

परेशान हाल और ग़मज़दों को तसल्ली देने वाली किताब है। और तो और अल्लाह तआला के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस किताब के पढ़ने से तसल्ली मिल जाती थी ﴿كذلك لنثبت به فؤادك﴾ फ़रमाया कि मेरे महबूब! हम थोड़ा-थोड़ा क़ुरआन इसलिए नाज़िल करते हैं ताकि आपको तसल्ली मिल जाए। यह दिलों को तसल्ली देने वाली किताब है। कभी आप बड़े ग़मज़दा हों तो यह नुस्ख़ा आज़मा कर देखें। मेरे दोस्तो! आप अगर अपने कारोबार की वजह से परेशान हों या अपने घर में किसी के रवैय्ये की वजह से परेशान हों तो आप इस हालत में अल्लाह के क़ुरआन को पढ़ना शुरू कर दें। कुछ सफ़्हे पढ़ने के बाद आपको यह किताब सकून मुहैय्या कर देगी। आपके तमाम ग़म ग़लत हो जाएंगे। हमारे बुज़ुर्ग इसे रात की तन्हाईयों में पढ़ते थे और सकून हासिल करते थे। आप भी इसे पढ़िए दिलों को तसल्ली मिलेगी।

7. इस किताब के अजाएबात कभी ख़त्म नहीं होते

इस किताब के अजाएबात कभी ख़त्म नहीं होते। मुफ़स्सिरीन सारी उम्र मुफ़स्सिरीन इस किताब के समुंदर में ग़ोता मारते रहे। हर दफ़ा उन्हें नए-नए मोती मिलते रहे मगर वे इसके तमाम राज़ और भेदों का इहाता न कर सके। इसमें हर बंदे को अपने फ़न की बातें नज़र आती हैं। मसलन एक आदमी अगर डाक्टर है तो उसे उसे डाक्टरी की बातें नज़र आएंगी। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि हम ने इंसान को पैदा फ़रमाया ﴿فجعلناه سميعا بصيرا﴾ समीअ

बांधते हैं। उसने कहा लोहे के टुकड़े से मुराद लोहे के सरिए हैं। अजी सरिए का ज़िक्र क़ुरआन में है। एक बार गुलशन हबीब कराची स्टील मिल में बयान था। उन्होंने ऊपर लिखा हुआ था ﴿وانزلنا الحديد فيه باس شديد.﴾ अब हदीद वालों को क़ुरआन में भी हदीद नज़र आ गया, सुब्हानअल्ला।

एक रियाज़ी (गणित) के प्रोफ़ेसर कहने लगे जमा, घटाव और ज़र्ब (गुणा) का तसव्वुर क़ुरआन पाक ने दिया। सूरः कहफ़ में है ﴿وازدادوا تسعا﴾ तीन सौ और नौ ज़्यादा कर लो यानी जमा कर लो। इसी तरह हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बारे में फ़रमाया ﴿الا خمسين عاما﴾ कि हज़ार में से पचास को कम कर लो। यह घटाने का तसव्वुर है। इसी तरह ज़र्ब का तसव्वुर भी क़ुरआन पाक में है। फ़रमाया,

﴿والله يضعف لمن يشاء بغير حساب.﴾

अल्लाह तआला जिस चीज़ को चाहता है बेहिसाब कई गुना कर देता है।

बाहर के मुल्कों में क्योंकि उनवान भी इसी तरह के होते हैं। साइंसदानों से वास्ता पड़ता है और साइंसदानों को जवाब देना होता है। एक बार एक साइंसदान कहने लगा कि हमने क़ुरआन मजीद में ऐटम और माल्युकोल का तसव्वुर भी ढूंढ लिया है।

इस किताब के अजाएबात कभी ख़त्म नहीं होंगे। पढ़ने वाले पढ़ते रहेंगे, ग़ौर करने वाले ग़ौर करते रहेंगे, तलब वाले क़ुरआन के मोतियों और हीरों से झोलियाँ भरते रहेंगे। अपनी ज़िंदगियाँ गुज़ारकर जाते रहेंगे और यह समुंदर की तरह बहता रहेगा।

8. उलमा के दिल इससे कभी नहीं भरते

उलमा के दिल इससे कभी नहीं भरते हैं। क़ुरआन एक ऐसी किताब है कि उसे जितना पढ़ोगे, ज़ौक़ व शौक़ उतना ही बढ़ेगा। लिहाज़ा यह दुनिया की वह किताब है जिससे उलमा के दिल कभी सैराब नहीं होते। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इस किताब के पढ़ने, समझने और अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

(आमीन सुम्मा आमीन)

﴿وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمين﴾

पैग़म्बर-ए-इंक़लाब

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

الحمد لله و كفى و سلام على عباده الذين اصطفىٰ اما بعد

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم

بسم الله الرحمٰن الرحيم

لقد من الله على المؤمنين اذ بعث فيهم رسولا. وقال الله تعالى في مقام اخر لقد كان لكم في رسول الله اسوة حسنة. وقال رسول الله صلى الله عليه وسلم انما بعثت معلما. او كما قال عليه الصلوة والسلام. سبحان ربك رب العزه عما يصفون وسلام على المرسلين. والحمد لله رب العالمين.

ख़ुदा के बाद तू ही बुज़ुर्ग

रबीउल अव्वल के महीने में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी के कई पहलुओं को उजागर किया जाता है। कहीं पर विलादत बसआदत के तज़्किरे होते हैं, कहीं पर इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तज़्किरे होते हैं। कहीं रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत का मफ़हूम बयान किया जाता है, किसी जगह अख़्लाक़े नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़िक्र किया जाता है, कहीं पर आपकी मुबारक

तालीमात के बारे में तफ़्सीलें बताई जाती हैं। गोया कहने वाले के सामने एक समुन्दर होता है जिसमें से वह कुछ चुल्लू भर लेता है। मगर किसी भी तारीफ़ करने वाले ने आपकी तारीफ़ का हक़ अदा न किया। बस इतना कहकर बात को पूरा कर दिया कि–

बाद अज़ ख़ुदा बुज़ुर्ग तूई क़िस्सा मुख़्तसर

वैसे भी जिस ज़ात की तारीफ़ें ख़ुद परवरदिगार ने की हों, जिनकी अज़मतों की गवाही क़ुरआन मजीद ने दी हो कि ﴿ورفعنا لك ذكرك﴾ तो हम जैसे तालिब इल्म उस हस्ती की तारीफ़ कर सकते हैं।

तर्जुमा : ऐ प्यारे! आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अगर हम हज़ार बार भी अपने मुँह को मुश्क व गुलाब के साथ धोया जाए तो हम जैसों के लिए फिर भी आपका नाम लेना बेअदबी में शामिल है।

इंटरनेट पर इस्लाम के ख़िलाफ़ प्रोपेगंडा

आजकी इस महफ़िल में अंग्रेज़ी लिखे-पढ़े हज़रात के बारे कुछ बातें अर्ज़ की जाएंगी। उनके ज़हनों में क्या-क्या सवालात घूमते रहे होते हैं और वे जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत तैय्यबा को पढ़ते हैं तो किस अंदाज़ में उसे देख रहे होते हैं। हमारे अक्सर नौजवान आजकल इंटरनेट की वजह से कुफ़्फ़ार और मुशिरकीन के कुछ ऐसे मज़मून भी पढ़ लेते हैं जिनमें नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ाते तैय्यबा के बारे में अजीब व ग़रीब बेबुनियाद मालूमात होती हैं।

हिंदुओं का प्रोपेगंडा

कल एक नौजवान कंप्युटर से एक पुलिंदा निकालकर लाए और कहा कि हमारे पड़ौसी मुल्क से किसी हिंदू ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में फ़लां-फ़लां बातें कही हैं जिनको पढ़कर हम परेशान हो चुके हैं। लिहाज़ा हमें उनके जवाब इनायत फ़रमाएं। वही सवाल आज के बयान की बुनियाद बन गया। इस सिलसिले में आज सिर्फ़ वे बातें बताई जाएंगी कि अगर ज़िंदगी में कभी किसी काफ़िर से बात करनी पड़े तो आप ऐसी दलीलें दे सकें जो वज़नी हों और उनको तोड़ना किसी आम आदमी के बस की बात ही न हो। ऐसी ठोस और पक्की बातें होंगी जो कहने वाले के दिल को भी सकून दें और जब कही जाएं तो ﴿فبهت الذی کفر﴾ वाला मामला पेश आए। इसलिए नक़ली दलाइल के बजाए अक़्ली दलाइल दिए जाएंगे। इस हवाले से आज का यह बयान आपकी तवज्जेह का हक़दार है।

दुनिया का जुग़राफ़ियाई (भुगोलिक) दिल

अरब के टापू को जब दुनिया के नक़्शे पर देखा जाता है तो तीन तरफ़ से पानी के ज़रिए बक़िया ज़मीन से कटा हुआ नज़र आता है और चौथी तरफ़ से बक़िया ज़मीन से जुड़ा हुआ नज़र आता है। जिस तरह इंसान के सीने में दिल लटक रहा होता है। अगर आप दुनिया का नक़्शा सामने रखकर ग़ौर करें तो अरब का टापू आपको दुनिया का जुग़राफ़ियाई दिल नज़र आएगा। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपने महबूब को ज़मीन के इस हिस्से में भेजा।

अरब में रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के भेजने की वजहें

इस जगह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भेजने की कई वजहें हैं:-

बहादुर लोगों का ख़ित्ता

इस ख़ित्ते ने कभी बहार न देखी थी जबकि इसके आसपास के मुल्कों में तहज़ीब भी थी, तमद्दुन भी था, तालीम भी थी और ज़िंदगी गुज़ारने की सहूलतें भी थीं। एक तरफ़ आपको कैसरे रोम की सलतनत नज़र आएगी तो दूसरी तरफ़ फ़ारस में भी आपको एक मज़बूत हकूमत नज़र आएगी। हब्शा और यमन में आम लोग क़ानून के मुवाफ़िक़ ज़िंदगी गुज़ारते थे। उनके पास दुनिया की सहूलतों की बहुतात थी लेकिन जब अरब के लोगों पर नज़र डाली जाए तो वह एक जुदा दुनिया नज़र आती है। वे लोग क़बीलों में बंटे हुए थे। जिसकी लाठी उसकी भैंस वाला मामला था। ज़ुल्म का दौर दौरा था। समाज के मुख़्तलिफ़ लोगों के हक़ दबाए जा रहे थे। कुछ लोग जो चाहते थे वह कर गुज़रते थे। न औरत के हक़ों का लिहाज़ रखा जाता था और न ही ग़रीब और कमज़ोर की फ़रियाद सुनी जाती थी। ताक़त के बल-बूते पर मसाइल का हल पेश किया जाता था। इल्म से दूर जिहालत की ज़िंदगी थी। क़रीब के बड़े-बड़े मुल्कों के बादाशाह अरब की इस ज़मीन पर हुकूमत करना भी पसंद नहीं करते थे। उनको इस ज़मीन के ख़ित्ते से कोई दिलचस्पी न थी क्योंकि वे समझते थे कि

यहां के लोग अखड़ हैं, लड़ाकू हैं, क़ानून को क़ानून नहीं समझते। वहां की ज़मीन बंजर है, कुछ नहीं उपजाती। कुछ पहाड़ी इलाक़ा है वह भी वीरान है और बक़िया सारा रेगिस्तान है जहां मीलों रेत ही रेत नज़र आती है। लिहाज़ा उन बादशाहों ने अरब के लोगों पर छोड़ा हुआ था। इसलिए इस इलाक़े में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भेजने की पहली वजह यह थी कि वहां के लोग बड़ी जुर्रत वाले थे, हां और ना के बीच कोई तीसरी चीज़ नहीं जानते थे। अगर वे किसी बार इत्तेफ़ाक़ कर लेते तो फिर भरपूर हिमायत करते और मुख़ालिफ़त करते तो डटकर मुख़ालिफ़ होते। गोया वे दोस्त होते थे या दुश्मन। ऐसे खरे लोग इस बात इस बात के ज़्यादा हक़दार थे कि अल्लाह के महबूब को भेजा जाए ताकि अगर इन ज़िद्दी लोगों ने बात को मान लिया और इस बात पर जम गए तो फिर बाक़ी दुनिया के लोगों से उनके लिए बात मनवाना आसान हो जाएगा। यूं समझिए कि सारी दुनिया में वे सबसे ज़्यादा सरकश लोग थे।

जब अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपने महबूब को इस जगह भेजा तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आकर सदाक़त के बीज बोए, 'वही' की बारिश उतरी और फिर उस ज़मीन से इल्म व अख़लाक़ का वह गुलशन खिला कि दुनिया ने ऐसी बहार पहले कभी नहीं देखी होगी।

वसाईल (साधनों) की कमी का ख़ित्ता

इस इलाक़े के अंदर बहुत गर्मी का मौसम था, पानी और दूसरे वसाइल की कमी थी। जिसकी वजह से वहां ज़िंदगी गुज़ारने के

मुश्किल हालात मौजूद थे। लिहाज़ा दूसरी हिकमत यह थी कि जब इस दुश्वार गुज़ार ज़िंदगी में रहकर दीन क़ुबूल करेंगे और फिर दीन का पैग़ाम लेकर निकलेंगे तो बक़िया आसान ज़िंदगी गुज़ारने वाले इलाक़ों में इनके लिए जाना आसान हो जाएगा क्योंकि उन्होंने मुश्किल हालात देखे होंगे इसलिए ज़िंदगी के हर हाल में वह दीन का पैग़ाम पहुँचाने वाले बन जाएंगे।

बातचीत करने में माहिर लोगों का ख़ित्ता

अरब के लोगों को अपनी ज़बानदानी पर बड़ा नाज़ था। वे अपने आपको अरब कहते थे और बाक़ी सबको अजम कहते थे। और अरबी ज़बान की फ़ुसाहत व बलाग़त भी अपनी जगह मानी हुई है। लिहाज़ा तीसरी वजह यह थी कि उन लोगों को अपने दिल की बात को बयान करने का मलका हासिल था। इसलिए अल्लाह तआला ने अपने महबूब को भेजा कि जब ये लोग मेरे दीन का पैग़ाम क़ुबूल कर लेंगे तो ये फिर दीन की तरफ़ बुलाने वाले बेहतरीन दाअई बनकर पूरी दुनिया में सफ़र करेंगे।

हीरे की तरह चमकदार ज़िंदगी

मेरे आक़ा की रोशन ज़िंदगी के जिस पहलू को देखा जाए उससे इंसान को हिदायत मिलती है। हीरे की यह सिफ़्त होती है कि जिस तरफ़ से भी उसे देखें वह चमकता हुआ नज़र आता है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़िंदगी भी ऐसी है कि जिस रुख़ से देखें आपको हर रुख़ से आपकी मुबारक ज़िंदगी चमकती हुई नज़र आएगी।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस दुनिया में एक ऐसे वक़्त में तशरीफ़ लाए जो तारीख़ी एतिबार से पूरी रोशनी का वक़्त था। यह एक बड़ा अहम नुक्ता है। जब भी किसी से बात कर रहे हों, उसको यह बात खोलकर बयान करें कि मेरे आक़ा और मेरे सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वह हस्ती हैं कि जिन्होंने तारीख़ की पूरी रोशनी में के अंदर ज़िंदगी गुज़ारी। आप ईसाईयों के पास जाइए और उनसे कहिए कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हालात ज़िंदगी बताएं। वे आपको कुछ वाक़िआत के सिवा कुछ नहीं बता सकेंगे। यहूदियों से हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बारे में पूछिए कि वह कब पैदा हुए, उन्होंने बचपन कैसे गुज़ारा, लड़कपन कैसे गुज़रा, जवानी कैसे गुज़ारी, उनकी इज़दिवाजी ज़िंदगी कैसी थी, उनके पैग़ाम क्या थे, उनकी वफ़ात कब हुई तो आपको उनकी ज़िंदगी के रात-दिन की तफ़्सील कहीं नहीं मिलेगी। आज यहूदी व ईसाईयों का दामन इस नेमत से ख़ाली है।

आप उनके सामने बैठकर उनसे पूछिए कि अगर आज आप के समाज में पैदा होने वाला बच्चा यह चाहे कि मैं ज़िंदगी का हर काम अपने पैग़म्बर के तरीक़े के मुताबिक़ करना चाहता हूँ तो क्या उसको रहनुमाई के लिए तालीमात मौजूद हैं? वे इस बात को तसलीम करेंगे कि हमारे पास इसकी कोई तफ़्सीलात मौजूद नहीं हैं।

जब उनके पास कुछ नहीं है तो आइए हम आपको एक ऐसी हस्ती के बारे में बताएं कि जिनकी पैदाइश मुबारक से लेकर

दुनिया से पर्दा फरमाने तक ज़िंदगी की एक-एक बात को किताबों के अंदर महफ़ूज़ कर दिया गया है। लिहाज़ा मुहद्दिसीन ने वह कमाल कर दिखाया कि जहाँ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शमाईल बयान करने का वक़्त आया तो उन्होंने बयान किया, आपके आबरू मुबारक कैसे थे, आपकी पलकें मुबारक कैसी थीं, आँखें कैसी थीं। नाफ़ मुबारक कैसी थी, आपकी दाढ़ी मुबारक कैसी थी, आपका सीना मुबारक कैसा था, आपके हाथ मुबारक कैसे थे, आपके पाँव मुबारक कैसे थे, आप जूता मुबारक किस तरह पहनते थे, आपका अमामा मुबारक कैसा था, आपकी सवारियाँ कैसी थीं, उन सवारियों के नाम क्या थे, जिस बिस्तर पर लेटते थे उसका तकिया कैसा था, आपका कंबल कैसा था, आपकी चादर कैसी थी, आपकी इज़्दिवाजी ज़िंदगी कैसी थी, आपकी मस्जिद की ज़िंदगी कैसी थी, आप मैदाने जिहाद में खड़ें है तो वहाँ की तफ़्सीलात क्या हैं। आपकी निजी ज़िंदगी कैसी थी, आपकी इज्तिमाई ज़िंदगी कैसी थी। गर्ज़ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी के जिस पहलू को भी मालूम करना चाहें वे तमाम मालूमात हमारे पास मौजूद हैं। इसलिए आज का बच्चा अगर चाहे कि बच्चों के बारे में अल्लाह के महबूब ने तालीमात क्या दीं तो वे भी मिलेंगी। आज का नौजवान अगर चाहे कि जवानों के बारे में अल्लाह के महबूब ने क्या तालीमात दीं तो भी आपको मिलेंगी, मज़दूर अगर चाहे तो उसको भी तालीमात मिलेंगी और अगर कारख़ानेदार चाहे तो उसे भी तालीमात मिलेंगी। ग़र्ज़ समाज का कोई आदमी ऐसा नहीं कि जिसको नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी में तालीमात न

मिलती हों। जिस हस्ती से क़दम-क़दम पर रहनुमाई मिल रही हो हम उस हस्ती की पैरवी क्यों न करें।

जब हमने यह बात कुछ ईसाईयों से पूछी तो वे कहने लगे कि जी आप ठीक कह रहे हैं। हमारे पास यक़ीनन बाइबल (इंजील) के सिवा कुछ नहीं है और हम अपने जेसिस क्रिस्ट के बारे में तफ़्सीलात नहीं बता सकते। फिर हमने कहा कि अगर आप यह पूछना चाहें कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दाँत मुबारक कैसे थे तो हम वे भी बता सकते हैं, अगर यह पूछना चाहें तो कि दाढ़ी मुबारक में कितने बाल सफ़ेद थे तो किताबों में उनको भी लिख दिया गया है, अगर मालूम करना चाहें कि मोहरे नबुव्वत कैसी थी तो यह भी लिखा जा चुका है, अगर यह मालूम करना चाहें कि आपकी ऊँटनी के क्या-क्या नाम थे तो मुहद्दिसीन ने उनको भी किताबों में महफ़ूज़ फ़रमा दिया। ऐसी (Documented Life) तारीख़ी ज़िंदगी आज तक काएनात में किसी ने नहीं गुज़ारी। बड़े-बड़े जरनैल गुज़रे, बादशाह गुज़रे, फ़लास्फ़र गुज़रे, लाइए किसी को जिसकी ज़िंदगी की इतनी मालूमात किताबों में मौजूद हों। सिर्फ़ हमारे पाक पैग़म्बार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वह मुबारक ज़ात है जिनकी ज़िदगी की इतनी तफ़्सीलात किताबों में महफ़ूज़ हैं। लाखों हदीसें आपकी ज़िंदगी के किसी न किसी हिस्से पर रोशनी डालती नज़र आती हैं। लिहाज़ा यह उसूली बात याद रखिए कि अल्लाह तआला ने हमें ऐसे प्यारे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अता किए हैं कि जिनकी ज़िंदगी की तमाम तालीमात आज भी महफ़ूज़ हैं और क़यामत तक महफ़ूज़ रहेंगी।

फ़्रांसीसी लेखक 'हैटी' का मानना

हैटी एक फ़्रांसीसी लेखक है। वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में लिखता है–

He was born in the full light of history.

कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तारीख़ की पूरी रोशनी के अंदर तशरीफ़ लाए। जब कुफ़्र ने ख़ुद तसलीम कर लिया तो मालूम हुआ कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ात को यह एक ऐसी फ़ज़ीलत हासिल हो जो किसी दूसरी हस्ती को हासिल नहीं है।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में माइकल हार्ट का ख़िराजे तहसीन

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऐसे लोगों में तशरीफ़ लाए जिनके पास तालीम नहीं थी। इर्शाद बारी ताअला है ﴿هو الذى بعث الاميين رسولا.﴾ वह ज़ात जिसने अनपढ़ों में अपने रसूल को भेजा। और रसूल भी वह तशरीफ़ लाए जो ज़िंदगी में किसी इंसान के सामने शार्गिद बनकर नहीं बैठे। आपने पंद्रह-बीस साल पहले एक किताब (The Hundred) का ज़िक्र सुना होगा। वह किताब माइकल हार्ट ने लिखी। वह ईसाई है। उसने अपने ख़्याल में तारीख़ में सौ ऐसी हस्तियों को गिना जिन्होंने तारीख़ में अपनी अनमिट छाप छोड़ी। उसमें उसने साइंसदानो के हालाते ज़िंदगी लिखे। कुछ अंबिया अलैहिमुस्सलाम का भी तज़्किरा किया, कई जरनैलों के बारे में भी लिखा लेकिन उन सौ हस्तियों में उसने

सबसे पहले नबी आख़िरुज़्ज़मां सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुबारक तज़्किरा किया। और यह तज़्किरा करते हुए उसने एक फ़िक़्रा लिखा–

My choice fo Muhnımad to lead the ranking of the most influetcial personalities in the history will surprise some of the readers.

कि मैंने इन सौ आदमियों का तज़्किरा किया जिन्होंने तारीख़ को सबसे ज़्यादा मुतास्सिर किया उनमें सबसे पहले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तज़्किरा क्या है। इससे कुछ लोग हैरान होंगे लेकिन इसकी मेरे पास एक ठोस दलील मौजूद है कि काएनात में जितनी भी हस्तियाँ आयीं अगर उनके ज़िंदगी के हालात पढ़ते हैं तो वे हमें अपने बचपन और लड़कपन में किसी न किसी उस्ताद के सामने बैठ तालीम पाते नज़र आते हैं, अपने वक़्त के बेहतरीन तालीमी इदारों के अंदर एक तालिब इल्म बनकर जाते हुए नज़र आते हैं। जिससे पता चलता है कि इन सब हस्तियों ने पहले रिवाजी तालीम हासिल की और फिर उसको बुनियाद बनाकर उन्होंने अपनी ज़िंदगियों में कुछ अच्छे काम कर दिखाए। दुनिया में सिर्फ़ एक हस्ती लेकिन ऐसी नज़र आती है कि जिसकी ज़िंदगी की तफ़्सीलात को देखा जाए तो वह पूरी ज़िंदगी किसी के सामने शार्गिद बनकर बैठी नज़र नहीं आती। वह हस्ती मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। यह वह हस्ती हैं जिन्होंने दुनिया से इल्म नहीं पाया बल्कि दुनिया को ऐसा इल्म दिया कि उस जैसा इल्म न पहले किसी ने दिया और बाद में कोई देगा। लिहाज़ा इस पर मेरे दिल ने चाहा कि जिस हस्ती ने ऐसी इल्मी ख़िदमत अंजाम

दी हों मैं ग़ैर मज़हब का आदमी होने के बावजूद उनको तारीख़ की सबसे आला हस्तियों में पहला दर्जा अता करता हूँ।

मेरे दोस्तो! जब काफ़िर अपनी ज़बान से यह कहने पर मजबूर हो जाते हैं तो मालूम हुआ कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यक़ीनन इंसानियत के ऊपर बड़ा एहसान फ़रमाया है।

इंगलिश राइटर 'गबन' का ऐतिराफ़

जब आप दुनिया में तशरीफ़ लाए उस वक़्त अरब के लोग तहज़ीब व तमद्दुन के लिहाज़ से बहुत ही गिरी हुई हालत में थे। गबन एक इंगलिश लेखक है। वह उनके हालात के बारे में लिखता है—

At that time Arabia was the most degraded nation of the world.

उस वक़्त अरब के लोग दुनिया की एक ज़लील क़ौम थे। आप ने ऐसे अनपढ़ों में अपनी मुबारक ज़िंदगी गुज़ारी। वह अबू बक्र व उमर, वह उस्मान व अली, वह अली व ज़ुबैर, वह अब्दुर्रहमान बिन औफ़, वह साअद और सईद रज़ियल्लाहु अन्हुम वही हज़रात हैं आपके गिर्द दायरा बनाकर बैठते थे और आपकी तालीमात हासिल करते थे। दीनी तालीमात हासिल करके इन लोगों में इतनी बुलंदी पैदा हुई, इतना इल्म आया, इतनी मारिफ़त आई, जहाँगीरी और जहाँबानी के उन्होंने इतने राज़ सीखे कि जब आप सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम इस दुनिया से तशरीफ़ ले गए तो इसी राइटर को लिखना पड़ा कि—

Right after the death of Muhammad, the land of Arabia become the nursary of the Heroes.

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पर्दा फ़रमाने के बाद अरब की ज़मीन तो हीरो (नायकों) की नर्सरी बन गई। इससे पता चलता है कि मोहसिने इंसानियत ने उनको ऐसी तालीमात दी थीं जिन पर अमल करने से अल्लाह तआला ने उनको इतनी अज़मत नसीब फ़रमा दी थी।

मक़्बूलियत हासिल करने के तीन रास्ते

पहला रास्ता

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम दुनिया में तशरीफ़ लाए तो इलाक़े के अंदर कमज़ोरी की हालत था। ज़ुल्म का हर तरफ़ दौर दौरा था। इन बुरे हालात में आप को मक़्बूलियत हासिल करने के लिए बड़े आसान तरीक़े हासिल थे। मिसाल के तौर पर अगर अल्लाह के महबूब खड़े होकर यह नारा लगाते कि लोगो! हम मालदारी के लिहाज़ पर बहुत पीछे हैं, न हमें खाने को मिलता है और न हमें पहनने को मिलता है। लिहाज़ा हमारे कारोबारी हालात अच्छे होने चाहिए। आइए मैं आपको रोटी, कपड़े और मकान के हासिल करने का तरीक़ा बताता हूँ। यह ऐसा नारा था कि एक नारे के ऊपर पूरे के पूरे अरब के लोग इकट्ठे हो जाते मगर आपने यह रास्ता नहीं अपनाया।

दूसरा रास्ता

दूसरा रास्ता यह था कि अगर यह कह दिया जाता कि इस

धरती के ऊपर चारों तरफ़ ज़ुल्म नज़र आता है। लोगो! सकून वाली ज़िंदगी हासिल करने के लिए आओ, मैं तुम्हें इस समाज से अंदर अद्ल व इंसाफ़ क़ायम करके दिखाता हूँ तो जो लोग ज़ुल्म से तंग आ चुके थे। वे आपकी आवाज़ पर आपके गिर्द जमा हो जाते मगर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ये आसान रास्ता भी नहीं अपनाया।

तीसरी रास्ता

एक तीसरा रास्ता यह मुमकिन था कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह इर्शाद फ़रमाते, अबर लोगों दुनिया में दांए बांए बड़ी तहज़ीब दार हुकूमतें हैं। आओ हम एक ज़बान बोलने वाले हैं, हम ज़बान की बुनियाद पर एक हो जाएं। इस तरह दुनिया के अंदर क़ैसर व किसरा की तरह अरबों की भी एक बड़ी हुकूमत हो जाएगी। यह एक ऐसा लिसानी (भाषा का) नारा था कि जिसको सुनकर अरब के सब लोग एक झंडे के नीचे जमा हो जाते मगर अल्लाह के महबूब ने इस आसान रास्ते को भी नहीं अपनाया।

मुश्किल रास्ते को अपनाना

आपने बल्कि उस रास्ते को चुना जो सबसे दुश्वार गुज़ार था। वह यह था कि परवरदिगार की जानिब से पैग़ाम आया कि ऐ मेरे महबूब! कह दीजिए कि नहीं कोई माबूद सिवाए अल्लाह के। चुनाँचे अल्लाह के महबूब ने अरबों को जमा करके फ़रमाया, ﴿يا ايها الناس قولوا لا اله الا الله تفلحون﴾ तुम सबके सब कहो कि एक

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, तुम फ़लाह पा जाओगे। आप का कहना ही था कि पूरे अरब के लोग आपके मुख़ालिफ़ बन गए। मगर आपने जमाव का पहाड़ बनकर परेशानियाँ उठायीं और दुनिया से शिर्क और बुतपरस्ती का नाम व निशान मिटा दिया।

परेशानियाँ उठाने पर ईनाम

तंगियों से गुज़रने के बाद इंसान को आसानियाँ मिलती हैं। अल्लाह के महबूब ने क़ुर्बानियाँ दीं और इंसानियत पर ऐसा एहसान किया कि जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का में जीत के अंदाज़ में दाख़िल हुए तो वही लोग जो मुशरिक थे अब एक अल्लाह तआला की फ़रमांबरदारी करने पर तैयार हो चुके थे। लिहाज़ा फ़तेह मक्का के वक़्त लोग फ़ौज दर फ़ौज इस्लाम में दाख़िल हुए। इसके अलावा आख़िरी हज के मौक़ पर साफ़ तौर पर इर्शाद फ़रमा दिया कि आज के बाद इस ज़मीन पर शैतान और बुतों की पूजा नहीं की जाएगी। अल्लाह का शुक्र है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उस जगह को शिर्क और बुतपरस्ती से हमेशा के लिए महफ़ूज़ कर दिया।

ज़िंदगी की शुरूआत में परेशानियाँ

जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया में तश्रीफ़ लाए तो आपको शुरूआत से ही अजीब हालात पेश आए। अभी अपनी माँ के पेट में थे कि वालिद मोहतरम के साए से महरूम हो गए। फिर आपकी उम्र अभी छः साल की थी कि आपकी वालिदा माजिदा भी दुनिया से तश्रीफ़ ले गयीं। फिर आठ साल की उम्र

थी कि आपके दादा भी दुनिया से तशरीफ़ ले गए। फिर आपके चचा आपके सरपरस्त बने। आपने पच्चीस बरस की उम्र में निकाह फ़रमाया और शादी-शुदा ज़िंदगी शुरू की। फिर एक वक़्त वह भी आया कि आपकी बीवी दुनिया से चली गयीं। आपके चचा भी दुनिया से चले गए। आप देखिए कि शुरू से आख़िर तक इंसान के जो सहारे होते हैं, वे सब सहारे टूटते रहे। क्यों? इसलिए कि इसकी वजह थी कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपने पैग़म्बार अलैहिस्सलातु वस्सलाम को तालीम देकर भेजा था कि मेरे पैग़म्बर! दुनिया को बता दो कि मख़्लूक़ के सहारे ढूंढने वालो! आओ एक परवरदिगार का सहारा पा लो। वह परवरदिगार तुम्हारे लिए काफ़ी है।

मेरे दोस्तो! अगर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुद सहारों के ज़रिए परवरिश पाते तो लोग एतिराज़ कर सकते थे कि ख़ुद सहारों के ज़रिए परवरिश पाने वाले दुनिया को सहारों की मुख़ालिफ़त कैसे बता सकते हैं। लिहाज़ा आपने दुनिया वालों को सबक दिया कि देखो अगर मैं यतीम होकर दुनिया में एक इंक़लाबी ज़िंदगी गुज़ार सकता हूँ तो आइए उम्र भर मख़्लूक़ के सहारे ढूंढने के बजाए एक परवरदिगार को सहारा बना लो। वह परवरदिगार तुम्हें दुनिया में भी कामयाबी देगा और आख़िरत में भी कामयाबी अता फ़रमाएगा।

समाजिक बायकाट

जब शोबा अबि तालिब में आपको भेजा गया तो उस वक़्त सारे क़ुरैश ने मिलकर एक समझौता किया इनके साथ पूरे तौर पर

समाजिक बायकाट किया जाए। न कोई चीज़ ली जाए और न ही कोई चीज़ दी जाएगी। अब सोचिए कि जब कौम इस बात के ऊपर इत्तेफ़ाक़ कर ले कि हम सबने एका करके इनकी मुख़ालिफ़त करनी है तो इंसान को कितनी परेशानियों से गुज़रना पड़ता है।

मुसीबतों की हद

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि इस दुनिया के अंदर दीन की ख़ातिर जितनी तकलीफ़ें मुझे दी गयीं उतनी तकलीफ़ें किसी और पैग़म्बर को नहीं दी गयीं। आपको इस दुनिया में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का पैग़ाम पहुँचाने के लिए इतनी तकलीफ़ें उठानी पड़ीं मगर अल्लाह के महबूब ने अल्लाह का पैग़ाम इंसानों के दिलों तक पहुँचाया और उनकी ज़िंदगियों को बदलकर रख दिया।

सबसे बेहतर गवाह

एक उसूली बात याद रखिए कि जो इंसान कोई पैग़ाम देता है तो क़रीबी लोग उसके सबसे बेहतर गवाह हुआ करते हैं कि भाई तुम अपनी ज़िंदगी में किस हद तक सच्चे हो। इसीलिए आमतौर पर कहा जाता है कि अगर किसी इंसान की ज़िंदगी के बारे में पूछना हो तो उसकी बीवी से पूछिए, नौकर से पूछिए, दोस्त से पूछिए, पड़ौसी से पूछिए क्योंकि ये वे लोग हैं जो उसके अंदर के हालात को समझा करते हैं।

क़रीबी लोगों का इस्लाम क़ुबूल करना

जब मेरे पाक पैग़म्बर पर पहली 'वही' नाज़िल हुई तो आपने

घर में आकर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का पैग़ाम सुनाया। हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा वह हस्ती हैं कि जिन्होंने नबुव्वत की ज़बान से सबसे पहले क़ुरआन सुना। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम से सबसे पहले एक औरत ने क़ुरआन सुना, किसी मर्द को सबसे पहले यह इज़्ज़त नसीब नहीं हुई। आपकी बीवी मोहतरमा जैसी आपसे पैग़ामे खुदावंदी सुनती हैं उसी वक़्त इस्लाम क़ुबूल कर लेती हैं। फिर आप के ग़ुलाम हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस्लाम क़ुबूल किया। आपके दोस्तों में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु बड़े क़रीब दोस्त थे। उन्होंने जब वह पैग़ाम सुना तो उन्होंने दीन को क़ुबूल कर लिया। आपकी मुबारक ज़िंदगी में वह चुम्बक जैसी कशिश थी कि आपकी ज़बान से नबुव्वत का दावा होना था कि सब क़रीबी लोगों ने उस पर क़ुबूल करने के साथ सर झुका दिया क्योंकि सच्चाई और अमानत की वजह से उनके दिल आपकी अज़्मतों की गवाहियाँ दे रहे थे। हज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़िंदगी को इस अंदाज़ से भी देखा जाए तो आपको इस रुख़ से भी खुसूसियत हासिल है।

निजी और समाजी ज़िंदगी प्रचार का हुक्म

आदमी घर में ज़िंदगी गुज़ारते हुए अपनी बीवी को आमतौर पर यह कहता है कि मेरे और आपके मसाइल अपनी जगह हैं लेकिन हम जब कमरे से बाहर निकलें तो हम अपनी बातें दूसरों के न किया करें। आपको दुनिया का हर इंसान अपनी बीवी को यही कहता नज़र आएगा, कुछ को छोड़कर। मगर पूरी इंसानियत के इतिहास में अल्लाह के महबूब की हस्ती ऐसी भी नज़र आएगी

जो अपनी बीवी को भी हुक्म दे रही है कि तुम मुझे जो कुछ करता हुआ देख रही हो तुम्हारे ऊपर फ़र्ज़ है कि इन तालीमात को दूसरी औरतों तक पहुँचाओ। जब आप मस्जिद की ज़िंदगी में आते हैं तो वहाँ भी यही तालीम देते हैं कि तुम जो कुछ मुझसे सुन रहे हो या जो कुछ मुझे करता देख रहे हो इन तालीमात को लोगों तक पहुँचाओ। सुब्हानअल्लाह! मेरे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी इतनी निखरी हुई ज़िंदगी थी कि आपने अपनी समाजिक ज़िंदगी को भी बयान करने का हुक्म दिया और अपनी निजी ज़िंदगी को भी लोगों के सामने खोलने का हुक्म फ़रमाया। यह मामूली बात नहीं होती बल्कि बहुत मुश्किल काम होता है। लिहाज़ा आपकी पाकीज़ा बीवियों ने आपकी ज़िंदगी में अपनी तन्हाई के लम्हों में जो कुछ करते हुए देखा था जब उनसे औरतें सवाल पूछती थीं तो वे उन तालीमात को दूसरों के सामने पेश कर दिया करती थीं।

नबुव्वत की बेहतरीन दलील

जब पहले अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम तशरीफ़ लाए तो उनकी क़ौमों ने उनकी नबुव्वत की दलीलें मांगी। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने असा (छड़ी) को बड़ा साँप बनाकर दिखा दिया। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने मुर्दे को ज़िंदा करके दिखा दिया। अलग-अलग नबियों ने अपनी नबुव्वत की गवाही के लिए अलग-अलग मौजिज़े पेश किए मगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वह मुबारक हस्ती हैं कि जब आपसे पूछा गया कि आपकी नबुव्वत की दलील क्या है? तो आपने इर्शाद फ़रमाया :

﴿لقد لبثت فيكم عمرا من قبله افلا تعقلون.﴾

अरे कम अक़्लो! क्या मैं अब तक की ज़िंदगी तुम्हारे बीच नहीं गुज़ार चुका।

तुम्हारे बीच मेरी गुज़री हुई ज़िंदगी इतनी पाकीज़ा है कि यही मेरी नबुव्वत की सबसे बड़ी दलील है। सुब्हानअल्लाह! वह कितनी पाकीज़ा ज़िंदगी होगी। वह फूल की पत्तियों से ज़्यादा नज़ाकत वाली ज़िंदगी थी, वह दूध से भी ज़्यादा सफ़ेदी वाली रखने वाली ज़िंदगी थी। इतनी पाकीज़ा ज़िंदगी थी कि किसी काफ़िर को सारी ज़िंदगी आपकी तरफ़ उंगली उठाने की हिम्मत न हुई। अक़्ल वालों के लिए वाक़ई यह बड़ी बात होती है। अच्छा किरदार देखने में तो एक मामूली चीज़ है मगर उसके ज़रिए इंसान बड़ी-बड़ी क़ीमती चीज़ों को ख़रीद लेता है। लोग तलवार का मुक़ाबला तो कर लिया करते हैं मगर किरदार का मुक़ाबला कोई नहीं कर सकता।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के करीमाना अख़्लाक़

देखिए कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मजनूं कहा गया, शायर कहा गया, जादूगर कहा गया, मगर किसी ने आप पर कोई अख़्लाक़ी बोहतान नहीं बांधा। कोई ऐसा न था जो यह कहता कि मैंने तो आपकी ज़िंदगी में वह बात ऐसे देखी है। न सिर्फ़ आपने खुद ही इनमें प्यारे अख़्लाक़ दिखाए बल्कि आपने दुनिया को भी अख़्लाक़ का ही दर्स दिया। आपने अपने अच्छे

अख़्लाक़ के ज़रिए उन लोगों के दिलों को जीता। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़्लाक़ ही ऐसे थे जो आपके जितना क़रीब हो जाता था उतना ही वह आपका जानिसार परवाना बनता जाता था। इसीलिए हदीस पाक में लिखा है कि ﴿فتحت المدينة بالاخلاق﴾ कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अख़्लाक़ के ज़रिए मदीना मुनव्वरा जीता था।

अख़्लाक़ की तलवार

किसी मुल्क में एक साहब ऐतिराज़ करने लगे कि आपके पैग़म्बर ने तो तलवार के ज़ोर पर दीन को फैला दिया था। इस आजिज़ ने पूछा वह कैसे? कहने लगे, वह ऐसे कि उनके चारों तरफ़ कुछ लड़ाकू लोग जमा हो गए थे, वे तलवार के धनी थे। इसलिए उन्होंने तलवार के ज़ोर पर पूरी दुनिया के अंदर ज़बरदस्ती इस्लाम पहुँचाया। मैंने उनसे दो सवाल पूछे। एक सवाल तो यह पूछा कि उन तलवार के धनी लोगों को आपके पास किस तलवार ने इकट्ठा किया था? कहने लगे, जी वह तो उनके अख़्लाक़ से मुतास्सिर हुए थे। मैंने कहा कि यह मेरे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़्लाक़ की तलवार थी जिसने हक़ीक़त में दुनिया को जीता था।

मैंने दूसरा सवाल यह पूछा कि आप जो कह रहे हैं कि आपके के लड़ाकू साथियों ने तलवार के ज़रिए दुनिया को जीता तो बताइए तलवार खुद चलती है या तलवार को चलाने वाले हाथ होते हैं? कहने लगे कि तलवार खुद तो नहीं चलती उसको चलाने वाले हाथ होते हैं। मैंने कहा उन हाथों को भी किसी ने जीता

हुआ था या वे हाथ भी किसी के हाथ में आ चुके थे। उन हाथों में आकर उनमें वह जुर्रत, वह बहादुरी, वह दिलेरी, वह जहाँगीरी, वह जहाँबानी और किरदार की मज़बूती आ गई थी कि उन हाथों ने जब तलवार उठाई तो पूरी दुनिया में इस्लाम की शमें जला दीं।

उम्मे जमील रज़ियल्लाहु अन्हा का इस्लाम क़ुबूल करना

देखिए कि उम्मे जमील एक औरत नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ऊपर कूड़ा करकट डालती थी। वह बीमार हो गई। उसकी बेटी तीमारदारी करती थी। उनके घर में कोई मर्द नहीं था। उनका हाल पूछने वाला कोई नहीं था। वह माँ-बेटी ज़िंदगी का तकलीफ़ वाला वक़्त गुज़ार रही थीं। क़रीब के लोगों के पास फ़ुर्सत ही नहीं थी कि इन ग़रीबों के खाने या दवाई के बारे में पूछ लेते। इस परेशानी के आलम में कई दिन गुज़र गए।

एक बार बेटी अपनी बेटी माँ के पास बैठी कुछ बातें कर रही थी मगर माँ कमज़ोरी की वजह से जवाब भी नहीं दे पाती थी। इतने में दरवाज़े पर दस्तक हुई। माँ ने कहा, बेटी! जाओ देखो कौन है? बेटी दरवाज़े पर आई और दरवाज़ा खोलकर बाहर देखा। बाहर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, अबू बक्र और उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के साथ खड़े हैं। वह देखकर बड़ी हैरान हुई। वह भागकर माँ के पास गई और कहा जिन पर तू रोज़ाना कूड़ा करकट फेंकती थी आज वह बदला लेने के लिए अपने दोस्तों को लेकर आ गए हैं। हमारे पल्ले तो कुछ है नहीं, वे तो हमें गला

घोंटकर जान से मार देंगे। इस बीमार बुढ़िया के दिल पर बहुत परेशानी गुज़री। कहने लगी अब हम क्या कर सकते हैं। पूछो वे हमें क्या कहते हैं। हम रहम की अपील कर लेंगे। बहरहाल उनको आने दो, हम माफ़ी मांग लेंगे।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अंदर तशरीफ़ लाए। आपने देखा कि उम्मे जमील परेशान हाल होकर बिस्तर पर बैठी हैं, निगाहें नीची हैं, पूछती हैं, ऐ मुहम्मद! आज आप यहाँ कैसे तशरीफ़ लाए हैं? आप फ़रमाते हैं कि कई दिनों से तूने मेरे ऊपर कूड़ा-करकट नहीं डाला था। मैंने लोगों से पूछा कि इसकी वजह क्या है? लोगों ने मुझे बताया कि जो औरत आप पर कूड़ा-करकट डालती थी वह अब बीमार हो चुकी है। लिहाज़ा मैं तेरी बीमार पुर्सी के लिए तेरे पास चलकर आया हूँ। अब बताइए कि इस औरत के दिल में क्या ही मुहब्बत पैदा हुई होगी। वह कूड़ा-करकट डालने वाली औरत ठीक उसी वक़्त कलिमा पढ़कर मुसलमान हो गई।

तीन सौ आदमियों का इस्लाम क़ुबूल करना

हदीस पाक में आया है कि एक देहाती मस्जिदे नबवी में आकर बैठा। थोड़ी देर के बाद उसको हाजत से फ़ारिग़ होने की ज़रूरत महसूस हुई। उसने मस्जिद के सहन में एक तरफ़ जाकर पेशाब करना शुरू कर दिया। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने देखा तो उन्होंने उसको मना किया कि तुम यह क्या कर रहे हो? नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा तो सहाबा किराम से मना फ़रमाया कि जो यह कर रहा है उसे इस हाल में

मत रोको। जब वह फ़ारिग़ होकर आपके पास आया तो आपने इर्शाद फ़रमाया कि यह मस्जिद अल्लाह का घर है। अल्लाह तआला अज़मतों वाले हैं और अज़मतों वाले अल्लाह पाक के घर को भी पाकीज़ा रखना चाहिए। आपने इतने प्यार से उसे समझाया कि वह बड़ा मुतास्सिर हुआ। थोड़ी देर के बाद वह कहने लगा कि मैं वापस जाना चाहता हूँ। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसको पहनने के लिए एक लिबास भी हदिये के तौर पर दिया और जब वह पैदल जाने लगा तो अल्लाह के महबूब ने अपनी सवारी भी उसको हदिए के तौर पर दे दी। उसने लिबास पहना और सवारी पर सवार होकर अपने घर की तरफ़ रवाना हो गया।

जब वह अपने क़बीले के लोगों में दाख़िल होने लगा तो आबादी के बाहर से ही पुकारने लगा, ओ मेरे भाई! ओ मेरे मामू! ओ मेरे चाचा! ज़रा मेरी बात सुनना। लोग भागकर इकठ्ठे हो गए कि क्या बात है। पूछा कि तुम्हें क्या हो गया? कहने लगा, मैंने एक ऐसे सिखाने वाले को देखा जो यक़ीनन एक बड़ी शफ़ीक़ हस्ती और अख़्लाक़ वाली हस्ती है। मैंने इतना बड़ा जुर्म किया कि अल्लाह के घर में गंदगी फैला दी मगर उन्होंने मुझे डांटा नहीं, मारा नहीं, गाली नहीं दी, उन्होंने मुझ से सख़्ती नहीं की बल्कि मुझे प्यार से समझा दिया और फिर मुझे आते हुए ये हदिए और तोहफ़े देकर भेजा। सब लोग कहने लगे कि अच्छा, हम भी जाकर उनको देखेंगें। लिहाज़ा उस क़बीले के तीन सौ आदमी उसके साथ आए और इस्लाम के दामन में दाख़िल हो गए। *(सुब्हानअल्लाह)*

फ़तेह मक्का के दिन आम माफ़ी का ऐलान

आइए, अपने महबूब की ज़िंदगी की अज़्मतों को देखना है तो फ़तेह मक्का के वाक़िए को देख लीजिए। रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़ातेह बनकर मक्का में दाख़िल हो रहे हैं। आप के पास आदमियों की ताक़त मौजूद है, ग़लबे की हालत में हैं। आज वक़्त है कि काफ़िरों से बदला चुकाएं। उन्होंने जो आपके ऊपर ज़ुल्म किए थे उनका बदला लें लेकिन आप आजिज़ी के साथ मक्का में दाख़िल होते हैं।

रात का वक़्त था। मक्का की एक औरतें परेशान थीं कि आज हमारे घरों में पता नहीं क्या नक़्शे पेश किए जाएं। उनको याद आ रहा था कि उन्होंने बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ क्या सलूक किया था, उन्होंने सुमैय्या रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ क्या सलूक किया था। उन्होंने दूसरे सहाबा किराम के साथ क्या-क्या ज़ुल्म किए थे। आज उनको पुरानी यादें सता रही थीं।

रात का काफ़ी वक़्त गुज़र चुका था। आख़िरी पहर आ गया। आख़िरकार औरतों ने अपने मर्दों से कहा, न गलियों में कोई शोर है न ही कोई हमारे घरों तक पहुँचा है और न ही किसी आदमी की चीख़ पुकार की आवाज़ आई। ये मुसलमान हैं कहाँ और क्या कर रहे हैं? मर्दों ने कहा कि वे आपस में मश्वरा कर रहे होंगे। औरतों ने कहा, जाकर देखो तो सही, कहीं ऐसा न हो कि अचानक हमला कर दें, कहीं हमारी इज़्ज़तें न लूट लें, कहीं हमें जान से न मार दें, पता नहीं कि हम कल की सुबह देखेंगे भी या नहीं। मर्द बाहर निकलते हैं। क्या देखते हैं कि गलियाँ सुनसान

पड़ी हैं। वे हैरान हैं कि मुसलमान कहाँ चले गए। आख़िर वे अल्लाह के घर की तरफ़ चलकर आते हैं। वहाँ पहुँचकर तवाफ़ करने की जगह पर एक अजीब मंज़र देखा। सहाबा किराम में कुछ तवाफ़ कर रहे हैं, कोई हजूरे असवद को बोसे दे रहे हैं, कोई मुक़ामे इब्राहीम पर सज्दे में है। सबकी आँखों में आँसू देखे, सबकी ज़बानों से अल्लाह की तारीफ़ें सुनीं।

जब उन्होंने यह देखा कि ये सब एक अल्लाह की इबादत में लगे हुए हैं तो वे समझ गए कि ये दुनिया के बदले चुकाने वाले लोग नहीं हैं बल्कि अल्लाह के सामने सर झुकाने वाले लोग हैं। लिहाज़ा सुबह की रोशनी क्या आई कि अल्लाह तआला ने उनके दिलों में ईमान की रोशनी पैदा फ़रमा दी। सुबह हुई तो वह हिंदा जो हज़रत अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का दिल व जिगर चबाने वाली थी वह आ रही है और कहती है कि ऐ अल्लाह के महबूब! मुझे मुसलमान बना लीजिए। ऐ हिंदा! तूने तो हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के दिल व जिगर का हार पहना था, आज तू बाज़ी क्यों हार गई? किस लिए चलकर आई है? तू क़समें खाती थी कि बदले लूंगी। आज तुझे किस चीज़ ने हरा दिया? वह मेरे महबूब को अख़्लाक़ और सहाबा किराम का किरदार था जो उनके दिलों का घायल कर चुका था। लिहाज़ा वह कलिमा पढ़कर मुसलमान हो गई।

अरे कलिमा पढ़ने वालों ने बाद में यह कहा कि हम काफ़िर थे। उस वक़्त हमें आपसे इतनी नफ़रत और दुश्मनी थी कि दुनिया में किसी से नहीं थी। आज कलिमा पढ़ लिया है, आज जितनी मुहब्बत आपसे है इतनी किसी और से नहीं है। नबी

अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के माफ़ करने और दरगुज़र करने का मामला ऐसा था कि आपने मक्का के पूरे के पूरे लोगों के दिल जीत लिए। आज दुनिया अगर अपने दुश्मन पर क़ाबू पाती है तो भला क्या करती है? ज़रा उन तहज़ीब वाले मुल्कों के हालात पढ़कर देख लीजिए कि जब उन तहज़ीब व तमद्दुन का प्रचार करने वालों ने किसी मुल्क को जीता या दुश्मन को जीता तो उन्होंने दुश्मनों के साथ क्या सलूक अपनाया। मेरे महबूब को अल्लाह तआला ने जीत अता फ़रमाई तो आपने माफ़ी और दरगुज़र का कैसा सबक़ दिया, सुब्हानअल्लाह।

उस्मान बिन तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु का इस्लाम क़ुबूल करना

मक्का मुकर्रमा में बैतुल्लाह शरीफ़ की कुंजी उस्मान बिन तल्हा के पास थी। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का जीता तो आपने उस्मान को बुलाकर उनसे वह कुंजी ली और बैतुल्लाह शरीफ़ का दरवाज़ा खोला। आप अंदर तशरीफ़ ले गए। आपने अल्लाह की इबादत की। सब सहाबा किराम को मालूम था कि आज बैतुल्लाह शरीफ़ की चाबी हमारे महबूब के हाथ में है। जब आप बैतुल्लाह शरीफ़ से बाहर तशरीफ़ लाए तो सब सहाबा किराम मुन्तज़िर थे कि आप बैतुल्लाह शरीफ़ की चाबी अपने गुलामों से किसी गुलाम के हाथ में दे देंगे। मगर आप उसी उस्मान को बुलाते हैं और फ़रमाते हैं कि यह कुंजी पहले भी तुम्हारे हाथ में थी, अब यह कुंजी फिर मैं तुम्हारे हाथ में देता हूँ। यह कुंजी क़यामत तक तुम्हारी नस्ल में रहेगी और तुमसे कोई

नहीं लेगा मगर वही जो ज़ालिम होगा।

उस वक़्त सहाबा किराम हैरान रह गए कि अल्लाह के महबूब ने अद्ल व इंसाफ़ का क्या मंज़र पेश किया। क़ुरैशी हैरान हैं, हाश्मी हैरान हैं, दूसरे क़बीलों के लोग हैरान हैं कि जिसको चाहते कुंजी दे सकते थे मगर नहीं, जिस से ली थी अल्लाह के महबूब ने ग़लबा हासिल होने के बाद कुंजी उसी के हाथ में दे दी। उसके हाथ में कुंजी का आना था कि उसने कहा, ऐ अल्लाह के महबूब! कुंजी तो आपने पकड़ा दी, अब मुझे अपना दामन भी पकड़ा दीजिए ताकि काबे का परवरदिगार भी मुझसे राज़ी हो जाए तो आपने उसको कलिमा पढ़ाकर इस्लाम में दाख़िल फ़रमा लिया।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का इस्लाम क़ुबूल करना

दुनिया कहती है कि लड़ाकू लोगों के हाथों इस्लाम फैला। अरे! बताओ तो सही कि उमर बिन ख़त्ताब तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को शहीद करने के लिए निकले थे मगर थोड़ी ही देर के बाद महबूब के सामने सर झुकाए हुए क्यों नज़र आते हैं? किस तलवार ने उनको मजबूर किया था कि आओ और इस यतीमे मक्का के सामने तुम अपना सर झुकाकर बैठो? मालूम हुआ कि बात दरअसल कुछ और थी।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु का इस्लाम क़ुबूल करना

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद की ज़िंदगी को क्यों नहीं देखते।

इतने बड़े सिपाह सालार आकर अदब से बैठ जाते हैं। मालूम हुआ कि इतने बड़े लड़ाकू, हिम्मत वाले और दिलेर इंसान को नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने अगर घुटने टिकाकर बैठने का शर्फ़ मिला तो सिर्फ़ आपके अख़्लाक़ की वजह से मिला है क्योंकि यह एक ऐसे बहादुर इंसान थे जो तलवारों से मानने वाले नहीं थे। वह तो तलवार के धनी थे और टकरा जाया करते थे मगर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का किरदार जब सामने आया तो उनकी तलवारें बेकार हो गयीं। उन्होंने तलवारें पीछे रख दीं और आकर महबूब के दामन को पकड़ लिया। सुहैल बिन उमर दौसी और समामा बिन असाल रज़ियल्लाहु अन्हुमा को भी मेरे महबूब के अख़्लाक़ की तलवार ने मुसलमान किया।

इस्लाम की कशिश

दुनिया में कुछ ऐसे इलाक़े भी थे जिनमें कोई मुसलमान फ़ौजी नहीं गया मगर वहाँ भी इस्लाम की शमा रोशन हो गई। हीरा के अंदर कोई मुसलमान फ़ौजी न गया, हब्शा, बहरीन और हैफ़ा के अंदर कोई फ़ौजी न गया मगर वहाँ के लोगों ने भी इस्लाम क़ुबूल कर लिया। लिहाज़ा मालूम हुआ कि जंगजू अभी नहीं पहुँचे थे कि इस्लाम पहले पहुँच गया। इस्लाम में ऐसा खिचाव, ऐसी कशिश, ऐसी चुम्बकपना था कि उसने लोगों के दिलों को अपनी तरफ़ मायल कर लिया था। सुब्हानअल्लाह! यह किरदार की अज़मत थी कि जिसने पूरी दुनिया को क़ाबू कर लिया।

मुहम्मदी इंक़लाब की खुसूसियतें

दुनिया में अब तक कई इंक़लाब हो चुके हैं। एक इंक़लाब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी बर्पा किया था। इस मुहम्मदी इंक़लाब की कुछ अहम खुसूसियतें ज़हन में बिठा लीजिए। वे पक्की बातें हैं जिनका कुफ़्र की दुनिया के पास कोई जवाब नहीं होगा। जब आप उनसे पूछेंगे तो वे अपनी बग़लें झांकना शुरू कर देंगे।

1. कम ज़रियों के साथ इंक़लाब

सबसे पहली खुसूसियत तो यह थी कि अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहिव वसल्लम ने दुनिया के अंदर इतना बड़ा इंक़लाब इतने कम ज़रियों के साथ पैदा किया कि पूरी दुनिया में इतने कम वसीलों के साथ इतना बड़ा इंक़लाब बर्पा नहीं किया गया। यह मामूली बात नहीं बल्कि यह खुदाई मदद की दलील है।

2. कम वक़्त में इंक़लाब

इंक़लाब पैदा करने के लिए वक़्त की ज़रूरत होती है। मुहम्मदी इंक़लाब की दूसरी ख़ूबी यह है कि सिर्फ़ दस साल की मुद्दत में बर्पा हो गया। जब आप मदीना मुनव्वरा तश्रीफ़ ले गए असल में उस वक़्त खुलकर काम करने की शुरूआत हुई। सिर्फ़ दस साल की मुद्दत में क़ुरआन भी मुकम्मल नाज़िल हो चुका था और फिर इस्लाम का पैग़ाम लेकर चल भी पड़े थे। इस थोड़ी मुद्दत में अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस दुनिया को इल्म व अख़्लाक़ का इंक़लाब बर्पा करके दिखा दिया।

इतने कम वक़्त में कोई भी इतना बड़ा इंक़लाब पैदा नहीं कर सकता। दस साल के थोड़े वक़्त में क़ौमों का रुख़ बदल देना कोई आसान बात नहीं है।

3. ग़ैर-ख़ूनी इंक़लाब

मुहम्मदी इंक़लाब की तीसरी ख़ासियत यह थी कि इस इंक़लाब के दौरान सबसे कम जानी नुक़सान हुआ। तारीख़ की किताबों में लिखा हुआ है कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की मुबारक ज़िंदगी में जितनी भी जंगें लड़ी गई हैं उनमें से मुसलमान शहीदों और क़त्ल होने वाले काफ़िरों की कुल तादाद 1062 लोगों की थी। इस एतिबार से आप इस इंक़लाब को ग़ैर ख़ूनी इंक़लाब कह सकते हैं।

मेरे दोस्तो! हमारा यह इस्लामी मुल्क है। इसमे अमन भी है मगर यहाँ पर भी आप देखें तो अलग-अगल शहरों में सैंकड़ों लोग क़त्ल हो चुके होंगे लेकिन मेरे महबूब ने पूरी दुनिया में दस साल में जो इंक़लाब पैदा किया है उसमें सिर्फ़ 1062 इंसान काम आए।

ग़ौर से सुनिए कि बग़दाद के अंदर हलाकू ख़ां ने भी इंक़लाब पर्बा किया था मगर एक दिन के अंदर दो लाख मुसलमानों का ख़ून बहाया गया। यह तो एक दिन की बात है और पूरे इंक़लाब में न मालूम कितने लाख मुसलमान काम आए थे। फ़्रांस के इंक़लाबा में 25 लाख इंसान काम आए थे। रशिया में कम्युनिज़्म का इंक़लाब आया और इंक़लाब के दौरान 40 लाख इंसानों को क़त्ल किया गया। पाकिस्तान के बनने में भी एक करोड़ इंसानों को जानें देना पड़ीं मगर मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

इतने कम जानी नुक़सान के साथ दुनिया को हिदायत का रास्ता दिखा दिया। पूरी दुनिया में इस इंक़लाब की मिसाल नहीं मिलती।

काफ़िरों का इक़रार

इस आजिज़ ने एक महफ़िल में काफ़िरों से कहा कि तुम बड़ी बातें करते हो कि हम दुनिया में यह भी इंक़लाब लाएंगे और वह इंक़लाब भी लाएंगे। एक इंक़लाब 1400 साल पहले भी आया था। बताओ कि इतने कम ज़रियों के साथ, इतने कम वक़्त में, इतने कम नुक़सान के साथ दुनिया में इतना बड़ा इंक़लाब आ सकता है?

मेरे सामने काफ़िरों के बड़े-बड़े गुरू बैठे हुए थे। उन सबने कहा कि इतने कम वसीलों के साथ इतने कम वक़्त में, इतनी कम ख़ून-ख़राबे के साथ इतना बड़ा इंक़लाब पर्बा करना तो किसी के बस की बात नहीं। जब उन्होंने इस बात को क़ुबूल किया तो मैंने उन्हें कहा कि फिर तुम क्यों तसलीम नहीं करते कि यह काम करके दिखाने वाले अल्लाह के पैग़म्बर हैं। मगर वे कहने लगे कि हम आपके पैग़म्बर की तो बड़ी इज़्ज़त करते हैं, हमें उनसे तो कोई शिकायत नहीं, हमें तो मौजूदा दौर के मुसलमानों से गिला है। यह कुफ़्र का एक दावा था। इस बात को टालने के लिए उन्होंने मौजूदा मुसलमानों की ज़िंदगी पर कीचड़ उछालना शुरू कर दिया।

मेरे दोस्तो! नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की इतनी पाकीज़ा ज़िंदगी थी कि दुनिया के कुफ़्र को मानना पड़ा कि हमें आपकी ज़ात पर कोई गिला नहीं।

कामिल इंसान

एक और बात पर ग़ौर कीजिए। दुनिया के अंदर बड़े बड़े लोग आए। कोई जरनैल बना, कोई सिपाहसालार बना, कोई वक़्त का हुक्मुरान बना, कोई फ़लास्फ़र बना और कोई हकीमों (विद्वानों) में शामिल हुआ। इन सबने दुनिया में अपनी अज़मत का लोहा मनवाया। किसी ने साइंस के मैदान में, किसी ने शायरी और फ़लास्फ़ी के मैदान में, किसी ने लुग़त और अदब के मैदान में तारीख़ में अनमिट छाप छोड़ी। लेकिन जब उन सबकी ज़िंदगियों को मैं पढ़ता हूँ तो मुझे उन सबमें एक बात एक जैसी नज़र आती है। वह बात यह है कि अगर हमने किसी फ़ातेह की ज़िंदगी के हालात को पढ़ा तो सबसे आख़िर में यह बात पढ़ने को मिली कि उन्होंने तो और भी इलाक़ों को जीतना था मगर ज़िंदगी ने साथ न दिया और इलाक़ों को जीत न सके। मैंने बहुत से शायरों की ज़िंदगी को पढ़ा। उनमें हर एक के ज़िंदगी के हालात के आख़िर में ये अल्फ़ाज़ पढ़े कि उसने बहुत ही अच्छा कलाम कहा मगर ज़िंदगी ने वफ़ा न की वरना और अच्छे कलाम कह जाते। हमने साइंसदानों की ज़िंदगियों को पढ़ा। आख़िर में यही नज़र आया कि वह बड़े आला साइंसदान थे, आख़िरी उम्र में उन्होंने यह कमाल करके दिखा दिया, ज़िंदगी ने वफ़ा न की अगर और लम्बी ज़िंदगी मिलती तो वह और भी ज़्यादा साइंसी खोजें पेश कर जाते। इसी तरह हमने लेखकों के ज़िंदगी के हालात पढ़े। आख़िर में यही पढ़ने को मिला कि उन्होंने बहुत अच्छी अच्छी किताबें लिखीं ज़िंदगी ने वफ़ा न की वरना और भी बेहतरीन किताबें लिख लेते। इस तरह मशहूर हस्तियों की ज़िंदगी को भी

देखता हूँ कि मुझे अधूरी नज़र आती हैं क्योंकि यह बात कहना कि वक़्त ने मोहलत न दी वरना कुछ कर दिखा देते यह इस बात की दलील है कि लिखने वाला तसलीम कर रहा है कि वह काम अधूरा छोड़ कर चला गया। गोया किसी की ज़िंदगी में तक्मील नज़र नहीं आती।

लेकिन पूरी इंसानियत की पूरी तारीख़ में एक ऐसी हस्ती नज़र आती है कि जिन्होंने विदाई हज के मौक़े पर एक लाख पच्चीस हज़ार जानिसारों से पूछा, लोगो! बताओ मैं जिस पैग़ाम को लेकर आया था क्या मैंने वह पैग़ाम आप तक पहुँचा दिया? एक लाख पच्चीस हज़ार सहाबा किराम गवाही देते हैं कि आपने पैग़ाम पहुँचाने का हक़ अदा कर दिया है। आप अपनी उंगली आसमान की तरफ़ उठाते हैं और कहते हैं ﴿اللهم اشهد﴾ ऐ अल्लाह तू गवाह रहना। सुब्हानअल्लाह! पूरी तारीख़े इंसानियत में मुझे सिर्फ़ और सिर्फ़ अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी पूरी नज़र आती है। लिहाज़ा ऐसी हस्ती को अपना क़ायद क्यों न मानूं जिनकी कामिल और मुकम्मल ज़िंदगी मेरी आँखों के सामने है।

कामिल रहबर

मेरे दोस्तो! जब आदमी आँख उठाकर ऊपर देखता है तो उसे आसमान नज़र आता है। आप ज़मीन पर खड़े होकर ऊपर आँख उठाइए। आपको आसमान नज़र आएगा, आप समुंद्र में आँख ऊपर उठाइए आपको आसमान नज़र आएगा, आप पहाड़ की चोटी पर आँख ऊपर उठाइए आसमान नज़र आएगा, आप वीरानों में ऊपर आँख उठाकर देखें तो आपको आसमान नज़र आएगा,

रेगिस्तान में आंख ऊपर उठाएं तो आपको आसमान नज़र आएगा।

बिल्कुल इसी तरह जब मैं अमली ज़िंदगी की तरफ़ देखता हूँ तो मैं अपनी ज़िंदगी के किसी शोबे में रहमनुाई हासिल करने के लिए ज़रा निगाह उठाता हूँ तो मुझे नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़िंदगी आसमानी हिदायत की तरह नज़र आती है। मैं अगर जवानी में तालीम हासिल करना चाहूँ तो इस आसमान हिदायत से मुझे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जवानी नज़र आती है। यहाँ तक कि मुझे ज़िंदगी के जिस शोबे में रहबरी की ज़रूरत पड़ती है, मैं आँख उठाकर आसमाने हिदायत से वह तस्वीर देख लेता हूँ। सुब्हानअल्लाह! मेरे आक़ा की वह पाकीज़ा और कामिल ज़िंदगी है जिसने दुनिया के अंदर हर मैदान में इंसानियत को रहबरी अता फ़रमाई।

कामिल उस्ताद

मेरे दोस्तो! मज़हबी इदारों में शख़्सियत परस्ती के बजाए ख़ुदा परस्ती की बुनियाद किसने डाली। मेरे महबूब ने डाली। लिहाज़ा इर्शाद फ़रमाया :

﴿طاعة لمخلوق فی معصية الخالق﴾

ख़ालिक़ की नाफ़रमानी में मख़्लूक़ की इताअत नहीं की जाती।

एतिक़ादात के अंदर वहम परस्ती के बजाए हक़ीक़त की राह दिखाने वाले कौन हैं? वह मेरे आक़ा हैं। साइंस में फ़ितरत है की पूजा करने के बजाए उसको क़ाबू करने का दर्स देने वाले कौन हैं? वह मेरे आक़ा की बरकतों वाली ज़ात है। सियासत के मैदान

में नस्ली बादशाहत की बजाए अख़्लाक़ व सिफ़ात के एतिबार से आम लोगों में सबसे बेहतरीन को ख़लीफ़ा चुनने की तालीमात किसने दी? मेरे आक़ा ने दीं। इल्म की दुनिया में ख़्याल आराई की बजाए हक़ीक़त निगारी का दर्स किसने दिया? मेरे आक़ा ने दिया। समाज बनाने में ज़ुल्म के बजाए अद्ल को बुनियाद बनाने की तालीम किसने दी? मेरे आक़ा ने दी। मेरे आक़ा ही तो थे जिन्होंने पूरब व पश्चिम में इंक़लाब बर्पा कर दिया। आज दुनिया में जितनी तालीमात हैं वे सब की सब उसी आफ़ताबे हिदायत से फूटी हुई किरनें ही नज़र आती हैं, सुब्हानअल्लाह।

अदले नबवी काफ़िरों की नज़र में

पिछले दिनों अमरीका में यह बात बहुत मशहूर हुई कि वहाँ की सुप्रीम कोर्ट के अंदर उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तस्वीर बनाई। पूरी सूरत तो नहीं बनाई मगर ऐसे ही मोटा-मोटा रंग भरा। फिर उन्होंने उसके नीचे लिखा कि यह मुसलमानों के पैग़म्बर अलैहिस्सलातु वस्सलाम हैं। वहाँ के मुसलमानों को इसका बड़ा दुखः हुआ। उन्होंने सदर और सुप्रीम कोर्ट के जजों को ख़त लिखे कि तुमने यह तस्वीर क्यों बनाई है? ऐसा करने की इजाज़त नहीं है और इससे हमारे जज़्बात पर ठेस लग रही है। अमरीका के सदर ने उन ख़तों का जवाब दिया जो अख़बारों और दूसरे रिसालों में छपा। उसने यह वज़ाहत की कि यह हमारे मुल्क की सुप्रीम कोर्ट है, यह अदल व इंसाफ़ पर क़ायम है। हम चाहते हैं कि यहाँ पर हर बात इंसाफ़ के मुताबिक़ हो। हमने पूरी तारीख़ को उठाकर देखा कि दुनिया में इंसाफ़ की तालीम देने वाला कौन था? हमने मुसलमानों को देखा,

ग़ैर-मुस्लिमों को देखा, हद है कि पूरब से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण तक जितने इंसान दुनिया में पैदा हुए हमने उन सबकी ज़िंदगियों को पढ़ा। हमें पूरी इंसानियत में एक हस्ती नज़र आती है जिन्होंने अद्ल की तालीम दी है। हमने उनकी अज़मत को मानते हुए उनका नाम अपनी सुप्रीम कोर्ट में लिखा है। लोगो! दुनिया में जहाँ अद्ल की बात कही जाएगी, वहाँ हमारे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम लिया जाएगा, सुब्हानअल्लाह।

बर्तानिया और स्वीडन के शहज़ादों के ख़्यालात

मेरे प्यारे पैग़म्बर की मुबारक ज़िंदगी काफ़िरों के दिलों पर भी असर कर रही है। इसीलिए कभी बर्तानिया के शहज़ादे का बयान आता है कि मुसलमानों के पैग़म्बर से मुझे बड़ी रहबरी मिली है और कभी स्वीडन का शहज़ादा 120 मज़हबों को पढ़कर आख़िर इस्लाम क़ुबूल कर लेता है। हक़ीक़त यह है कि मेरे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी में वह कशिश है कि उसने ग़ैरों के दिलों को भी मुतास्सिर कर दिया।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सदाक़त अबू जहल की नज़र में

अबू जहल हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बदतरीन दुश्मन था। नबी अरकम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया मूसा अलैहिस्सलाम का फ़िरऔन छोटा था और मेरा फ़िरऔन (अबू जहल) बड़ा फ़िरऔन है। बदर के मैदान में एक काफ़िर ने अबू जहल से पूछा, ऐ अबु जहल! तुम्हारी अज़मत

को मैं जानता हूँ। तुम क़ुरैशियों के सरदार हो मगर सच्ची बात बताओ कि क्या तुम पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सच्चा समझते हो, या झूठा? कहने लगा कि मैं इस बात की गवाही देता हूँ कि वह सच्चा इंसान है और उसने कभी झूठ नहीं बोला। उसने कहा, जब तुम समझते हो कि वह सच्चा इंसान है तो उसके पैग़ाम को क़ुबूल क्यों नहीं कर लेते? कहने लगा इसमें मेरी सरदारी चली जाएगी। अरे! मेरे पैगम्बर के करीम अख़्लाक़ तो अबू जहल जैसे इस्लाम के दुश्मन के दिल को भी फ़तेह कर लिया था लेकिन जाहिलियत की बू की वजह से उसको ईमान की तौफ़ीक़ नसीब नहीं हुई। अरे! कुफ़्फ़ार के दिल भी मानते हैं मगर जिसे अल्लाह चाहता है हिदायत अता फ़रमा देता है।

हमारी ज़िम्मेदारी

हमें चाहिए कि हम अपने आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तालीमात को हासिल करें और उनके मुताबिक़ अपनी ज़िंदगी गुज़ारते चले जाएं क्योंकि—

मेरा क़ायद है वह जिंदगी पैग़ाम था जिसका
सदाक़त ज़ात थी जिसकी अमानत नाम था जिसका
वह रफ़्ता रफ़्ता जिसने क़ौम को मंज़िल अता कर दी
कली आग़ाज़ थी जिसकी चमन अंजाम था जिसका

जब आप तशरीफ़ लाए तो क़ौम यक़ीनन जिहालत की गहराईयों में गिरी पड़ी थी। आपने उस क़ौम के नौजवानों पर मेहनत फ़रमाई और जब वे अपने पाँव पर खड़े होकर पूरी दुनिया के

सामने गए तो—

चढ़ते सूरज से ताज मांगा समुंदरों से ख़िराज मांगा

को सच करते हुए अपनी अज़मत का लोहा मनवाया। आइए इस पैग़म्बरे इस्लाम की अज़मतों को सलाम करते हुए आपकी पाकीज़ा ज़िंदगी के मुताबिक़ हम अपने दिलों में एक अच्छी ज़िंदगी गुज़ारने का इरादा कर लें। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से दुआ है कि वह हमें भी पाकीज़ा ज़िंदगी अता फ़रमा दे, गुनाहों से ख़ाली और अच्छे अख़्लाक़ वाली ज़िंदगी अता फ़रमा दें। और अल्लाह तआला हमें अपने महबूब के नक़्शे-क़दम पर चलकर ज़िंदगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा दे, आमीन सुम्मा आमीन।

क़ुव्वते इश्क़ से हर पस्त का बाला कर दे
दहर में इस्मे मुहम्मद से उजाला कर दे

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمين﴾

निस्बत का मुक़ाम

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفى اما بعد

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم

بسم الله الرحمن الرحيم

افمن كان ميتا فاحييهٔ وجعلنا لهٔ نورا يمشي به في الناس

وقال رسول الله صلى الله عليه وسلم النور اذا دخل

الصدر انفتح ٥ سبحان ربك رب العزه عما يصفون

وسلام على المرسلين. والحمد لله رب العالمين.

आमाल की दो क़िस्में

आमाल की दो क़िस्में हैं, आमाले सालेहा और आमाले सय्यिआ। आमाले सालेहा अच्छो कामों को कहते हैं और आमाले सय्यिआ गुनाहों को कहते हैं। जो काम अल्लाह तआला के हुक्म के मुताबिक हो और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत के मुताबिक़ हो वह आमाले सालेह में शामिल है और जो कुछ उसके अलावा हो वह आमाले सय्यिआ में शामिल है।

बातिन पर आमाल के असरात

इंसान के बातिन पर आमाल के असरात पड़ते हैं। एक बार

एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु आकर नमाज़ में शरीक हो गए मगर वुज़ू करने में कुछ कमी रह गई थी। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सलाम फेरकर इर्शाद फ़रमाया, कौन है जिसकी वजह से हमारी नमाज़ के अंदर असर हुआ? मुहद्दिसीन ने यहाँ तक नतीजा निकाला है कि वुज़ू में कमी रह जाना एक ज़ाहिरी अमल था मगर उसका भी बातिन पर असर हुआ। अगर साथ वाले के अमल का इंसान के बातिन पर इतना असर होता है तो अगर इंसान का अपना अमल ख़राब होगा तो फिर उसके बातिन पर कितना बड़ा असर होगा।

गुनाहों की वजह से दिल काला हो जाना

हदीस पाक में आया है कि जब भी इंसान कोई गुनाह करता है तो उसके दिल पर एक स्याह दाग़ लग जाता है। अगर सच्ची तोबा कर ले तो मिट जाता है अगर तोबा न करे और दूसरा गुनाह कर ले तो दूसरा दाग़ लग जाता है। अगर बिल्कुल तोबा न करे तो यह स्याही गुनाहों के साथ-साथ इतनी बढ़ती चली जाती है कि उस इंसान का दिल स्याह हो जाता है। उसको ﴿رین قلب﴾ कहते हैं यानी दिल का ज़ंग, दिल की स्याही। क़ुरआन पाक से इसकी दलील मिलती है। इर्शादे ख़ुदावंदी है :

﴿كلا بل سكه ران على قلوبهم ما كانوا يكسبون﴾

उनकी बद आमालियों की वजह से उनके दिल पर ज़ंग लगा दिया गया है।

इस्तिग़फ़ार की कसरत की वजह से यह स्याही धुल जाती है

जबकि ग़फ़लत और गुनाहों से यह स्याही बढ़ती चली जाती है। जिस इंसान ने कलिमा नहीं पढ़ा उसका दिल बिल्कुल स्याह होता है और जिसने कलिमा पढ़ लिया है उसका दिल नूर से लबरेज़ हो जाता है।

कुफ़्र और ईमान अल्लाह तआला की नज़र में

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को कुफ़्र से ज़ाती अदावत है जबकि ईमान और मोमिन बंदों से अल्लाह तआला को मुहब्बत है। इसीलिए इर्शाद फ़रमाया ﴿الله ولي الذين آمنوا﴾ अल्लाह तआला दोस्त है ईमान वालों का। आदाबे शाहाना तो यही थे कि फ़रमाया जाता कि ईमान वाले हमारे दोस्त हैं मगर इस निस्बत को अपनी तरफ़ पसंद फ़रमाया। सुब्हानअल्लाह! बंदों पर इतने मेहरबान, इतने करीम और इतने रहीम कि निस्बत अपनी तरफ़ फ़रमाई। इस निस्बत की अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के यहाँ बड़ी क़ीमत है।

दो तरह की मख़्लूक़

अल्लाह तआला के हाँ मख़्लूक़ दो तरह की है। ﴿هو الذى خلقكم﴾ वह ज़ात जिसने तुम्हें पैदा किया ﴿فمنكم كافر و منكم مؤمن﴾ तुम में से काफ़िर भी हैं और तुम में से ईमान वाले भी हैं। गोया इस एतिबार से बंदों की तक़्सीम दो तरह से है। कुफ़्फ़ार के दिलों पर ज़ुलमत का यह आलम होता है कि क़ुरआन मजीद में उनके लिए एक अजीब मिसाल बयान फ़रमाई गई है

﴿في بحر لجي يغشه موج من فوقه موج من فوقه سحاب.﴾

समुंद्र में जब तूफ़ान आता है तो लहरों पर लहर पड़ रही होती है अगर उस वक़्त आसमान पर बादल भी हों तो समुंद्र की तह में अंधेरा होता है कि आदमी को अपना हाथ भी दिखाई नहीं देता। क़ुरआन ने कुफ़्फ़ार के दिलों की कैफ़ियत बयान करते हुए यही कहा कि उनकी मिसाल ऐसे है जैसे समुंद्र में लहरों के ऊपर लहरें आ रही हों। आसमान के ऊपर बादल हों फिर नीचे अगर कोई अपना हाथ निकाले ﴿لم يكد يرها﴾ वह कभी उसको देख नहीं पाता। किस लिए?

﴿ومن لم يجعل الله له نورا فما له من نور﴾

जिसके लिए अल्लाह तआला कोई नूर ही न बनाए फिर उसके लिए नूर नहीं होता।

निस्बत की लाज

मोहतरम जमात! अगर अल्लाह तआला इतनी बात ही फ़रमा देते कि अल्लाह तआला दोस्त है ईमान वालों का, तो बात अपने मायने के एतिबार से पूरी हो जाती मगर एक बात और आगे फ़रमा दी जिसने मसअले को बिल्कुल साफ़ कर दिया। ﴿يخرجهم من الظلمت الى النور﴾ अल्लाह तआला उनको अंधेरों से रोशनी की तरफ़ निकालकर ले जाता है क्योंकि अल्लाह तआला मोमिन का अंधेरे में रहना पसंद नहीं फ़रमाते। इसलिए क़ुरआन मजीद में फ़रमाया ﴿الر كتاب انزلنه اليك﴾ यह किताब है जो हमने आप पर नाज़िल की ﴿لتخرج الناس﴾ ताकि इंसानों को निकाले ﴿من الظلمت الى النور﴾ अंधेरों से रोशनी की तरफ़। गोया क़ुरआन मजीद अंधेरों

से निकालकर रोशनी की तरफ़ ले जाने वाली किताब है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त जिन बंदों से मुहब्बत फ़रमाते हैं उनको अंधेरों से निकालकर रोशनी की तरफ़ ले जाते हैं और यह रोशनी ईमान वालों को नसीब होती है। कलिमा पढ़ने से बंदे को अल्लाह तआला के साथ निस्बत हो जाती है।

इबरतनाक वाक़िआ

इमाम रब्बानी मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० फ़रमाते हैं कि एक आदमी मेरे किसी ताल्लुक़ वाले का क़रीबी अज़ीज़ था। वह बीमार हो गया, क़रीब था कि उसकी मौत आ जाए। वह ताल्लुक़ वाला बंदा मेरे पास आया और उसने बड़ी मिन्नत समाजत की कि हज़रत! आख़िरी वक़्त है तशरीफ़ लाएं और कुछ तवज्जेह की निगाह फ़रमाए। उसकी आख़िरत अच्छी बन जाएगी। फ़रमाते हैं कि मैं वहाँ गया, मैंने बहुत देर तक तवज्जेह दी मगर मैंने देखा कि उसके दिल की ज़ुलमत पर कोई फ़र्क़ न पड़ा। मैं बड़ा हैरान हुआ कि ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। पहले तो जब अल्लाह तआला की मदद से मुतवज्जेह हुआ रब की रहमत ने मदद फ़रमाई और सालिकीन के दिलों के अंधेरों को दूर कर दिया। यह अजीब मामला था कि इतनी तवज्जेह भी की मगर उसके दिल पर ज़र्रा बराबर भी असर न हुआ। बेइख़्तियार अल्लाह तआला की तरफ़ मुतवज्जेह हुआ तो दिल में डाला गया कि आपकी तवज्जेह से यह ज़ुलमत दूर नहीं होगी इसलिए कि इस आदमी के काफ़िरों के साथ मुहब्बत के ताल्लुक़ात हैं। काफ़िरों से मुहब्बत रखने की

वजह से दिल पर ऐसी ज़ुलमत आई जो वक़्त के मुजद्दिद की तवज्जेहात से भी दूर न हो सकी।

अक़ीदों की गड़बड़ी

हज़रत फ़ज़ल अली क़ुरैशी रह० के ख़लीफ़ाओं में से हज़रत ख़्वाजा अहमद सईद रह० अहमदपूर शरक़िया में रहते थे। वह अपने हालात ज़िंदगी में खुद फ़रमाते हैं कि मैं कभी-कभी सालिकों के दिल पर तवज्जोह करता हूँ तो उसके असरात महसूस होते हैं मगर कुछ लोग ऐसे होते हैं कि जिनके दिलों से फ़ैज़ टकराकर वापस आ जाता है और मुझे उसमें से आवाज़ आती है कि हमारे लिए इस दिल में कोई जगह नहीं है। फ़रमाया, जब मैंने तहक़ीक़ की तो मुझे पता चला कि वह आदमी अक़ीदे की गड़बड़ी में मुब्तला है।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के नज़दीक निस्बत का मुक़ाम

जिसको किसी से निस्बत हो जाती है, वह उस निस्बत की लाज रखता है। एक बार हज़रत यूसुफ़ के पास क़हत के ज़माने में एक लड़का अनाज लेने आया। आपने उसे अनाज दे दिया और ईनाम व इज़्ज़त के साथ रुख़्सत किया। अल्लाह तआला ने वही नाज़िल फ़रमाई ऐ मेरे प्यारे पैग़म्बर! आपने इस लड़के का इतना ज़्यादा इकराम क्यों किया? अर्ज़ किया, रब्बे करीम! मैंने शुरू में वह हिस्सा दिया जो बनता था लेकिन उसने मुझे बताया

कि मैं वह लड़का हूँ जिसने बचपन में आपकी पाकदामनी की गवाही दी थी। इस बात को सुनकर मेरे दिल में मुहब्बत की तड़प उठी कि यह लड़का वह है जिसने बचपन में मेरी पाकदमानी की गवाही दी थी, आज यह बेहाल होकर मेरे पास कुछ लेने के लिए आया है मैं क्यों न उस गवाही की वजह से इसका इकराम करूं। इसलिए ऐ अल्लाह! मैंने इसका इकराम किया। मैंने उसे वह कुछ दिया जो मेरे इख़्तियार में था। रब्बे करीम ने 'वही' नाज़िल फ़रमाई ऐ मेरे पैग़म्बर! जिसने आपकी पाकदामनी की गवाही दी उसको इतना कुछ दिया जो आप दे सकते थे आपने वह कुछ किया जो आपकी शान के मुताबिक़ था। याद रखिए जो बंदा दुनिया मेरी ख़ुदाई की गवाही देगा, मेरी रबूबयित की गवाही देगा जब वह मेरा बंदा क़यामत के दिन मेरे सामने आएगा तो मैं परवरदिगार भी वह कुछ दूँगा जो मेरी शान के मुताबिक़ होगा।

बंदी और बंदे की माफ़ी

एक आदमी की बीवी से कुछ ग़लती हो गई, नुक़सान कर बैठी अगर वह चाहता तो सज़ा दे सकता था अगर वह चाहता तो उसे तलाक़ देकर घर भेज सकता था क्योंकि वह हक़ पर था। फिर भी उस आदमी ने यह सोचा कि मेरी बीवी नुक़सान तो कर बैठी है चलो मैं इस अल्लाह की बंदी को माफ़ कर देता हूँ। कुछ ज़माने के बाद उस आदमी की वफ़ात हो गई। किसी को ख़्वाब में नज़र आया। ख़्वाब देखने वाले ने पूछा कि सुनाओ आगे क्या मामला बना? कहने लगा कि अल्लाह तआला ने मेरे ऊपर मेरहबानी फ़रमा दी। उसने पूछा कि वह कैसे? कहने लगा कि

एक बार मेरी बीवी ग़लती कर बैठी थी। मैं चाहता तो सज़ा दे सकता था मगर मैंने उसको अल्लाह की बंदी समझकर माफ़ कर दिया। परवरदिगार आलम ने फ़रमाया कि तूने उसे मेरी बंदी समझकर माफ़ कर दिया, जा मैं तुझे अपना बंदा समझकर माफ़ कर देता हूँ।

निस्बत की क़द्र व क़ीमत

ईमान वालों को अल्लाह तआला से एक निस्बत है। और उस निस्बत की क़दर व कीमत अल्लाह तआला यहाँ बहुत ज़्यादा है। बंदे तो सब ही अल्लाह के हैं लेकिन जिसने कलिमा पढ़ लिया वह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के साथ ईमान की निस्बत से जुड़ गया।

निस्बत की वजह से रुत्बे में फ़र्क़

एक भट्टे में दो ईंटें पकीं जो किसी आदमी ने ख़रीदीं। एक को मस्जिद के सहन में उसने लगा दिया और दूसरी को उसने बैतुलख़ला में लगा दिया। ईंटें एक जैसी, बनाने वाला एक आदमी, कीमत भी एक जैसी, लगाने वाला भी एक आदमी लेकिन एक को निस्बत मस्जिद से जो गई और एक को निस्बत बैतुलख़ला से हो गई। जिसकी निस्बत बैतुलख़ला से हुई वहाँ हम नंगा पाँव रखना भी पसंद नहीं करते और जिसकी निस्बत बैतुलल्लाह (मस्जिद) से हुई वहाँ हम अपने माथे टेकते फिरते हैं। दोनों के रुत्बे में फ़र्क़ क्यों हुआ? चीज़ एक थी, क़ीमत एक जैसी थी और एक ही तरीक़े से लगी थीं मगर निस्बत ने दोनों में फ़र्क़ पैदा कर दिया।

क़ुरआन मजीद के गत्ते का रुत्बा

उलमा ने मस्अला लिखा है कि अगर आप क़ुरआन मजीद पर एक गत्ता जोड़ दें कि वह उसका जुज़दान बन जाए तो अब जिस तरह लिखे हुए काग़ज़ को आप बेवुज़ू नहीं छू सकते उसी तरह इस गत्ते को भी बेवुज़ू हाथ नहीं लगा सकते। कोई आदमी अगर यह कहे कि गत्ते पर क़ुरआन मजीद नहीं लिखा हुआ, गत्ता और चीज़ है और जिन काग़ज़ों पर क़ुरआन लिखा हुआ है वह और चीज़ है तो फ़ुक़्हा इसका जवाब देंगे कि गत्ता तो वाक़ई ग़ैर चीज़ थी, दूसरी क़िस्म थी मगर सिलाई के ज़रिए क़ुरआन के साथ जुड़ गया। लिहाज़ा इस यकजान होने की निस्बत के सदक़े अल्लाह तआला ने गत्ते को भी वह मुक़ाम दे दिया कि अब हम उस गत्ते को भी बेवुज़ू हाथ नहीं लगा सकते।

सैय्यदना हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की अपनी क़ौम से मुहब्बत

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के बड़े रुत्बे के पैग़म्बर हैं। रोज़े महशर जब आपकी क़ौम की बारी आएगी तो अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि ये ईसाई तो कहते हैं कि हमें हमारे पैग़म्बर ने कहा ﴿اتخذونی و امی الهین من دون الله﴾ कि मुझे और मेरी माँ को अल्लाह के साथ शरीक बना लो, माबूद बना लो। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम सच बयान फ़रमाएंगे कि ऐ अल्लाह! मैंने तो ऐसा नहीं कहा था। और फिर अजीब बात कहेंगे कि ऐ अल्लाह! ﴿ان تعذبهم فانهم عبادك﴾ अगर तू इनको अज़ाब दे तो वे तेरे बंदे हैं।

सुब्हानअल्लाह! यहाँ यह नहीं कहा कि ऐ अल्लाह! अगर आप इनको अज़ाब दें तो यह झूठे हैं। इसलिए कि उम्मत तो अपनी थी चाहे गुनाहगार निकली, ख़ताकार निकली मगर फिर भी अपने होने की वजह से इतना ख़्याल रखेंगे और आगे कहेंगे ﴿وان تغفر لهم﴾ और ऐ अल्लाह! अगर तू इनकी मग़फ़िरत कर दे तो यह न कहेंगे कि बंदे तेरे हैं बल्कि फ़रमाएंगे ﴿فانك انت العزيز الحكيم﴾ ऐ अल्लाह! तू मग़फ़िरत करने वाला और रहम करने वाला है।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ीमती मल्फ़ूज़

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को ईमान वाली निस्बत बहुत महबूब है। इसलिए हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे कि ऐ अल्लाह! मेरे लिए यही इज़्ज़त काफ़ी है कि तू मेरा परवरदिगार है और मेरे लिए यही फ़ख़्र काफ़ी है कि मैं तेरा बंदा हूँ। सुब्हानअल्लाह! कितनी सादा सी बात है लेकिन कितनी मुहब्बत भरी बात है।

ईमान वालों से अल्लाह तआला का सौदा

ईमान वालों को कलिमे की बदौलत ऐसा मुक़ाम मिला कि परवरदिगार आलम फ़रमाते हैं :

﴿ان الله اشترى من المؤمنين انفسهم واموالهم بان لهم الجنة.﴾

अल्लाह तआला ने ईमान वालों से उनके जानों और मालों को जन्नत के बदले ख़रीद लिया है।

सुब्हानअल्लाह! ख़ुद ही इसकी ख़रीदारी का ऐलान फ़रमा दिया। बंदा तो कलिमा पढ़कर ईमान वालों की फ़हरिस्त में शुमार हुआ और अगला मामला अल्लाह तआला ने ख़ुद ही तय फ़रमा दिया। इस पर किसी ने क्या ख़ूब कहा :

जब तक बिके न थी कोई पूछता न था
तुम ने ख़रीद कर अनमोल कर दिया

पंजाबी में किसी बुज़ुर्ग ने क्या ही अच्छी बात कही, फ़रमाया–

वकानी हाँ तेडे नाम पूच्छू नईं ते कौन कमीनी नूं जानदा हाई
मैडे गल पट्टा तेडे नाम वाला तेडे नाम कूं जग सांजदा हाई

इसलिए अल्लाह वाले अपने गले में अल्लाह तआला के नाम का पट्टा डाल लेते हैं और अल्लाह तआला उनको पूरी दुनिया में इज़्ज़तें दे देते हैं।

सबसे बेहतरीन ज़माना

नबी अरकम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया ﴿خير القرون قرني﴾ सबसे बेहतर मेरा ज़माना है। फिर कौन लोग ﴿ثم الذين يلونهم﴾ फिर वे जो उनसे मिले हुए हैं ﴿ثم الذين يلونهم﴾ उनके बाद फिर वे जो उनसे मिले हुए हैं। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के ज़माने को अल्लाह के महबूब के साथ एक निस्बत है। वह ऐसा ज़माना है कि बाज़ मुफ़स्सिरीन के नज़दीक ﴿والعصر﴾ कहकर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपने महबूब के उस दौर की क़सम खाई। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र की क़सम खाई ﴿لعمرك﴾ ऐ महबूब! मुझे क़सम है आपकी उम्र की

﴿لا اقسم بهذا البلد﴾ मुझे क़सम है उस शहर की ﴿وانت حل بهذا البلد﴾ और मेरे महबूब! आप इस शहर में ज़िंदगी गुज़ारते हैं। ये क़समें खाने की वजह यह थी कि इन चीज़ों को अल्लाह के महबूब से एक निस्बत हो गई थी, सुब्हानअल्लाह।

हकीम तिर्मिज़ी रह० का सबक़ देने वाला वाक़िआ

हकीम तिर्मिज़ी रह० को अल्लाह तआला ने दीन का हकीम बनाया था और दुनिया की भी हिकमत दी थी। तिर्मिज़ के रहने वाले थे। इस वक़्त दरिया आमू के बिल्कुल किनारे पर उनका मज़ार है। इस आजिज़ को उनके मज़ार पर हाज़िरी का शर्फ़ हासिल हो चुका है। आप वक़्त के एक बहुत बड़े मुहद्दिस भी थे और तबीब भी थे। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनके अपने इलाक़े में आम क़ुबूलियत अता फ़रमा रखी थी। आप ऐन जवानी के वक़्त एक दिन अपने मतब में बैठे थे कि एक औरत आई और उसने अपना चेहरा खोल दिया। वह बड़ी हसीना जमीला थी। कहने लगी कि मैं आप पर आशिक़ हूँ, बड़ी मुद्दत से मौक़े की तलाश में थी, आज तन्हाई मिल गई मेरी ख़्वाहिश पूरी करें। आपके दिल पर ख़ौफ़े ख़ुदा ग़ालिब हुआ तो रो पड़े। आप इस अंदाज़ से रोए कि वह औरत नादिम होकर वापस चली गई। वक़्त गुज़र गया और आप इस बात को भूल भी गए। जब आपके बाल सफ़ेद हो गए और काम भी छोड़ दिया तो एक बार आप मुसल्ले पर बैठे थे ऐसी ही आपके दिल में ख़्याल आया कि फ़लाँ वक़्त जवानी में

एक औरत ने अपनी ख़्वाहिश का इज़्हार किया था। उस वक़्त अगर में गुनाह कर लेता तो आज मैं तौबा कर लेता लेकिन जैसे ही दिल में यह ख़्याल गुज़रा तो रोने बैठ गए। कहने लगे ऐ रब्बे करीम! जवानी में तो यह हालत थी कि मैं गुनाह का नाम सुनकर इतना रोया कि मेरे रोने से वह औरत नादिम होकर चली गई। अब मेरे बाल सफ़ेद हो गए तो क्या मेरा दिल स्याह हो गया। ऐ अल्लाह मैं तेरे सामने कैसे पेश हूँगा। इस बुढ़ापे के अंदर जब मेरे जिस्म में क़ुव्वत ही नहीं रही तो आज मेरे दिल में गुनाहों का ख़्याल क्यों पैदा हुआ?

रोते हुए इसी हाल में सो गए। ख़्वाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत नसीब हुई। पूछा हकीम तिर्मिज़ी! तू क्यों रोता है? अर्ज़ किया मेरे महबूब! जब मेरी जवानी का वक़्त था, जब शहवतों का दौर था, जो क़ुव्वत का ज़माना था, अंधेपन का वक़्त था, उस वक़्त तो अल्लाह के डर का यह आलम था कि गुनाह की बात सुनकर इतना रोया कि वह औरत नादिम होकर चली गई लेकिन अब बुढ़ापा आया है तो ऐ अल्लाह के महबूब! मेरे बाल सफ़ेद हो गए। लगता है कि मेरा दिल इस क़द्र स्याह हो गया है कि मैं सोच रहा था कि मैं उस औरत की ख़्वाहिश पूरी कर देता और बाद में तौबा कर लेता। मैं आज इसलिए बहुत परेशान हूँ। रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तसल्ली देते हुए फ़रमाया, यह तेरी कमी और क़ुसूर की बात नहीं, जब तू जवान था तो उस ज़माने को मेरे ज़माने से क़ुर्ब का ताअल्लुक़ था। उन बरकतों की वजह से तेरी कैफ़ियत इतनी अच्छी थी कि गुनाह की तरफ़ ख़्याल ही न गया। अब तेरा बुढ़ापा आ गया है,

तो मेरे ज़माने से दूरी हो गई है। इसलिए अब दिल में गुनाह का वसवसा पैदा हो गया।

पिछले बुज़ुर्गों को निस्बत का ख़्याल

पिछले बुज़ुर्गों निस्बत का बड़ा इकराम फ़रमाते थे। इसकी भी चंद मिसालें ख़िदमत में पेश हैं।

बासी रोटी की निस्बत

एक बुज़ुर्ग के सामने जब भी दस्तरख़्वान पर रोटियाँ रखी जाती हैं तो वह ठंडी रोटी पहले खाते और गर्म रोटी बाद में। किसी ने कहा हज़रत! जब ठंडी और गर्म दोनों क़िस्म की रोटियाँ मौजूद हों तो जी तो चाहता है कि गर्म रोटियाँ पहले खाएं क्योंकि ठंडी रोटी तो ठंडी हो चुकी है। इसलिए वह बाद में खानी चाहिए। मगर अल्लाह वालों की निगाह कहीं और होती हैं। उन्होंने फ़रमाया, नहीं यह ठंडी और गर्म दोनों मेरे सामने होती हैं। मैं इनमें नज़र दौड़ाता हूँ और अपने दिल से पूछता हूँ कि ऐ दिल! तेरा जी चाहता है कि गर्म रोटी खाकर लुत्फ़ उठाए मगर सोच तो सही कि ठंडी रोटी पहले पक्की इसलिए उसको क़ुर्ब की निस्बत ज़्यादा हासिल है और गर्म रोटी बाद में पक्की है इसलिए उसको दूर की निस्बत है। लिहाज़ा क़ुर्ब की निस्बत वाली रोटी पहले खाता हूँ और बोअद (दूरी वाली) रोटी को बाद में खाता हूँ। अंदाज़ा लगाइए कि दस्तरख़्वान पर बैठे हुए इन छोटी-छोटी बातों में भी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के महबूब से जो निस्बत होती थी अल्लाह वाले उस निस्बत का भी ख़्याल करते हैं, सुब्हानअल्लाह।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के नज़दीक निस्बत का मुक़ाम

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी ख़िलाफ़त के दौर में अपने बेटे अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की तंख़्वाह कम तय की और हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा की तंख़्वाह ज़्यादा तय फ़रमा दी। हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुँह बोले बेटे थे। जब तंख़्वाह तय हो गई तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ने पूछा, अब्बा जान! इल्म व फ़ज़ल में अल्लाह तआला ने मुझे बढ़ा दिया मगर आप ने उसामा की तंख़्वाह मुझ से ज़्यादा तय कर दी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जवाब में इर्शाद फ़रमाया, बेटे! उसामा तेरी निस्बत अल्लाह के महबूब को ज़्यादा प्यारा था और उसामा का बाप तेरे बाप से ज़्यादा हुज़ूर को प्यारा था। इसलिए मैंने उसामा की तंख़्वाह ज़्यादा तय की है, अल्लाहु अकबर।

निस्बत के एहतिराम से विलायत मिलने का वाक़िआ

हज़रत जुनैद बग़दादी रह० अपने वक़्त के शाही पहलवान थे। बादशाहे वक़्त ने ऐलान करवा रखा था कि जो आदमी हमारे पहलवान को गिराएगा उसको बहुत ज़्यादा ईनाम दिया जाएगा। सादात के घराने का एक आदमी बहुत कमज़ोर और ग़रीब था, रोज़ाना के ख़र्च को तरसता था। उसने सुना कि वक़्त के बादशाह की तरफ़ से ऐलान हो रहा है कि जो हमारे पहलवान को गिराएगा

हम उसे इतना ज़्यादा इनाम देंगे। उसने सोचा कि जुनैद को रुस्तमे ज़मा कहा जाता है। मैं उसे गिरा तो नहीं सकता मगर मेरे घर में ग़रीबी बहुत ज़्यादा है, मुझे परेशानी भी बहुत है और सादात में से हूँ इसलिए किसी के आगे जाकर अपना हाल भी नहीं खोल सकता। चलो मैं मुक़ाबले की कोशिश करता हूँ। उसने जुनैद रह० से कुश्ती लड़ने का ऐलान कर दिया। वक़्त का बादशाह बहुत हैरान हुआ कि इतने बड़े पहलवान के मुक़ाबले में एक कमज़ोर से आदमी। बादशाह ने उस आदमी से कहा तू हार जाएगा। उसने कहा कि नहीं मैं कामयाब हो जाऊँगा। मुक़ाबले के दिन तय कर दिए गए। बादशाहे वक़्त भी कुश्ती देखने के लिए आया। जब दोनों पहलवानों ने पंजा आज़माई की तो सैय्यद साहब कहते हैं कि ऐ जुनैद! तू रुस्तमे ज़मां है, तेरी बड़ी इज़्ज़त है, तुझे बादशाह से रोज़ीना मिलता है लेकिन देख ले मैं सादात में से हूँ, मेरे घर में इस वक़्त परेशानी और तंगी है। आज अगर तू गिर जाएगा तो तेरी इज़्ज़त पर वक़्ती तौर पर आँच आएगी लेकिन मेरी परेशानी दूर हो जाएगी। इसके बाद उसने कुश्ती लड़ना शुरू कर दी। जुनैद हैरान थे अगर चाहते तो बाएं हाथ के साथ उसको नीचे पटख़ सकते थे मगर उसने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिश्तेदारी का वास्ता दिया था। यह महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की निस्बत थी जिससे जुनैद का दिल पसीज गया। दिल ने फ़ैसला किया कि जुनैद! इस वक़्त इज़्ज़त का ख़्याल न करना, तुझे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के यहाँ इज़्ज़त मिल जाएगी तो तेरे लिए यही काफ़ी है। लिहाज़ा थोड़ी देर पंजा आज़माई की और उसके बाद जुनैद ख़ुद ही चित हो गए और वह कमज़ोर आदमी उनके सीने पर चढ़कर बैठ गया और

कहने लगा मैंने इसको गिरा लिया। बादशाह ने कहा नहीं कोई वजह बन गई होगी। लिहाज़ा दूसरी बार कुश्ती कराई जाए। तो दोबारा कुश्ती हुई। जुनैद खुद ही गिर गए और उसे अपने सीने पर बिठा लिया। बादशाह बहुत नाराज़ हुआ। उसने जुनैद को बहुत लान-तान की, यहाँ तक कि उसने कहा कि जी चाहता है कि जूतों का हार तेरे गले में डालकर पूरे शहर में फिरा दूँ, तू इतने कमज़ोर आदमी से हार गया। आपने वक़्ती ज़िल्लत को सहन कर लिया। घर आकर बताया तो बीवी भी परेशान हुई और बाक़ी घर वाले भी परेशान हुए तूने अपनी इज़्ज़त को ख़ाक में मिला दिया मगर जुनैदी का दिल मुतमइन था। रात को सोए तो ख़्वाब में अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत नसीब हुई। आंपने फ़रमाया, जुनैद! तूने हमारी ख़ातिर यह ज़िल्लत सहन की है। याद रखना कि हम तेरी इज़्ज़त के डंके दुनिया में बजा देंगे। लिहाज़ा जुनैद बग़दादी जो ज़ाहिरी पहलवान था अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उसे रूहानी पहलवान बना दिया। आज भी जहाँ तसव्वुफ़ की बात की जाएगी, जुनैद बग़दादी रह० का तज़्किरा ज़रूर किया जाएगा।

बाज़ मशाइख़ का तरीक़ा

हमारे बाज़ मशाइख़ का तरीक़ा रहा है कि अगर उनके हाँ कोई साहिबे निस्बत बुज़ुर्ग मेहमान आते तो वह उनका खाना अपने सर पर उठाकर ले जाते हालाँकि हाथों में भी उठाकर ले जा सकते थे मगर निस्बत के इकराम की वजह से वह साहिबे निस्बत बुज़ुर्ग का खाना अपने सर पर उठाकर ले जाते थे।

साहिबे निस्बत बुज़ुर्ग के तोहफ़े का इकराम

दो साहिबे निस्बत बुज़ुर्ग थे। उनकी आपस में मुहब्बत बहुत ज़्यादा थी। उनमें से एक बुज़ुर्ग दूसरे बुज़ुर्ग से मिलने के लिए गए। सोचा मैं उनके पास कोई तोहफ़ा ले जाऊँ क्योंकि हदीस पाक में आया है ﴿تهادوا تحابوا﴾ तुम एक दूसरे को हदिए दो मुहब्बत बढ़ेगी। सोचा कि मैं क्या लेकर जाऊँ क्योंकि कुछ भी अपने पास नहीं था मगर दिल में इख़्लास था। इसलिए दिल में ख़्याल आया कि जंगल से लकड़ियाँ काटकर ले जाऊँ। लिहाज़ा जंगल गए लकड़ियाँ काटीं, उनका गट्ठा बनाया और सर पर उठाकर ले चले कि मैं अपने एक भाई के लिए तोहफ़ा लेकर जा रहा हूँ। जब लकड़ियाँ वहाँ ले जाकर रखीं तो उन्हें कहा कि मैं आपके लिए तोहफ़ा लाया हूँ। उन्होंने यह तोहफ़ा घर भिजवा दिया और अपने घरवालों को वसीयत की कि यह एक साहिबे निस्बत बुज़ुर्ग का तोहफ़ा है जब मैं मर जाऊँ तो मेरी मैय्यत के ग़ुस्ल का पानी इन लकड़ियों से गर्म किया जाए, सुब्हानअल्लाह।

निस्बत के एहतिराम पर गुनाहों की बख़्शिश

काब अहबार रज़ियल्लाहु अन्हु वह सहाबी थे जो उलमा बनी इसराईल में से थे। उन्होंने बाद में इस्लाम क़ुबूल कर लिया। उन्हें दो पैग़म्बरों पर ईमान लाने की ख़ुशक़िस्मती हासिल हुई। दुनिया में भी सआदत मिली और क़यामत के दिन भी दोहरा अज्र मिलेगा। वहब बिन मुनब्बा रह० उनका अमल नक़्ल करते हैं कि जब नमाज़ का वक़्त होता तो उनकी कोशिश होती थी कि वह

आख़िरी सफ़ में नमाज़ पढ़े जब कि दूसरे लोग दौड़-दौड़ कर पहली सफ़ में जाते क्योंकि पहली सफ़ के बारे में अज्र व फ़ज़ीलत को हदीसों में बताया गया है। उनके शार्गिदों ने जब उनका यह अमल देखा तो पूछा हज़रत! दूसरे लोग तो पहली सफ़ के लिए कोशिश करते हैं और आप पहली सफ़ की कोशिश नहीं करते। पिछली सफ़ में ही खड़े होकर नमाज़ पढ़ लेते हैं। इसकी क्या वजह है? हज़रत काब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैंने तौरात और उसके अलावा बाक़ी आसमानी किताबों में पढ़ा है कि उम्मते मुहम्मदिया अलैहिस्सलातु वस्सलाम में से कुछ ऐसे बंदे होंगे जो अपने परवरदिगार को इतने मक़बूल होंगे कि जहाँ वे लोग खड़े होंगे उनके पीछे इक़्तिदा करने वाले जितने होंगे अल्लाह तआला उन सबके गुनाहों को माफ़ फ़रमा देंगे। इसलिए मैं चाहता हूँ कि मेरे नेक भाई आगे हों मुमकिन है कि किसी की बरकत से अल्लाह तआला हम सबके गुनाहों को माफ़ फ़रमा दें।

तसव्वुफ़ का मक़सद

एक निस्बत तसव्वुफ़ की भी होती है। यह एक नूर है जो सीने में दाख़िल होता है। इंसान को यह निस्बत शरिअत पर जमने से नसीब होती है। याद रखिए कि तसव्वुफ़ का मक़सद कोई रंग देखना नहीं, कोई कश्फ़ हासिल करना नहीं, कोई दुआओं का क़ुबूल होना नहीं, कोई नमाज़ो के अंदर ख़ास कैफ़ियत का हासिल होना नहीं बल्कि तसव्वुफ़ का बुनियादी मक़सद शरिअत पर इस्तिक़ामत के साथ अमल की तौफ़ीक़ नसीब हो जाना है। इसलिए फ़रमाया ﴿الاستقامت فوق الكرامة﴾ इस्तिक़ामत (जमाव)

करामत के ऊपर फ़ायक़ है। इस्तिक़ामत का दर्जा करामत से ऊँचा है।

निस्बत का मुक़ाम

शाह अब्दुल अज़ीज़ रह० फ़तहुल क़दीर में निस्बत की चार क़िस्में बयान फ़रमाते हैं।

निस्बते इन्एकासी

पहली निस्बत निस्बते इन्एकासी (साए वाली) कहलाती है। यह सबसे कमज़ोर निस्बत होती है। जब सालिक अपने शेख़ की सोहबत में होता है तो शेख़ के दिल की कैफ़ियतों का अक्स उसके दिल पर पड़ रहा होता है और आदमी को दुनिया की मुहब्बत कम मालूम होती है, अल्लाह तआला की मुहब्बत ग़ालिब मालूम होती है, गुनाहों के ख़्यालात कम हो जाते हैं और नेकी का जज़्बा बढ़ जाता है। मगर यह सब कुछ परछाई की क़िस्म की चीज़ है। जब शेख़ से ज़रा दूर हो गए तो धीरे-धीरे यह कैफ़ियत ठंडी पड़ जाती है। इसलिए सालिकीन कहते हैं कि जब हम इज्तिमा में आते हैं या शेख़ से मिलने आते हैं तो बड़ी अजीब कैफ़ियतें होती हैं लेकिन वापस जाकर वह कैफ़ियत नहीं रहती। इसकी वजह भी यही है कि शेख़ की मौजूदगी में निस्बत का अक्स पड़ रहा होता है जिसकी वजह से इंसान के दिल पर उसके असरात महसूस होते हैं।

इस निस्बत की मिसाल ऐसे है जैसे कि कोई आग के पास बैठता है तो उसको गर्मी महसूस होती है लेकिन जब आग के क़रीब से उठकर चला जाता है तो वह गर्मी आहिस्ता-आहिस्ता

ख़त्म हो जाती है। इसलिए कि वह गर्मी अपनी नहीं होती वह वक़्ती होती है जो दूर हो जाती है।

इसी तरह किसी ने इत्र लगाया हुआ हो तो जो आदमी पास बैठ जाए। जब तक वह बैठा रहेगा उसको इत्र की ख़ुशबू मिलती रहेगी और जब दूर चला जाएगा तो वह ख़ुशबू भी आना बंद हो जाएगी। यह निस्बते इन्एकासी कहलाती है।

2. निस्बते इलक़ाई

दूसरी क़िस्म की निस्बत को निस्बते इलक़ाई कहते हैं। यह ऐसी निस्बत है कि जिसके हासिल करने के लिए सालिक शेख़ की सोहबत में इतना वक़्त गुज़ारता है कि इस निस्बत की कुछ बरकतें सालिक के दिल के अंदर जम जाती हैं और उसके दिल का हिस्सा बन जाती हैं।

इसकी मिसाल ऐसी है कि जैसे कहीं आग जल रही हो और एक आदमी उससे अपना चिराग़ जला ले तो अब चिराग़ जलाने वाले के अपने पास भी आग गई। अब यह चाहे तो उससे अंधेरे मे भी रोशनी का काम ले सकता है लेकिन यह निस्बत भी कमज़ोर है क्योंकि उसे चिराग़ की बत्ती और तेल का भी ख़्याल रखना पड़ेगा और हवा के झोंकों से भी बचाना पड़ेगा वरना बत्ती किसी वक़्त भी गुल हो सकती है। इसलिए यह निस्बत भी कमज़ोर है।

3. निस्बते इस्लाही

तीसरी क़िस्म की निस्बत को निस्बते इस्लाही कहते हैं। यह

वह निस्बत है जो सालिक को अपने शेख़ की सोहबत में बहुत अरसा रहने के बाद हासिल होती है। सालिक इस निस्बत के हासिल करने के लिए अपने आपको शेख़ के सामने इस तरह पेश कर देता है ﴿كالميت بين يدى الغسال﴾ जैसे कोई मैय्यत ग़ुस्ल देने वाले के हाथ में होती है। शेख़ उस पर जो चाहे रोक-टोक करे, डांट-डपट करे, उसके ऊपर सख़्ती करे, मुजाहिदा करवाए। यह करता चला जाता है, रियाज़त की भट्टी में पकता चला जाता है यहाँ तक कि कुंदन बन जाता है। उसके बाद जो निस्बत उसको हासिल होती है उसे निस्बते इस्लाही कहते हैं।

इसकी मिसाल ऐसे है कि जैसे कोई दरिया से एक नहर निकालकर अपने बाग़ में ले आए। अब उसको पानी मिल गया। यह जारी पानी कहलाता है अगर इसके अंदर छोटी-मोटी कोई गंदगी भी है तो यह जारी पानी इस गंदगी को धो डालेगा और अगर कोई तिनका भी है तो उस तिनके को बहा ले जाएगा। यह निस्बत अल्लाह तआला के यहाँ मक़्बूल होती है। इस निस्बत की बरकत से ऐसे हज़रात छोटे गुनाहों को बार-बार नहीं करते क्योंकि छोटे गुनाह करते रहने से वे बड़े गुनाह बन जाया करते हैं।

निस्बते इस्लाही की बरकतें

निस्बते इस्लाही की बहुत ज़्यादा बरकतें हैं। इससे इंसान के अदंर 'मैं' निकल जाती है और बुराईयों की जगह अच्छे अख़्लाक़ पैदा हो जाते हैं।

हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० में आजिज़ी

हज़रत गंगोही रह० ने हज़रत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की रह० की ख़िदमत में वक़्त गुज़ारा। हज़रत हाजी साहब रह० ने उनकी ख़ूब इस्लाह फ़रमाई। यहाँ तक कि उनको अपने पास रखकर उनके अंदर निस्बत सिलसिला आलिया चिश्तिया इलक़ा फ़रमा दी।

हज़रत हाजी साहब रह० एक बार दस्तरख़्वान पर बैठे। हज़रत गंगोही रह० और हज़रत फ़ज़्लुर्रहमान गंज मुरादाबादी रह० भी साथ थे। हज़रत हाजी साहब रह० ने एक प्लेट में दाल डाल दी और एक रोटी हज़रत गंगोही रह० के हाथ में पकड़ा दी और फ़रमाया कि कि वहाँ पीछे दस्तरख़्वान के कोने में बैठकर खा लो और ख़ुद दस्तरख़्वान पर पड़ी हर तरह की नेमतें खानी शुरू कर दीं। आजकल कोई मुरीद होता तो पीर से बदज़न हो जाता कि इस पीर को तो बराबरी करना ही नहीं आती, इस पीर को तो रहन-सहन का अदब ही नहीं आते, इस पीर को तो शरिअत का पता ही नहीं है, यह आदमी को आदमी नहीं समझता, इसके अंदर तो तकब्बुर है, इसके अंदर बड़ाई है, इसके अंदर दुनिया की मुहब्बत है। मालूम नहीं क्या-क्या फ़तवे लग जाते। मगर वह कामिल थे, तालिब सादिक़ थे। वह जानते थे कि इसमें कोई हिकमत होगी। लिहाज़ा आराम से बैठकर खाना शुरू कर दिया। इधर हज़रत हाजी साहब रह० अपने खाने में तो बिरयानी और बोटियाँ खा रहे थे और उधर दाल दी हुई थी। थोड़ी देर खाना

खाते रहे। थोड़ी देर बाद कहा, मियाँ रशीद अहमद! जी तो यह चाहता था कि तुम्हें इधर जूतों में बिठा देता कि वहाँ बैठकर खाना खाओ मगर तुम पर एहसान किया कि तुम्हें अपने दस्तरख़्वान के कोने पर बिठा लिया। यह कहकर हज़रत हाजी साहब रह० ने उनकी तरफ़ देखा। हज़रत गंगोही रह० ने मुस्कराकर कहा, हज़रत! मेरी अवक़ात तो यही है कि मैं जूतों में बैठने के भी क़ाबिल न था, आपने एहसान फ़रमाया कि अपने दस्तरख़्वान के कोने पर बिठा लिया। जब हज़रत हाजी साहब रह० ने देखा कि ऐसी बात को सुनकर नफ़्स भड़का नहीं, चमका नहीं बल्कि आजिज़ी का बोल निकला तो फ़रमाया अल्लाह का शुक्र है अब काम बन गया है। इस इम्तिहान के बाद हज़रत हाजी साहब रह० ने उनको निस्बत इलक़ा कर दी।

नफ़्स का साँप कैसे मरा

कई मशाइख़ ने भी इसी तरह अपने मुरीदों के इम्तिहान लिए।

एक शैख़ ने अपने किसी नौकर से कहा कि फ़लाँ आदमी के पास से गुज़रो और कोई गंदगी लेकर उसके क़रीब से गुज़रना और देखना कि उसकी हालत क्या होती है? जब वह आदमी क़रीब से गुज़रा तो वह सूफ़ी साहब नाक मुँह चिढ़ाकर कहने लगा तुम्हें नज़र नहीं आता कि मैं भी बैठा हुआ हूँ। शैख़ को पता चला तो फ़रमाया कि अभी काम बाक़ी है। कुछ अरसे के बाद फिर वह गंदगी लेकर क़रीब से गुज़रा तो अब यह ख़ामोशी के साथ बैठे रहे। उसने आकर कैफ़ियत बताई। हज़रत ने फ़रमाया, पहले से कुछ बेहतरी हो गई है मगर अब यूँ करना कि जब उसके क़रीब

से गुज़रो तो कुछ गंदगी उसके ऊपर गिरा देना और फिर देखना कि क्या कहता है? उन्होंने क़रीब से गुज़रते हुए गंदगी ऊपर गिरा दी। सूफ़ी साहब ने उनको ग़ुस्से की नज़र से देखा और कहा तुझे नज़र नहीं आता कि कोई बैठा हुआ भी है या नहीं। उसने जाकर बता दिया। हज़रत ने फ़रमाया कि हाँ अभी नफ़्स का साँप मरा नहीं। लिहाज़ा कुछ अरसे और मेहनत करवाई। फिर फ़रमाया कि आइन्दा सारी गंदगी उसके ऊपर डालकर देखना। लिहाज़ा उसने क़रीब से गुज़रते हुए इस तरह गंदगी गिराई कि सूफ़ी साहब पर भी गिरी। वह सूफ़ी साहब खड़े होकर उसके कपड़ों से गंदगी साफ़ करने लगे और कहने लगे आपको कहीं चोट तो नहीं लगी। उसने जाकर यही बात बता दी। शैख़ ने कहा अल्हम्दुलिल्लाह अब नफ़्स का साँप मर गया है, 'मैं' मिट चुकी है, अब अल्लाह तआला ने उनके अंदर आजिज़ी और इन्किसारी पैदा फ़रमा दी। लिहाज़ा उनको इजाज़त व खिलाफ़त अता फ़रमा दी। ऐसी मेहनत जिसको करवाने बाद शैख़ किसी से इम्तिहान ले और इम्तिहान में वह पूरे उतरे, इसको निस्बते इस्लाही कहते हैं।

एक अजीब मिसाल

एक बुज़ुर्ग ने किसी को ख़िलाफ़त देने से पहले कहा कि जाओ इस मुर्ग़ी को किसी ऐसी जगह ज़िब्ह करके लाओ जहाँ कोई न देख रहा हो। कई और मुरीदों से भी कहा। सब लोग मुर्ग़ियाँ ज़िब्ह करने चले गए। किसी ने पेड़ की ओट में ज़िब्ह की, किसी ने दीवार की ओट में ज़िब्ह की, सब ज़िब्ह करके ले आए। लेकिन जिनको ख़िलाफ़त देना थी वह जब वापस आए तो रो रहे

थे। हज़रत ने पूछा रोते क्यों हो आपके हाथ में मुर्ग़ी वैसे ही है? कहने लगे हज़रत! आपने हुक्म दिया था मगर मैं उस पर अमल न कर सका। पूछा क्यों अमल नहीं किया? कहने लगे हज़रत! आपने यह हुक्म दिया था कि इसको ऐसी जगह ज़िब्ह करो जहाँ कोई न देखता हो लेकिन मैं जहाँ भी गया मेरा रब मुझे देखता था। इसिलए इसको कैसे जिब्ह कर सकता था। फ़रमाया अल्लाह का शुक्र! इसी अल्लाह तआला को साथ जाने की कैफ़ियत का तो इम्तिहान लेना था, उसके बाद उनको निस्बत अता फ़रमा दी।

मुरीद का इम्तिहान लेने का मक़सद

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने मशाइख़ को बातिनी फ़िरासत दी हुई होती है। वह मौक़े-मौक़े सालिक का इम्तिहान लेते रहते हैं। कभी-कभी सालिक को पता ही नहीं चलता कि किसी बात में इम्तिहान हो रहा है या नहीं। वे बेपरवाही में अपना वक़्त गुज़ार रहा होता है। उस बात की तरफ़ बेध्यानी होती है मगर शेख़ देख रहे होते हैं कि अंदर क्या हालत है, नफ़्स का साँप मरा है या नहीं, 'मैं' मिट गई है या नहीं। जब दिल का बर्तन साफ़ हो जाता है और "मैं" मिट जाती है तो फिर मशाइख़ निस्बत का नूर उसके दिल में इलक़ा फ़रमा देते हैं। यह निस्बत ज़्यादा मुकंम्मल होती है।

4. निस्बते इत्तिहादी

निस्बत की एक चौथी क़िस्म निस्बते इत्तिहादी है। यह निस्बत सबसे कामिल तरीन है। यह निस्बत शेख़ की मुहब्बत से मिलती है। शेख़ के साथ ऐसी मुहब्बत हो जाए कि दिल से आवाज़

निकलने लगे—

من تو شدم تو من شدی من تن شدم تو جاں شدی
تاکس نہ گوید بعد ازیں من دیگرم تو دیگری

जब शेख़ के साथ मुहब्बत की यह कैफ़ियत हो जाती है तो फिर अल्लाह तआला शेख़ की निस्बत को दिल के अंदर इलक़ा फ़रमा देते हैं। अल्लाह तआला उसको शेख़ के कमालात इस तरह अता फ़रमा देते हैं कि वह सालिक शेख़ का नमूना बन जाता है। लोग उस सालिक को देखते हैं तो उन्हें उनका शेख़ याद आ जाता है। उसका चलना-फिरना, रफ़्तार-गुफ़्तार, बैठना-उठना यहाँ तक कि उसका सब कुछ उसके शेख़ की तरह हो जाता है। इसको निस्बते इत्तिहादी कहते हैं।

इस निस्बत की मिसालें तो बहुत हैं लेकिन सबसे बड़ी मिसाल हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। अल्लाह तआला ने उनको निस्बते इत्तिहादी अता की थी। उनको यह निस्बत रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मिली।

सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की निस्बते इत्तिहादी की दलीलें

सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु हमारे सिलसिलाए आलिया के बुनियादी इमाम हैं। लिहाज़ा उनके बारे में कुछ बातें ध्यान से सुनें।

दलील न० 1.

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के दिल में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेपनाह मुहब्बत थी। एक महफ़िल में अल्लाह के महबूब ने फ़रमाया कि मुझे तीन चीज़ें महबूब हैं। जब सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने सुना तो तड़पकर बोले, ऐ अल्लाह के महबूब! मुझे भी तीन चीज़ें महबूब हैं। आपने फ़रमाया, कौन सी? अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के महबूब! एक आप के चेहरे अनवर को देखते रहना और दूसरा आप पर माल ख़र्च करना और तीसरा यह कि मेरी बेटी आपके निकाह में है। सुब्हानअल्लाह! उन्होंने तीन बातें कहीं और देखें तो सही कि तीनों का मर्कज़ और धुरी महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ात बन रही है, मुर्शिद की ज़ात बन रही है। मुहब्बते शेख़ का इससे आला कोई और मुक़ाम नहीं हो सकता जो सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु को नसीब था। इश्क़े रसूल की वजह से ही अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको निस्बते इत्तिहादी नसीब फ़रमाई थी।

दलील न० 2.

हदीस पाक में आया है कि अल्लाह के महबूब ने फ़रमाया ﴿ما صب الله فی صدری شیئا﴾ अल्लाह तआला ने मेरे सीने में जो कुछ डाला ﴿الا وقد صببته فی صدر ابی بکر﴾ मैंने यह सब कुछ अबू बक्र के सीने में डाल दिया है। यह निस्बते इत्तिहादी की दूसरी दलील है।

दलील न० 3.

सैय्यदना उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक बार ख़्वाब में देखा कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर बारिश हो रही है। आपके जहाँ क़दम मुबारक हैं वहाँ अबू बक्र सिद्दीक़ का सर है। बारिश का जो पानी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर आ रहा है वह सारे का सारा अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु पर आ रहा है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी अपने आपको क़रीब खड़े देखा। उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से छींटे उड़कर मेरे ऊपर पड़ रहे हैं और मैं भी भीगा चला जा रहा हूँ। सुबह उठे और नबी अकरम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के महबूब! मैंने रात में ख़्वाब में ये चीज़ें देखी हैं। आपने फ़रमाया, उमर! यह उलूमे नबुव्वत थे जो बारिश की तरह मेरे ऊपर बरस रहे थे। सिद्दीक़ को क्योंकि मेरे साथ कमाले मुनासिबत नसीब है इसलिए वह मुझसे सबसे ज़्यादा कमालात पा रहा है और उसके साथ मुनासिबत की वजह से तुम भी उन उलूम को हासिल कर रहे हो। कमालाते नबुव्वत सबसे ज़्यादा हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लााहु अन्हु ने हासिल किए और उलूमे विलायत को हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने सबसे ज़्यादा हासिल किया। यह कमालात नबुव्वत निस्बत इत्तिहादी की तीसरी दलील है।

दलील न० 4.

एक बार चौदह सौ सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ उमरे की नियत से

मदीना मुनव्वरा से चले। मक्का मुकर्रमा के क़रीब पहुँच कर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने कुफ़्फ़ार से सुलह के लिए बात तय कर दी और सहाबा से फ़रमा दिया कि एहराम खोल दो, हदी के जानवरों को ज़िब्ह कर दो और तुम वापस चलो। सहाबा किराम हैरान हुए कि हम तो दिल से उमरा करने की तमन्ना लेकर चले थे, हम कैसे वापस जाएं। सहाबा किराम को हैरानी इस बात पर हुई कि एक तरफ़ तो ज़ाहिर में अल्लाह के महबूब इतना दबकर सुलह कर रहे हैं और दूसरी तरफ़ ये आयतें नाज़िल हो रही हैं कि यह फ़तेह मुबीन है। उस वक़्त उमर बिन ख़त्ताब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास पहुँचे और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के महबूब! हमने इन काफ़िरों की सब शर्तें मान लीं और अपनी सब शर्तें छोड़ दीं। आपने फ़रमाया, उमर! अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हमें फ़तेह मुबीन अता फ़रमा दी है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ख़ामोशी से वापस आ गए। वापस आकर हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, अबू बक्र! क्या ऐसा नहीं कि हमने उनकी सब शर्तें मान लीं हालाँकि अल्लाह ने इस्लाम को इज़्ज़त दी है मगर हम तो दबकर सुलह कर रहे हैं। अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी वही अल्फ़ाज़ अदा किए। फ़रमाया, उमर! तुम्हारी आँख देख रही है कि हमने दबकर सुलह की है मगर मेरे मालिक का फ़रमान है कि यह फ़तेह मुबीन है। सुब्हानअल्लाह! सहाबा किराम में एक अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़ात ही ऐसी थी कि जिसने इस वक़्त को फ़तेह मुबीन समझ लिया था जबकि बाक़ी सहाबा किराम को यह बात थोड़ी देर के लिए समझ में न आई थी। जब नबी अकरम सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम ने अपना जानवर ज़िब्ह किया और अपना एहराम उतारा तो बाक़ी सहाबा किराम का भी शरह सदर हो गया मगर सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर का शरह सदर महबूब के क़ौल मुबारक पर ही हो गया। इससे साबित हुआ कि उनको निस्बते इत्तिहादी नसीब थी।

दलील न० 5.

हिजरत के मौक़े पर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सिद्दीक़े अकबर को लेकर मदीना तैय्यबा पहुँचते हैं। मदीना के समझ-बूझ रखने वाले लोग सामने खड़े देख रहे हैं कि मेहमान आ रहे हैं। उन्होंने उस वक़्त सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु को अल्लाह का पैग़म्बर समझकर सलाम करना शुरू कर दिया। लिहाज़ा सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु हाथ मिलाते रहे ताकि मेरे महबूब की थकावट और न बढ़े। जब सब हज़रात हाथ मिलाकर बैठ चुके तो उस वक़्त सूरज निकल आया। उस वक़्त लोगों ने देखा कि जिसको वे नबी समझ रहे थे, उन्होंने अपनी चादर उठाई और अपने साथी के सर पर बिछा दी। दुनिया को फिर पता चला कि ताबे कौन है मतबूअ कौन है, नबी कौन है और उम्मती कौन है। क़ुर्बान जाएं सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु आपकी इत्तिबाए सुन्नत पर कि आपके सामने इतने लोग मौजूद थे मगर वह आक़ा और ग़ुलाम में फ़र्क़ न कर सके। बातचीत में, किरदार में, रफ़्तार में और लिबास में इतनी मुशाबिहत थी, नक़ल अपने आपको असल के इतना क़रीब कर चुकी थी कि किसी को फ़र्क़ का पता ही न चला।

दलील न० 6.

जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर पहली 'वही' नाज़िल हुई और आप अपने घर तशरीफ़ लाए और अपनी मोहतरम बीवी से इर्शाद फ़रमाया ﴿زملونی زملونی﴾ मुझे कंबल उढ़ा दो, मुझे कंबल उढ़ा दो। उस वक़्त आप परेशान थे कि कहीं हलाक न हो जाऊँ। फ़रमाया ﴿انی خشیت علی نفسی﴾ मुझे अपनी जान का ख़ौफ़ है। सैय्यदा ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने यह सुनते ही फ़रमाया ﴿کلا﴾ हर्गिज़ नहीं, अल्लाह की क़सम ﴿انك لتصل الرحم﴾ आप तो सिला रहमी करने वाले हैं ﴿وتحمل الكل﴾ आप बे सहारों का सहारा बनने वाले हैं ﴿وتكسب المعدوم﴾ और जिनके पास कुछ न हो उनको कमाकर देने वाले हैं ﴿وتقرىء الضيف﴾ आप मेहमान नवाज़ी करने वाले हैं ﴿وتعين على نوائب الحق﴾ और अच्छी बातों पर आप मदद करने वाले हैं। इस तरह हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अपने आक़ा की पाँच सिफ़्तें गिनवायीं और अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला आपको ज़ाए नहीं करेंगे।

किताबों में लिखा है कि जब हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात हुई तो आपकी वफ़ात के कुछ अरसे के बाद आपके ग़ुलाम को एक साहब मिले। उन्होंने कहा कि तू हमें ज़रा अपने आक़ा के बारे में तो बता दे कि तेरे आक़ा कैसे थे क्योंकि तूने उनकी ख़िदमत की, तू उनके साथ दिन-रात इकठ्ठा रहा और तूने उनके साथ ज़िंदगी का वक़्त साथ गुज़ारा। ज़रा उनका नक़्शा तो खींच दे। उस ग़ुलाम ने जवाब दिया कि ﴿انه ليصل الرحم﴾ वह तो सिला रहमी करने वाले थे ﴿ويحمل الكل﴾ और वह बेसहारों का

सहारा बनने वाले थे और मेहमान नवाज़ी करने वाले थे और नेक बातों पर लोगों की मदद करने वाले थे। सुब्हानअल्लाह! वही पाँच ख़सलतें गिनवायीं जो हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अपने आक़ा की गिनवाई थीं। इसलिए कि उन्हें निस्बते इत्तिहादी नसीब थी।

निस्बते इत्तिहादी से ईमान में वज़न

इस निस्बते इत्तिहादी से अल्लाह तआला ने अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को वह मुक़ाम अता फ़रमा दिया कि मेरे महबूब ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿لو اتزن ایمان ابی بکر مع ایمان امتی لرجع﴾

अगर मेरी पूरी उम्मत के ईमान को अबू बक्र के ईमान के साथ तोला जाए तो अबू बक्र का ईमान बढ़ जाए।

एक इल्मी नुक्ता

यहाँ पर एक इल्मी नुक्ता भी आजिज़ अर्ज़ करता चला जाए। कभी-कभी तलबा के ज़हन में बात आती है कि अल्लाह के महबूब ने फ़रमाया ﴿لو کان بعدی نبی﴾ अगर मेरे बाद कोई नबी आता होता ﴿لكان عمر﴾ वह नबी उमर होते। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यहाँ हज़रत अबू बुक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का नाम क्यों नहीं लिया क्योंकि उनकी फ़ज़ीलत बहुत ज़्यादा है और दर्जा भी बुलंद है। हज़रत मौलाना याक़ूब साहब नानौतवी रह० जो दारुल उलूम देवबंद के बड़े उस्तादों में से थे उन्होंने इस बात को बड़ी अच्छी तरह साफ़ कर दिया। वह

फ़रमाते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿لو كان بعدى نبى﴾ अगर कोई मेरे बाद नबी आना होता, फ़रमाया बाद का लफ़्ज़ ग़ैर के लिए इस्तेमाल होता है, दूसरे के लिए इस्तेमाल होता है जबकि अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को अल्लाह तआला ने अपने महबूब के साथ माइय्यत अता फ़रमा दी थी। वह तो ﴿ان الله معنا﴾ के मिस्दाक़ ऐसे मुक़ाम माइय्यत में दाख़िल हो चुके थे कि जुदाई मुमकिन ही नहीं थी। इसलिए बाद का लफ़्ज़ उनके ऊपर आ ही नहीं सकता था। मेरे महबूब ने फ़रमाया ﴿لو كان بعدى نبى﴾ तो फिर बाद में तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का ही नम्बर आता था।

निस्बत हासिल करने के असबाब

मोहतरम ज़मात! निस्बत हासिल करना आसान है अगर इस सिलसिले में तीन कामों का ख़्याल रखा जाए। एक यह कि इंसान भूखा रहे, जितना पेट भरकर खाएगा उतना ही ग़फ़लत ज़्यादा होगी। और आज तो सारा बिगाड़ ही इस पेट भरकर खाने का है। तसव्वुफ़ के ज़िक्र और मुराक़बे इसीलिए असर नहीं करते की डकारे मारकर खाने की आदत होती है। डटकर खाते हैं, जमकर सोते हैं और फिर कहते हैं कि हज़रत! असरात ही नहीं होते। इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि जो आदमी दिन में दो वक़्त खाना खाए उसे भूख का पता ही नहीं कि भूख क्या होती है। फ़तावा तातार ख़ानिया में लिखा हुआ है कि अगर पेट भरा शख़्स किसी को नसीहत करे तो उस नसीहत का अच्छा असर नहीं होता और अगर पेट भरे शख़्स को नसीहत की जाए तो उस पर नसीहत का असर नहीं होता।

दूसरी बात यह कि इंसान गुनाहों से बचने की कोशिश करे। याद रखना कि नेकी करना आसान होता है मगर गुनाह से बचना मुश्किल होता है। आप ज़िक्र व मुराक़बा कई-कई घंटा न कीजिए मगर गुनाहों से बचने की कोशिश कीजिए। जितना गुनाहों से बचेंगे निस्बत का रास्ता उतना ही ज़्यादा हमवार हो जाएगा। और तीसरी बात यह कि किसी को तकलीफ़ न दीजिए। इन तीन बातों को पूरे इज्तिमा का निचोड़ समझ लीजिए। जो आदमी इन तीन बातों का ख़्याल रखता है उसके लिए निस्बत का हासिल करना बहुत ही आसान हो जाता है।

इस्मे आज़म की हिफ़ाज़त

मोहतरम जमात! निस्बत के हासिल करने के लिए अपने सीनों को पाक कर लीजिए। एक साहब इस्मे आज़म सीखना चाहते थे। लिहाज़ा उसने अपने शेख़ से कहा, हज़रत! मुझे इस्मे आज़म सिखा दीजिए। शेख़ ने उनको एक बर्तन में एक चीज़ बंद करके दी और फ़रमाया कि इसको फ़लां जगह पहुँचा दो मगर तुम इसे खोलकर न देखना। वह बर्तन लेकर चला गया। रास्ते में उसे ख़्याल आया कि देख लेता हूँ कि इसमें क्या कुछ है। जब खोला तो देखा उसमें चूहा था। जैसे ही उसने ढकना उतारा वह भाग गया। जब वहाँ बर्तन पहुँचाया तो ख़ाली था। शेख़ ने पूछा क्या बना? कहने लगा हज़रत मैंने सिर्फ़ बर्तन देखने की कोशिश की थी। यह सुनकर शेख़ ने फ़रमाया कि जब तुम एक छोटी सी चीज़ की हिफ़ाज़त नहीं कर सकते तो इस्मे आज़म की हिफ़ाज़त कैसे करोगे?

बस मशाइख़ किराम निस्बत का नूर उस आदमी को अता फ़रमाते हैं जो उसकी हिफ़ाज़त करने और लाज रखने के क़ाबिल हो।

निस्बत के लिए बर्तन की सफ़ाई

मोहतरम जमात! हर बंदा चाहता है कि मुझे निस्बत मिले मगर इस निस्बत के लिए बर्तन तो साफ़ कर लो। अगर आपके हाथ में कोई गंदगी लगा हुआ प्याला देकर कहे कि जी मुझे इसमें दूध डाल दीजिए तो यक़ीनन आपकी ग़ैरत इस बात को गवारा नहीं करेगी कि इस नापाक बर्तन में आप दूध डालें। आप कहेंगे कि यह अदब के ख़िलाफ़ है। जिस तरह गंदगी वाले बर्तन में दूध नहीं डाल सकते बिल्कुल इसी तरह गुनाहों वाले सीने में निस्बतों को नहीं डाला जा सकता। दिल के अंदर पहले तलब पैदा करनी पड़ती है। फिर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त मेहरबानी फ़रमा देते हैं। अल्लाह तआला की रहमत जोश में आती है और इंसान के दिल के बर्तन को भर दिया करती है। याद रखिए कि जिस घर के अंदर कोई तस्वीर लगी हुई हो उस घर के अंदर रहमत का फ़रिश्ता नहीं आता। जिस दिल में किसी ग़ैर की तस्वीर हो भला उस दिल के अंदर रहमत के फ़रिश्ते कैसे आएंगे? इसलिए दिलों को पाक कर लीजिए। आप का काम दिलों को साफ़ करना है और रब्बे करीम का काम निस्बत को इलक़ा कर देना है।

शेख़ डाकिए की तरह होता है

अगर आप सीना साफ़ कर लेंगे तो आपके शेख़ निस्बत

इलक़ा करने से रुक नहीं सकते और अगर कोई शेख़ किसी को इसके क़ाबिल पाने के बावजूद निस्बत इलक़ा नहीं करेगा तो उस शेख़ की अपनी निस्बत सलब कर ली जाएगी। कितनी बार ऐसा हुआ कि कुछ मशाइख़ ने इशारा होने पर आगे निस्बत मुंतक़िल नहीं की तो उनको ख़्वाब में बताया गया कि यह अमानत है तुम्हारे घर की कोई चीज़ नहीं।

﴿ان الله يامركم ان تؤدوا الامانات الى اهلها﴾

अल्लाह तआला तुम्हें हुक्म देता है कि तुम अमानतों को उनके अहल के सुपुर्द कर दो।

लिहाज़ा निस्बत एक अमानत है और शेख़ डाकिए कि तरह होता है। आपने अपने दिल को मेहनत, तलब, आजिज़ी, इन्किसारी और लिल्लाहियत से साफ़ करना है। फिर अल्लाह तआला शेख़ के दिल में वह कैफ़ियत डाल देते हैं जिससे बंदे के सीने में निस्बत का इलक़ा हो जाता है। इससे सीने रोशन हो जाते हैं और पूरी दुनिया इसकी बरकतें देखती है।

फ़िक्र की घड़ी

आज निस्बत के तलबगार तो कई हैं मगर निस्बत के लिए सीनों को तैयार करने वाले बहुत थोड़े होते हैं। पूरी दुनिया में फिर कर देख लीजिए। आपको कोई बंदा भी इस तरह का नज़र नहीं आएगा। सब ख़्वाहिश परस्ती, नफ़्स परस्ती और हवा परस्ती रह गई है और ख़ुदा परस्ती से ग़ाफ़िल होकर दुनिया के पीछे लगे हुए हैं।

बुतों को तोड़ तख़य्युल के हों कि पत्थर के

जब तक इन बुतों को नहीं तोड़ेंगे उस वक़्त तक निस्बत का नूर नसीब नहीं होगा। आज तो जिन दिलों पर भी नज़र डाली जाती है, वहाँ दुनिया भरी नज़र आती है, वहाँ दुनिया जमी हुई नज़र आती है। मेरे पीर व मुर्शिद हज़रत मुर्शिदे आलम फ़रमाया करते थे–

हाल दिल जिससे मैं कहता कोई ऐसा न मिला
बुत के बंदे तो मिले अल्लाह का बंदा न मिला

अल्लाह तआला हमें भी निस्बत का नूर अता फ़रमा दे ताकि हमारी आख़िरत ठीक हो जाए, आमीन सुम्मा आमीन।

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمين﴾

अल्लाह तआला की ख़ुफ़िया तदबीरें

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفىٰ اما بعد
فاعوذ بالله من الشيطن الرجيمoبسم الله الرحمٰن الرحيمo
واما من خاف مقام ربه ونهى النفس عن الهوىٰ فان الجنة هى
الماوىٰ o سبحان ربك رب العزه عما يصفون وسلام على
المرسلين. والحمد لله رب العالمين.

तक़्वा कैसे नसीब होता है

जो इंसान अपने आपको गुनाहों से बचाए उसे मुत्तक़ी या परहेज़गार कहते हैं। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त परहेज़गार लोगों से मुहब्बत फ़रमाते हैं और उनके आमाल को क़ुबूल करके उनको अपने वलियों में शुमार फ़रमा लेते हैं। यह परहेज़ागारी ख़ौफ़े ख़ुद के बग़ैर हासिल नहीं होती। जब तक दिल में अल्लाह तआला का ख़ौफ़ न हो तब तक इंसान किसी क़ायदे का पाबंद नहीं होता। अल्लाह तआला की याद दिल से निकली, ध्यान अल्लाह तआला की तरफ़ से हटा और इंसान का ख़्याल गुनाहों की तरफ़ लग गया। जहाँ हम अल्लाह तआला से उसकी मुहब्बत मांगते हैं उसी

तरह अल्लाह तआला से उसकी ख़शियत भी मांगा करें। यह ऐसी नेमत है कि जिसको नसीब हो जाए उसके लिए गुनाहों से बचना आसान हो जाता है। अगर मुहब्बते इलाही नसीब हो जाए तो इंसान शौक़ के साथ नेक आमाल करता है।

गुनाहों से बचने की अहमियत

सुनिए और दिल के कानों से सुनिए। हम सबने कलिमा पढ़कर इक़रार किया कि ऐ परवरदिगार! हम तेरे हुक्मों की फ़रमांबरदारी करेंगे। इसीलिए हमें मुख़ातिब करते हुए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने बार-बार फ़रमाया ﴿يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا﴾ ऐ ईमान वालो! मतलब यह है कि हम ने तसलीम कर लिया है कि ऐ परवरदिगार! अब हमारी ज़िंदगी तेरे हुक्मों के मुताबिक़ गुज़रेगी। हमें ऐसा क़दम उठाना है कि जिसकी वजह से गुनाहों से बच जाएं और हमारी ज़िंदगी गुनाहों से ख़ाली हो जाए। याद रखिए कि जो इंसान अपने इल्म और इरादे से गुनाह करना छोड़ देता है। अल्लाह तआला उस बंदे की दुआओं को रद्द करना छोड़ देता है।

जब इंसान गुनाह करता है तो परवरदिगार आलम नाराज़ होते हैं। यह बात इससे ज़्यादा पसंदीदा है कि बंदा नफ़्ली आमाल कम करे मगर गुनाह करना छोड़ दे। अगर कोई आदमी नफ़्ली इबादतें ज़्यादा नहीं कर सकता, तस्बीहात ज़्यादा नहीं पढ़ता सकता, बहुत ज़्यादा वज़ीफ़े नहीं कर सकता तो कोई बात नहीं मगर उसको गुनाहों से पूरे तौर पर बचना चाहिए। कोई काम ऐसा न करे जो गुनाह हो। इसीलिए मशाइख़ वज़ाहत करते हैं कि जो बंदा इबादत ज़्यादा करता है मगर उसके साथ ज़बान से गुनाह करता है, आँख

से गुनाह करता है, दिल व दिमाग़ से गुनाह करता है वह इस दर्जे को नहीं पा सकता जिसको वह इंसान पा लेता है जो इबादतें तो ज़्यादा नहीं करता मगर अपने आपको गुनाहों से बचाता है।

ख़ौफ़े ख़ुदा के दर्जात

ख़ौफ़े ख़ुदा भी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की बड़ी नेमत है। इमाम ग़ज़ाली रह० के नज़दीक उसके तीन दर्जात हैं।

1. आम लोगों का ख़ौफ़

सब से अदना दर्जा आम लोगों का ख़ौफ़ है और वह यह है कि अगर इंसान बड़े गुनाह करता है तो उसको पता होता है कि मैंने मन मर्ज़ी करके अल्लाह तआला के हुक्मों को तोड़ा है। जब मैं अल्लाह तआला के पास पहुँचूंगा तो मुझे उसकी सज़ा मिलेगी। जैसे कोई बच्चा कोई बर्तन तोड़ दे तो उसे यह ख़ौफ़ होता है कि अब अम्मी मेरी पिटाई करेंगी या जिस चीज़ से मना किया गया था वह काम करके कोई नुक़सान कर बैठा तो उसको डर लगता है कि अब्बू जी मुझे मारेंगे। यह आम लोगों का ख़ौफ़ है।

2. सालिहीन का ख़ौफ़

दूसरा ख़ौफ़ इससे बुलंद दर्जे का है। इसे कहते हैं सालिहीन (नेक लोगों) का ख़ौफ़। सालिहीन का ख़ौफ़ यह है कि इंसान अपनी तरफ़ से तो नेकी करे और गुनाहों से बचे मगर फिर भी उसके दिल में ख़ौफ़ होता है कि पता नहीं मेरे ये आमाल अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ क़ुबूल भी होते हैं या नहीं होते। वे यह समझते

हैं कि हमारी ये इबादतें इस क़ाबिल कहाँ हैं कि परवरदिगार की शान के मुताबिक़ हो सकें। वे इस बात से डर रहे होते हैं कि ऐसा न हो कि हमारी इबादतों को हमारे मुँह पर ही मार दिया जाए। यह एक आला दर्जे का ख़ौफ़ है कि इंसान ने नेकियाँ भी कीं मगर क़ुबूलियत के बारे में दिल काँप भी रहा होता है कि—

मेरी क़िस्मत से इलाही! पाएं ये रंगे क़ुबूल
फूल कुछ मैंने चुने हैं उनके दामन के लिए

पिछले बुज़ुर्गों के बारे में किताबों में लिखा है कि वे सारी-सारी रात इबादतों में गुज़ार देते थे, इशा के वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़ पढ़ते थे मगर सुबह के वक़्त उनके चेहरों पर ऐसी नदामत होती थी जैसे वे सारी रात कबीरा गुनाहों करते रहे हों। वे अपनी इबादतों में यूँ बेचारगी का इज़्हार करते थे :

﴿ما عبدناك حق عبادتك وما عرفناك حق معرفتك.﴾

ऐ अल्लाह! जैसे तेरी इबादत का हक़ था हम अदा न कर सके और जैसे तेरी मारिफ़त हासिल करनी चाहिए थे हम वह भी हासिल न कर सके।

3. आरिफ़ीन का ख़ौफ़

तीसरे दर्जे का ख़ौफ़ 'आरिफ़ीन का ख़ौफ़' है। यह उन लोगों का ख़ौफ़ है जिनके दिल मारिफ़ते इलाही से भरे हुए होते हैं। उनकी ज़िंदगी सौ फ़ीसद शरिअत व सुन्नत के मुताबिक़ होती है मगर उनके दिल फिर भी डर रहे होते हैं, काँप रहे होते हैं। वे इसलिए डर रहे होते हैं कि जो बातिनी नेमतें अल्लाह तआला ने

हमें अता की हैं मालूम नहीं कि मौत तक हिफ़ाज़त के साथ पहुँचा पाएंगे या नहीं। मालूम नहीं कि हमारा अंजाम किस हाल में होगा। यही वह ख़ौफ़ है जो अल्लाह वालों को तड़पा रह होता है। वे डर रहे होते हैं कि चाहे ज़ाहिर में हमें आमाल की तौफ़ीक़ हासिल है, नमाज़े भी पढ़ते हैं, क़ुरआन पाक की तिलावत भी करते हैं, तस्बीहात भी करते हैं और दीन के कामों में भी लगे होते हैं मगर मालूम नहीं कि अल्लाह तआला का हमारे बारे में इरादा क्या है। जब तक मौत नहीं आ जाती तब तक उनको तसल्ली नहीं होती। वे जानतें हैं कि अल्लाह तआला का इरादा कुछ और हो गया तो ये सारी की सारी इबादतें पाँव की नोक से उड़ा दी जाएंगी। इसके बाजवूद कि ज़िंदगी भर की इबादतें होती हैं, मुजाहिदे होते हैं, मेहनतें होती हैं मगर फिर भी अल्लाह तआला की शाने बेनियाज़ी से डर रहे होते हैं। हम सारी ज़िंदगी सज्दे में पड़े रह जाएं तो भी हमारी इबादतें अल्लाह तआला की शान के लायक़ नहीं। बस यह तो अल्लाह की रहमत है जो हमारी टूटी-फूटी इबादतों को क़ुबूल कर लेता है।

अल्लाह तआला की शाने बेनियाज़ी

बलअम बाऔर बनी इस्राइल का बहुत बड़ा इबादत गुज़ार था। परवरदिगार आलम की शान बेनियाज़ी का इज़्हार हुआ और उसकी पाँच सौ साल की इबादत को ठोकर लगा दी गई। क़ुरआन मजीद में इसकी मिसाल कुत्ते के साथ दी ﴿فمثله كمثل الكلب﴾ बस उसकी मिसाल कुत्ते की तरह है।

सैय्यदना सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु और ख़ौफ़े ख़ुदा

जिसको अल्लाह तआला की जलालत शान का जितना ज़्यादा इल्म होता है वह उतना ही ज़्यादा डरता है और कांपता है। उम्मते मुहम्मदिया में से सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु का रुत्बा सबसे बुलंद व बाला है क्योंकि उनके दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा की एक ख़ास कैफ़ियत हुआ करती थी। एक तरफ़ तो उनकी ज़बान नबुव्वत से बशारतें मिल रही होती थीं, यारे ग़ार बन रहे हैं, सानी स्नैन कहला रहे हैं, सिद्दीक़ का लक़ब पा रहे हैं, अश्रा मुबश्शरा में शामिल हो रहे हैं, रज़ियल्लाहु अन्हुम व रज़ु अन्हु की ख़ुशख़बरी सुन रहे हैं मगर दूसरी तरफ़ उनके दिल में यह ख़ौफ़ होता था कि मालूम नहीं कि ये सब कुछ मौत तक हिफ़ाज़त के साथ पहुँचा पाएंगे या नहीं। लिहाज़ा उन्हें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के सामने पेश होने का हर वक़्त डर था। फ़रमाया करते थे, काश! मेरी माँ ने मुझे जना ही न होता। काश! मैं किसी मोमिन के बदन का बाल होता, काश! मैं घास का तिनका होता। इसलिए कि वह अल्लाह की ख़ुफ़िया तदबीर से डर रहे होते थे।

लफ़्ज़ 'ख़ुफ़िया तदबीर' का मफ़हूम

यह 'ख़ुफ़िया तदबीर' के अल्फ़ाज़ को समझने की ज़रूरत है। जैसे कोई अफ़सर किसी मातहत से किसी बात पर नाराज़ हो जाए तो वह अपनी नाराज़गी को ज़ाहिर तो नहीं करता मगर अंदर ही अंदर ऐसे हालात पैदा कर लेता है कि उसका मातहत नौकरी छोड़ कर चला जाता है या वह मातहत को किसी न किसी मामले में

ज़रूर फंसा देता है। यह आमतौर पर ख़ुफ़िया तदबीर कहलाती है।

ख़ैर और शर की तक़दीरें

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के बारे में हमने यह तसलीम कर लिया है कि ﴿والقدر خيره وشره من الله تعالىٰ﴾ यानी ख़ैर की तक़दीर और शर की तक़दीर अल्लाह तआला की तरफ़ से है। इसका मतलब यह है कि अल्लाह तआला जब किसी के बारे में ख़ैर का इरादा फ़रमा लेते हैं तो हालात ऐसे बना देते हैं कि अंजाम बख़ैर होता है और जब किसी के बारे में शर का इरादा कर लेते हैं तो हालात ऐसे बना देते हैं कि अंजाम बुरा होता है।

ख़ैर के बारे में अल्लाह तआला की ख़ुफ़िया तदबीरें

जब क़यामत के दिन अल्लाह तआला अपने बंदों को बख़्शने पर आएंगे तो ऐसी तदबीरें अपनाएंगे कि बंदों के गुनाहों के बख़्शने के बहाने बनते चले जाएंगे। यह ख़ैर वाली ख़ुफ़िया तदबीरें होंगी।

एक मुहद्दिस की बख़्शिश

एक मुहद्दिस वफ़ात होने के बाद किसी को ख़्वाब में नज़र आए। उसने पूछा, हज़रत! आगे क्या बना? फ़रमाने लगे कि मैं एक अमल को छोटा समझता था मगर परवरदिगार के हाँ क़ुबूल हो गया और मेरी बख़्शिश हो गई। उसने पूछा, हज़रत! वह कौन

सा अमल था? फ़रमाया कि एक बार मैं हदीसें लिख रहा था। मैंने अपना क़लम दवात में डुबोकर निकाला। उसके ऊपर स्याही लगी हुई थी। एक मक्खी आई और उस स्याही के ऊपर बैठ गई। मैंने सोचा कि यह प्यासी होगी, चलो मैं थोड़ी देर के लिए क़लम रोक लेता हूँ। मैंने एक लम्हे के लिए क़लम वहीं रोक लिया कि मक्खी स्याही चूस ले। उसके बाद वह मक्खी उड़ गई और मैंने लिखना शुरू कर दिया। मैं तो इस अमल को भूल गया था मगर आमालनामे में मौजूद था। परवरदिगार ने फ़रमाया कि तुमने मक्खी की प्यास का ख़्याल रखा आज मैं तेरी प्यास का ख़्याल रखते हुए तुझे जहन्नम से बरी कर देता हूँ, सुब्हानअल्लाह।

अदब की वजह से बख़्शिश का वायदा

हज़रत मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० फ़रमाते हैं कि मैं ख़त लिख रहा था। लिखने के दौरान कुछ स्याही नाखुन पर लग गई। मैं और कामों में लग गया। इतने में मुझे हाजत के लिए बैतुलख़ला जाना पड़ा। अभी हाजत से फ़ारिग़ होने के लिए बैठना ही चाहता था कि नाखुन पर स्याही देखी। मुझे फ़ौरन ख़्याल आया कि अगर मैं फ़ारिग़ हुआ तो यह स्याही भी धुलेगी और गंदगी के साथ बह जाएगी। अभी यह ख़्याल दिल में आया ही था कि मैंने अपनी हाजत को रोक लिया और बैतुलख़ला से बाहर आ गया। और उस स्याही को पाक जगह पर धोया। अभी धोकर फ़ारिग़ हुआ ही था कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इल्हाम फ़रमाया, अहमद सरहिंदी! तेरे इस अदब की वजह से मैंने जहन्नम की आग को तुझ पर हराम कर दिया।

ज़ुबैदा ख़ातून की बख़्शिश

ज़ुबैदा ख़ातून ने नहर ज़ुबैदा बनवाकर बग़दाद से अरबिस्तान तक पानी पहुँचाया। वह औरत अपनी छोटी उम्र में हमजोलियों के साथ झूला झूल रही थी और अपनी सहेलियों के साथ गप-शप में मसरूफ़ थी। झूला झूलने के दौरान उसका दुपट्टा सर से सरक गया। दुपट्टा उतरा ही था कि अज़ान की आवाज़ आई। उस नेक औरत ने फ़ौरन झूला रोका और अपना दुपट्टा ढांप लिया। उसके बाद वह अपनी ज़िंदगी गुज़ारकर वफ़ात पा गई। एक रिश्तेदार ने ख़्वाब में देखा और पूछा, ज़ुबैदा तेरा क्या बना? कहने लगी, अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने मेरे साथ आसानी का मामला फ़रमाया। फिर उस शख़्स ने ख़्वाब में ही कहा, आपने लम्बी नहर बनावाई थी, वही काम आ गई होगी तो ज़ुबैदा ने कहा नहर तो बनवाई थी लेकिन वह मेरी मग़फ़िरत का सबब न बन सकी। फिर उस सवाल करने वाले ने पूछा, आपकी मग़फ़िरत कैसे हुई? उसने बताया कि एक दिन मैं झूला झूल रही थी तो दुपट्टा जो मैंने अल्लाह की अज़मत को सामने रखते हुए सर पर रखा। मेरे उस अमल को अल्लाह तआला की तरफ़ से क़ुबूलियत हुई कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया, तूने मेरे नाम की ऐसी अज़मत की जा आज हम भी तुम्हें जन्नत में दाख़िल करते हैं। नहर और दूसरे आमाल का तो पूछा ही नहीं। यह अल्लाह तआला की ख़ुफ़िया तदबीर होती है।

रोज़े महशर शैतान की ख़ुशफ़हमी

क़यामत के दिन अल्लाह तआला की रहमतों का इतना ज़हूर

होगा कि हज़रत क़ारी मुहम्मद तैय्यब साहब रह० फ़रमाते थे कि एक ऐसा वक़्त आएगा कि शैतान को भी उम्मीद लग जाएगी कि शायद आज मेरी ग़ल्तियों को भी माफ़ कर दिया जाए। जब अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रहमत का इतना ज़हूर होगा तो अल्लाह तआला अपने ईमान वाले गुनाहगार बंदों की यक़ीनन बख़्शिश फ़रमा देंगे।

कलिमा तैय्यबा की बरकत से बख़्शिश

रोज़े महशर इंसान की बख़्शिश की कई सूरतें होंगी। अल्लाह तआला ईमाने वाले एक बंदे को बुलाएंगे। उसके निन्नानवें दफ़्तर गुनाहों के होंगे। उस बंदे के दिल में यह बात होगी कि मैं आज अज़ाब से नहीं बच सकता। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त फ़रमाएंगे, ऐ बंदे! तेरा एक अमल हमारे पास मौजूद है। हम उसको भी तेरे आमालनामे में तोलेंगे। फिर एक फ़रिश्ता काग़ज़ की एक छोटी सी पर्ची लाएगा। उसे अरबी में 'बताक़ा' कहते हैं और हदीस बताक़ा ही के नाम से यह हदीस मशहूर है। वह उसे नेकियों के पलड़े में रखेगा। वह इतना भारी हो जाएगा कि गुनाहों के निन्नानवें दफ़्तर हलके रह जाएंगे और नेकियों का दफ़्तर झुक जाएगा। वह बंदा पूछेगा, ऐ अल्लाह! यह क्या था? फ़रमाया जाएगा, मेरे बंदे! तूने कलिमा पढ़ा था, इस काग़ज़ पर तेरा कलिमा लिखा हुआ था। यह कलिमा तेरे निन्नानवें दफ़्तरों से भारी हो गया, सुब्हानअल्लाह।

नफ़्लों की बरकत से बख़्शिश

कुछ ऐसे लोग होंगे जिनके गुनाह निन्नानवें दफ़्तरों से भी

ज़्यादा होंगे। अल्लाह तआला उनके लिए भी बख़्शिश के हालात बना देंगे। उसकी यह सूरत बनेगी कि अल्लाह तआला अपने महबूब को बुलाएंगे। शरिअत का मस्अला है कि अगर कोई आदमी किसी से सवारी किराए पर ले और कहे कि मैं आपको एक सौ रुपया दूंगा, मुझे एक मन वज़न किसी दूसरी जगह ले जाना हैं मगर वज़न ले जाते हुए एक मन से दस किलो ज़्यादा था तो शरिअत का हुक्म है कि ज़्यादा बोझ का ज़मान देना पड़ता है यानी उसके बढ़ाकर पैसे देने पड़ेंगे।

इसी तरह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त क़यामत के दिन अपने महबूब को बुलाएंगे और महबूब उम्मत के बारे में फ़रमाएंगे, ऐ मेरे महबूब! मैंने आपकी उम्मत पर फ़र्ज़ों और वाजिबात को बोझ रखा था लेकिन आपने मेरी इतनी इबादत की, इतनी इबादत की कि आपकी इबादत की कसरत को देखकर आपकी उम्मत ने नफ़्लों और सुन्नतों को भी अदा किया, यह एक ज़्यादा बोझ था जो आपकी उम्मत के सरों पर रखा गया। लिहाज़ा अब मुझे और आपको ज़मान देना पड़ेगा। अल्लाह के महबूब पूछेंगे, ऐ अल्लाह! इसका ज़मान क्या होगा? अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, ऐ मेरे महबूब! आप इन बंदों के बारे में सिफ़ारिश कीजिए। मैं आपकी सिफ़ारिश क़ुबूल करके इनकी बख़्शिश कर दूंगा। लिहाज़ा उम्मत के वे लोग जो नफ़्ले लगन और शौक़ से पढ़ते होंगे अल्लाह तआला उनकी नफ़्लों को बहाना बनाकर उनकी बख़्शिश फ़रमा देंगे।

बख़्शिश की हद

आख़िर एक ऐसा वक़्त आएगा कि जब गुनाहगार इंसान रह

जाएंगे। अब उनको भी अल्लाह तआला चाहेंगे कि बख़्श दें तो परवरदिगार आलम फ़रिश्तों को बुलाएंगे। अल्लाह तआला उनसे फ़रमाएंगे कि ऐ मेरे फ़रिश्तो! मैंने जब तुम्हें कहा था कि ﴿انــــى جاعل فى الارض خليفة.﴾ मैं ज़मीन पर अपना नाएब बना रहा हूँ तो तुमने जवाब में कहा था ﴿اتـجعل فيها من يفسد فيهاويسفك الدمآء.﴾ ऐ अल्लाह! क्या आप ज़मीन में इसको अपना नाएब बनाएंगे जो ज़मीन में फ़साद मचाएगा और ख़ून बहाएगा तो ऐ मेरे फ़रिश्तो! तुमने इन अल्फ़ाज़ के साथ मेरे बंदों की ग़ीबत की थी। और मेरी शरिअत का क़ानून है कि जब कोई किसी की ग़ीबत करे तो उस बंदे की नेकियाँ उस बंदे को दे दी जाती हैं क्योंकि तुमने इंसानो की ग़ीबत की थी लिहाज़ा तुम्हारी करोड़ों सालों की इबादत का सवाब आज मैं अपने बंदों के ऊपर बांट रहा हूँ। यूँ अल्लाह तआला फ़रिश्तों की इबादत को गुनाहगार इंसानों पर बांटकर उनकी मग़फ़िरत फ़रमा देंगे, सुब्हानअल्लाह।

शर के बारे में अल्लाह तआला की ख़ुफ़िया तदबीर

जैसे यह ख़ुफ़िया तदबीरें ख़ैर के बारे में होती है ऐसे ही ख़ुफ़िया तदबीरें शर के बारे में भी होती हैं। यही वजह कि आरिफ़ीन हर वक़्त अपने अंजाम के बारे में फ़िक्रमंद रहते हैं।

शर की ख़ुफ़िया तदबीरों की अलामतें

याद रखना कि ज़ाहिर में दीन का बड़ा काम करा होता है

लेकिन अंदर से वह दीन से महरूम हो रहा होता है। लिहाज़ा शर के बारे में अल्लाह तआला की खुफ़िया तदबीर की कुछ अलामतें सुन लीजिए :

ऐसे बंदे को अल्लाह तआला दीन का इल्म देते हैं मगर अमल की तौफ़ीक़ छीन लेते हैं।

अमल की तौफ़ीक़ दे देते हैं मगर इख़्लास से महरूम कर देते हैं।

उसको औलिया की सोहबत तो देते हैं मगर औलिया का अदब और उनकी अक़ीदत दिल से निकाल देते हैं।

यानी ज़ाहिर में दीन का काम कर रहा होगा मगर हक़ीक़त में कुछ पल्ले नहीं होगा।

एक मोअ़्ज़िन का इबरतनाक अंजाम

एक मोअ़्ज़िन मिस्र की जामा मस्जिद में अज़ान दिया करता था। ज़ाहिर में तो वह दीन का काम करने वाला था लेकिन उसके दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा न रहा। उसके दिल में फ़िस्क़ व फ़ुजूर था। एक दफ़ा अज़ान देने के लिए मिस्र की उस मस्जिद के मीनार पर चढ़ा। मीनार के इधर-उधर मकानात थे। एक मकान में उसकी नज़र पड़ी तो उसे कोई ख़ूबसूरत लड़की नज़र आई। उसके दिल पर ऐसा असर हुआ कि अज़ान देने के बजाए वह नीचे उतरा और उस घर के पास जाकर मालूमात लीं कि वह लड़की कौन है? किसी ने कहा कि फ़लां जगह उसका बाप है। यह उसके पास गया, मालूमात लीं कि आप कौन हैं? उसने कहा, हम ईसाई हैं और यहाँ नए आकर बसे हैं। अभी एक दिन हुआ है कि हम यहाँ

आकर ठहरे हैं। उसने कहा अच्छा मैं चाहता हूँ कि आप लोगों के साथ ताल्लुक़ात रखूं। उस ईसाई ने कहा इसके लिए शर्त यह है कि तुम्हें हमारे दीन में आना पड़ेगा। फिर मैं अपनी बेटी का तुम्हारे साथ रिश्ता कर दूंगा।

यह बड़ा ख़ुश हुआ, कहने लगा, ठीक है, मैं तुम्हारे दीन को क़ुबूल कर लेता हूँ। ईसाई ने कहा मेरे साथ आओ। वह उसके साथ सीढ़ियाँ चढ़कर मकान पर जाने लगा। अभी चौथी से पाँचवी सीढ़ी ही चढ़ रहा था कि उसका पाँव फिसला, गर्दन के बल नीचे गिरा और वहीं पर जान निकल गई।

मीनार पर चढ़ा था अज़ान देने के लिए मगर अल्लाह तआला को उसके अंदर का फ़िस्क़ व फ़ुजूर नापसंद था। जिसकी वजह से परवरदिगार ने हालात ऐसे बना दिए कि जब वह मीनार से नीचे उतरा तो वह उस वक़्त ईमान से ख़ाली हो चुका था।

क़ुर्ब क़यामत की एक अलामत

हदीस पाक में आता है कि क़यामत के क़रीब होने के अलामतों में से है कि तुम देखोगे कि एक सुबह के वक़्त आदमी ईमान वाला होगा मगर जब रात को सोने के लिए बिस्तर पर जाएगा तो ईमान से ख़ाली हो चुका होगा। ये वे बातें है कि जो अल्लाह वालों को डरा रही होती हैं। वे रो-रो कर माफ़ियाँ मांग रहे होते हैं, परवरदिगार की जनाब में रोना-धोना कर रहे होतें हैं कि ऐ अल्लाह! तू मेहरबानी फ़रमा, हमें कहीं ईमान की दौलत से महरूम न फ़रमा देना, ऐ अल्लाह! तूने जो इल्म व अमल वाली नेमत अता की हुई है कहीं मौत से पहले उससे महरूम न कर देना।

हज़रत शेखुल हिंद रह० पर अल्लाह तआला का ख़ौफ़

हज़रत शेखुल हिंद मौलाना महमूद हसन रह० का वाक़िआ है कि जब आपको मालटा के अंदर क़ैद कर दिया गया तो वहाँ आपके शर्गिद हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी रह० और हज़रत मौलाना उज़ैर गुल रह० भी थे और कई हज़रात भी थे। इतने में ख़बर मिली कि अंग्रेज़ ने फ़ैसला कर लिया है कि उन्हें माल्टा में ही क़ैद रखा जाएगा और उनको इतनी तकलीफ़े पहुँचाई जाएं कि इधर ही उनकी मौत आ जाए। वापस नहीं जाने दिया जाए। हज़रत शेखुल हिंद रह० ने सुना तो रोना शुरू कर दिया। हर वक़्त रोया करते थे। आँखो से आँसू टप-टप गिरा करते थे। शार्गिद हैरान हुए कि हमारे उस्ताद तो बड़े हौसले और हिम्मत के पहाड़ थे यह मौत की बात सुनकर इतना किस लिए रोते हैं। कई दिन गुज़र गए। हज़रत को खाना भी अच्छा नहीं लगता था। हर वक़्त ही रोते रहते थे। तबियत बहुत रोने वाली बन गई थी। जब ज़रा कोई बात होती तो फ़ौरन रोने बैठ जाते। शार्गिद आपस में बैठते और कहते कि शेखुल हिंद को क्या हुआ? एक दिन उन्होंने सोचा कि हम हज़रत से बात करते हैं कि अगर मौत भी आ गई तो शहादत की मौत मिल जाएगी, हमें डरने की ज़रूरत क्या है? आप इतना क्यों रोते हैं? हमारी समझ से बाहर है।

लिहाज़ा हज़रत शेखुल हिंद रह० एक बार तशरीफ़ फ़रमा थे और रो रहे थे। ये तीनों शार्गिद उनकी ख़िदमत में जाकर बेठे। उन्होंने बात छेड़ी कि हज़रत! जब इंसान अल्लाह के रास्ते में हो

और उसकी जान चली जाए ताक वह शहीद होता है, उसको दर्जे मिलते हैं, हज़रत! हमें मौत भी आ गई तो अल्लाह तआला के यहाँ शहादत लिखी जाएगी। जब हज़रत मौलाना उज़ैर गुल रह० ने यह बात कही तो हज़रत शेखुल हिंद रह० ने उनको ग़ुस्से भरी निगाहों से देखा और फ़रमाया, उज़ैर गुल! तुम्हें क्या मालूम अल्लाह तआला की शाने बेनियाज़ी से डरता हूँ कि वह कभी कभी बंदे की जान भी लेता है और उसकी जान को क़ुबूल भी नहीं करता। उस वक़्त उनके शार्गिदों की चीख़ें निकल गयीं कि ओहो! हज़रत की नज़र किस बात पर थी।

अल्लाह वालों की आह व ज़ारी

मोहतरम जमात! जो जितना इल्म वाला होगा, जितना अमल वाला होगा, जितना मारिफ़त वाला होगा वह नेकी भी ज़्यादा कर रहा होगा मगर साथ ही साथ डर भी रहा होगा, वहा काँप रहा होगा क्योंकि वह जानता है कि परवरदिगार के ग़ुस्से को, वह जानता है परवरदिगार की नाराज़गी को, वह जानता है परवदिगार की अज़मतों को और उसे पता है कि जब परवरदिगार की बेनियाज़ी का मामला होता है तो फिर तो वहाँ पर बड़े-बड़ों की फटकार दिया जाता है। इसलिए फिर डरकर अपने परवरदिगार की बारगाह में आह व ज़ारियाँ करता है कि ऐ अल्लाह! मैं तेरी बेनियाज़ी से डरता हूँ, मैं तेरी ख़ुफ़िया तदबीर से डरता हूँ, ऐ अल्लाह तूने जो ईमान की दौलत अता फ़रमाई है मौत तक उसे सलामती के साथ पहुँचा देना। ऐ अल्लाह तूने जो अपनी मारिफ़त अता की है मौत तक उसे महफ़ूज़ पहुँचाने की तौफ़ीक़ दे देना।

आख़िर यह ख़ौफ़ कब तक

अल्लाह वालों का यह ख़ौफ़ ज़िंदगी में हट नहीं सकता, ज़िंदगी भर रहेगा। कोई कितना ही बुलंद मर्तबा ही क्यों न हो जाए, कई बशारतें क्यों न पा जाए, जब तक मौत नहीं आ जाती उस वक़्त तक किसी को यक़ीन नहीं कि मेरा अंजाम क्या होगा। इसीलिए फ़रमाया कि तुम अल्लाह की इबादत करो ﴿حتى يأتيك اليقين﴾ हत्ताकि तुम्हें मौत आ जाए। लिहाज़ा मौत से पहले कोई भी नेक आदमी अल्लाह के इस मामले से अमन में नहीं होता। हर बंदे को डरने की ज़रूरत है। जो लोग गुनाह करते हैं उनको ज़्यादा डरने की ज़रूरत है और अगर इंसान गुनाह न भी करे, नेकी ही कर रहा हो तो फिर भी डरे क्योंकि पता नहीं नेकी क़ुबूल भी होगी या नहीं होगी अगर मारिफ़त भी नसीब हो गई तो फिर तो डर और भी ज़्यादा होता है कि ऐसा न हो कि यह मारिफ़त कहीं मौत से पहले-पहले छीन न ली जाए, कोई मामला ऐसा बना दिया जाए कि रास्ते में इंसान को वापस बुला लिया जाए।

शेख़ अब्दुल्लाह उंदलुसी रह० का सबक़ देने वाला वाक़िआ

शेख़ अब्दुल्लाह उंदलुसी रह० हज़रत शिबली रह० के पीर थे। ईसाइयों की बस्ती के क़रीब से गुज़र रहे थे। उस बस्ती के ऊपर सलीबें लटक रही थीं। थोड़ी देर के बाद वह एक कुंए पर अस्र की नमाज़ पढ़ने के लिए वुज़ू करने गए। वहाँ किसी लड़की पर नज़र पड़ी। शेख़ का सीना वहीं ख़ाली हो गया। अपने मुरीदों से

कहने लगे जाओ वापस चले जाओ। मैं इधर जाता हूँ जिधर यह लड़की होगी। मैं उसकी तलाश में जाऊँगा। मुरीदों ने रोना शुरू कर दिया। कहने लगे, शेख़! आप क्या कह रहे हैं? यह वह शेख़ थे जिनके एक लाख हदीसें याद थीं, क़ुरआन के हाफ़िज़ थे, सैंकड़ों मस्जिदें उनके दम क़दम से आबाद थीं। उन्होंने कहा, मेरे पल्ले कुछ नहीं है जो मैं तुम्हें दे सकूं, अब तुम चले जाओ। शेख़ इधर बस्ती में चले गए। किसी से पूछा यह लड़की कहाँ की रहने वाली है? उसने कहा यह यहाँ के नम्बरदार की बेटी है। उससे जाकर मिले, कहने लगे, क्या तुम इस लड़की का निकाह मेरे साथ कर सकते हो? उसने कहा, यहाँ रहो, हमारी ख़िदमत करो, जब आपस में मुहब्बत हो जाएगी तो फिर निकाह कर देंगे। उन्होंने कहा, बिल्कुल ठीक है। वह कहने लगा आपको सुअरों के रेवड़ को चराने वाला काम करना पड़ेगा। शेख़ इस पर भी तैयार हो गए और कहने लगे मैं यह ख़िदमत करूंगा। अब क्या हुआ? सुबह के वक़्त सुअर लेकर निकलते और सारा दिन चराकर शाम को वापस आया करते।

इधर मुरीदीन जब वापस आ गए और यह ख़बर लोगों तक पहुँची तो कई लोग तो बेहोश हो गए, कई मौत की आग़ोश में चले गए और कई ख़ानक़ाहें बंद हो गयीं। लोग हैरान थे कि ऐ अल्लाह! ऐसे-ऐसे लोगों के साथ भी तेरी बेनियाज़ी का यह मामला हो सकता है।

एक साल इसी तरह गुज़र गया। हज़रत शिबली रह० सच्चे मुरीद थे। जानते थे कि मेरे शेख़ साहिबे इस्तिक़मत थे मगर इस मामले में कोई न कोई हिकमत ज़रूर होगी। उनके दिल में बात

आई कि मैं जाकर हालात मालूम करूं। लिहाज़ा उस बस्ती में आए और लोगों से पूछा कि मेरे शेख़ किधर हैं। कहा, तुम फ़लां जंगल में जाकर देखो, वहाँ सुअर चरा रहे होंगे। जब वहाँ गए तो क्या देखते हैं कि वही अमामा, वही जुब्बा और वही आसा जिसको लेकर जुमा का खुत्बा दिया करते थे आज उसी हालत में सुअरों के सामने खड़े सुअर चरा रहे हैं। शिबली रह० क़रीब हुए, पूछा हज़रत! आप तो क़ुरआन के हाफ़िज़ थे, आप बताइए क्या आपको क़ुरआन याद है? फ़रमाने लगे, क़ुरआन याद नहीं, फिर पूछा, कोई एक आयत याद हो? सोचकर कहने लगे, मुझे एक आयत याद है। पूछा, कौन सी? कहने लगे, ﴿ومن يهن الله فما له من مكرم﴾ "जिसे अल्लाह ज़लील करने पर आते है उसे इज़्ज़तें देने वाला कोई नहीं होता।" पूरा क़ुरआन भूल गए और सिर्फ़ एक आयत याद रही जो कि अपने हाल से ताल्लुक़ रखती थी। हज़रत शिबली रोने लग गए कि हज़रत को सिर्फ़ एक आयत याद रही। फिर पूछा, हज़रत आप तो हाफ़िज़ हदीस थे? क्या आपको हदीसें याद हैं? फ़रमाने लगे, एक याद है ﴿من بدل دينه فاقتلوه.﴾ जो दीन को बदल दे उसे क़त्ल कर दो। यह सुनकर शिबली रह० फिर रोने लगे तो उन्होंने भी रोना शरू कर दिया। किताबों में लिखा है कि रोते रहे और रोते हुए उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह मैं आपसे यह उम्मीद तो नहीं करता था कि मुझे इस हाल में पहुँचा दिया जाएगा। रो भी रहे थे और यह फ़िक़रा बार-बार कह रहे हैं।

अल्लाह तआला ने शेख़ को तोबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दी और उनकी कैफ़ियतें वापस लौटा दीं। फिर बाद में शिबली रह० ने पूछा कि यह सारा मामला कैसे हुआ। फ़रमाया कि बस्ती के

क़रीब से गुज़र रहा था। मैंने सलीबें लटकी हुई देखीं तो मेरे दिल में ख़्याल आया कि यह कैसे कम अक़्ल लोग हैं, बेवक़ूफ़ लोग हैं जो अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराते हैं। अल्लाह तआला ने मेरी इस बात पर पकड़ कर ली कि अब्दुल्लाह! अगर तुम्हारे पास ईमान है तो क्या यह तुम्हारी अक़्ल की वजह से है या हमारी रहमत की वजह से है। यह तुम्हारा कमाल नहीं है यह तो मेरा कमाल है कि मैंने तुम्हें ईमान पर बाक़ी रखा हुआ है। अल्लाह तआला ने ईमान का वह मामला सीने से निकाल लिया कि अब देखते हैं तुम अपनी अक़्ल पर कितना नाज़ करते हो। तुमने यह लफ़्ज़ क्यों इस्तेमाल किया, तुम्हें यह कहना चाहिए था कि अल्लाह ने उनको महरूम कर दिया है, तुमने अक़्ल और ज़हन की तरफ़ निस्बत क्यों की?

अल्लाह वालों का रातों का जागना

अल्लाह वाले इसी तदबीर से डर रहे होते हैं। उन्हें अमन नहीं होता। वे रातों को तहज्जुद पाबंदी से पढ़ते हैं और अल्लाह तआला के सामने दामन फैलाकर बैठते हैं। मेरे मौला! ज़ाहिर में तो तूने दीन का काम करने की तौफ़ीक़ दे दी है। अब रुसवा न कर देना, अब ज़लील न कर देना, अब जग हंसाई न हो जाए। यह आरिफ़ीन का ख़ौफ़ होता है। अल्लाह तआला हमें भी यह नेमत नसीब फ़रमा दे।

ऐतिराफ़ जुर्म

मेरे मौला! गो हमारे पिछले बुज़ुर्ग तो बड़े बुज़ुर्ग थे। उनके हौसले भी बड़े थे, हिम्मतें भी बड़ी थीं। उनके मुजाहिदे भी बड़े

थे। ऐ अल्लाह! हम तो कमज़ोर बंदे हैं, हमारी हिम्मतें पस्त हैं, हम किसी काम के नहीं, तू हमारे बहरूप को क़ुबूल कर लेना। ऐ अल्लाह! आपने हम से हक़ीक़त का मुतालबा किया है। हमारे पल्ले हक़ीक़त नहीं है, हम क्या पेश कर सकेंगे। हमारी तो क़लई खुल जाएगी। ऐ अल्लाह! तू मेहरबानी फ़रमाकर हमारे इसी ज़ाहिर को क़ुबूल कर लेना। रब्बे करीम! हमारे साथ बिला हिसाब वाला मामला कर दे। इसलिए कि फ़रमाया गया :

﴿من نوقش في الحساب فقد عذب.﴾

जिसका हिसाब-किताब शुरू हो गया उसको तो ज़रूर अज़ाब होकर रहेगा।

या अल्लाह! हमें बग़ैर हिसाब-किताब के जन्नत अता फ़रमा दे। हम कमज़ोर हैं और कमज़ोरों का तू परवरदिगार है।

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمين.﴾

फ़लसफ़ा-ए-इल्म

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفىٰ اما بعد

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيمo

بسم اللّٰه الرحمٰن الرحيمo

وما خلقت الجن والانس الا ليعبدونo وقال اللّٰه تعالىٰ فى مقام اخر يرفع اللّٰه الذين امنوا منكم والذين اوتو العلم درجات o سبحان ربك رب العزه عما يصفون وسلام على المرسلين. والحمد لله رب العالمين.

इंसानों को बनाने का मक़सद

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इंसान को अपनी क़ुदरते कामिला से पैदा किया। इसकी पैदाईश से पहले ज़मीन और आसमान बनाए। ये चाँद और तारे, ये हरियाली, ये झरने, ये गुलशन की बहारें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इंसान के लिए बनाएं और इंसान को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपनी इबादत के लिए पैदा किया हैं

किसी शायर ने इस मज़मून को यूँ बयान किया है :

जहाँ है तेरे लिए तू नहीं जहाँ के लिए

एक और शायर ने कहा :

खेतियाँ सरसब्ज़ हैं तेरी गिज़ा के वास्ते
चाँद सूरज और सितारे हैं ज़िया के वास्ते

बहर ओ बर शम्स व क़मर मा ओ शुमा के वास्ते
यह जहाँ है तेरे लिए और तू ख़ुदा के वास्ते

यह दुनिया की सारी नेमतें अल्लाह तआला ने इंसान के लिए पैदा कीं और इंसान को अल्लाह तआला ने अपनी इबादत के लिए पैदा किया है। अल्लाह तआला इस बात पर क़ादिर थे कि आलमे अरवाह में ही इंसान को विलायत अता कर देते मगर इसको हासिल करने के लिए इस दुनिया में भेजा। इसे सर अता किया तो सज्दे के लिए ज़मीन भी अता की, पाँव दिए तो चलकर जाने के लिए मस्जिद भी अता की, इसको हाथ दिए तो ख़र्च के लिए तो माल भी अता किया ताकि यह इंसान अपने जिस्म को नेकी में इस्तेमाल करे और अपने परवरदिगार का क़ुर्ब हासिल कर सके। हर काम अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुक्मों और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़ो के मुताबिक़ करना बंदगी में शामिल है। बंदा वही होता है जिसमें बंदगी हो वरना तो सरासर गंदा होता है, झूठ और फ़रेब का पुलिंदा होता है—

ज़िंदगी आमद बराए बंदगी
ज़िंदगी बे बंदगी शर्मिन्दगी

इल्म की ज़रूरत

वसूल इल्लल्लाह का रास्ता तीन क़दम है। जब तक तीनों क़दम नहीं उठेंगे उस वक़्त तक मंज़िल पर नहीं पहुँचेगे। इसमें पहला क़दम इल्म को हासिल करना है।

बे इल्म नतवां ख़ुदारा शनाख़्त

यानी बे-इल्म इंसान अपने परवरदिगार को नहीं पहचान सकता। गोया इल्म इस रास्ते की ज़रूरत है। हम उस तसव्वुफ़ को नहीं मानते जो इल्म से इंसान को रोकता है। वक़्ती तौर पर किसी मशग़ूलियत को रोकना और चीज़ है और इल्म की मुख़ालिफ़त करना और चीज़ है चूँकि आदमी के साथ हर वक़्त मुफ़्ती तो नहीं होता। इसलिए कौन बताएगा कि किस काम की इजाज़त है और किस काम की इजाज़त नहीं है? इसलिए ज़रूरियात दीन का इल्म जानना हर आदमी के लिए ज़रूरी है। कई लोग अपनी जिहालत पर पर्दा डालने के लिए किसी बुज़ुर्ग का ऐसा कलाम पेश कर देते हैं जो उन्होंने किसी ख़ास हालत में कहा था। लिहाज़ा फ़ौरन कह देते हैं–

अल्लिमों बस करें ओ यार

यानी बस कर इल्म से ऐ दोस्त। जी हाँ, वह कहा था मगर कुछ आगे पीछे देखने की ज़रूरत है कि क्यों कहा था। सिर्फ़ इस फ़िक़रे को पेश करेंगे तो ख़्यानत होगी। सही बात पेश नहीं हो सकेगी और उन बुज़ुर्गों पर बिला वजह को इल्ज़ाम आएगा। क्योंकि इल्म के बग़ैर बुज़ुर्गी मिल ही नहीं सकती।

हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि हम दो दोस्त थे। और दोनों सलूक में एक ही जज़्बे के साथ लगे। उस दोस्त से मैं इसलिए आगे बढ़ गया कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने मुझे दूसरे से इल्म ज़्यादा अता किया था। जी हाँ, ज़्यादा इल्म वाला जब रास्ते पर चलता है तो बुलंदियाँ भी ज़्यादा पाया करता है। इसलिए कि जैसे गधा और घोड़ा बराबर नहीं हो सकते इसी तरह आलिम और जाहिल भी बराबर नहीं हो सकते।

इंसानी बदन में आज़ा की तीन क़िस्में

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इंसान के अंदर तीन तरह के आज़ा बनाए हैं :

1. आज़ाए इल्म, 2. आज़ाए अमल, 3. आज़ाए माल।

आज़ाए इल्म यानी इल्म हासिल करने के आज़ा कान, आँख और दिमाग़ हैं। उन तीनों रास्तों से इंसान इल्म हासिल करता है। कुछ सुनकर इल्म हासिल करता है। मसलन छोटा बच्चा जो ज़बान सीखता है वह पढ़कर तो नहीं सीखता। माँ-बाप इंगलिश बोलते हैं तो वह छोटा सा बच्चा इंगलिश के अल्फ़ाज़ बोलना शुरू कर देता है। माँ-बाप अरबी बोलते हैं तो वह मासूम बच्चा अरबी बोलना शुरू कर देता है। उसको ज़बान का जितना इल्म हासिल हो रहा है वह सिर्फ़ सुनने के रास्ते से हासिल हो रहा है। इसी तरह कुछ इल्म इंसान देखने के ज़रिए हासिल करता है। गोया सुनना, देखना और अक़्ल इल्म हासिल करने के तीन ज़रिऐ हैं और क़यामत के दिन इन्हीं आज़ाए इल्म ही के बारे में ख़ासतौर से सवाल किया जाएगा। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त फ़रमाते हैं ﴿ان السمع والبصر والفؤاد كل اولئك كان عنه مسئولا.﴾ पूछेंगे कि इन ज़रियों से कौन सा इल्म हासिल किया? दीन का इल्म हासिल किया या तुमने इन्हें बेकार और मामूली चीज़ों में बर्बाद कर दिया।

आज़ा की दूसरी क़िस्म आज़ाए अमल कहलाती है यानी इंसान के वे आज़ा जो अमल करते हैं जैसे हाथ और पाँव।

और आज़ा की तीसरी क़िस्म आज़ाए माल कहलाती है। जैसे फेफड़े और मेदा जिनमें ख़ून होता है। गोया यह माल है जो इन

आज़ा में जमा है। अगर यह माल ग़िज़ा या ख़ून किसी अज़्रू में जमा ही रही और आगे न निकले तो गंदगी फैल जाती है। मालूम हुआ कि अगर किसी के पास माल जमा रहे, ख़र्च न हो तो वह भी फ़साद का सबब बनेगा।

आज़ाए तर्कीब में हिकमत

इल्म वाले आज़ा सबसे ज़्यादा अहम होते हैं। इसलिए अल्लाह तआला ने उनको सर में सजाया। आप देखेंगे कि सुनना और देखना और अक़्ल इंसान के सर में हैं। अमल वाले आज़ा क्योंकि मज़दूर क़िस्म के आज़ा हैं इसलिए उनको सबसे नीचे बनाया। हाथ और पाँव सबसे नीचे हैं और बीच में इंसान का मेदा और फेफड़े हैं जिनको आज़ाए माल कहा जाता है।

इल्म हासिल करना एक क़ुदरती जज़्बा है

इंसान के अंदर कुछ जज़्बात फ़ितरी हैं। मसलन भूख और प्यास का लगना। इसी तरह इल्म का हासिल करना भी इंसान की फ़ितरत में दाख़िल है। दलील इस की यह है कि आदमी सुबह उठते ही अख़बार के पीछे भागता है। उसे अख़बार पढ़ने का ऐसा शौक़ होता है कि नाश्ते में मज़ा ही नहीं आता जब तक अख़बार न पढ़ ले, टीवी, रेडियो पर ख़बर न सुन ले, दूसरों से बहस न कर ले कि जी क्या हुआ है? फ़लां ने क्या किया? अच्छा फिर हालात क्या हैं? हम एक दूसरे से जितनी बातें कर रहे होते हैं हक़ीक़त में हम इस जज़्बे को तसल्ली दे रहे होते हैं।

एक और मिसाल सुन लीजिए। कुछ आदमी कहीं जमा देखें

तो हर आदमी पूछता है कि जी क्या हुआ? अब यह जो हम पूछ रहे हैं कि क्या हुआ, यह हक़ीक़त में इल्म हासिल करने का फ़ितरती जज़्बा है। जिसकी वजह से हम ऐसी चीज़ को जानने की कोशिश कर रहे होते हैं जिसका हमें पता नहीं होता। इसलिए ज़रूरियाते दीन का इल्म हासिल करना इंसान पर फ़र्ज़ फ़रमाया :

﴿طلب العلم فريضة على كل مسلم و مسلمة﴾

इल्म हासिल करना हर मुसलमान मर्द और मुसलमान औरत पर फ़र्ज़ है

इल्म एक नूर है

हदीस पाक में आया है, इल्म एक रोशनी है। इसके ख़िलाफ़ देखा जाए तो जिहालत अंधेरे की तरह है। जिस तरह रोशनी के बग़ैर रास्ता नज़र नहीं आता उसी तरह इल्म के बग़ैर इंसान को शरिअत के रास्ते का पता नहीं चलता। अगर आपने किसी जगह अंधेरा दूर करना हो तो उसका ईलाज यह तो नहीं कि आप अंधेरे को गालियाँ दें, कोसें या झिड़कियाँ दें कि निकल जा यहाँ से। इसका तरीक़ा यह है कि चिराग़ जलाइए, अंधेरा अपने आप ग़ायब हो जाएगा। अगर जिहालत है तो उसको दूर करने का तरीक़ा यह तो नहीं कि उल्टा इल्म की मुख़ालिफ़त की जाए या जिहालत पर पर्दा डाला जाए। इसका तरीक़ा यह है कि आप इल्म हासिल करें। जिहालत अपने आप ख़त्म हो जाएगी।

पहली 'वही' में इल्म हासिल करने की ताकीद

क़ुरआन पाक जब नाज़िल हुआ तो पहला लफ़्ज़ जिससे

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की 'वही' फ़ख़्रे इंसानियत नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नसीब हुई वह थी ﴿اقرا﴾ "इक़्रा"। इसका मतलब है पढ़। पढ़ने के लफ़्ज़ से गोया 'वही' की शुरूआत की गई जिससे पता चलता है कि पढ़ना या इल्म हासिल करना दीने मतीन में इस क़दर अहमियत रखता है। अब यहाँ कोई आदमी यह कह सकता है कि जी सिर्फ़ पढ़ने की बात हुई मगर नहीं। आगे भी बात की गई है :

﴿اقرا باسم ربك الذى خلق. خلق الانسان من علق. اقرا وربك الاكرم﴾

तू पढ़ क़ुरआन तेरा रब करेगा तेरा इकराम। कौन परवरदिगार? ﴿الذى علم بالقلم﴾ जिसने आपको क़लम के ज़रिए इल्म सिखाया। तो क़लम का लफ़्ज़ बता कर बात साफ़ कर दी कि सिर्फ़ पढ़ना ही नहीं बल्कि लिखना भी इसमें ज़रूरी है। हमारा दीन ऐसा अज़मतों वाला दीन है कि जिसने चौदह सौ साल पहले जब जिहालत का दौर दौरा था लिख-पढ़ कर इल्म हासिल करने की इतनी अहमियत बयान फ़रमा दी और ये बातें किस ज़बान से अदा करवाई गयीं। ऐसे महबूब की ज़बान से जो ख़ुद फ़रमाते हैं कि मैं तो उम्मी हूँ, मैं तो अनपढ़ हूँ। वाह मेरे परवरदिगार! लिखे-पढ़े की ज़बान से बात होती तो दुनिया कहती कि इसने अपनी तालीम के ज़रिए इस बात की अहमियत को जान लिया था मगर नहीं, सुब्हानअल्लाह।

उलमाए किराम का एहसान

सुफ़ियान सौरी रह० फ़रमाते हैं कि अगर नेक नियत हो तो तालिब इल्म से अफ़ज़ल कोई नहीं। जी हाँ, हक़ीक़त भी यही है

कि अगर उलमा न होते तो आज इंसान जानवरों की सी ज़िंदगी गुज़ार रहे होते। यह उलमा का एहसान है कि इंसान के लिए दीन का समझना आसान हो गया। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने यह एज़ाज़ उलमा ही को अता फ़रमाया कि वह दीन के हामिल हैं, नाशिर हैं, दा'ई हैं और एक से दूसरे सीने तक पहुँचाने वाले हैं।

इल्म और मालूमात में फ़र्क़

इल्म और मालूमात में फ़र्क़ होता है। एक बार हज़रत मुफ़्ती शफ़ी साहब रह० ने तलबा से पूछा, इल्म किसे कहते हैं? किसी ने कहा, जानना, किसी ने कहा, पहचानना। किसी ने कुछ कहा, किसी ने कुछ। हज़रत ख़ामोश रहे। तलबा ने अर्ज़ किया, आप ही बता दीजिए। हज़रत ने फ़रमाया, इल्म वह नूर है जिसके हासिल होने के बाद इस पर अमल किए बग़ैर चैन नहीं आता क्योंकि वह तमाम ख़बरें जो इंसान के दिमाग़ में तो मौजूद है मगर अमल में नहीं तो वह मालूमात कहलाएंगी। इसीलिए शरिअत मुताहिरा ने इल्मे नाफ़े मांगने का हुक्म दिया है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुआएं मांगते थे कि, "ऐ अल्लाह! मुझ इल्मे नाफ़े (नफ़ा देने वाला इल्म) अता फ़रमा।" इल्मे नाफ़े वही होता है जिस पर अमल किया जाए और अगर सिर्फ़ मालूमात हों तो यह वबाल बन जाती है।

बेअमल पीर और बेअमल आलिम शरिअत की नज़र में

क़ुरआन पाक में बेअमल पीरों को कुत्तों की तरह कहा है और

बेअमल आलिमों को गधे से मिसाल दी। बलअम बऔर जो बनी इस्राईल का सूफ़ी और पीर था। वह रास्ते से भटका उसका पाँव फिसला और वक़्त के नबी के ख़िलाफ़ होकर अपने मुक़ाम से नीचे गिरा तो उसके बारे में अल्लाह तआला ने क़ुरआन पाक में इर्शाद फ़रमाया ﴿فمثله كمثل الكلب﴾ उसकी मिसाल तो कुत्ते की तरह है और उलमाए यहूद में से जिन्होंने दीन पर अमल न किया बल्कि अपनी ख़्वाहिशात को पूरा करने के लिए उसमें फेरबदल की, अल्लाह तआला ने उनके बारे में फ़रमाया ﴿كمثل الحمار﴾ गधे की तरह हैं ﴿يحمل اسفارا﴾ जिनके ऊपर बूझ लदा हुआ होता है।

अमल की ज़रूरत

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त जिसे इल्म अता फ़रमाएं वह बड़ा ख़ुश नसीब इंसान है कि एक क़दम तो उसे सलूक के रास्ते पर उठाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। मगर याद रखें कि अभी काम ख़त्म नहीं हुआ बल्कि अभी काम शुरू हुआ है। उससे अगला क़दम है अमल करना। एक बुज़ुर्ग फ़रमाया करते थे कि इल्म अमल के दरवाज़े पर दस्तक देता है, खुल जाए तो बेहतर और न खुले तो हमेशा के लिए रुख़्सत हो जाता है। वाक़ई आप देखेंगे कि जिन हज़रात का अपने इल्म पर अमल नहीं होता वे थोड़े ही अरसे में इल्म से ख़ाली हो जाते हैं। सिर्फ़ इल्म का नाम रह जाता है मगर इल्म की हक़ीक़त उनके दिलों से उठा ली जाती है। गोया यह इल्म मेहमान होता है। जब तक कि अमल की शक्ल में न ढल जाए। ठोस उलमा तब बनते हैं जब उस इल्म पर उनका अमल हो जाता है। इसलिए फ़रमाया कि ﴿العلم بلا عمل كشجر بلا ثمر﴾

इल्म बग़ैर अमल के ऐसा है जैसे कोई पेड़ बग़ैर फल के हुआ करता है।

इल्म में वज़न अमल की वजह से

एक इल्मी नुक्ता बयान कर देता हूँ कि जब तक इल्म पर अमल न किया जाए उस वक़्त तक इल्म में वज़न नहीं आता। इसकी दलील यह है कि जब पहली 'वही' नाज़िल हुई तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घबरा गए। आप घर पहुँचकर फ़रमाने लगे ﴿زملونی زملونی دثرونی دثرونی﴾ मुझे चादर ओढ़ा दो। आपने अपनी मोहतरम बीवी हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया कि मुझे डर है कि कहीं हलाक न कर दिया जाऊँ। आपकी बीवी ने जवाब दिया, ﴿كلا﴾ हर्गिज़ नहीं। इसकी दलील के तौर पर कहा ﴿انك لتصل الرحم﴾ आप तो सिला रहमी करने वाले हैं ﴿وتكسب المعدوم﴾ और बेमाया लोगों को कमाकर देने वाले हैं ﴿وتحمل الكل﴾ और बेमाया लोगों का बोझ अपने ऊपर उठाने वाले हैं ﴿وتقرى الضيف﴾ मेहमान नवाज़ी करने वाले हैं ﴿وتعين على نوائب الحق﴾ और हक़ बातों पर मदद करने वाले हैं।

मुहद्दिसीन ने यहाँ एक नुक्ता लिखा है कि सैय्यदा ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने आपके इल्मी कमालात को दलील के तौर पर पेश नहीं फ़रमाया कि ऐ अल्लाह के महबूब! आप पर क़ुरआन नाज़िल हो रहा हैं, आप नबी हैं, आप अव्वल व आख़िर वालों के सरदार हैं और न ही इस क़िस्म के फ़ज़ाईल ख़साईल बयान किए हैं बल्कि वे बातें कहीं जो आप के अमल से ताल्लुक़ रखती थीं। मालूम यह हुआ कि हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की नज़र

अमल पर थी। इसलिए कि वह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सोहबत में रहने की वजह यह जानती थीं कि इंसान के अंदर जब इल्म के बाद अमल आता है तो अल्लाह तआला ऐसे बंदे को बर्बाद नहीं किया करते थे।

काएनात की सआदतों का ख़ज़ाना

काएनात की जितनी सआदतें हैं अल्लाह तआला ने उनको इस आयत में भर दिया है ﴿من النبيين والصديقين والشهداء والصالحين﴾ नबिय्यीन और सिद्दीक़ीन दोनों का इल्म से ज़्यादा ताल्लुक़ है। एक नबुव्वत का दावा करने वाला और दूसरे दावे की तसदीक़ करने वाले। शहीदों और नेक लोगों का अमल से ज़्यादा ताल्लुक़ है तो मालूम यह हुआ कि अल्लाह तआला ने काएनात की तमाम तर सआदतों को इल्म व अमल में समो दिया है। जब इल्म बग़ैर अमल के होता है तो भी नुक़सान देता है और जब अमल बग़ैर इल्म के होता है तब भी नुक़सान देता है।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम फ़र्श से अर्श पर

याद रखिए कि जब इल्म पर अमल होता है तो यह एक क़ुव्वत बन जाती है। इसकी दलील के लिए क़ुरआन पाक से दो वाक़िआत बयान कर देता हूँ। एक हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का कि जब तक आप को इल्म हासिल नहीं हुआ था तो उस वक़्त मिस्र के बाज़ार में एक बिकाऊ माल की तरह आपकी क़ीमत लग रही थी लेकिन जब अल्लाह तआला ने आपको इल्म अता किया और उस इल्म पर आप का सौ फ़ीसद अमल हुआ तो

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने आपको फ़र्श से उठाकर अर्श (तख़्त) पर बिठा दिया। और आपके भाई जो इल्म पर अमल न कर सके, वे जानते थे कि अगर हम यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को क़त्ल भी कर दें तो यह ज़्यादती होगी मगर क्योंकि दिल में हसद था इसलिए कहने लगे

اقتلوا یوسف اوطرحوہٗ ارضا یخل لکم وجہ
ابیکم وتکونوا من بعد قوما صالحین۔

कि इसको क़त्ल करके इसका मामला निमटा दो और बाद में तौबा करके नेक बन जाएंगे। बहरहाल उन्होंने नफ़्स की मानी और एक कुँए में फेंक दिया। मालूम यह हुआ कि जो आदमी इल्म पर अमल नहीं करता और कहता है कि गुनाह तो मैं करूंगा, बाद में तौबा कर लूंगा तो उसका मामला हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाईयो वाला है।

दूसरी तरफ़ देखें कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का इम्तिहान था। वह इस इम्तिहान में फ़ौरन कह उठे ﴿معاذ اللہ﴾ मैं अल्लाह तआला से पनाह मांगता हूँ ﴿انہٗ ربی احسن مثوی﴾ जब आप अल्लाह के ख़ौफ़ से गुनाह से बच गए तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने फ़रमाया हाँ वह तो हमारे मुख़्लिस बंदों में से था। इसके बाद आप पर एक और आज़ामइश आई कि आप को कई सालों के लिए जेल में जाना पड़ा। आख़िर उन तमाम मुसीबतों से गुज़रकर एक वह वक़्त भी आया कि आपको जेल से निकाल कर तख़्त पर बिठा दिया गया। पूरी क़ौम सूखे में मुब्तला हो गई। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई सूखे में गिरफ़्तार होकर परेशानी में फंस

गए और आपके पास चलकर आए। ख़ुदा की शान देखिए कि दोनों तरफ़ एक ही बाप के बेटे हैं, इधर भी नबीज़ादे और यह पैग़म्बर अलैहिस्सलाम भी नबीज़ादे मगर अमल के फ़र्क़ से रुत्बे मे फ़र्क़ पड़ गया कि वे लेने वाले, यह देने वाले, वे फ़र्श पर खड़े है यह अर्श पर बैठे हैं।

जब भाई मिस्र पहुँचे तो उन्होंने समझा कि यह अज़ीज़े मिस्र हैं। चुनाँचे जाकर कहने लगे,

﴿يايها العزيز مسنا واهلنا الضر وجئنا ببضاعة مزجٰة فاوف لنا الكيل.﴾

कि हमें और हमारे घरवालों को तंगदस्ती ने परेशान कर दिया है और हम पैसे भी पूरे नहीं लाए और हमें अनाज पूरा दे दें ﴿وتصدق علينا﴾ हमारे ऊपर सदक़ा व ख़ैरात कर दें ﴿ان اللّٰه يجزى المتصدقين.﴾ अल्लाह तआला सदक़ा देने वालों को बदला देता है। जब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने देखा कि मामला यहाँ तक पहुँच चका है तो पूछा कि ﴿ما فعلتم بيوسف﴾ तुमने यूसुफ़ के साथ क्या किया था? वे हैरान हो गए। कहने लगे ﴿ءانك لانت يوسف﴾ क्या आप यूसुफ़ हैं? ﴿قال انا يوسف﴾ हाँ मैं यूसुफ हूँ ﴿وهٰذآ اخى﴾ यह मेरा भाई बिनयामीन है। ﴿قد من الله علينا﴾ तहक़ीक़ अल्लाह तआला ने हम पर एहसान किया ﴿انهٗ من يتق ويصبر﴾ बेशक जो अपने अंदर तक़्वा और सब्र व ज़ब्त पैदा करता है ﴿فان اللّٰه لا يضيع اجر المحسنين.﴾ अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ऐसे नेकोकारों का अज्र ज़ाए नहीं किया करते। हर दौर और हर ज़माने में यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाईयों की तरह जो आदमी तोबा की उम्मीद पर गुनाह करेगा उसको फ़र्श पर खड़ा किया जाएगा और जो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम

की तरह गुनाहों से बचकर ज़िंदगी गुज़ारेगा अल्लाह तआला उसे ताज व तख़्त अता फ़रमाएंगे।

मलिका बिलक़ीस का तख़्त इल्म के परों पर

दूसरा वाक़िआ हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम का कि आप ने अपने मानने वालों से फ़रमाया, मलिका बिलक़ीस का तख़्त कौन उठाकर लाएगा? एक जिन्न ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! मैं उसे आपके पास पहुँचा सकता हूँ इससे पहले कि आप इस जगह से खड़े हों। आपने फ़रमाया यूँ तो बहुत देर लग जाएगी, कोई और बात करे। फिर एक आदमी ने आसिफ़ बिन बर्ख़िया ﴿عنده علم من الكتاب﴾ जिसके पास किताब का इल्म था, खड़े हुए और अल्लाह ने उनको इल्म व अमल और मारिफ़त का नूर अता किया था, उसकी बुनिया पर कहने लगे ﴿انا اتيك به قبل ان يرتد اليك طرفك﴾ मैं आपके पास पहुँचा देता हूँ इससे पहले कि आप अपनी पलक को झपकें ﴿فلما راه مستقرا عنده قال هذا من فضل ربى﴾ जब पलक झपककर देखा तो सामने तख़्त मौजूद था। फ़रमाने लगे यह तो मेरे रब का फ़ज़ल है। मालूम हुआ कि जिस इल्म पर इंसान अमल कर लेता है वह अल्लाह का फ़ज़ल बन जाता है।

इख़्लास और इस्तिग़ना की ज़रूरत

आम लोगों की इस्लाह से ज़्यादा उलमा की इस्लाह की ज़रूरत है क्योंकि आम लोगों की कोताही दीन पर धब्बा नहीं बनती

जबकि उलमा की कोताही का धब्बा दीन पर लगता है। हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाया करते थे कि मुझे एक बच्ची ने नसीहत की जो मैं कभी भूल नहीं सकता। किसी ने कहा, वह कौनसी नसीहत? फ़रमाया बारिश हो रही थी, मैं जा रहा था, सामने एक बच्ची आ रही थी, मैंने बच्ची से कहा, बेटी! ज़रा संभलकर चलना, कहीं फिसलकर गिर न पड़ो। कहने लगी, अच्छा मुझ से ज़्यादा आप संभलकर चलना है, मैं गिरी तो अकेली गिरूंगी और आप गिर गए तो पूरी क़ौम गिर जाएगी।

मजमा में जो उलमा बैठे हैं वह ज़रा दिल के कानों से सुनें, उम्मीद है कि आप इस बात को महसूस नहीं फ़रमाएंगे। इस बात का पहुँचाना भी ज़रूरी है चाहे बुरी लगे, ज़रूरी तो नहीं कि दवाई हमेशा मीठी हो, कभी कढ़वी भी तो होती है बल्कि कढ़वी दवाई तो ज़्यादा फ़ायदा देती है, जल्दी ख़ू साफ़ करती है। अगर उलमा तलबा में से कोई यह बात कहे कि उन्होंने यह कैसी बात कह दी है, तो हाँ मेरे दोस्त! बात ऐसी ही है, जी न भी माने तो फिर भी इसको अपने दिल में जगह दे दो। आज नहीं तो ज़िंदगी के किसी मोड़ पर बात समझ आ जाएगी। वह बात यह है कि जिसको अल्लाह तआला इल्म अता फ़रमाए, उसे चाहिए कि अपने अंदर इख़्लास औ इस्तिग़ना पैदा करे क्योंकि यह इस रास्ते का तीसरा और अहम तरीन क़दम है।

इल्म की शान

मोहतरम उलमाए किराम! इल्म इस्तिग़ना के साथ सजता है। अगर इस्तिग़ना न हो तो फिर इल्म की शान नहीं रहती। इसलिए

उलमा को चाहिए कि इस्तिग़ना के साथ ज़िंदगी गुज़ारें। लोगों की जेब पर नज़र रखने के बजाए अल्लाह के ख़ज़ानों पर नज़र रखें। रिज़्क उनको मस्जिद की कमेटी नहीं देगी बल्कि अल्लाह तआला देगा। यह वहाँ से खाएंगे जहाँ से अल्लाह तआला अपने अंबिया किराम को खिलाया करते थे क्योंकि ये अंबिया अलैहिमुस्सलाम के वारिस होते हैं। आज उम्मत में इसी वजह से फ़साद फैला हुआ हो कि उलमा में हिर्स पैदा हो चुका है। कई जगहों पर हक़ की बात इस लिए नहीं कहेंगे कि कमेटी क्या कहेगी, फलां मौहल्ले वाले क्या कहेंगे। नहीं इस्तिग़ना के साथ काम करना चाहिए।

हज़रत मौलाना क़ासिम साहब नानौतवी रह० की इस्तिग़नाए क़ल्बी

इंसान जब इस्तिग़ना के साथ काम करता है तो दुनिया उसके पीछे भागती है। हज़रत मौलाना क़ासिम साहब नानौतवी रह० फ़रमाया करते थे कि जो आदमी मुझे मोहताज समझकर हदिया पेश करे, मेरा दिल उसका हदिया क़ुबूल करने को नहीं करता। अलबत्ता सुन्नत समझकर पेश करे तो उसे ज़रूर क़ुबूल करूंगा। एक दफ़ा एक आदमी ने आकर आपको हदिया पेश किया। आपने महसूस किया कि यह तो एहसान चढ़ाकर हदिया दे रहा है। लिहाज़ा आपने इंकार कर दिया। मगर वह पीछे लगा रहा कि हज़रत! क़ुबूल कीजिए, हज़रत! क़ुबूल कीजिए। हज़रत ने दो चार दफ़ा के बाद उसको सख़्ती से डांट दिया कि नहीं, मैं नहीं क़ुबूल करूंगा। जब उसने देखा कि चेहरे पर जलाल है तो पीछे हट गया। जब मस्जिद से बाहर निकलने लगा तो उसकी नज़र हज़रत

के जूतों पर पड़ी। उसके दिल में ख़्याल आया कि हज़रत जब बाहर निकलेंगे तो जूते तो पहनेंगे ही, लिहाज़ा उसने वे पैसे हज़रत के जूतों में रख दिए। जब हज़रत मस्जिद से बाहर निकले और पाँव जूते में रखा तो उसमें पैसे थे। आपने देखा और मुस्कराकर फ़रमाया कि ये वही पैसे हैं जो वह आदमी हदिए में पेश कर रहा था। पहले सुना करते थे और आज आँखों से देख लिया कि जो इंसान दुनिया में ठोकर लगाता है, दुनिया उसके जूतों में आया करती है।

हज़रत अक़्दस थानवी रह० की इस्तिग़नाए क़ल्बी

हज़रत अक़्दस थानवी रह० से एक नवाब साहब बैअत हो गए। बड़े माल व पैसे वाले थे। उस दौर में जब उस्ताद की तंख़्वाह पाँच रुपया महाना हुआ करती थी। उसने हज़रत को एक लाख रुपया भिजवाया। हज़रत ने उसके ख़त की तहरीर से महसूस किया कि यह तो एहसान जतला कर पेश कर रहा है। हज़रत ने मनीआर्डर वापस कर दिया। जब मनीआर्डर वापस गया तो वह सटपटा गया। उसने फिर ख़त लिखा, हज़रत मैंने बैअत होकर आपको एक लाख रुपया हदिया पेश किया, आपको ऐसा मुरीद कहीं और नहीं मिलेगा। हज़रत ने ख़त पढ़ा और जवाब में लिखा अगर मुझे तुझ जैसा मुरीद नहीं मिलेगा तो तुझे भी मेरे जैसा पीर नहीं मिलेगा जो तेरे एक लाख रुपए को ठोकर मार दे।

एक दिलचस्प इस्लाही बातचीत

एक साहब इस फ़क़ीर के पास आए और कहने लगे कि हम

तो यह भी करते हैं और वह भी करते हैं, यह भी मनाते हैं वह भी मनाते हैं। फ़क़ीर ने कहा, जी क्यों मनाते हैं? कहने लगा, ही हरज ही क्या है? फ़क़ीर ने उसे कहा, भाई! अगर आपके पास एक ख़ूबसूरत क़ालीन हो और आप उस पर टाट का पेवंद लगा दें तो क्या अच्छा लगेगा? कहने लगा, हाँ अच्छा तो नहीं लगेगा लेकिन इसमें हरज ही क्या है? फ़क़ीर ने सोचा, बेचारा अक़्ल से ख़ाली नज़र आता है इसलिए इसको किसी और तरह से बात समझानी पड़ेगी। लिहाज़ा फ़क़ीर ने पूछा, जी आपका नाम क्या है? कहने लगा, अब्दुर्रहमान। फ़क़ीर ने कहा, अच्छा मैं आज के बाद आपको अब्दुर्रहमान बेवक़ूफ़ कहा करूंगा। जब फ़क़ीर ने यह बात की तो कहने लगा, आप ऐसा क्यों कहेंगे? फ़क़ीर ने कहा, इसमें हरज क्या है? अगर यही दलील है कि हरज ही क्या है तो हम जनाब को आइंदा से अब्दुर्रहमान बेवक़ूफ़ कहा करेंगे। कहने लगा, नहीं, नहीं, मेरा नाम तो अब्दुर्रहमान है। फ़क़ीर ने कहा, जैसे तुझे अपने नाम के साथ कोई लफ़्ज़ पसंद नहीं जो उसमें ऐब पैदा कर दे तो अल्लाह तआला को भी अपने महबूब की सुन्नत के साथ ऐसी बात पसंद नहीं जो उसके साथ बिदअत का पेवंद लगा दे।

याद रखिए किसी क़ौम में जब कोई बिदअत आ जाती है तो अल्लाह तआला उसके मुक़ाबिल की एक सुन्नत उस क़ौम से उठा लेते हैं और क़यामत तक उस सुन्नत को उस क़ौम में वापस नहीं लौटाया करते। लिहाज़ा बिदअत से बचना और सुन्नत पर चलना बहुत ज़रूरी है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त जज़ाए ख़ैर दे हमारे बड़ों को कि उन्होंने दीन में न तो कमी की और न ज़्यादती की बल्कि एक

हाथ में इल्म और दूसरे हाथ में अमल लेकर सुन्नत के रास्ते पर चलते जा रहे हैं। यही सीधा रास्ता है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें इस पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे। (आमीन)

एक नुक्ते की वज़ाहत

एक नुक्ता भी समझ लीजिए कि जब इल्म भी कामिल होगा और अमल भी कामिल होगा तो फिर आपको जोड़ नज़र आएगा वरना तोड़ नज़र आएगा। सच्चे आलिम की पहचान होती है कि वह सूफ़िया का क़दरदान होगा और सच्चे सूफ़ी की पहचपन यह होती है कि वह उलमा का क़दरदान होगा। लिख लीजिए सीने पर जब इल्म भी अधूरा होगा और इश्क़ भी अधूरा होगा तो वे दोनों में आपस में टकराते नज़र आएंगे। एक वाक़िआ सुनाकर बात को पूरी करता हूँ

ख़्वाजा निज़ामुद्दीन रह० की समाअ की महफ़िल का मंज़र

ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रह० बड़े साहिबे जज़्ब और साहिबे हाल बुज़ुर्ग थे। वह नाअत सुनने के बड़े शौक़ीन थे। नाअतिया कलाम सुनकर उन पर वज्द तारी हो जाता था। उस दौर में उसको महफ़िले समाअ कहा जाता था। सारंगियाँ, तबले और मज़ामीर नहीं होते थे। ये यार लोगों ने बाद में शामिल कर लीं और नाम बुज़ुर्गों का लगा दिया। ज़रा किताबें पढ़कर तो देखो कि उस वक़्त महफ़िले समाअ किन महफ़िलों को कहा जाता था। 'अवारिफ़ मआरिफ़' में लिखा है कि जिसमें मज़ामीर हो वह

समाअ सुनना हराम है, जहाँ मर्द-औरतें इकट्ठे हों वहाँ बैठना हराम है। फ़रमाते हैं कि समाअ वह बंदा सुन सकता है जिसको एक तरफ़ अश'आर सुनाए जाएं और दूसरी तरफ़ भूख लगी हुई हो और खाना रखा हुआ हो और उसकी तबियत को खाने की तरफ़ रग़बत कम हो और इश्क़िया अश'आर की तरफ़ उसकी रग़बत ज़्यादा हो। यह उस दौर की महफ़िले समाअ थी, आज के दौर की नहीं।

ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रह० जब इश्क़ के शे'र सुनते तो उन पर जज़्ब की कैफ़ियत तारी हो जाती। उस दौर में हकीम ज़ियाउद्दीन सुनामी रह० एक बुज़ुर्ग थे जिनको वक़्त के बादशाह ने मोहतसिबे आला बनाया था। उनका काम यह था कि जहाँ शरिअत के ख़िलाफ़ कोई काम देखें, उस पर तन्क़ीद करें और उसको रोक दें। उनको क़ाज़ी कहा करते थे। वह हर वक़्त ताक में रहते थे कि कोई ऐसी बात जो दीन के ख़िलाफ़ हो तो उसको किस तरह ख़त्म कर दिया जाए।

एक दफ़ा उनको पता चला कि जनाब ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रह० शहर से बाहर एक जगह महफ़िल लगाए बैठे हैं। जब यह अमले को लेकर वहाँ पहुँचे तो देखा अश्'आर पढ़े जा रहे हैं और लोग जज़्ब में हाल से बेहाल हो रहे हैं। उनको कुछ पता नहीं, बड़े उछल-कूद रहे हैं। थोड़ी देर तो उन्होंने सहन किया मगर उन्होंने कहा कि इसको रोकना चाहिए। कहीं बात इससे आगे न बढ़ जाए। लिहाज़ा उन्होंने उस ख़ेमे की रस्सियाँ कटवा दीं मगर देखा ख़ेमे उसी तरह खड़े हैं, नीचे नहीं गिरे। हकीम ज़ियाउद्दीन

सुनामी रह० ने कहा कि ये सच्चे हाल में हैं जो इश्क़ व मुहब्बत के साथ ऐसा कर रहे हैं। लिहाज़ा ख़ामोशी से वापस आ गए लेकिन वह कहते थे कि मैं इसे बिदअत समझता हूँ।

हकीम ज़ियाउद्दीन सुनामी रह० और सुन्नत का अदब

कुछ अरसे के बाद हकीम ज़ियाउद्दीन सुनामी रह० बीमार हो गए। हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन रह० को पता चला। आपने सोचा कि वक़्त के इतने बड़े आलिम हैं और सुन्नतों के पाबंद हैं इसलिए मुझे उनकी अयादत के लिए जाना चाहिए। लिहाज़ा आप उनकी अयादत के लिए उनके दरवाज़े पर पहुँचे, दस्तक दी देकर अंदर पैग़ाम भेजा कि मैं आपकी अयादत के लिए आया हूँ। हकीम ज़ियाउद्दीन सुनामी ने जवाब भिजवाया कि मेरा आख़िरी वक़्त है। मालूम नहीं कि किस वक़्त जान निकल जाए। मैं अपने आख़िरी वक़्त में किसी बिदअती की शक्ल देखना भी पसंद नहीं करता। अब कैसा सख़्त जवाब था लेकिन ख़्वाजा निज़ामुद्दीन रह० समझ रहे थे कि सुन्नत की मुहब्बत में बात कर रहे हैं। इसलिए उन्होंने फ़ौरन जवाब भिजवाया कि हाँ बिदअती आपके दरवाज़े पर आया है मगर बिदअत से तौबा करने के लिए आया है। जब यह पैग़ाम हकीम ज़ियाउद्दीन रह० को मिला तो लेटे हुए थे फ़ौरन उठ बैठे और अपनी पगड़ी सर से उतारी, शार्गिद से कहा मेरे बिस्तर से लेकर मेरे दरवाज़े तक इस पगड़ी को बिछा दीजिए और हज़रत से कहिए कि अपने जूतों समेत पगड़ी पर चलते हुए तशरीफ़ लाइए।

लिहाज़ा साबित हुआ कि जब इल्म भी कामिल हो और अमल

भी कामिल हो तो एक दूसरे का इकराम होता है। अल्लाह रब्बुल इ़ज्जत हमें इल्मे कामिल अता फ़रमाए और उसमें इख़्लास पैदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। ये तीन दर्जे हासिल करने पर इंसान को अल्लाह का क़ुर्ब नसीब होता है। अल्लाह रब्बुलइ़ज़्ज़त हम भटके हुओं को भी अपना वस्ल नसीब फ़रमा दे। (आमीन सुम्मा आमीन)

❁ ❁ ❁

तसनीफ़ व तालीफ़ की अहमियत

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفىٰ اما بعد

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم٥

بسم الله الرحمٰن الرحيم٥

يرفع اللهُ الذين آمنوا منكم والذين اوتوا العلم درجٰت ٥ سبحان ربك

رب العزه عما يصفون وسلام على المرسلين. والحمد لله رب العالمين.

दीने इस्लाम की शान

दीने इस्लाम क़यामत तक आने वाले तमाम इंसानों के लिए क़ाबिले अमल है। बदलते दौर के बदलते तक़ाज़ों को अपने अंदर समो लेना इस्लाम की शान है। फ़ुक़्हा ने फ़िक़्ह की तर्तीब इस अंदाज़ से कर दी है कि इन नक़्शों पर चलते हुए किसी दौर का कोई भी मस्‌अला हो इंसान उसके बारे में रहनुमाई हासिल कर सकता है। कोई ऐसी जगह नहीं कोई ऐसा वक़्त नहीं कोई ऐसा मौक़ा नहीं कि जब इस्लाम इंसान को ज़िंदगी के किसी मस्‌अले के बारे में जवाब न दे सके।

दुनिया के दीनों के ज़वाल की वजह

यहूदियत और ईसाईयत के गिरने की वजह यह थी कि उनके उलमा ने अपने अपने दौरों में दीन के अंदर कुछ बातें अपनी मर्ज़ी के साथ लिखना शुरू कर दीं और उनके मायने व मफ़हूम अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ बयान करना शुरू कर दिए। जहाँ अपना फ़ायदा देखते उसके बारे में अच्छी बात कहना शुरू कर देते। बुनियादी वजह यह थी कि उनके दीनों की हिफ़ाज़त उनके उलमाए किराम के ज़िम्मे थी। जब उलमाए किराम ने ही दीन में फेरबदल शुरू कर दी तो हिफ़ाज़त कैसे होती? बस वे तमाम दीन ज़वाल का शिकार हो गए।

दीने इस्लाम की हिफ़ाज़त

दीने इस्लाम एक ऐसा दीन है कि जिसकी हिफ़ाज़त का ज़िम्मा ख़ुद अल्लाह तआला ने लिया है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इर्शाद फ़रमाया ﴿انا نحن نزلنا الذكر وانا له لحافظون﴾ इस नसीहतनामे को हमने ही नाज़िल किया और हम ही इसकी हिफ़ाज़त के ज़िम्मेदार हैं। जब परवरदिगार आलम ने इसकी हिफ़ाज़त का ज़िम्मा ले लिया है तो अब उलमा की एक जमात ऐसी होगी जो क़यामत तक सीधे रास्ते पर चलेगी। इस दीन के अंदर कोई टेढ़ापन या कजी नहीं आने देगी। जब कोई क़ुरआन की तफ़्सीर लिखेगा तो वह जमात कच्ची बात न लिखने देगी। जहाँ वह कोताही करेगा, कोई ग़लत बात लिखेगा या उसकी तहरीर में ग़लती होगी तो अहले हक़ की यह जमात उसकी निशानदिही करेगी। खोटे और खरे को अलग कर देगी। क़ुरआन मजीद में उसे अल्लाह की

जमात कहा गया है ﴿الا ان حزب الله هم المفلحون.﴾ और अल्लाह का गिरोह हमेशा कामयाब रहेगा। हदीस मुबारक ﴿العلماء ورثة الانبياء﴾ के हिसाब से क्योंकि उलमा ही अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम के वारिस हैं लिहाज़ा उनकी बुनियादी ज़िम्मेदारी दीन की हिफ़ाज़त है।

अंग्रेज़ी पढ़े-लिखे लोगों की अजीब सोच

आज के अंग्रेज़ी पढ़े-लिखे लोगों के ज़हनों में एक बात अक्सर आती है कि उलमा को साइंस पढ़नी चाहिए, उलमा को अंग्रेज़ी पढ़नी चाहिए। उस वक़्त वे इस चीज़ को भूल जाते हैं कि उलमा के ज़िम्मे दीन की हिफ़ाज़त का काम है। उन्होंने इस दीन को चौदह सौ साल पहले वाली हालत में उसी तरह क़यामत तक महफ़ूज़ रखना है। इसलिए हक़ तो यह था कि अंग्रेज़ी पढ़े-लिखे लोग यह कहते कि जितने भी अंग्रेज़ी वाले हैं उनको सबको दीन पढ़ना चाहिए। यह अपना-अपना चुनाव होता है। याद रखें कि यह उलमाए किराम ज़माने के हालात से मुतास्सिर नहीं होते बल्कि उन्होंने दीन जैसे अपने ऊपर वालों से पाया है बिल्कुल उसी तरह आने वाली नस्लों को पहुँचाते हैं। इसलिए अब उनको अंग्रेज़ी पढ़ाने की ज़रूरत नहीं है। अलबत्ता जो अंग्रेज़ी पढ़ रहे हैं उनको दीन पढ़ा लो। आपकी यह हसरत पूरी हो जाएगी।

गुलामी के दो सौ साल

मुसलमानों ने जिस तरह हिंद व पाक में गुलामी के दो सौ साल गुज़ारे हैं अगर मामला हम जैसे आम लोगों पर टिका होता

तो मालूम नहीं दीन आज किस शक्ल में होता। इस दीन में पता नहीं कितने 'दीने इलाही' पैदा हो चुके होते। आजकल के नौजवान फ़िरंगी लिबास पैंट-कोट को चाहने वाले और दफ़्तरों के बड़े रसिया बने हुए हैं।

उन्होंने दीन कहाँ सीखा भला जा जा के मकतब में
पले कालेज के चक्कर में मरे साहब के दफ़्तर में

इसलिए अगर यह बोझ हमारे कंधों पर होता तो आज अंग्रेज़ों के रहन-सहन को सुन्नत बनाकर आने वाली नस्ल को पेश कर रहे होते।

न्युयार्क में एक टाई आलिम की बदज़बानी

कुछ अरसे पहले न्युयार्क में एक साहब सूट-पैंट पहने हुए, टाई लगाए हुए मिंबर पर चढ़े जुमा का ख़ुत्बा दे रहे थे। ऐसे लोगों को हम टाई आलिम कहते हैं। वह साहब जुमा का ख़ुत्बा देते हुए कहने लगे, "नक़्ल कुफ़्र नक़्ल न बाशद" कि आज के दौर में अगर रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी होते तो वह भी जीन का लिबास पहनते, (उसके मुँह में ख़ाक)।

यह अच्छा हुआ कि उस मजमे कोई दीवाना था। वह यह बात सुनकर खड़ा हुआ और कहने लगा कि जनाब आप तो मेरे आक़ा की बात कर रहे हैं, मैं उनके ग़ुलामों के ग़ुलामों के ग़ुलामों का ग़ुलाम भी नहीं बन पाया और आज मैं इस अंग्रेज़ी लिबास से नफ़रत करता हूँ तो आप मेरे आक़ा से यह बात कैसे जोड़ सकते हैं। फिर उस दीवाने ने बड़े मज़े का जवाब दिया। कहने लगा,

मौलाना! ज़रा अपने ज़हन को साफ़ कर लीजिए कि अंबिया दुनिया में इसलिए नहीं आते कि वह किसी की पैरवी करें बल्कि वे इसलिए आते हैं कि लोग उनकी पैरवी करें। उसने बिल्कुल ठीक जवाब दिया। इर्शादे बारी तआला है कि

﴿وما ارسلنا من رسول الا ليطاع باذن الله﴾

और हमने कोई रसूल नहीं भेजा मगर यह कि उसकी पैरवी की जाए।

अगर अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम पीछे चलने वाले होते तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम तो फ़िरऔन के साथ हो जाते और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दौरे जाहिलियत के रस्म व रिवाज के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते मगर नहीं, वे तो चट्टान की तरह डट जाते थे, सीसा पिलाई हुई दीवार बन जाते थे। इसी वजह से उनको बड़े-बड़े मुजाहिदे सहन करना पड़ते थे।

हक़ की जीत

हदीस पाक में आया है कि अंबिया किराम पर सबसे ज़्यादा आज़ामइशें आयीं। ﴿ثم الامثل فالامثل﴾ फिर वे जो उनके जैसे हुए, फिर वे जो उनके जैसे हुए। ये मुजाहिदे इसलिए थे कि उनको अल्लाह तआला की तरफ़ से एक तर्ज़े ज़िंदगी अता कर दिया गया था। वे उसके ऊपर जम जाते थे। कुफ़्र टक्करें मारता रहता था मगर वे अपने मक़सद में पूरे उतरते थे। अल्लाह तआला हक़ को बातिल पर फेंक मारते थे। और हक़ बातिल का भेजा निकाल देता था। यूँ हक़ की जीत हो जाती थी।

क्लीन-शेव मुफ़्तिए आज़म

इंसान को अपने मुल्क के उलमाए किराम की क़दर उस वक़्त आती है जब वह मुल्क से बाहर क़दम रखता है। यक़ीन कीजिए कि बाहर मुल्कों का माहौल इतना काफ़िराना बन चुका है, इस क़दर वहाँ अंग्रेज़ी तहज़ीब हावी हो चुकी है, इतना अंधेरा आता जा रहा है कि वहाँ के उलमा भी इन असरात की लपेट में आ रहे हैं। फ़क़ीर एक बार किसी मुल्क के मुफ़्तीए आज़म के पास गया तो हैरान रह गया कि वह क्लीन-शेव थे। इतना बड़ा मुल्क कि वह इस्लामी मुल्कों में ऐटमी ताक़त है। उस मुल्क के मुफ़्तीए आज़म की यह हालत कि वह सुन्नत से महरूम है बल्कि वह सुन्नत को इस तरह समझता है जैसे आम आदमी मस्तहब चीज़ों के बारे में भी यह गुमान नहीं रखते हैं।

तुर्की की मस्जिदों की बेअदबी

आप तुर्की के मुल्क में चले जाएं। आपको मस्जिदों की सफ़ों के साथ-साथ सिगरटों के छोटे-छोटे टुकड़े नज़र आएंगे। होता यह है कि जब कुछ लोग नमाज़ पढ़ रहे होते हैं तो कुछ लोग नमाज़ के इंतिज़ार में सिगरेट पी रहे होते हैं। जब नमाज़ के लिए जमात खड़ी हो जाती है तो वहीं सिगरेट बुझाकर अल्लाहु अकबर कह लेते हैं। मस्जिदों का यह माहौल उलमा की बदहाली की दलील है।

औरतों की बुरी हालत

वहाँ की औरतों ने स्कर्ट कैसे पहनना शुरू की जिसमें उनकी

टांगे पिंडलियों तक नंगी होती हैं। वहाँ की औरतों ने नंगे सर क्यों रहना शुरू किया? उलमा की कमज़ोरी की वजह से। अब वहाँ का माहौल ऐसा बन चुका है कि अगर आप मुसलमानों की आबादी में जाकर देखें तो आपको पता नहीं चलेगा कि मैं मुसलमानों की आबादी में हूँ या अंग्रेज़ों की आबादी में।

दिल दहला देने वाला मज़ाक़

वहाँ देहातों के अंदर इल्म नहीं था। कई ऐसी मस्जिदें भी देखीं जहाँ लोगों ने जुब्बा रखा होता है। एक पगड़ी रखी होती है और एक दाढ़ी बनी हुई पड़ी होती है। इमाम साहब सूट-पैंट में आते हैं और मुसल्ले पर खड़े होने से पहले जुब्बा पहन लेते हैं और पगड़ी भी बांध लेते हैं और यह बात कहते हुए दिल पानी-पानी होता है कि मस्जिद में पड़ी हुई दाढ़ी उठाकर लगा लेते हैं और इस हालत में इमामत करवाते हैं। आपने सुन्नत रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ऐसा मज़ाक़ कभी नहीं सुना होगा।

ख़िराजे तहसीन

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमारे हज़रात को जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए। यक़ीन कीजिए कि अगर हम उनके जूतों को सर पर रखें तो भी उनका अदब नहीं कर सकते। हमारे उलमा हमारे सीनों पर पाँव रखकर आगे गुज़र जाएं तो फिर भी हमें इसका दुखः नहीं होगा। उन्होंने अपनी ज़िम्मेदारी पूरी कर दिखाई। इसलिए आज कोई भी चीज़ दीन के ख़िलाफ़ हो चाहे कहीं भी हो तो दुनिया में पाकिस्तान ही ऐसा मुल्क है जहाँ के उलमा सबसे

पहले उसकी निशादिही करते हैं। इस मुल्क की क़दर बाहर जाकर आती है। यहाँ रहते हुए तो माली हालत की वजह से हर बंदा शिकायत कर रहा होता है लेकिन ख़ुदा के बंदो! तुम्हारा दीन और ईमान यहाँ रहते हुए महफ़ूज़ है। तुमने इसकी कोई क़ीमत भी नहीं डाली। अगर बाहर जाकर तुम्हें चंद टके मिल जाते हैं तो क्या वह ईमान की क़ीमत बन सकते हैं। नहीं बन सकते। यूरोप में जितने मुसलमान हैं उन सबको पेट भरकर खाने को मिलता है और जब खाने पीने को मिले तो बंदा पेट भरा होता है और उसमें गुनाह की तरफ़ झुकाव बढ़ता है।

अमरीकी मुसलमानों की हालत

एक दफ़ा फ़क़ीर को अमरीका की एक मस्जिद में दर्स क़ुरआन की दावत मिली। लिहाज़ा मस्जिद में पहुँचे तो देखा कि मस्जिद बहुत बड़ी थी और आदमी सिर्फ़ सत्तर-पच्हत्तर थे। वे सब लोग दीवारों के साथ सहारा लगाकर बैठ गए, टांगे लम्बी-लम्बी की हुई थीं और सहन बिल्कुल ख़ाली। वे कहने लगे हज़रत आप बयान करें हमें आवाज़ पहुँच रही है। वहाँ का अंदाज़ ही ऐसा होता होगा। फ़क़ीर को जब इस अंदाज़ से उन्होंने कहा तो फिर मिंबर का भी कुछ हक़ होता है। फिर फ़क़ीर ने उनके दिमाग़ खोले। और कहा भाई सुनो! हर महफ़िल के आदाब होते हैं। तुम पर अफ़सोस है कि जिन्हें आज तक उन आदाब का पता ही न चल सका कि अल्लाह के क़ुरआन को किसी महफ़िल में सुनने के लिए आएं तो कैसे बैठना होता है। और फिर वह सुनायीं कि वे सारी ज़िंदगी याद रखेंगे। फ़क़ीर ने बिल्कुल साफ़ कहा कि तुम

लोगों ने वतन छोड़ा, कुंबा-क़बीला छोड़ा, अज़ीज़ व अक़ारिब छोड़े, इतने अच्छे माहौल को छोड़ा, तुम्हें तुम्हारी माँ रोए, क्या तुम यहाँ आकर अपना दीन भी छोड़ दोगे। तुम्हारे पल्ले क्या बचेगा कि चंद टकों की ख़ातिर तुमने ऐसा सौदा किया। यह सुनकर उनकी आँखें खुल गयीं। फ़क़ीर ने कहा, तुम क्या समझते हो कि मैं तुमसे कुछ लेने आया हूँ। फिर उनको एहसास हुआ और सीधे होकर सामने बैठ गए। यह असल पेट भरे की बातें होती हैं कि जब इंसान को खाने को मिल जाए तो फिर बंदा दीन को मज़ाक़ बना लेता है।

उलमा की ज़िम्मेदारी

इन हालात में दीन की हिफ़ाज़त कौन करेगा? यह उलमा की ज़िम्मेदारी है। अगर यह काम दफ़्तर वालों के, हुकूमत वालों के ज़िम्मे होता तो ये लोग दीन के साथ इस तरह खेलते जिस तरह बच्चे रोज़ाना अपने खिलौनों के साथ खेलते रहते हैं। मगर अल्लाह का शुक्र है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने मेहरबानी फ़रमाई कि इस दीन की हिफ़ाज़त एक ऐसी जमात के सुपुर्द कर दी जिसके बारे में फ़रमाया ﴾والربانيون﴿ ख़ुदा वाले, रब वाले, नेक बंदे ﴾والاحبار﴿ और अहले इल्म हज़रात ﴾بما استحفظوا من كتاب الله﴿ जिन्होंने अल्लाह की किताब की हिफ़ाज़त करनी है ﴾وكانوا عليه شهداء﴿ और ये उस पर गवाह हैं। उन्होंने एक-एक आयत पर डेरे डालने हैं, झुग्गियाँ डालनी हैं और दीन के अंदर किसी को कमी नहीं करने देनी।

उम्मत के बड़ों की क़ुर्बानियाँ

हर दौर में उलमा इस दीन की ख़ातिर क़ुर्बानियाँ देते रहे।

आप पीछे तारीख़ देखें तो आपको इमाम अहमद बिन हंबल रह० की क़ुर्बानियाँ नज़र आएंगी कि उन्होंने किस तरह वे कोड़े खाए कि जो हाथी को मारे जाते तो वह बिलबला उठता। वे कोड़े नाज़ुक बदन पर मारे गए और उन्होंने जमाव का पहाड़ बनकर उन कोड़ों को सहन किया। ज़रा देखो उन ज़िंदगियों को, कहीं आपको हज़रत इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रह० की लाश जेल से निकलती हुई नज़र आएगी। यह सब कुछ किस लिए था? वे दीन की ख़ातिर क़ुर्बानियाँ देते थे क्योंकि उन्हें पता था कि यह हमारी ज़िम्मेदारी है।

तक़रीर और तहरीर का फ़ैज़

इस दीन पर काम तक़रीर के ज़रिए भी किया गया है और तहरीर के ज़रिए से भी। मुहद्दिसीन ने दर्स दिए, मुफ़स्सिरीन ने दर्स दिए, मशाइख़ ने दर्स दिए और अपने-अपने वक़्त में लोगों को गर्माया। यह भी एक बड़ा काम था मगर लिखने का काम इससे भी बड़ा काम है, जिसकी उम्र हज़ारों साल हुआ करती है। इसलिए कह सकते हैं कि लिखने का फ़ैज़ तक़रीर के फ़ैज़ से हमेशा ज़्यादा होता है।

हदाया का फ़ैज़

देखें कि 'हदाया' फ़िक़्ह की एक किताब है। लिखने वाले दुनिया से रुख़सत हो गए। कई लोगों को उनके नाम का भी पता नहीं होगा। लेकिन सैंकड़ों साल गुज़रने के बाद आज भी कोई आलिम बनता है तो वह इस किताब को पढ़े बग़ैर अपने आपको आलिम नहीं कहलवा सकता।

फ़तावा शामी का फ़ैज़

क़रीब के ज़माने में देखें कि अल्लामा शामी रह० दुनिया से तशरीफ़ ले गए मगर ऐसा फ़तावा तर्तीब दे गए कि आज हमारे जिस मुफ़्ती के पास कोई फ़तावा पूछने जाता है तो सबसे पहले जो किताब उनके हाथ में आती है वह फ़तावा शामी होती है। आपको हवाले मिलेंगे। मालूम हुआ कि वह दुनिया से चले गए लेकिन सैंकड़ों साल गुज़रने के बाद आज भी उनकी किताबें फ़ैज़ान का ज़रिया बनी हुई है।

उम्मत का ख़ज़ाना

उम्मत की एक ज़िम्मेदारी यह भी है कि वह अपने तजरिबे व मुशाहिदे जो कुछ पढ़ा हो, समझा हो या किया हो वह भी आने वाले लोगों तक पहुँचाए क्योंकि उम्मत का ख़ज़ाना है ताकि आने वाली नस्लों को पता चल सके कि फ़लां दौर में उलमा को किस तरह मदरसों में पढ़ना पड़ा। किस तरह ज़िंदगियों में मुश्किलें पेश आयीं, किस तरह उनकी ज़िंदगी के मामलात थे और उन्होंने मुसीबतों से निकलकर किस तरह इस ज़िम्मेदारी को पूरा किया। हर-हर आलिम पर ज़िम्मेदारी बनती है कि वह इस ज़िम्मेदारी को किसी न किसी अंदाज़ में ज़रूर पूरा करे।

इस्लाम के ख़िलाफ़ किताबों की तसनीफ़

अक्सर इमाम और फ़ुक़्हा उस्ताद भी बन जाते हैं मगर उनसे तहरीर का फ़ैज़ जारी नहीं होता। यह आज के दौर की बहुत बड़ी कमी है। यूरोप हर साल इस्लाम के ख़िलाफ़ इतनी किताबें लिख

रहा है कि शायद कोई दिन ऐसा न हो जब इस्लाम के ख़िलाफ़ कोई किताब न लिखी जा रही हो। हमें इस्लाम के हक़ में किताबें लिखनी चाहिए थीं ताकि अंग्रेज़ों के फ़ितने का सफ़ाया हो सके।

क़ुरआन मजीद की तबाअत

फ़क़ीर एक दफ़ा रशिया के एक शहर काज़ान में हाज़िर हुआ। यह काज़ान वह शहर है जहाँ सबसे प्रहले क़ुरआन को प्रिंटिगं प्रेस पर प्रिंट किया गया। दूसरा नुस्ख़ा जमर्नी के शहर हैंब्रिगं के अंदर प्रिंट किया गया था। मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहब अपनी तफ़्सीर की इब्तिदा में लिखते हैं कि काज़ान शहर में हम्ज़ा बेनामी शख़्स ने क़ुरआन मजीद को सबसे पहले प्रिंट किया। उस वक़्त पर यह शहर रशिया का मर्कज़ी शहर था। इन दो जगहों से ऐसी तर्तीब चली कि आज प्रिंटग प्रेस पर आपको दीनी उलूम के बारे में किताबें छपती नज़र आएंगी।

काज़ान में इस्लामी किताबों की तसनीफ़

यह काज़ान का शहर 'उलमा का शहर' कहलाता है। फ़क़ीर ने उसकी तारीख़ पढ़ी तो लिखा हुआ था कि जब इस्लामी तालीमात हर तरफ़ आम थीं तो इस शहर में इतने उलमा थे कि हर साल इस शहर से दीन इस्लाम के बारे में छः हज़ार नई किताबें लिखी जाती थीं। अब बताइए कि इन हज़रात में कैसी इल्मी इस्तेदाद होगी और उन्होंने दीन की कितनी ख़िदमत की। यह उनका इल्मी सरमाया है कि जिसकी वजह से आज हमारी गाड़ी आगे चल रही है।

हमारी ज़िम्मेदारी

हम अगर आज काम नहीं क़रेंगे तो हो सकता है कि हम इस कमी को महसूस न करें लेकिन याद रखें कि यह तंगी हमारी आने वाली औलादें महसूस करेंगी और क़यामत के दिन हमारा गिरेबान पकड़ेंगी कि उन्होंने तो अपने बड़ों से विरासत पाई और ज़िंदगी गुज़ार ली लेकिन अपने दौर में उन्होंने काम न किया, इसलिए जब हमें दीन मिला तो हमें दर्मियान में ख़ला नज़र आता है। इसका ज़िम्मेदार कौन है? इसके लिए हमें क़यामत के दिन अदालत के कटहरे में खड़ा होना पड़ेगा और कहना पड़ेगा कि हम ने ही काम नहीं किया था।

उम्मते मुहम्मदिया की दो ख़ास निशानियाँ

उम्मत मुस्लिमा की जहाँ और बहुत सारी ख़ूबियाँ हैं वहाँ इस उम्मत की एक ख़ूबी तौरेत व इंजील में बयान फ़रमाई गई है कि इस उम्मत के उलमा दीन इस्लाम पर बहुत ज़्यादा किताबें लिखेंगे। इससे पहले किसी उम्मत ने दीन पर इतनी किताबें नहीं लिखी होंगी। और दूसरी ख़ूबी यह बयान फ़रमाई गई कि यह उम्मत अल्लाह के ज़िक्र के लिए अल्लाह तआला के नाम पर आपस में मिल बैठा करेगी और सब अल्लाह की याद करेंगे। गोया ये दो निशानियाँ ख़ासतौर पर इस उम्मत में मौजूद होंगी।

पिछले बुज़ुर्गों में तसनीफ़-तालीफ़ का शौक़

अगर तारीख़े आलम पर नज़र दौड़ाई जाए तो यह बात खुली हुई है कि इस उम्मत के उलमा कसरत से लिखने वाले थे

इमाम राज़ी रह० ने मिंबर पर खड़े होकर कहा कि मैंने इन उंगलियों के साथ छः सौ किताबें ख़ुद लिखी हैं।

किसी ने कहा, मैंने पाँच सौ जिल्दें लिखी हैं।

किसी ने कहा, मैंने छः सौ जिल्दें लिखी हैं।

किसी ने कहा, मेरी किताबों का वज़न दो ऊँटों पर रखा जाता था। इतनी किताबें तो वह लिखा करते थे कि दो ऊँटों का बोझ बन जाया करती थीं।

एक मुहद्दिस फ़ौत हुए। उन्होंने इतनी किताबें लिखीं कि जब उनकी ज़िंदगी के दिन और किताबों के पन्नों को एक दूसरे पर तक़्सीम किया गया तो चालीस पन्ने रोज़ाना के बने। अब बताइए चालीस पन्ने कौन रोज़ाना लिख सकता है लेकिन उनका फ़ैज़ान था। सुब्हानअल्लाह! अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनके वक़्त में बरकत दी थी कि वे थोड़े वक़्त में इतना काम कर लेते थे कि आज हम सालों में भी उतना काम नहीं कर सकते। यह ख़ुदाई मदद होती थी, यह क़ुबूलियत होती थी और उनके दिल में शौक़ होता था।

रिसाला शातबिया का फ़ैज़

अल्लामा शातिबी रह० ने जब 'रिसाला शातबिया' लिखा तो फिर हरम शरीफ़ में हाज़िर हुए और वहाँ पर उन्होंने 1200 बार तवाफ़ किया और हर तवाफ़ के बाद दो रकअत नमाज़ पढ़कर दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह! इस किताब को आप अमूमी, कामिल और पूरी क़ुबूलियत नसीब फ़रमा दे। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इस किताब को इतनी मक़्बूलियत नसीब फ़रमाई कि आज उस वक़्त तक कोई क़ारी नहीं बन सकता जब तक वह इस किताब को पढ़

न ले। मालूम हुआ कि वे लोग सिर्फ़ लिखते ही न थे बल्कि वे मांगते भी थे। फ़ैज़ का आगे जारी हो जाना क़ुदरत की तरफ़ से होता है और इसके पीछे इंसान का तक़्वा होता है।

बुख़ारी शरीफ़ का फ़ैज़

बुख़ारी शरीफ़ हदीस की वह किताब है जो क़ुरआन के बाद सबसे ज़्यादा सही किताब शुमार होती है हालाँकि सेहत के एतिबार से मुस्लिम शरीफ़ का मैयार और मुक़ाम इससे भी बुलंद है मगर इमाम बुख़ारी रह० के तक़्वे की वजह से उनकी तर्तीब दी हुई इस किताब को ज़्यादा क़ुबूलियत नसीब हुई। आज दुनिया में जब हदीस का नाम आता है तो इमाम बुख़ारी रह० का नाम आता है।

मिश्कात शरीफ़ का फ़ैज़

मिश्कात शरीफ़ भी हदीस पाक की एक किताब है अगर आप देखें तो इस मिश्कात शरीफ़ के बिल्कुल बराबर बल्कि इससे कुछ बेहतर हदीस पाक की और भी किताबें मिल जाएंगी मगर उनको वह आम क़ुबूलियत नसीब न हुई जो मिश्कात शरीफ़ को नसीब हुई।

हमारे शहर की हैसियत

तसनीफ़ व तालीफ़ इस उम्मत का काम है। लिहाज़ा हर दौर के उलमा को जहाँ बाक़ी मोर्चों पर अपनी-अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा करना है वहाँ इस मोर्चे पर भी अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा

करना है। अच्छा दिल में यह ख़्याल इसलिए आया कि यह (झंग) हमारा छोटा सा शहर है। दुनिया की नज़र से देखें तो एक गाँव कहेंगे। इस शहर में कम से कम पचास उलमा तो होंगे। अब इन पचास उलमा को देखा जाए तो उन्होंने दीन पर कौन सा काम तहरीर के ज़रिए किया है तो शायद आपको बहुत थोड़े मिलेंगे। ख़्याल आया कि क्यों न हम अपनी इस जगह से इसके लिए क़दम आगे बढ़ाएं।

तदीरीस के लिए अमरीकन सिस्टम

इस तरह की बातें करने की ज़रूरत क्यों पेश आई? इसका वाक़िआ सुनिए। अमरीका में वहाँ बच्चों को शाम के वक़्त दर्स दिए जाते हैं। उनको दीन के बारे में पढ़ाया जाता है। जब उनको दीन के बारे में पढ़ाते हैं तो वहाँ पर आम किताबें नहीं चलतीं। मसलन आपको तारीख़ की कोई बात करना है तो वे तलबा आगे पीछे इतने सवालात पूछेंगे कि आप हैरान रह जाएंगे। लिहाज़ा आपको उसकी पूरी तफ़्सीलों का पता होना ज़रूरी है। मिसाल के तौर पर हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का वाक़िआ बयान किया तो वे पूछेंगे कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम किस इलाक़े में थे? अब आज के दौर में आप उनको क्या समझाएंगे? अगर आप कहें कि कहीं थे तो अमरीकन सिस्टम ऐसा है कि वहाँ के बच्चे आपकी इस बात को तसलीम नहीं करेंगे। वे कहेंगे कि जब उस्ताद को यह भी पता नहीं कि यह नबी दुनिया के किस इलाक़े में थे तो फिर वह वाक़िआ क्या सुनाएंगे। इसलिए वे मुतास्सिर ही नहीं होंगे। क्योंकि वे एक तरफ़ स्कूल में जाते हैं तो वहाँ उनको साइंस पढ़ाई

जाती है और उनको बताया जाता है कि हम सच पर बात करते हैं और दूसरी तरफ़ यहाँ आते हैं तो यहाँ उनको कुछ मालूमात दे दी जाती हैं और उनको इसके अंदर भी तर्तीब नज़र नहीं आती। वे समझते हैं कि ये तो बस ऐसे ही क़िस्से कहानियाँ ही हैं। उनको भरोसा नहीं होता। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का नाम आया तो हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के नाम पर आपसे सवाल पूछना शुरू कर देने हैं कि वह पहले नबी थे? उनसे पहले कौन इंसान थे? वे सबसे पहले क्यों बने? उनको शुरू से ही ज़मीन पर क्यों नहीं बनाया? उनको पहले जन्नत में क्यों भेजा जब बाहर ही निकालना था? तो इतने सवालात शुरू कर देंगे कि आप हैरान हो जाएंगे। इस वक़्त ज़रूरत महसूस हुई कि ऐसा लिट्रेचर और किताबें हों जिनमें छोटे-छोटे सवाल जवाब बच्चों के लिए बनाए जाएं।

एक टाई आलिम का तफ़्सीर लिखना

उन मुल्कों में क्योंकि उलमा बहुत थोड़े हो गए हैं इसलिए यह काम वहाँ के टाई उलमा कर रहे हैं। आप हैरान होंगे कि एक साहब सैर कर रहे थे। मगर इस अंदाज़ का लिबास पहना हुआ था कि रानें सारी नंगी थीं, नंगा सर था, उसका पेट नाफ़ तक नज़र आ रहा था और पाँव में जोगर पहने हुए थे। वह भागते हुए इस आजिज़ से मिलने आया और कहने लगा, हज़रत दुआ करना। आजिज़ ने कहा, क्या बात हुई? कहने लगा, आजकल मैं क़ुरआन की तफ़्सीर लिख रहा हूँ। अब बताइए ऐसी तफ़्सीरें वहाँ के तलबा को क्या नूरानियत देंगी।

टाई आलिम की बीवी की बुरी हालत

कुछ अरसे बाद वही साहब कोट पैंट पहनकर आए और कहने लगे, जी इजाज़त है कि मैं अपनी बीवी को भी ले आया हूँ, कुछ बातें आपसे पूछनी हैं। हमने कहा हम तो इस तरह औरतों को कमरे में नहीं आने देते। उनके लिए हमने अलग जगह बनाई हुई है, वहाँ पर्दा है, वह उसके पीछे बैठकर सवाल पूछें। वह कहने लगा, जी इसमें हरज ही क्या है? उसने तो कुछ सवाल ही पूछने हैं। अब देखें कि जो आदमी तफ़्सीर लिख रहा है उसको यह भी समझ नहीं आ रही है कि ग़ैर औरत आकर सवाल पूछ रही है और कह रहा है कि इसमें हरज ही क्या है। उसने चंद सवाल ही पूछने हैं। हमने एक लड़के से कहा कि उसको पर्दे के पीछे बिठाए ताकि हम बात करें। वह लड़का उसको बिठाकर आया और उसने कहा कि हज़रत! उस औरत ने तो साढ़ी पहन रखी थी, सर से नंगी थी और पेट भी आधा नंगा था। अफ़सोस कि यह औरत अपने ख़ाविंद के साथ मिलकर तफ़्सीर लिख रही थी। फ़क़ीर आम आदमी की बात नहीं कर रहा है बल्कि ये वे लोग हैं जो एक दर्जन से ज़्यादा किताबें लिख चुके हैं और अमरीका के अंदर आज उनकी किताबें इस्लामिक सैंटरों में पाई जाती हैं।

मतलूबा किताबों की तर्तीब का अंदाज़

इस वक़्त ज़रूरत महसूस हुई कि ओहो! यह काम तो हमारे उलमा को ही करना चाहिए और उनको बता दिया जाए कि वहाँ के बच्चे इस अंदाज़ से तर्तीब चाहते हैं ताकि वे अपनी लाइब्रेरियों

में बैठकर पढ़ाई कर सकें। मसलन हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का वाक़िआ तो इसकी पूरी तफ़्सील देखें और छोटे-छोटे सवाल बनाकर लिखें। मान लें कि एक वाक़िए के बारे में सौ सवाल बने हुए हों तो बच्चा जो सवाल पढ़ता चला जाएगा उसके सामने पूरा वाक़िआ खुलता चला जाएगा क्योंकि वहाँ पर बच्चों को पढ़ाने के लिए और क़िस्म की तर्तीब की ज़रूरत होती है। बच्चों और बच्चियों के मसाइल अलग-अलग होते हैं। इसलिए कुछ लिट्रेचर उसके मुताबिक़ तर्तीब दे दिया जाए ताकि अंग्रेज़ी में तर्जुमा करके वहाँ भेजा जा सके। इस तरह कम से कम ठोस आलिमों के हाथों से गुज़रकर एक तहरीर वहाँ तक पहुँचेगी। यह तो नहीं होगा कि हर टाई पहनने वाला और नंगे सर वाला खड़ा होकर कह देगा कि मैं क़ुरआन पाक की तफ़्सीर लिख रहा हूँ। इसकी ज़रूरत को महसूस करते हुए दिल में यह बात आई कि क्यों न हम अपने उलमा की निगरानी में एक ऐसी इल्मी फ़िज़ा क़ायम करने की कोशिश करें ताकि आपस में मिल बैठें और सोचें कि क्या ज़रूरतें हैं, क्या तक़ाज़े हैं। इसकी तफ़्सीलात बाक़ायदा आपकी ख़िदमत में अर्ज़ कर दी जाएंगी और आप लाइब्रेरियों से जो किताबें आपके पास हैं उनसे कुछ तर्तीब देना शुरू कर दें। हो सकता है कि यहाँ से कोई ऐसी किताब निकल जाए जो वहाँ के निसाब में ही शामिल हो जाए। जब तक वहाँ निसाब में शामिल रहेगी आपको उसका अज्र व सवाब मिलता रहेगा। तो मालूम हुआ कि हम इस इल्मी काम को जैसे तक़रीर के ज़रिए और दर्स के ज़रिए दूसरों तक पहुँचा रहे हैं हमें तसनीफ़ के ज़रिए भी दूसरों तक पहुँचाना ज़रूरी है।

कनाडा में उलमा की मेहनत का नतीजा

कनाडा के अंदर तक़रीबन चौदह मुफ़्ती लोग हैं। उन्होंने अलग-अलग इदारों से मुफ़्ती का कोर्स किया है। उन्होंने वहाँ सोचा कि कनाडा में तो सारे अंग्रेज़ी पढ़े-लिखे लोग हैं। उनको हम क़ुरआन मजीद का तर्जुमा पढ़ाना चाहें तो कैसे पढ़ाएं। यह तो नहीं होगा कि ये बड़े आलिम बन जाए मगर कम से कम इनकी जिहालत तो टूटे कि जितने जाहिल हैं उतने न रहें। अगर क़ारी साहब क़ुरआन पढ़ रहे हों तो उन्हें पीछे खड़े हुए इतना पता चल जाए कि क़ुरआन पाक मुझे क्या बता रहा है। इस पर उन्होंने मेहनत शुरू कर दी।

इस मेहनत का नतीजा निकला कि आजकल एक किताब लिखी गई है जिस पर वहाँ कोर्स करवाया जाता है। हम लोग भी वहाँ कोर्स करवा चुके हैं। आप हैरान होंगे कि क़ुरआन के कुल अल्फ़ाज़ 80,000 के लगभग हैं। मगर एक लफ़्ज़ क़ुरआन मजीद में बार-बार दोहराया गया है। इन बार-बार दोहराए जाने अल्फ़ाज को अगर एक ही लफ़्ज़ समझा जाए तो मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ की तादाद 2,000 हैं और इन 2,000 अल्फ़ाज़ में 500 अल्फ़ाज़ ऐसे हैं कि जो उर्दू ज़बान में बोले जाते हैं। हर उर्दू लिखने और पढ़ने वाला उनके मफ़हूम को समझता है। इस तरह बाक़ी अल्फ़ाज़ 1500 रह गए। मालूम हुआ कि अगर उनको 1500 अल्फ़ाज के मायने और मफ़हूम बता दिए जाएं तो जब क़ुरआन पढ़ा जा रहा होगा तो उनके कुछ तो समझ आ रहा होगा।

इस अंदाज़ से जब उन लोगों ने काम किया तो जिस इलाक़े

में भी क़ुरआन पाक के तर्जुमे की क्लास लेते हैं तो वहाँ पर चालीस-पचास, सौ-सौ कंप्युटर इंजीनियर और डाक्टर भागे चले आते हैं। हमने देखा कि वाक़ई तर्जुमा पढ़ने के बाद उनके दिलों में नेकी का शौक़ बढ़ जाता है। हमने इस तर्जुमे की क्लास से कई डाक्टर और इंजीनियरों की ज़िंदगियों को बदलते हुए देखा है। तो वहाँ के उलमा ने माहौल की ज़रूरत को सामने रखकर कुछ काम किया जिसका नतीजा वहाँ आज नज़र आ रहा है।

हज़रत अक़्दस थानवी रह० का तहरीरी फ़ैज़

जब उलमा मेहनत करते हैं तो उसका सिला भी पा लेते हैं। फ़क़ीर पिछले दिलों बादशाही मस्जिद के ख़तीब हज़रत मौलाना अब्दुल क़ादिर आज़ाद एक का मक़ाला पढ़ रहा था। इस मक़ाले का नाम था 'हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि और उनकी पूरी ज़िंदगी' इस मक़ाले के आख़िर में उन्होंने हज़रत के नाम से जो किताबें लिखी गयी हैं उनके नाम लिखे हुए थे। उनकी तादाद 2,700 बनती है।

फ़क़ीर ने हज़रत अल्लामा ख़ालिद महमूद से मांचेस्टर में पूछा, अल्लामा साहब! आपकी पूरी ज़िंदगी पढ़ने में गुज़री। इस उम्मत में ज़्यादा से ज़्यादा किताबें लिखने वाले आपकी नज़र से कितने गुज़रे हैं। थोड़ी दरे सोचते रहे और फिर कहने लगे, 500 भी हैं, 600 भी हैं और काफ़ी देर के बाद फ़रमाने लगे कि एक के बारे में मैंने पढ़ा कि 1100 हैं, हाँ पिछले क़रीब में हमारे बड़ों में से हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अली साहब थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि को अल्लाह तआला ने यह सआदत दी।

उन्होंने लिखने का काम कुछ तो बिला वास्ता ख़ुद किया और कुछ काम की उन्होंने रहबरी कर दी, हिदायत दे दीं और अपने ख़लीफ़ाओं और शार्गिदों के ज़िम्मे लगा दिया कि यह काम करो। इस तरह शार्गिदों ने अपने शेख़ के नाम से उनकी बताई हुई तर्तीब पर वे किताबें लिख दीं। जिनकी तादाद 2700 बनती है। अब बताएं कि यह हकीमुल उम्मत जब क़यामत के दिन नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने खड़े होंगे तो उनको कितनी सुर्ख़ रुई नसीब होगी।

दो तरह के ख़तीब

फ़क़ीर समझता है कि हर बंदे की ज़िंदगी में इतना वक़्त ज़रूर होता है कि जिसमें दीन के बारे में अपने ख़्यालात को कुछ न कुछ क़लमबंद कर सके। होता क्या है कि जब उलमा पढ़ते हैं तो सिर्फ़ इस नियत से पढ़ते हैं कि हमें जुमा का ख़ुत्बा देना है। आपस की बात है कि इस वक़्त ख़तीबों में से दो तरह के लोग मौजूद हैं। अगर बेअदबी हो जाए तो फ़क़ीर माफ़ी चाहता है। कुछ लोग वे हैं जिनकी अख़बारी तक़रीरें होती हैं। वे दो चार मुख़्तलिफ़ अख़बार पढ़ लेते है और उनका जुमा का ख़ुत्बा इन चार अख़बारों पर टिका होता है। और कुछ लोग ऐसे हैं कि जिन्होंने मुख़्तलिफ़ मदरसों से जारी होने वो माहनामे इकट्ठे किए होते हैं। वे उन माहनामों की तक़रीरों का मक़ाला जात पढ़कर उस तक़रीर को याद करते हैं। ख़ुद किताबों को पढ़ने का शौक़ ख़त्म होता चला जा रहा है। वे हज़रात जो तदरीस का काम करते हैं, ख़ैर वे तो दिन रात इसी काम में लगे हुए हैं, उनकी बात नहीं कर रहे हैं। ये

उन लोगों की बात कर रहे हैं जो मदरसों से पढ़कर निकले और वे इस वक़्त तदरीस का काम नहीं कर रहे हैं बल्कि कहीं ख़तीब हैं, इमाम हैं या किसी जगह काम कर रहे हैं उनकी ज़िंदगी में पढ़ने का सिलसिला बहुत की कम हो गया है।

एक फ़ारिग़ आलिम की बदहाली

फ़क़ीर ने एक फ़ारिग़ आलिम के बारे में एक बात सुनी कि किसी ने उनसे पूछा कि ज़कात कितनी देनी चाहिए। वह कहने लगे कि बस हर चालीस पर एक रुपया निकालते चले जाओ। अब आप बताइए कि ऐसा जवाब आपने कभी सुना होगा कि तुम्हारे पास जो चालीस रुपए फ़ालतू हों उनमें से एक रुपया निकालते जाओ। निसाब क्या होता है? किस पर शुरू होता है किस पर नहीं होता? जब पढ़ने से तबियत बेज़ार हो जाती है तो फिर ऐसे जवाब ज़बान से निकलते हैं। इसलिए किताबों के साथ इस रिश्ते का बना रहना बहुत ज़रूरी है।

उम्मत के बड़ों में पढ़ने का शौक़

हमारे बड़ों को तो महुब्बत ही किताबों से हुआ करती थी। हर वक़्त पढ़ने में डूबे रहा करते थे। यही वजह थी कि हज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी रह० फ़रमाया करते थे कि जिस किताब को मैं एक दफ़ा देख लेता था फिर उस किताब को बीस साल बाद तक नहीं भूला करता था और शेख़ुल इस्लाम हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी रह० ने फ़रमाया कि पंद्रह साल तक मैं भी नहीं भूलता था। उन्होंने इतनी ख़िदमतें कीं कि किताबों में

ही उनकी ज़िंदगी गुज़र गई और उनकी ख़िदमतों का सिला आज हमें मिल रहा है।

इमाम राज़ी रह० फ़रमाते हैं कि मुझे उस वक़्त पर हसरत होती है जो खाने पीने में गुज़र जाता है कि मैं इस वक़्त में मुताला नहीं कर पाता। इमाम मुहम्मद रह० के बारे में एक साहब जो उनके हम सबक़ थे, फ़रमाते थे कि मैंने उनके बारे में देखा कि वह रात को चिराग़ जलाते, किताब खोलकर देखते और उसके बाद चिराग़ बुझाकर फिर लेट जाते, फिर थोड़ी देर के बाद उठ बैठते और चिराग़ जलाते। कहने लगे कि मैंने एक बार गिना तो उन्होंने एक रात में सत्रह दफ़ा उठकर चिराग़ जलाया और किताब पढ़ी। अब जिस रात में सत्रह दफ़ा उठकर चिराग़ जलाया हो क्या वह सोते होंगे। वह सोते नहीं थे बल्कि वह लेटते थे और उनका लेटना ग़ौर व फ़िक्र के साथ होता था। इसलिए कई बार आदमी देखते थे कि चारपाई पर लेटे हैं और वह उसी इशा के वुज़ू से उठकर फ़ज्र की नमाज़ पढ़ लेते थे।

फ़क़ीर एक दफ़ा दारुल उलूम देवबंद के मुफ़्ती अज़ीज़ुर्रहमान के हालाते ज़िंदगी पढ़ रहा था। उनमें लिखा था कि जब उनका आख़िरी वक़्त आया तो उस वक़्त भी उनके सीने के ऊपर फ़तवे का काग़ज़ पड़ा हुआ था। इमाम अबू यूसुफ़ रह० का जब आख़िरी वक़्त आया तो किसी तालिबे इल्म ने उस वक़्त भी मीरास के बारे में सवाल पूछा यानी उस वक़्त जब जान निकल रही होती थी उस वक़्त भी इल्मी नकात उनके ज़हन पर हावी रहा करते थे।

मौजूदा दौर में उलमा की ख़िदमतें

आप देखिए कि पूरे पाकिस्तान में कुछ हस्तियाँ ऐसी नुमाया हैं जो वाक़ई ठोस बुनियादों पर काम कर रही हैं। और दीन के उनवान पर कुछ न कुछ लिखते जा रहे हैं। हज़रत मुफ़्ती तक़ी उस्मानी दामत बरकातुहुम हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ लुधियानवी और हज़रत मुफ़्ती रशीद अहमद मद्देज़िल्लहू की ख़िदमतें सौ-सौ बार तारीफ़ के लायक़ हैं। देखें कि उन जैसे उलमा हों तो कोई कोट पैंट वाला इन हज़रात की बेअदबी कर सकता है। आप जो यह कहते हैं कि आज अंग्रेज़ी पढ़ लिखे लोग उलमा की क़दर नहीं करते तो आप ज़रा ऐसे आलिम बनकर दिखाएं फिर ये अंग्रेज़ी वाले लोग आपके जूते उठाते फिरेंगे। यह आपके सामने बिछते फिरेंगे मगर इनके सामने ऐसी हस्तियाँ तो हों। दरअसल बात यह है कि जब वे देखते हैं कि आठ साल पढ़कर भी एक आम आदमी जैसी ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं और उन्हें अपने और उनके बीच कोई फ़र्क़ नज़र नहीं आता तो फिर उन्होंने तो शेर बनना होता है कि मैं ज़्यादा जानता हूँ और यह थोड़ा जानता है हालाँकि बात ऐसी नहीं है। हक़ीक़त यह है कि हम इल्म की इस इस्तेदाद को ख़त्म कर बैठते हैं, पढ़ने के साथ इस रिश्ते के बहाल न होने की वजह से। अगर हम भी अपने बड़ों के नक़्शे क़दम पर चलकर उनकी तरह काम करें तो हमारा हिस्सा भी उनके साथ शुमार कर लिया जाएगा।

फ़िक्र की घड़ी

यक़ीन कीजिए कि वे उलमा जिनके चिराग़ के तेल का ख़र्चा

उनके महीने के खाने के ख़र्च से ज़्यादा हुआ करता था। आज उनकी औलादें किताबों के पढ़ने से बिल्कुल कट चुकी हैं। जिनके बड़े चटाईयों पर बैठकर सारी रात मुताला करने में गुज़ार देते थे आज उनकी औलादें नरम बिस्तरों पर रात गुज़ारने की आदी बन चुकी हैं। वे हज़रात जो अपने दिन की शुरूआत क़ुरआन पाक की तिलावत से किया करते थे आज उनकी औलादें अख़बार पढ़ने से अपने दिन की शुरूआत करती हैं। हक़ीक़त यह है कि अब इल्मी लगाव ख़त्म होता जा रहा है।

हमें इस बात को तसलीम करने में कोई रुकावट नहीं होनी चाहिए कि हमारे अंदर इस्तेदाद नहीं है लेकिन एहसास तो है। अब इस एहसास के साथ अल्लाह तआला से मदद मांगेंगे और कुछ करना शुरू करेंगे तो क्या मुश्किल है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रहमत जोश में आ जाए और हम जैसे लोगों से भी अल्लाह तआला कोई अच्छा काम ले ले और आने वाली नस्लों में इसका फ़ैज़ जारी हो जाए।

क़ाज़ी सनाउल्लाह पानीपती रह० का तहरीरी फ़ैज़

﴿ما لا بد منه﴾ "माला बुद्दा मिन्हु" क़ाज़ी सनाउल्लाह पानीपती रह० ने लिखी। आज जो आलिम बनता है उसके हाथ में यह किताब दे देते हैं कि जी तुझे पढ़ना पढ़ेगी। माशाअल्लाह हज़ारों लोग इस किताब को पढ़कर उलमा बनेंगे और ज़िंदगी भर जितना काम करेंगे उनको भी इसमें से हिस्सा मिलता रहेगा बल्कि जिस-जिस आलिम की किताब दर्से निज़ामी के निसाब में शामिल है वह उसके इल्म के पूरे-पूरे अज्र में बराबर हिस्सेदार हैं।

मौलाना मुश्ताक़ हुसैन का तहरीरी फ़ैज़

मौलाना मुश्ताक़ हुसैन चरथावली रह० ने उर्दू में 'इल्मे नहू' और 'इल्मे सर्फ़' रिसाले लिखे हैं। देखिए कि यह किताबें कितनी आम होती चली जा रही हैं। यहाँ तक कि मदारिस में कई मर्तबा कहते हैं कि ये किताबें ज़रा देख लो इससे फ़ायदा होगा। ज़ाहिर में तो एक छोटा सा काम उन्होंने किया है। उनकी ज़िंदगी का जो मुताला था उन्होंने कोशिश की कि मैं इसको आसान बनाकर पेश कर दूँ ताकि पढ़ने वालों को आसानी हो। लिहाज़ा आज लोगों के लिए सर्फ़ व नहू सीखने में आसानी हो गई है।

दीनी माहनामे क्यों बंद हो गए

ज़रूरत इस बात की है कि हम अपनी ज़िंदगी में अपने फ़र्ज़े मंसबी को समझते हुए कि हमने इस तरीक़े से भी दीन की हिफ़ाज़त करनी है। इस सिलसिले में भी क़दम उठाने चाहिएं। अब हो सकता है कि कुछ लोग आज पूछें कि मुर्शिद पकड़ने की क्या ज़रूरत है? आज के दौर में इस लम्बे चोग़े की क्या ज़रूरत है। भाई हमें तो महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यही चीज़ें मिली हैं और हम इस बात के पाबंद हैं कि महबूब की सुन्नतों को आने वाली नस्लों तक पहुँचा जाएं। इसलिए किताबों का मुताला करते रहना चाहिए और इंसान इस पर भी सोच विचार करे। वक़्त के तक़ाज़ों के मुताबिक़ इसको लिखते रहना चाहिए और फिर इसको अपने बड़ों से सुधार कराना लेना चाहिए ताकि उनकी नज़र से गुज़र जाएं। शुरू में यह भी हो सकता है कि आप हज़रात जो कुछ लिखें, किसी न किसी माहनामे में जो मुख़्तलिफ़

मदरसों से छपते हैं उनको भेजना शुरू कर दें। आज माहनामों वालों को इतनी परेशानी है कि लिखने वाले ही नहीं मिलते। कितनी ही माहनामे हैं जो हज़ारों की तादाद में जारी हुए और फिर कुछ अरसे के बाद वह जड़ से साफ़ हो गए। जब उनसे पूछा गया कि ऐसा क्यों हुआ? तो कहने लगे कि लिखने वाले ही नहीं मिलते हम क्या करें। अफ़सोस कि मुख़्तलिफ़ जगहों से जो फ़ैज़ जारी हाता था वह फ़ैज़ ही बंद होता चला जा रहा है। तो आख़िर कहीं कोई तो हो जो इसके बारे में बैठकर सोचे और क़दम उठाने की कोशिश करे। क्या अजब है कि अल्लाह तआला इस फ़िक्र पर ऐसी मेहरबानी फ़रमा दें कि आप लोगों में से कुछ लोग ऐसे हों जिनका इल्मी काम तहरीर की शक्ल में इस तरह ज़ब्त हो जाए कि वह आपके लिए और हमारे लिए बख़्शिश का ज़रिया बन जाए।

इल्मी सरमाए से महरूमी

इस आजिज़ को याद है कि जब स्कूल में पढ़ता था तो धज्जी रोड पर वक़्फ़ यासीनी के नाम से एक लाइब्रेरी होती थी। उसमें बहुत ज़्यादा किताबें हुआ करती थीं। मगर क्योंकि इस इल्मी ख़ज़ाने की हिफ़ाज़त करने वाला कोई न था इसलिए पता चला कि कुछ अरसे बाद इस शहर का इल्मी ज़ख़ीरा यहाँ से उठाकर कहीं दूसरी जगह मुंतक़िल कर दिया गया है। वे हज़ारों किताबें इस आजिज़ ने ख़ुद भी देखी हुई हैं। हज़ारों किताबों का इल्मी सरमाया जब इस शहर से चला गया तो यह शहर तो महरूम हो गया। अब अगर आज वह लाइब्रेरी यहाँ मौजूद होती तो हम में से

कोई भी वहाँ की किताबों से फ़ायदा उठाना चाहता तो उठा सकता था।

यह कुछ बातें जो समाने आयीं वे आपकी ख़िदमत में अर्ज़ कर दीं। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त क़ुबूल फ़रमाएं और हमें अमली तौर पर इस सिलसिले में क़दम उठाने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाएं। (आमीन सुम्मा आमीन)

❋ ❋ ❋

ख़शियते इलाही

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفى اما بعد
فاعوذ بالله من الشيطن الرجيمo بسم الله الرحمن الرحيمo
الم يأن للذين امنوا ان تخشع قلوبهم لذكر الله وما نزل من الحق ولا
يكونوا كالذين اوتوا الكتب من قبل. فطال عليهم الامد فقست قلوبهم
وكثير منهم فاسقون o وقال تعالى فى مقام اخر انما يخشى الله من عباده
العلماء. وقال رسول الله صلى الله عليه وسلم من بكى من خشية الله حرم
الله عليه النار اوكما قال عليه الصلوة والسلام. سبحان ربك رب العزه
عما يصفون وسلام على المرسلين. والحمد لله رب العالمين.

ख़शियत किसे कहते हैं

ख़ुशू दिल की वह कैफ़ियत है जिससे अल्लाह तआला की अज़मत दिल में बैठे, अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की हैबत दिल में बैठे, अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की ऐसी मुहब्बत दिल में आ जाए कि इंसान उसकी नाराज़गी के तसव्वुर से कांप उठे, इंसान उसकी मुहब्बत में उदास हो जाए। बस ऐसा इंसान जिसके दिल में अल्लाह ख़शयते इलाही पैदा हो जाए। वह गुनाह की तरफ़ क़दम नहीं उठाता।

इंसान के आज़ा पर ख़शियत का असर

मुफ़र्रिदातुल क़ुरआन में लिखा है :

﴿الخشوع الضراعة واكثر ما يستعمل فيما يوجد على الجوارح.﴾

ख़शियत गिड़गिड़ाने और रोने का नाम है और इसका असर इंसान के आज़ा पर होता है।

यह ख़शियत इंसान के दिल में होती है जबकि इसका असर इंसान के आज़ा पर नज़र आता है। जैसे आग जले तो धुंवा उठता हुआ दिखाई देता है और पेड़ लगे तो फल निकलते नज़र आते हैं। इसी तरह जिस दिल के अंदर ख़शियत हो उसके बदन पर इस ख़शियत के आसार नज़र आते हैं।

क्यों दिल जलों के लब पे हमेशा फ़ुगां हो
मुमकिन नहीं कि आग जले और धुवां न हो

यह कैसे मुमकिन हो सकता है कि दिल में आग लगी हुई हो और उसका धुवां ही किसी को महसूस न हो।

आहें भी निकलती हैं गर दिल में लगी हो
हो आग तो मौक़ूफ़ धुवां नहीं होता

जहन्नम की आग की तेज़ी

इर्शाद नबवी है ﴿من بكى من خشية الله﴾ जो कोई रो पड़ा अल्लाह की ख़शियत से ﴿حرم الله عليه النار﴾ अल्लाह तआला उस पर जहन्नम की आग हराम फ़रमा देते हैं। जहन्नम की आग को दुनिया की आग की तरह मत समझना। जहन्नम की आग दुनिया की आग से सत्तर गुना ज़्यादा सख़्त और गर्म है। जहन्नम की आग में इतनी शिद्दत है कि इस आग का एक ज़रा अगर सूरज उगने की जगह रख दिया जाए तो और कोई बंदा सूरज डूबने की

जगह पर मौजूद हो तो उस आग की तेज़ी और गर्मी से वह बंदा वहाँ पर भी जल जाएगा। दोज़ख़ियों के पसीने के क़तरे इस क़दर गर्म होंगे कि अगर ओहद पहाड़ के ऊपर डाल दिया जाए तो वह पहाड़ भी पिघल जाए। इसीलिए हदीस पाक में आया है

﴿ناركم هذه احدا وسبعون جزء من نار جهنم.﴾

यह तुम्हारी दुनिया की आग जहन्नम के हिस्सों से इकहत्तरवां हिस्सा बनती है।

दुनिया की आग और जहन्नम की आग

दुनिया की आग और जहन्नम की आग में कुछ बातें पेश हैं—

1. दुनिया की आग आम असबाब के तहत नेक और बद को जला देती है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के एक पैग़म्बर हज़रत जरजीस अलैहिस्सलाम को इस आग ने जला दिया था। दुनिया की आग ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की ज़बान को जला दिया था। इस तरह नेक औरत ख़ाना पका रही हो और लापरवाही से अगर उसका हाथ आग पर पड़ जाए तो उसका हाथ जल जाए मगर दोज़ख़ की आग सिर्फ़ मुजरिमों, गुनाहगारों और ख़ताकारों के लिए बनाई गई है। यह सिर्फ़ अल्लाह के नाफ़रमानों को जलाएगी, नेक और मुत्तक़ी लोगों को जहन्नम की आग कुछ नहीं कह सकेगी।
2. दुनिया की आग पानी से बुझ जाती है मगर जहन्नम की आग गुनाहगार बंदे की आँख से निकले हुए आँसुओं से बुझा करती है।

3. दुनिया की आग को हवा भड़काती भी है और अगर कभी तेज़ हो तो बुझा भी दिया करती है। इसी तरह जब मोमिन पुलसिरात से गुज़रेंगे तो जहन्नम कहेगी ﴿اسرع یا مؤمن﴾ ऐ मोमिन! तू जल्दी कर ﴿فان نورك اطفا ناری﴾ कि तेरे ईमान के नूर ने तो मेरी आग को भी बुझा दिया है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया जो आदमी फ़ज्र और मग़रिब की नमाज़ के बाद सात बार ﴿اللهم اجرنی من النار﴾ "अल्लाहुम्मा अजिरनि मिनन्नार" पढ़ने का मामूल बना ले तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उसको जहन्नम की आग से पनाह अता फ़रमा देते हैं।

हक़ीक़ी मोमिन कौन

इर्शाद बारी तआला है ﴿الم یان للذین امنوا﴾ क्या ईमान वालों के लिए वक़्त नहीं आया कि उनके दिल से डर जाएं जो अल्लाह तआला ने नाज़िल किया है यानी अल्लाह की याद से उनके दिल डर जाएं। सुब्हानअल्लाह! परवरदिगार आलम कैसे अजीब अंदाज़ से इर्शाद फ़रमाते हैं कि क्या ईमान वालों के लिए अभी वक़्त नहीं आया यानी यह काम तो पहले से हो जाना चाहिए था। अब तो इतनी मुद्दत इसके बग़ैर गुज़र गई। इमाम राज़ी रह० इस आयत के तहत तफ़्सीर कबीर में लिखते हैं

﴿ان المؤمن لا یکون مؤمنا فی الحقیقة الا مع خشوع القلب.﴾

मोमिन हक़ीक़त में उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक उसके दिल के अंदर ख़ुशू पैदा नहीं होता।

ख़शियत की मुख़्तलिफ़ सूरतें

इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि ख़शियत की मुख़्तलिफ़ सूरतें होती हैं।

1. नमाज़ में ख़शियत

नमाज़ की ख़शियत दरअसल तमानिनत कहलाती है। यानी इंसान नमाज़ इतनी बना संवारकर पढ़े कि बदन के हिस्सों में सकून और इत्मिनान हो और तादील अरकान का ख़्याल रखे। इसको कहते हैं जमाकर नमाज़ पढ़ना, बना संवारकर नमाज़ पढ़ना। इसकी दलील नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वह हदीस है जिसमें एक साहब ने नमाज़ की नियत बांधी और अपनी दाढ़ी के बालों में उंगलियाँ डालना शुरू कर दीं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखकर इर्शाद फ़रमाया ﴿لو خشع قلب هذا لخشعت جوارحه﴾ अगर इस बंदे के दिल में ख़शियत होती तो यह अपनी दाढ़ी के बालों से न खेलता। इसके हाथों को सुकून होता।

2. अल्लाह के ज़िक्र में ख़शियत

जब इंसान ज़िक्र और मुराक़बे की हालत में हो तो उस वक़्त भी दिल में ख़ुशू होता है। इसकी कैफ़ियत यह होती है कि कभी-कभी इंसान के मुँह से अल्लाह की मुहब्बत में आहें निकलती हैं, कभी ठंडी साँस लेता है, कभी आँखों से आँसू निकल आते हैं, कभी उसके रोंगटे खड़े हो जाते हैं, कभी जिस्म पर कपकपी तारी हो जाती है और कभी तो ऐसा भी होता है कि वह रो-रो कर

बेहोश हो जाता है। यह तमाम कैफ़ियतें तड़पना, रोना, आहें भरना और बेहोश हो जाना, ये सब ﴿اقشعرار﴾ यानी ख़शियत की ही क़िस्में हैं।

3. अल्लाह तआला की मुहब्बत में आहें भरना

अल्लाह तआला क़ुरआन मजीद में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बारे में फ़रमाते हैं ﴿ان ابراهيم لاواه حليم﴾ बेशक इब्राहीम ख़लीलुल्लाह, अल्लाह तआला की मुहब्बत में आहें भरा करते थे। अगर किसी से मुहब्बत हो तो इंसान की ज़बान से अपने आप आवाज़ निकलती है कि दूसरे बंदे को महसूस हो जाता है कि इस आदमी के दिल में कोई ग़म लगा हुआ हो।

आह किसे कहते हैं

तफ़्सीर रूहुल बयान मे लिखा है ﴿لاواه﴾ का मतलब ﴿الخاشع المتضرع﴾ है यानी ख़ुशू वाला वह होता है जिसके ऊपर रोना-धोना हो, गिड़ड़िाहट हो। आह कहते ही इसको हैं कि जो ज़ोर की हो, आह कभी छिपी हुई नहीं होती बल्कि इमाम बुख़ारी रह० ने बुख़ारी शरीफ़ में एक शे'र नक़ल किया है कि शायर कहता है—

اذا ما كنت ازحلها بليل   تاوة اهة رجل الحزين

जब मैं रात को अंधेरे में उठता हूँ कि मैं अपनी ऊँटनी को कस दूँ तो वह ऊँटनी किसी ग़मनाक मर्द की तरह आहें भरती है। ऊँटनी कभी-कभी ऐसी आहें निकालती है कि सुनने वाले को यूँ लगता है कि जैसे कोई ग़मनाक मर्द आहें भर रहा होता है।

ख़ामोश रह के दलि का निकलता नहीं ग़ुब्बार
ऐ अंदीब! बोल दुहाई ख़ुदा की है

तड़पना तिलमिलाना हिज्र में रो रो के मर जाना
है शेवा आशिक़ी में यह मरीज़ाने मुहब्बत का

अच्छे सालिक की पहचान

ज़िक्र करते वक़्त आहें तो निकलती हैं मगर अच्छा सालिक वह होता है जो इसको क़ाबू में रखे। बर्तन बड़ा होगा तो छोटी चीज़ आराम से उसमें आ जाएगी और अगर बर्तन छोटा हो तो उबलकर बाहर निकल जाएगी। हम नक़्शबंदी हैं, इन अहवाल और कैफ़ियात को दिल की हंडिया के अंदर डालिए और उस पर अपने फ़हम व फ़िरासत का ढकना डाल दीजिए और इस सालन को अंदर पकने दीजिए। जो चीज़ आम हालात में देर से पकती है वह ढकना पड़ने की वजह से बहुत जल्दी पका करती है। लिहाज़ा अपने दिल की हंडिया पर ढकना दो और उसे पकने दो।

वस्ल का लुत्फ़ यही है कि रहें होश बजा
दिल भी क़ब्ज़े में रहे पहलू में दिलदार रहे

इसलिए हमारे नक़्शबंद अपने आपको क़ाबू में रखते हैं।

महबूब की नज़रे इनायत

फिर भी कभी-कभी महबूब की नज़र ही होती है जो सीने से पार हो जाती है। फिर बस में नहीं होता। ऐसा बंदा जब कभी रो पड़ता है तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ उस बंदे के आँसुओं की बड़ी क़दर व क़ीमत हुआ करती है।

अल्लाह तआला की महबूबियत

मोहतरम जमात! अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ही वह हस्ती है कि काएनात में जितनी उससे मुहब्बत की गई उतनी किसी ओर से नहीं की गई। जितना अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तारीफ़ें की गयीं किसी और की इतनी तारीफ़ें नहीं की गयीं, जितना दुनिया में उसके सामने फ़रियादें की गयीं, जितना उसकी चौखट को पकड़कर रोया गया उतना किसी सख़ी के दर पर नहीं रोया गया, जितना अपनी परेशानियों में अल्लाह को पुकारा गया काएनात में किसी और को नहीं पुकारा गया। जब बेसहारों के सहारे नहीं रहते तब उसको एक सहारा नज़र आता है। वह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की ज़ात होती है, जब उम्मी की शमा बुझ जाती है तो फिर एक किरन बाक़ी होती है वह अल्लाह तआला की ज़ात होती है। जब इंसान सारी मख़्लूक की बेवफ़ाई से नाउम्मीद हो जाता है तब उसे वफ़ा वाली एक ही ज़ात नज़र आती है। अल्लाह तआला की किबरियाई का नज़ारा करने वाले इंसान के दिल पर जब अल्लाह तआला की अज़मत छप जाती है तो इंसान का ध्यान अपने परवरदिगार की तरफ़ रहता हैं। जिसकी वजह से उसे गुनाह करने की हिम्मत नहीं होती क्योंकि वह जानता है कि अगर मैंने अपने परवरदिगार की नाफ़रमानी की तो रब्बे करीम मुझसे नाराज़ होंगे।

आम लोगों के दिलों में ख़शियत

आम आदमी का डर और ख़ौफ़ इस तरह का होता है कि वह डरता है अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की सज़ाओं से, वह डरता है कि फ़रिश्ते मारेंगे, वह डरता है कि जहन्नम की आग शदीद गर्म है,

वह डरता है कि क़यामत का अज़ाब और दर्दनाक तकलीफ़ें बरदाश्त करना मुश्किल होंगी, वह डरता है कि कहीं क़ब्र के अंदर सांप न दाख़िल कर दिए जाएं, वह डरता है कि कहीं जहन्नम में बिच्छुओं की ग़ार में धकेल न दिया जाए, वह डरता है कि कहीं फ़रिश्ते मुझे बड़े हथौड़े से न मारें। इसलिए वह गुनाहों से बचता है।

अल्लाह वालों के दिल में ख़शियत

अल्लाह वालों का ख़ौफ़ और तरह का होता है। उनको तकलीफ़ें तो छोटी नज़र आती हैं। उनके दिल में एक बड़ी ग़मनाक कैफ़ियत यह होती है कि अगर गुनाह करूं तो मेरा परवरदिगार मुझसे नाराज़ हो जाएगा। मोहतरम जमात! जिससे रब्बे करीम नाराज़ हो गया फिर दुनिया में उसका कोई न बचा। उसने सब कुछ बर्बाद कर दिया। अल्लाह वाले अल्लाह की नाराज़गी से डरते हैं। वे अगर बढ़-चढ़ कर इबादतें भी कर रहे होते हैं तो उन्हें फिर क़दम-क़दम पर यही डर रहता है कि वह बेनियाज़ परवरदिगार हमारी इबादतों को कहीं मुँह पर न मार दे। हदीस पाक में आया है कि रियाकार लोगों की इबादतों को अल्लाह तआला उनके मुँह पर फटे हुए कपड़े की तरह मार देते हैं रातों को जागने वाले कितने ही ऐसे होंगे कि रियाकारी की वजह से अल्लाह तआला क़यामत के दिन इन रातों के अंधेरों को उनके चेहरों पर मल देंगे। कितने ही लोग ऐसे होंगे कि दुनिया में कलिमा पढ़ते होंगे मगर उनका अमल उसके ख़िलाफ़ होगा जिसकी वजह से मौत के बाद क़ब्रों में रुख़ क़िबले से बदल दिए

ज़ाएंगे, कितने ही लोग ऐसे होंगे कि जब क़ब्र में पहुँचेगे तो उनसे कहा जाएगा ﴿نم كنومة العروس﴾ तुम दुल्हन की नींद सो जाओ और कई ऐसे भी होंगे कि जब क़ब्र में पहुँचेगे तो उनसे कहा जाएगा ﴿نم كنومة المنحوس﴾ तुम मनहूस की नींद सो जाओ। उनके लिए सज़ाए होंगी क्योंकि परवरदिगार उनसे नाराज़ होगा, वे इबादत भी कर रहे होते हैं और दिल में यह कैफ़ियत भी होती है कि परवरदिगार इतनी अज़मतों और किबरियाई वाला है, उसकी शान इतनी बुलंद है और मैं इतना हक़ीर हूँ, मैं गुनाहों में डूबा हुआ हूँ, मैं इतना आजिज़ हूँ, मैं इतना छोटा हूँ कि मेरी इबादतें नीचे रह जाएंगी। मेरी इबादतें इस काबिल नहीं कि परवरदिगार की जनाब तक पहुँचें। उनके दिल में यह ख़ौफ़ होता है कि अगर मेरी इबादतों की तरफ़ परवरदिगार ने नज़र ही न उठाई तो मेरा क्या बनेगा। मेरी इबादतों के लिए आसमान के दरवाज़ों को न खोला गया तो क्या बनेगा? इसलिए बड़ी-बड़ी इबादतें करके परवरदिगार को राज़ी करने वाले मुक़र्रिबीन सारी-सारी रात इबादत करते रहे। चालीस-चालीस साल इशा के वुज़ू के साथ फ़ज्र की नमाज़ें पढ़ते रहे। इसके बावजूद जब उनको बैतुल्लाह शरीफ़ की ज़ियारत के लिए जाना नसीब हुआ तो तवाफ़ करके मुक़ामे इब्राहीम पर दो नफ़्ल पढ़े और इसके बाद हाथ उठाकर यूँ दुआएं मांगी ﴿ما عبدناك حق عبادتك﴾ ऐ अल्लाह! हमने तेरी इबादत का हक़ अदा नहीं किया जो हमें करना चाहिए था ﴿ما عرفناك حق معرفتك﴾ ऐ अल्लाह! हमें तेरी मारिफ़त जैसे हासिल करना चाहिए थी हम उसको हासिल नहीं कर सके। सुब्हानअल्लाह! यह उन हज़रात की मुनाजात हैं जिनकी ज़िंदगियाँ फूलों की नज़ाकत से भी ज़्यादा

अफ़ीफ़ गुज़रीं। कामिलीन हज़रात इतनी इबादतों के बाद अल्लाह तआला के सामने अपना दामन फैलाकर कहते थे। ऐ अल्लाह! अगर तू क़ुबूल कर ले तो यह तेरा फ़ज़्ल और एहसान है और अगर तू रद्द फ़रमा दे तो यह तेरा अदल होगा। दुनिया में होने वाले वाक़िआत उनकी नज़र में हर वक़्त रहते हैं। बलअम बाऔर पाँच सौ साल तक इबादत करता रहा। मेरे परवरदिगार की शाने बेनियाज़ी ज़ाहिर हुई तो उसकी पाँच सौ साल की इबादत को फटकार के रख दिया। फिर उसका हश्र कुत्ते की तरह कर दिया और उसका तज़्किरा क़ुरआन में यूँ फ़रमाया ﴿فمثله كمثل الكلب﴾ उसकी मिसाल तो कुत्ते की तरह है। ऐ अल्लाह! तू अगर चाहे तो पाँच सौ साल की इबादत के बाद कुत्ते की तरह हश्र कर दे और अगर तेरी रहमत जोश में आ जाए तो फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रह० को डाकुओं की सरदारी से उठाकर वलियों का सरदार बना दे। जब इंसान का नफ़्स रियाज़त की भट्टी में पककर कुंदन बनता है तो यह गुनाह करने से डरता है, ख़ौफ़ खाता है। जैसे कोई इस बात से डरता है कि बादशाह मुझ से नाराज़ न हो जाए और कोई ग़लत काम नहीं करता। इसी तरह बंदे के दिल में जब ख़शियते इलाही पैदा हो जाती है तो वह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से डरता है कि कहीं वह मालिक नाराज़ न हो जाए। इसी को आरिफ़ीन का ख़ौफ़ कहते हैं।

एक मिसाल से वज़ाहत

इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि अगर शेर पास बैठा हो तो देखोगे कि आदमी उससे हैबत खाएगा हालाँकि वह शेर उस

आदमी की तरफ़ देख भी नहीं रहा होता, उसे कोई नुक़सान भी नहीं पहुँचा रहा होता मगर इस सब के बावजूद वह इंसान शेर के रौब की वजह से जो अल्लाह ने शेर को दिया है हैबतज़दा होता है। वह जानता है कि अगर उसने मेरी तरफ़ देख लिया तो चीर-फाड़ कर टुकड़े-टुकड़े कर देगा। इसी तरह क्योंकि अल्लाह वालो को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की जलालत शान का इल्म होता है वे उसकी अज़मतों को और उसकी बेनियाज़ी को जानते हैं कि अगर कभी उसकी बेनियाज़ी की हवा चल गई तो हमारी इबादतों को ﴿هباءً منثورا﴾ की तरह उड़ाकर रख दिया जाएगा।

ईमान की दलील

अल्लाह वालों के दिलों में यह कैफ़ियत होती है कि वे इबादतें भी करते हैं मगर दिलों को सकून नहीं होता। उनके दिलों में एक ग़म होता है। वे मौत से पहले कैसे पुरसकून हो सकते हैं जिन्हें अपने अंजाम का पता नहीं कि किस हाल में मौत आएगी। उन्हें हर वक़्त यह डर रहता है कि पता नहीं हमारी क़ब्र जन्नत का बाग़ बनेगी या दोज़ख़ का गढ़ा बनेगी। वे रब के सामने पेशी की कैफ़ियत से डरते रहे हैं कि पता नहीं मुझे मुजरिमों में खड़ा किया जाएगा या इबादत गुज़ारों में।

मोहतरम जमात! ऐसा बंदा फिर चैन की बंसी कैसे बजा सकता है? वह दुनिया में लम्बी तान कर कैसे सो सकता है? वह दुनिया के अंदर बेग़म ज़िंदगी कैसे गुज़ार सकता है? वह तमाम इबादतों के बावजूद अपने परवरदिगार के सामने उसकी बेनियाज़ी और अज़मतों की वजह से डरते रहते हैं क्योंकि अमल करना और फिर इस पर डरना ईमान की दलील होती है।

चश्म और चश्मे के पानी तासीर

आइए रोने के बारे में भी कुछ बातें कर लें। आँख को उर्दू में चश्म कहते हैं। चश्म से आँसू निकलते हैं। एक चश्मा भी होता है जो ज़मीन की आँख होता है। उसमें से भी पानी उबलता है। अरबी ज़बान में दोनों को 'ऐन' कहते हैं। इंसान की आँख से भी पानी निकलता है और ज़मीन की आँख से भी पानी निकलता है।

1. जिस तरह चश्मा पानी के बग़ैर बेकार होता है इसी तरह इंसान की आँख भी आँसुओं के बग़ैर बेकार होती है।
2. चश्मे के पानी से दुनिया का बाग़ लगा करता है और चश्म के पानी से नेकियों का बाग़ लगा करता है।
3. चश्मे के पानी से निकलने वाली फ़सल फ़ानी होती है मगर चश्म (आँख) के आँसू से निकलने वाली फ़सल हमेशा बाक़ी रहती है।
4. चश्मे से निकलने वाला पानी इंसान की ज़ाहिरी गंदगी को दूर कर देता है और इंसान की चश्म से निकलने वाला आँसू इंसान की बातिनी गंदगी को धो दिया करता है।
5. चश्मे का पानी अल्लाह तआला के हाँ ऐसी क़दर व क़ीमत रखता है कि उसे तोला जाए तो हदीस पाक में फ़रमाया गया है कि क़यामत के दिन अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त अपनी याद में गुनाहों को याद करके रोने वाले बंदे के आँसुओं को उसके नामाए आमाल में तोलेंगे और एक-एक आँसू ज़मीन और आसमान से ज़्यादा भारी हो जाएगा।

अजरामे फ़लकी पर ख़शियते इलाही का असर

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं ﴿قال النبی صلی الله علیه وسلم وتضرعوا وابکوا﴾ आजिज़ी करो, ज़ारी करो और रोओ ﴿فان السموات والارض والشمس والقمر والنجوم یکون من خشیة الله﴾ कि बेशक आसमान, ज़मीन, सूरज चाँद और सितारे अल्लाह तआला की ख़शियत से रोते हैं। जबकि हमारी हालत यह है कि हम हंसने के मज़े से वाक़िफ़ हैं रोने के मज़े से वाक़िफ़ नहीं हैं।

रोने की लज़्ज़त

ऐ मुर्दा सर की तरह दाँत निकालने वाले! बकरी का सर कटा हुआ तो कभी देखा कि उसके दाँत निकले होते हैं। ऐ मुर्दा सर की तरह दाँत निकालने वाले! तुझे रोने की लज़्ज़त का क्या पता! जब शमा की तरह आँसू बहाएगा तो अपने दिल के घर को रोशन पाएगा।

रोने की क़िस्में

रोने की मुख़्तलिफ़ क़िस्में हैं।

1. मुसीबत में रोना

एक होता है मुसीबत में रोना। यह एक तबई (मिज़ाजी) चीज़ है। छोटा हो या बड़ा जिस पर भी मुसीबत आएगी उसकी आँखों से आँसू आ जाते हैं। मोमिन को दुनिया में जो कोई छोटी या बड़ी मुसीबत आए उस पर अल्लाह तआला की तरफ़ से अज्र

मिलता है। यहाँ तक कि अगर हवा के झोंके से चिराग़ भी बुझ जाए तो इस चिराग़ के बुझने पर भी इस मोमिन को अल्लाह तआला अज्र अता फ़रमाते हैं। इसी तरह एक आदमी ने अगर अपनी क़मीज़ को दो जेबें लगवायी हों और कोई चीज़ एक जेब में डाल ले। फिर ज़रूरत के वक़्त भूले से दूसरी जेब में तलाश करे तो उसे जेब से वह चीज़ नहीं मिलती। इस पर उसे परेशानी होती है। फिर दूसरे ही लम्हे वह दूसरी जेब में तलाश करने पर मिल जाती है तो उसे इस परेशानी पर भी अल्लाह तआला अज्र व सवाब अता फ़रमा देते हैं।

2. किसी की जुदाई में रोना

दूसरा किसी की जुदाई में रोना जैसे हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम अपने बेटे हज़रत यूसफ़ अलैहिस्सलाम की जुदाई में रोते थे, इतना रोते थे कि ﴿وابيضت عينه﴾ ग़म की वजह से आँखे सफ़ेद हो गई थीं।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की जुदाई में इतना ग़म क्यों?

यहाँ उलमा ने इश्काल और उसका जवाब लिखा है। वह इश्काल यह है कि बेटे की जुदाई में पैग़म्बर का इतना ज़्यादा रोना अजीब मालूम होता है क्योंकि आख़िर बेटा था, बेटे फ़ौत भी हो जाते हैं, बेटों को कोई पकड़कर भी ले जाता है। उलमा ने इसका जवाब लिखा है। वे फ़रमाते हैं कि पहली बात तो यह है कि हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम को मालूम था कि मेरा बेटा मेरे

बाद मेरे इल्म का वारिस बनेगा और अपने वक़्त का नबी बनेगा। लिहाज़ा वह अपने बेटे की जुदाई में इसलिए ज़्यादा रोते थे कि पता नहीं उसके ईमान का क्या हाल होगा और कैसे लोगों के पास होगा। फिर इस जवाब की यह दलील पेश की कि जब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने क़मीज़ भेजी कि मेरे वालिद मोहतरम के पास ले जाओ और खुशख़बरी लाने वाला लाया तो उन्होंने सबसे पहली बात यह पूछी कि तुमने यूसुफ़ को किस हाल में पाया? उसने कहा कि मैंने उनको दीन इस्लाम पर पाया तो आपने फ़रमाया ﴿الان تمت نعمت ربی﴾ अब मेरे रब की नेमत मुझ पर कामिल हो गई कि मेरा बेटा अभी तक दीन इस्लाम पर मौजूद है।

एक और नुक्ता

हज़रत मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० इसमें एक और नुक्ता लिखते हैं। वह फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को जन्नती हुस्न की झलक दे दी थी। इसकी दलील यह देते हैं कि जब मिस्र की औरतों ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को देखा तो कहने लगीं :

﴿ما هذا بشرا ان هذا الا ملك كريم.﴾

यह बशर नहीं, यह तो कोई बड़ा मुकर्रम फ़रिश्ता मालूम होता है।

वह फ़रमाते हैं कि क्योंकि उनको जन्नती हुस्न को बहुत छोटा सा हिस्सा दे दिया था इसलिए उनकी ख़ूबसूरती पर हर एक क़ुर्बान हुआ जाता था। मोमिन हमेशा जन्नत की चीज़ों और

जन्नत की मुहब्बत करता है। अल्लाह तआला भी बंदों को जन्नत की तरफ़ बुला रहे हैं ﴿والله يدعوا الى دار السلام.﴾ तो जिस नेमत की तरफ़ परवरदिगार बुलाए मोमिन उस नेमत से मुहब्बत करता है क्योंकि हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम को जन्नत से मुहब्बत थी और बेटे को मिलने वाले जन्नती हुस्न से भी मुहब्बत थी इसलिए इस जन्नती हुस्न की जुदाई पर हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम रोया करते थे।

रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आँसू

सैय्यदना रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बेटे सैय्यदना इब्राहीम रज़ियल्लाहु अन्हु की जब वफ़ात हुई तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें दफ़न फ़रमा दिया। उस वक़्त आपकी मुबारक आँखों से आँसू जारी थे। एक सहाबी ने देखकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी आप भी रो रहे हैं? आपने फ़रमाया ﴿القلب يحزن.﴾ दिल ग़मज़दा है ﴿العين تدمع﴾ आँख रो रही है ﴿انا بفراقك يا ابراهيم لمحزونون.﴾ और ऐ इब्राहीम! हम तेरी जुदाई पर बड़े ग़मनाक हैं।

हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु की अज़ान के वक़्त सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का रोना

हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पर्दा फ़रमा जाने के बाद मुल्के शाम हिजरत कर गए थे। एक अरसे तक वहाँ रहे। एक बार ख़्वाब में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत नसीब हुई। आक़ा

ने इर्शाद फ़रमाया, बिलाल! तुम हमें मिलने ही नहीं आते। मक़सद यह था कि तुमने दूर बसेरे कर लिए हैं। दिल बड़ा उदास हुआ। लिहाज़ा सफ़र करके शाम से मदीना तैय्यबा आए। सहाबा किराम ने जब हज़रत बिलाल को देखा तो पुरानी यादें ताज़ा हो गयीं। सहाबा किराम जमा हो गए। सब के दिल में तमन्ना पैदा हुई कि कि हज़रत बिलाल से दौरे नबवी वाली अज़ान सुनें। लिहाज़ा हज़रत बिलाल के सामने उन्होंने अपनी तमन्ना ज़ाहिर की तो उन्होंने फ़रमाया कि मैं क़ाबू न रह सकूंगा। सब हज़रात ज़िद्द करते रहे मगर आप इंकार करते रहे। आख़िर हज़रात हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा आ गए। दोनों शहज़ादों ने आकर तमन्ना ज़ाहिर की कि हमें अपने नाना सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़ान सुना दीजिए। शहज़ादों की फ़रमाइश कोई छोटी फ़रमाइश न थी। लिहाज़ा उसी जगह पर खड़े हो गए जहाँ नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दौर में खड़े होकर अज़ान दिया करते थे। अल्लाहु अकबर कहकर अज़ान देना शुरू की। आवाज़ बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु की थी मगर सहाबा किराम के दिल में याद अपने महबूब की थी। इधर अज़ान हो रही थी उधर दिल बेक़ाबू होते चले जा रहे थे। सहाबा किराम की आँखों से आँसुओं की लड़ियाँ बह रही थीं। आँसुओं के मोती गिर रहे थे। आँखों ने सावन-भादों की बरसात बरसाना शुरू कर दी। हद है यह मामला आँसुओं तक न रहा बल्कि उनकी ज़बानों से भी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जुदाई में मुहब्बत की बातें निकलना शुरू हो गयीं। यह शोर इतना बुलंद हुआ कि मदीना तैय्यबा के घरों में सहाबियात ने भी हज़रत बिलाल की आवाज़

सुन लीं। बस वे भी अपने घरों से रोती हुई बाहर आ गयीं। हदीस पाक में आया है :

﴿فلم يقدر عليه فسكت مغشيا عليه حبا للنبي صلى الله عليه وسلم﴾

हज़रत बिलाल अपने आप पर क़ाबू न रख सके और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत की वजह से चक्कर खाकर नीचे गिर गए,

﴿وشوقا عليه واشتد عند ذلك بكاء اهل المدينة﴾

और मदीना वालों के रोने-धोने की आवाज़ें इतनी बुलंद हुयीं ﴿من المهاجرين والانصار﴾ वह मुहाजिरीन में से थे या अन्सार में से थे ﴿حتى خرجت العواتق من خدورهن شوقا الى النبي صلى الله عليه وسلم﴾ यहाँ तक कि घरों में बैठी औरतें भी बाहर निकलीं और उन्होंने भी रोना शुरू कर दिया। सोचिए तो सही कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जुदाई के अंदर उनका उस वक़्त क्या हाल हुआ होगा। मालूम हुआ कि अल्लाह तआला या नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जुदाई में रोना भी ऐन इबादत है।

यह रोना कैसा है

लेकिन ख़ुश्क बंदे को इसका पता नहीं चलता। यह आजिज़ एक बार मवाजा शरीफ़ के सामने खड़ा था। एक साहब मेरे साथ ही ख़ामोश खड़े रो रहे थे। एक ख़ुश्क बंदा उसके क़रीब आकर कहने लगा ﴿ما هذا البكى﴾ यह रोना कैसा है? अफ़सोस कि उस बेचारे की समझ में यह भी नहीं आता था कि यह रोना भी कुछ होता है।

3. तिलावत के वक़्त रोना

रोने की तीसरी क़िस्म तिलावते क़ुरआन मजीद के वक़्त रोने की है। हदीस पाक में आया है कि तिलावत क़ुरआन के वक़्त जिस आदमी की आँखों में से आँसू निकल आते हैं अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत का वाजिब कर देते हैं। इसीलिए हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे कि तिलावत क़ुरआन करते हुए जब तुम जहन्नम और अज़ाब की आयत पढ़ो तो ﴿فان لم تبكوا فتباكوا﴾ तुम्हें रोना न आए तो रोने वाली शक्ल ही बना लिया करो। अल्लाह तआला तुम्हारे इस बहरूप को ही क़ुबूल फ़रमा लेंगे।

तिलावत के वक़्त सहाबा किराम की हालत

इमाम ग़ज़ाली रह० ने लिखा है कि तिलावत क़ुरआन के वक़्त सहाबा किराम की हालत अजीब होती थी ﴿فكثير منهم من صعق﴾ बहुत सारे तो उनमें ऐसे थे कि जो झूमते थे ﴿ومنهم من بكى﴾ कुछ ऐसे थे जो रोते थे ﴿ومنهم من غشى عليه﴾ कुछ ऐसे थे जो बेहोश हो जाते थे। ﴿ومنهم من مات فى غشيه﴾ और कुछ ऐसे थे कि बेहोशी के आलम में उनकी जान अल्लाह के सुपुर्द हो जाया करती थी। तो क़ुरआन पढ़ने और सुनने के वक़्त रोना सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की सुन्नत है।

सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के दिल में ख़शियते इलाही

जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था

कि मैं अबू बक्र से कहता हूँ कि वह मेरी बीमारी की वजह से मुसलमानों की नमाज़ का इमाम बने और सैय्यदा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा तो उन्होंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह! के नबी! ﴿ان ابا بكر اذا قام فى مقامك لم يسمع الناس من البكى﴾ बेशक अबू बक्र की हालत ऐसी है कि जब वह आपके मुसल्ले पर खड़े होंगे तो वह तिलावत करते हुए इतना राएंगे कि नमाज़ियों को उनकी तिलावत क़ुरआन समझ ही नहीं आएगी। मैं उनकी तबियत को जानती हूँ, मैं उनकी बेटी हूँ।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दिल में ख़शियते इलाही

हज़रत उमर का हाल यह था कि फज्र की नमाज़ में इमाम होते थे। सूरः यूसुफ़ की तिलावत करते हुए इतना रोते कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन शदाद फ़रमाते थे कि ﴿وانا فى اخر الصفوف﴾ मैं सफ़ों के आख़िर में था ﴿يقرء﴾ हज़रत उमर पढ़ रहे थे ﴿انما اشكوا بثى وحزنى الى الله﴾ और मैं आख़िरी सफ़ में खड़ा उनके रोने की आवाज़ को सुन रहा था।

इमाम शाफ़ई रह० के दिल में ख़शियते इलाही

इमाम शाफ़ई रह० ने एक बार आयत सुनी ﴿هذا يوم لا ينطقون ولا يؤذن لهم فيعتذرون﴾ इस आयत का सुनना था कि आप चक्कर खाकर गिर पड़े और बेहोश हो गए।

अली बिन फ़ुज़ैल के दिल में ख़शियते इलाही

फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रह० के बेटे अली बिन फ़ुज़ैल रह० को मुक़ामे ख़ौफ़ नसीब था। जब क़ुरआन पढ़ा या सुना करते तो

अज़ाब की आयतों पर बेहोश हो जाते थे। लिहाज़ा दिल में तमन्ना किया करते थे कि या अल्लाह! कभी मुझे भी एक वक़्त में पूरा क़ुरआन सुनने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा क्योंकि वह तिलावत करते वक़्त थोड़ा सा पढ़ते और जहाँ डराने की बात आती तो वहीं बेहोश हो जाते थे। उनके बारे में आता है कि एक बार उनके सामने क़ारी ने पढ़ा ﴿يوم يقوم الناس لرب العلمين.﴾ कि वह ऐसा दिन होगा कि इंसान अपने परवरदिगार के सामने खड़े किए जाएंगे। इस बात को सुना और उसी वक़्त बेहोश होकर गिर गए। (अल्लाहु अकबर)

सैय्यदा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा के दिल में ख़शियते इलाही

हज़रत आएशा ने एक बार पूरी रात यह आयत पढ़ते हुए गुज़ार दी :

﴿وبدالهم من الله ما لم يكونوا يحتسبون.﴾

हज़रत शिबली रह० के दिल में ख़शियते इलाही

एक बार हज़रत शिबली रह० ने यह आयत सुनी ﴿لئن شئنا لنذهبن بالذى اوحينا اليك﴾ इमाम तरावीह पढ़ा रहा था। जब उसने यह आयत पढ़ी तो हज़रत शिबली रह० वहीं गिरकर बेहोश हो गए। हमें क्या पता है कि क़ुरआन सुनकर आशिक़ों के साथ क्या होता है—

नाज़ है गुल को नज़ाकत का चमन में ऐ ज़ौक़
उसने देखे ही नहीं नाज़ व नज़ाकत वाले

हमारी बुरी हालत

आज यहाँ भी क़ुरआन पढ़ा जाता है मगर मायने का इतना भी पता नहीं होता कि क़ारी साहब पढ़ रहे होते हैं ﴿انا من المجرمين منتقمون﴾ और सुनने वाले अच्छी आवाज़ की वजह से सुब्हानअल्लाह कह रहे होते हैं हालाँकि इन अल्फ़ाज़ का तर्जुमा है कि हम उन मुजरिमों से खुद इंतिक़ाम लेंगे और सुनने वाले बंदे गुनाहों के पुलिंदे सुब्हानअल्लाह कह रहे होते हैं। मालूम हुआ कि सिर्फ़ क़ारी साहब की आवाज़ कानों तक पहुँच रही होती है लेकिन उसकी कैफ़ियत और मायने दिल में नहीं पहुँच रहे होते हैं।

इल्मी नुक्ता

एक इल्मी नुक्ता समझ लीजिए। आपने आमतौर पर देखा होगा कि जब लोगों के सामने अश'आर पढ़े जाते हैं तो उनको बड़ा रोना आता मगर क़ुरआन पढ़ा जाए तो रोना नहीं आता। इस मर्ज़ में आम लोग भी शामिल हैं और कई उलमा भी शामिल हैं। अब दिल में सवाल पैदा होता है कि ऐसा क्यों है? सुनिए और दिल के कानों से सुनिए। अश'आर मख़्लूक़ का कलाम होते हैं और क़ुरआन मजीद अल्लाह तआला का कलाम है। इंसान के दिल में जब मख़्लूक़ का ताल्लुक़ मौजूद होता है तब उसके अश'आर सुनकर रोना आता है और जब अल्लाह के ग़ैर की गिरफ़्तारी से निजात नसीब होती है तब उसे क़ुरआन सुनकर रोना आता है। यह हमारे दिल की कैफ़ियत की पहचान होती है। अगर क़ुरआन सुनकर रोना नहीं आता तो समझ लीजिए कि अभी

मुहब्बत का वह मुक़ाम हासिल नहीं है जो होना चाहिए था बल्कि अभी तक मख़्लूक़ के ताल्लुक़ से जान नहीं छूटी, अभी ख़ालिक़ के साथ पूरे तौर पर नत्थी नहीं हुए, वासिल नहीं हुए, दिल को ग़ैर से ख़ाली नहीं किया।

फ़िक्र की घड़ी

अहले इल्म की पहचान

अब आपके सामने दो आयतें पेश की जाएंगी। महफ़िल से उठकर दो सज्दे कर लेना। (अगर पढ़ने वाले भी ये आयतें पढ़ें तो वे भी सज्दे करें) फ़रमाया ﴿ان الذين اوتوا العلم من قبله﴾ बेशक वे लोग जिनको पहले इल्म अता किया गया ﴿اذا يتلى عليهم﴾ जब उनके सामने क़ुरआन पढ़ा जाता है ﴿يخرون الى للاذقان سجدا﴾ तो वे अपने कानों के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं ﴿ويقولون﴾ और कहा करते थे ﴿سبحان ربنا كان وعد ربنا لمفعولا ويخرونا للاذقان يبكون﴾ वे क़ुरआन सुनते थे और सज्दे में गिर पड़ते थे मगर हालत क्या होती थी ﴿يبكون﴾ वह रो रहे होते थे ﴿ويزدهم خشوعا﴾ और उनके दिलों के अंदर ख़ुशू बढ़ जाया करता था। सुब्हानअल्लाह! अल्लाह तआला ने अहले इल्म की पहचान बता दी है कि वे क़ुरआन सुनते थे और रोते थे।

अल्फ़ाज़ और हर्फ़ का इल्म

इस महफ़िल में इस आजिज़ के अंदाज़े के मुताबिक़ सौ से ज़्यादा आलिम बैठे होंगे। कोई आदमी खड़ा होकर बता सकता है

कि मैंने क़ुरआन सुना और मुझ पर क़ुरआन सुनकर इतना गिरया तारी हुआ कि रोते हुए गिर पड़ा। मालूम हुआ कि हमारा इल्म सिर्फ़ अल्फ़ाज़ और हर्फ़ का इल्म है। इससे एक क़दम आगे बढ़ाइए और अहवाल और कैफ़ियतें भी हासिल कर लीजिए। हमारे पहले के बुज़ुर्गों में इल्म अल्फ़ाज़ और हर्फ़ की शक्ल में भी होता था और अहवाल और कैफ़ियतों की शक्ल में भी होता था।

जिस्मों पर निशान

चलें आम लोगों को छोड़ दीजिए। हम अहले इल्म की बात करते हैं जिन्होंने दस पंद्रह साल तक इल्म पढ़ा और पढ़ाया कि उनके टख़नों, घुटनों और बैठकों पर निशान पड़ गए। अब वे एक क़दम और भी आगे बढ़ाएं कि इल्म पर अमल में कोई कसर न छोड़ें। निशानों की क्या बात है, क्या जानवरों के जिस्मों पर निशान नहीं होते। कभी गधे और घोड़े को देखा करें, बैठ-बैठ कर उनके टख़नों और घुटनों पर भी निशान पड़ जाते हैं। सिर्फ़ निशान की बात नहीं, अब एक क़दम और आगे बढ़ना है, हमें क़ुरआन के एक-एक लफ़्ज़ पर अमल करना है।

रोने की तौफ़ीक़ कब मिलेगी?

एक दूसरी आयत आपके सामने पढ़ी जाती है। हम सब मिलकर सोचें कि क्या हम ने पूरी ज़िंदगी में इस आयत पर अमल किया है या अभी तक अमल नहीं कर पाए। अगर अभी तक अमल नहीं कर पाए तो फिर अमल करने का वक़्त कब आएगा। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿وممن هدينا واجتبينا﴾ और उन लोगों में

से जिनको हमने हिदायत दी और जिनको हमने अपने लिए चुन लिया। यह बात हो रही है उन बंदों की जिनको परवरदिगार आलम हिदायत देकर अपने दीन के काम के लिए क़ुबूल कर लेते हैं, जिनकी ज़िंदगियाँ मिंबर व मेहराब के लिए वक़्फ़ हो जाती हैं, जो लोग अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम के नाएब और उनके वारिस कहे जाते हैं उनकी सिफ़्त इर्शाद फ़रमाई ﴿اذا تتلى عليهم ايات الرحمن﴾ जब उनके सामने रहमान की आयतें पढ़ी जाती हैं ﴿خروا سجدا وبكيا﴾ वह सज्दा कर देते हैं रोते हुए।

अब बताइए कि आपने पूरी ज़िंदगी तरावीह में इस आयत को दर्जनों बार सुना होगा। हर मस्जिद के लोग इस आयत को सुनकर ﴿خروا سجدا﴾ पर तो अमल करते हैं लेकिन पूरी मस्जिद में कोई भी ऐसा नहीं होता जो ﴿بكيا﴾ पर अमल करने वाला हो। वह वक़्त कब आएगा जब हम एक क़दम और आगे बढ़ेंगे और दिल की कैफ़ियत ऐसी बनेगी कि जब हम इन आयतों को पढ़ेंगे तो साथ ही आँखों से सावन भादो की बरसात शुरू हो जाएगी। पहले के नेक लोग इस आयत को तरावीह में सुनते तो जिस्म तो सज्दे में जाते थे मगर दिल में ख़शियत की वजह से सज्दे में आँसू आया करते थे। हमने कभी तन्हाई में बैठकर सोचा है कि हमें रोना क्यों नहीं आता? क्या सारी ज़िंदगी क़ुरआन की तफ़्सीर और हदीस पढ़ाकर ﴿وبكيا﴾ के लफ़्ज़ पर अमल के बग़ैर ही मर जाएंगे, रोने की तौफ़ीक़ अल्लाह तआला से कब पाएंगे।

मोहतरम जमात! रोने की तौफ़ीक़ मिलती है मगर सवाली को। पेट भरने से नहीं मिलती, यह ख़ाली पेट रहकर मिला करती है। यह अख़बार पढ़ने से नहीं मिलती, यह क़ुरआन पढ़ने से मिला

करती है। यह सिर्फ़ एतिराज़ करने से नहीं मिलती, यह सुन्नत की पैरवी करने से मिला करती है। इसलिए हम अपने दिल की कैफ़ियत को देखें कि आज हमारे दिल की हालत क्या है। कितनी अजीब बात है कि भरी मस्जिद के नमाज़ी सज्दा करते हैं मगर रोने की तौफ़ीक़ नहीं मिलती। काश! कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें अपने सामने रोने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। हम सज्दा भी करते और रोते भी ताकि क़ुरआन की इस आयत पर भी हमारा अमल हो जाता।

हमारी ग़फ़लत का नतीजा

हमारी इस बुरी हालत को देखकर रब्बे करीम को भी फ़रमाना पड़ा ﴿تضحكون ولا تبكون﴾ तुम हंसते तो हो और रोते नहीं। वजह क्या है? ﴿وانتم سامدون﴾ इसलिए कि तुम ग़ाफ़िल हो। मालूम हुआ कि जब ग़फ़लत निकल जाती है तो फिर हंसना कम हो जाता है और इंसान का रोना ज़्यादा हो जाता है।

क़ुरआन मजीद से गवाही

क़ुरआन पाक से गवाही मांगिए ﴿ومن اصدق من الله قيلا﴾ अल्लाह तआला के क़ुरआन से बड़ा गवाह कौन होगा? क़ुरआन सहाबा किराम की हालत बताते हुए कहता है :

واذا سمعوا ما انزل الى الرسول ترى اعينهم تفيض من الدمع مما عرفوا من الحق يقولون ربنا امنا فاكتبنا مع الشاهدين. وما لنا نؤمن بالله وما جاء نا من الحق ونطمع ان يدخلنا ربنا مع القوم الصالحين.

जो यूँ गिड़गिड़ाकर मांगते थे तो परवरदिगार फ़रमाते हैं

﴿فاثابهم الله بما قالوا﴾ जो मांगते थे अल्लाह तआला उन्हें अता फ़रमा देते थे और उसको पूरा कर दिया करता था।

(सुब्हानअल्लाह)

सबसे बड़ी मुसीबत

फत्हुल बारी शरह बुख़ारी में लिखा है कि ﴿يستحب البكى مع القراءة﴾ जब इंसान क़ुरआन मजीद पढ़े तो अच्छा है कि वह रोए ﴿وطريق تحصيله﴾ और उसके हासिल करने का तरीक़ा यह है ﴿ان يحضر قلبهٔ الحزن﴾ वह अपने दिल में ग़म हाज़िर करे ﴿والخوف﴾ और अल्लाह तआला के ख़ौफ़ को हाज़िर करे। इसके बावजूद भी अगर रोना न आए तो ﴿فانهٔ من اعظم المصائب﴾ तो यह सबसे बड़ी मुसीबत है जो इस बंदे के सर पर आ पड़ी है।

4. गुनाहों को याद करके रोना

रोने की चौथी क़िस्म गुनाहों को याद करके रोना है। जब इंसान नादिम और शर्मिन्दा होकर रोता है तो यह रोना अल्लाह तआला के हाँ बहुत मक़्बूल होता है। इसलिए यह भी इबादत है। हदीस पाक में आया है ﴿من تذكر خطاياه﴾ जिसने अपनी कोताहियों, ग़ल्तियों और गुनाहों को याद किया ﴿بكى عيناه﴾ और उसकी आँखों से आँसू निकल पड़े ﴿رضى الله عنه الا الله﴾ उससे उसका माबूद राज़ी हो जाता है। एक और हदीस पाक में आया है कि जब कोई इंसान गुनाहों को याद करके रोता है तो उसके ऊपर जितने बाल होते हैं उतने तोबा करने वाला का सवाब अल्लाह तआला उसके नामाए आमाल में लिख देते हैं।

अंबियाए किराम का रोना

सैय्यदना आदम अलैहिस्सलाम अपनी भूल और चूक के बाद तीन सौ साल तक रोते रहे। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम चालीस साल तक रोते रहे। आप कहेंगे कि यह तो अंबिया अलैहिमुस्सलाम की बातें हैं। इस उम्मत के बड़ों का हाल भी सुन लें।

हज़रत हसन बसरी रह० का रोना

हसन बसरी रह० इतना रोते थे कि रोने की कसरत की वजह से उनके आँसुओं का पानी ज़मीन पर बह पड़ता था। यह रोना ख़शियते इलाही की वजह से था। अपने इतने अच्छे आमाल होने के बावजूद भी रोते थे।

राबिया बसरिया रह० का रोना

राबिया बसरिया रह० रोती थीं और अपने आँसुओं को ज़मीन पर छिड़कती रहती थीं। उनके आँसुओं का इतना पानी होता था कि उस जगह घास उग आया करती थी।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का रोना

सैय्यदना उमर इतने ज़्यादा रोने वाले थे कि आपकी आँखो से कसरत से आँसुओं के गिरने की वजह से आपके गालों पर आँसुओं के निशान बन गए थे। आँसुओं की लड़ी के निशान और लाइनें बन गई थीं।

आख़िरत की शर्मिन्दगी

जो इंसान अपने गुनाहों पर दुनिया में शर्मिन्दा नहीं होगा उसे

अपने गुनाहो की वजह आख़िरत में शर्मिन्दा होना पड़ेगा। लिहाज़ा जब गुनाहगार लोग क़यामत के दिन खड़े किए जाएंगे तो उनकी आँखें शर्म की वजह से झुकी हुई होंगी। क़ुरआन से पूछिए कि उनका क्या हाल होगा। फ़रमाया ﴿ولو ترى اذ المجرمون ناكسوا رءوسهم عند ربهم﴾ और याद करो उस वक़्त को जब मुजरिम लोग अपने रब के सामने इस हाल में खड़े होंगे कि उनकी गर्दनें शर्म के मारे झुकी हुई होंगी और उनकी आँखें ऊपर नहीं उठती होंगी। वे अपने परवरदिगार को चेहरा नहीं दिखा सकेंगे। तो याद रखिए कि या तो दुनिया में ही अपने गुनाहों पर शर्मिन्दा हो लें, यह आसान काम है वरना क़यामत के दिन तो शर्मिन्दा होना ही पड़ेगा। परवरदिगार आलम भी बड़े करीम हैं कि जब कोई बंदा अपने गुनाहों पर रो पड़ता हे तो अल्लाह तआला उसको जहन्नम की आग से बरी फ़रमा देते हैं।

मोहतरम जमात! आज बंदों के सामने रोएंगे मगर कल परवरदिगार के सामने रोना पड़ेगा। कल नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने शर्मिन्दा होकर रोना पड़ेगा। आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने गुनाह खोले जाएंगे तो सोचें कि क्या मुँह दिखाएंगे। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क्या कहेंगे कि मेरी उम्मत ने मेरे तहज्जुद के आँसुओं की क़दर न की, मैं इनकी मग़फ़िरत के लिए तहज्जुद में रोता था। मेरे बाद में आने वाले ये कैसे नामलेवा थे, ये कैसे मेरे रास्ते पर चलने वाले थे जो गुनाह करते थे और शर्मिन्दा भी नहीं होते थे। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें क़यामत के दिन की शर्मिन्दगी से महफ़ूज़ फ़रमा दे। (आमीन)

रोने की फ़ज़ीलत

इब्ने माजा शरीफ़ की एक हदीस है :

ما من عبد مؤمن يخرج من عينيه دموع وان كان مثل رأس الذباب
من خشية الله ثم يصيب شيئا من حر وجهه الا حرمهُ الله على النار.

जब कोई आदमी ख़शियते इलाही की वजह से रोता है और उसकी आँख से मक्खी के सर के बराबर भी आँसू निकल आता है तो अल्लाह तआला उस आँसू की वजह से उस पर जहन्नम की आग हराम कर देते हैं।

दो पसन्दीदा क़तरे

तिर्मिज़ी शरीफ़ की रिवायत है कि ﴿ليس شيء احب الى الله من قطرتين﴾ अल्लाह तआला को दो क़तरों से ज़्यादा पसन्दीदा कोई भी चीज़ नहीं है ﴿قطرة دموع من خشية الله﴾ एक तो आँसू का वह क़तरा जो अल्लाह की ख़शियत की वजह से बह पड़े और दूसरा ﴿قطرة دم تهراق فى سبيل الله﴾ ख़ून का वह क़तरा जो मुजाहिद के जिस्म से जिहाद की हालत में गिरता है।

रब्बे करीम! आप कितने मेहरबान और करीम हैं कि एक गुनाहगार की आँखों से आँसू का क़तरा निकल रहा है, आप उसको और शहीद के जिस्म से निकलने वाले ख़ून के क़तरे को बराबर बयान फ़रमा रहे हैं। ऐ अल्लाह! आप ने गुनाहगार को कितनी अज़्मत दी। ऐ अल्लाह! आपकी रहमत कितनी वसीअ है, क़ुर्बान जाएं आपकी रहीमी पर, क़ुर्बान जाएं आपकी सत्तारी पर। रब्बे करीम! आप क़ुबूल करने पर आ जाएं तो मामूली बहाने पर ज़िंदगी की ग़ल्तियों को नेकियों में तब्दील फ़रमा दें और अगर

आप बेनियाज़ी ज़ाहिर फ़रमा दें तो इंसान की इबादतें तेरी जनाब के लायक़ नहीं। तेरी शान बुलन्द है, तू इतनी अज़मतों वाला है कि हम तेरी शान के मुताबिक़ तेरी इबादत नहीं कर सकते। रब्बे करीम! ये नेकियों के, नमाज़ों के और ज़िक्र व मुराक़्बे के फूलों का गुलदस्ता हमने आपकी ख़िदमत के लिए तैयार किया है, ऐ अल्लाह! अगर तू क़ुबूल कर ले तो यह तेरा फ़ज़्ल होगा और अगर तू क़ुबूल न करेगा तो यह तेरा अदल होगा मगर हम आपसे आपका फ़ज़्ल मांगते हैं। हम पर मेहरबानी फ़रमा दीजिए।

पलकों के बालों की गवाही

मोहतरम जमात! क़यामत के दिन एक आदमी अपने गुनाहों पर नादिम होगा मगर उसकी सिफ़ारिश करने वाला कोई न होगा। फिर उस आदमी की पलकों का एक बाल गवाही देगा। हदीस पाक में आया है ﴿فتشهد تلك الشعرة﴾ पलकों का वह बाल इस बंदे के लिए गवाही देगा कि ﴿انهٗ قد بكى فى الدنيا من خوف ربه﴾ ऐ अल्लाह! यह बंदा दुनिया में आपके ख़ौफ़ की वजह से रोया था ﴿فيغفر لهٗ وينادى مناد﴾ इस की बख़्शिश कर दी जाए और एक ऐलान करने वाला फ़रिश्ता ऐलान करेगा कि ऐ लोगो! ﴿هٰذا عتيق الله تعالٰى بشعرة﴾ यह वह बंदा है जिसकी पलकों के बाल की गवाही को क़ुबूल करके अल्लाह तआला ने इसे जहन्नम की आग से बरी फ़रमा दिया। (सुब्हानअल्लाह)

5. अल्लाह के शौक़ में रोना

पाँचवीं क़िस्म का रोना अल्लाह तआला के इश्तियाक़ में रोना है। ख़ुशनसीब हैं वे लोग जिनको यह रोना नसीब है। हदीस पाक

में आया है ﴿من بكى في اشتياق المولى فلله جنة الماوى﴾ जो आदमी अल्लाह तआला की आरज़ू में रोता है अल्लाह तआला उसे जन्नतुनल मावा अता फ़रमा देते हैं। अल्लाह तआला को यह बात बहुत ही पसंद है कि कोई उसकी मुहब्बत में रोए।

हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम का अल्लाह के शौक़ में रोना

हदीस पाक में आया है कि एक बार हज़रत शुएब अलहिस्सलाम रोए। ﴿فقال الله ما هذا البكى﴾ अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया, ऐ शुएब! आपका यह रोना कैसा? ﴿اشوقا الى الجنة ام خوفا من النار﴾ क्या जन्नत के शौक़ की वजह से है या जहन्नम के ख़ौफ़ की वज़ह से हैं? ﴿فقال لا رب﴾ अर्ज़ किया ऐ परवदिगार! ऐसा तो नहीं। गोया न जन्नत के शौक़ में और न जहन्नम के ख़ौफ़ से मैं रो रहा हूँ ﴿ولكن شوقا الى لقائك﴾ मैं तो आपकी मुलाक़ात के शौक़ में रो रहा हूँ। ﴿فاوحى الله اليه﴾ अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनकी तरफ़ 'वही' नाज़िल फ़रमाई :

﴿ان يكن ذلك هنيأ لك لقائي يا شعيب لذلك﴾

ऐ शुएब! आपको मुबारक हो कि इस रोने की वजह से आपको मेरी मुलाक़ात नसीब होगी। (सुब्हानअल्लाह)

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अल्लाह के शौक़ में रोना

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की बेटी औ उम्मत की माँ

हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती थीं कि एक बार नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए और बिस्तर पर आराम फ़रमाने लगे। मेरे भाई अब्दुल्लाह बिन उमर सहन में बैठकर क़ुरआन मजीद पढ़ रहे थे। फ़रमाती हैं कि मैं नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ बिस्तर पर आराम कर रही थी। अचानक अब्दुल्लाह ने आयत पढ़ी ﴿كلا انهم عن ربهم يومئذ لمحجوبون﴾ मुजरिम लोग क़यामत के दिन इस तरह खड़े होंगे कि उनके परवरदिगार के बीच पर्दा होगा। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह आयत सुनी तो आपकी आँखों से आँसू निकल आए। हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मुझे अपने गालों पर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आँसू गिरते हुए महसूस हुए तो मैं हैरान हुई। मैं नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चेहरे मुबारक की तरफ़ देखने लगी। मैंने पूछा, आक़ा! आपको कोई तकलीफ़ हो रही है? फ़रमाया, नहीं। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के महबूब! आप जन्नत के शौक़ में रो रहे हैं? फ़रमाया, नहीं। तो मैंने पूछा, ऐ महबूब! आप क्यों रो रहे हैं? नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रोते हुए फ़रमाया, ﴿انا مشتاق وبی اشتیاق﴾ मैं तो मुश्ताक़ हूँ, अल्लाह का आशिक़ हूँ और उसके इश्क़ व मुहब्बत में रो रहा हूँ। आपने दो बार ये अल्फ़ाज़ दोहराए। आज हम इत्तिबाए सुन्नत की बातें करते हैं। काश! हमें अल्लाह के महबूब की इस सुन्नत पर भी अमल नसीब हो जाए।

सारी चमक दमक तो इन्हीं मोतियों से है
आँसू न हो तो इश्क़ में कुछ आबरू नहीं

6. शुक्र की वजह से रोना

छठी और आख़िरी क़िस्म का रोना शुक्र की वजह रोना है। नेमत मिले तो रब्बे करीम के एहसानों और हक़ीक़ी ईनाम देने वाले को याद करके शुक्र की वजह से अपने आप आँसू निकल आते हैं। इसको शुक्र की वजह रोना कहते हैं।

शुक्र के इज़्हार में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रोना

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शुक्र के इज़्हार के लिए भी रोते थे। हदीस पाक में आया है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा के हुजूरे में तहज्जुद की नमाज़ अदा फ़रमाई। ﴿فبكى﴾ आप रोए यहाँ तक कि आपके आँसू आपके सीने मुबारक पर गिरे ﴿ثم ركع فبكى﴾ फिर आपने रुकू किया और फिर भी रोए ﴿ثم سجد فبكى﴾ फिर आप सज्दे में गए तो सज्दे में भी रोए ﴿ثم رفع راسه فبكى﴾ फिर आपने सज्दे से सर उठाया और आप फिर रोए। यहाँ तक कि आपने इसी तरह नमाज़ पूरी की तो हज़रत आएशा ने पूछा कि ऐ अल्लाह के नबी! ﴿ما يبكيك﴾ आप क्यों रो रहे हैं? ﴿وقد غفر الله ما تقدم من ذنبك وما تاخر﴾ अल्लाह तआला ने तो आपके अगले पिछले गुनाहों को माफ़ कर दिया है। यह सुनकर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, आएशा! अगर परवरदिगार ने मुझ पर इतना एहसान फ़रमाया है कि मेरे अगले पिछले तमाम गुनाहों को माफ़ कर दिया है ﴿فلا اكون عبدا شكورا﴾ तो क्या मैं अपने परवरदिगार का शुक्रगुज़ार बंदा न बनूं?

इमाम ग़ज़ाली रह० का मल्फ़ूज़

इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं ﴿هذا يدل على ان البكى ينبغى ان لا ينقطع ابدا﴾ यह इस बात की दलील है कि बंदे का रोना कभी भी ख़त्म नहीं हो सकता। हर हाल में रोएगा, जब नेमत नहीं मिलेगी तो नेमत मांगने के लिए रोएगा और जब नेमत मिलेगी तो शुक्र की वजह से रोएगा। लिहाज़ा 'अह्याउल उलूम' में लिखा है :

﴿قلب العبد كالحجارة او اشد قسوة﴾ बंदे का दिल पत्थर की तरह है या उससे भी ज़्यादा सख़्त है ﴿لا تزال قسوة الا بالبكى فى حال الخوف والشكر جميعا﴾ चाहे ख़ौफ़ का हाल हो या शुक्र का हाल हो दोनों हालतों में जब तक न रोए उस बंदे के दिल की सख़्ती दूर नहीं हो सकती।

दिल की सख़्ती

इंसान के दिल की मिसाल ज़मीन की तरह है। जिस ज़मीन को बेकार छोड़ दिया जाए और मेहनत न की जाए तो कुछ अरसा बाद वह ज़मीन सख़्त हो जाती है और खेती के लायक़ नहीं रहती। इसी तरह जब कोई इंसान अपने दिल पर मेहनत न करे और दिल की ज़मीन को एक अरसे तक ख़ाली छोड़े रखे तो यह भी बंजर हो जाती है। यह भी सख़्त हो जाती है, इसमें फिर नेकी के फूल पौधे नहीं उगते। क़ुरआन पाक से इसका सबूत मिलता है अल्लाह तआला बनी इस्राइल के बारे में फ़रमाते हैं ﴿فطال عليهم الامد﴾ उन पर ग़फ़लत की एक तवील मुद्दत गुज़र गई। ﴿فقست قلوبهم﴾ उनके दिलों को सख़्त कर दिया गया।

6

दिल की सख़्ती को दूर करने का तरीक़ा

मोहतरम जमात! आप में से कुछ लोग आकर बताते हैं कि हमारे दिल सख़्त हो चुके हैं। इसकी बुनियादी वजह यही है कि हम तन्हाईयों में बैठकर रोते नहीं। हमें अगर अल्लाह तआला के इश्क़ में रोना आए, क़ुरआन सुनकर रोना आए, अपने गुनाहों को याद करके रोना आए तो इस रोने की वजह से अल्लाह तआला दिलों की सख़्ती को दूर कर दिया करते हैं। याद रखिए कि पत्थर कितना सख़्त होता है। उसके ऊपर पानी की एक बूंद गिरती है तो पानी की वह बूंद पत्थर पर रास्ता बना लिया करती है। यही सीखने के लिए ख़ानक़ाहों में आना होता है, अल्लाह वालों की महफ़िल में आना होता है। ये दिल कारोबार में लगने से नरम नहीं होते, घर में बैठने से नरम नहीं होते, ये मनपसंद खाना खाने से नरम नहीं होते, ये चैन की बंसी बजाने से नरम नहीं होते बल्कि ये ख़शियते इलाही से की वजह से रोने से नरम होते हैं।

एक पत्थर का रोना

एक बुज़ुर्ग किसी रास्ते पर जा रहे थे। उन्होंने एक पत्थर को रोते हुए देखा। उन्होंने पत्थर से पूछा कि तुम क्यों रो रहे हो? वह कहने लगा, मैंने किसी क़ारी साहब को पढ़ते हुए सुना है कि ﴿وقودها الناس والحجارة﴾ कि इंसान और पत्थर जहन्नम का ईंधन बनेंगे। जब से मैंने सुना मैं रो रहा हूँ कि क्या पता मुझे भी जहन्नम का ईंधन बनाकर जला दिया जाए। इन बुज़ुर्ग को उस पर बड़ा तरस आया। लिहाज़ा उन्होंने खड़े होकर दुआ मांगी, ऐ

अल्लाह! इस पत्थर को जहन्नम का ईंधन न बना, जहन्नम की आग से माफ़ और बरी फ़रमा देना। अल्लाह तआला ने उनकी दुआ क़ुबूल फ़रमा ली। वह बुज़ुर्ग आगे चले गए। कुछ दिनों के बाद वापस उसी रास्ते को गुज़रने लगे तो देखा कि वह पत्थर फिर रो रहा है। वह फिर खड़े हो गए। पत्थर से बात की तो पत्थर से फिर पूछा कि अब क्यों रो रहा है? तो पत्थर ने जवाब दिया कि ﴾ذلك بكاء الخوف﴿ ऐ अल्लाह के बंदे! जब आप पहले आए थे तो उस वक़्त रोना तो ख़ौफ़ का रोना था ﴾وهذا بكاء الشكر والسرور﴿ और अब मैं शुक्र और सुरूर की वजह से रो रहा हूँ कि मेरे परवरदिगार ने मुझे जहन्नम की आग से माफ़ी अता फ़रमा दी है। जैसे बच्चे का रिज़ल्ट अच्छा निकले तो ख़ुशी की वजह से आँखों से आँसू आ जाते हैं। इसी तरह अल्लाह के नेक बंदों को जब उसकी मारिफ़त मिलती है, जब सीनों में नूर आता है, सकीना नाज़िल होती है और रब्बे करीम की रहमत और बरकत नाज़िल होती है तो अल्लाह के कामिल बंदे फिर अल्लाह के शुक्र से रोया करते हैं।

आशिक़ की ज़िंदगी में रोने की फ़ज़ीलत

यही वजह है कि सालिक की ज़िंदगी में रोना कभी ख़त्म नहीं होता। नया हो या पुराना आख़िर हर हाल में उसे रोना होगा। सलूक यही है कि इंसान इबादत करने पर भी रोए और गुनाहों की माफ़ी मांग कर भी रोए। किसी ने क्या ही अच्छा कहा है—

आशिक़ दा कम रोना धोना बिन रोवन नईं मंज़ूरी
दिल रोवे चाहे अंखियाँ रोवन ते विच इश्क़ दे रोवन ज़रूरी

कई ते रोवन दीद दी ख़ातिर ते कई रोंदे विच हुज़ूरी
आज़म इश्क़ विच रोना पैंदा चाहे वस्ल होवे चाहे दूरी

अल्लाह तआला हमें भी अपनी ऐसी मुहब्बत अता फ़रमा दे और ऐसा इश्क़ अता फ़रमा दे जो हमारे दिलों को मोम कर दे।

(आमीन)

आज आँसू बहा लो वरना. . .

मोहतरम जमात! ये आँखें कैसी हैं कि उनके अंदर परवरदिगार की मुहब्बत में, परवरदिगार के इश्क़ में, परवरदिगार के शौक़ में और अपने गुनाहों पर नदामत की वजह से आँसू नहीं निकलते। फिर इन आँखों का क्या फ़ायदा? आज इस आँख से आँसू बहा लीजिए। एक-एक आँसू जहन्नम से बचने का सबब बन जाएगा वरना जब जहन्नमियों को जहन्नम में डालेंगे तो रिवायतों में आता है कि वे बंदे एक हज़ार साल तक रोते रहेंगे यहाँ तक कि उनके आँ पानी के दरिया की तरह बहने लग जाएंगे मगर परवरदिगार को उन पर तरस नहीं आएगा। कल इतना रोएंगे तो तरस नहीं आएगा मगर आज मक्खी के सर के बराबर आँसू हमारे गुनाहों को मिटा सकता है।

मजमे में कौन है जो दम मारे कि मेरे गुनाह कोई नहीं। हम सब गुनाहगार हैं, ख़ताकार हैं, कभी यह गुनाह किया, कभी वह गुनाह किया। जब हम ख़ताकार ही हैं तो हमें अपने परवरदिगार के हुज़ूर फिर माफ़ी मांगनी चाहिए।

सारी महफ़िल के गुनाहगारों की बख़्शिश

बैहिक़ी शरीफ़ में रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम ने एक बार बयान फ़रमाया। आपका बयान सुनकर एक सहाबी रो पड़े। उनके रोने की आवाज़ बुलंद हो गई। आपने उसके रोने की आवाज़ सुनी तो फ़रमाया, गुनाहगार का रोना अल्लाह तआला को इतना पसंद आया है कि आज इस महफ़िल में जितने लोग मौजूद हैं अल्लाह तआला ने सबकी बख़्शिश फ़रमा दी है।

आज ही बख़्शिश करवा लें

मोहतरम जमात! आज गुनाहों की बख़्शिश करवा लीजिए ताकि परवरदिगार से हिसाब साफ़ हो। माफ़ी मांग लीजिए, अल्लाह तआला के हुज़ूर गिर जाइए, सज्दा कीजिए। मालूम नहीं कि ज़िंदगी का क्या भरोसा कि आज है कल नहीं। यह सूरज डूब चुका है पता नहीं कि उगेगा या नहीं। हमें क्या मालूम है कि कल परवरदिगार का हमारे साथ क्या मामला हो। अपनी इबादतों पर भरोसा करने की कोई ज़रूरत नहीं। अपने ज़िक्र व मुराक़्बे पर भरोसा करने की काई ज़रूरत नहीं। जो करते हैं या नहीं करते सब अल्लाह तआला से अपने गुनाहों की माफ़ी मांगे और परवरदिगार के सामने रोएं और अल्लाह तआला से तलब करें कि रब्बे करीम! हम आपके बंदे जहन्नम का ईंधन बनने के क़ाबिल हैं मगर मेरे मौला! आप भी तो अता करने वाले हैं। अल्लाह से मांगिए—

كيف ادعوك و انا آثم و كيف لا ادعوك وانت كريم

ऐ अल्लाह मैं तुझसे कैसे दुआ मांगू क्योंकि मैं बहुत गुनाहगार हूँ और ऐ अल्लाह! मैं तुझसे कैसे दुआ न मांगू जब तू इतना करीम है।

यक़ीनन जब हम अपने गुनाहों को देखते हैं तो दिल कहता है ﴿كيف ادعوك وانا آثم﴾ कि मैं कैसे दुआ मांगू में तो गुनाहगार हूँ लेकिन जब रब्बे करीम की रहमत को देखते हैं तो फिर दिल कहता है ﴿كيف لا ادعوك وانت كريم﴾ ऐ अल्लाह! मैं कैसे न दुआ मांगू, आप तो इतने करीम हैं।

जुर्म का इक़रार

रब्बे करीम! हमारी इबादतों को न देखना, अपने फ़ज़ल व करम का मामला फ़रमा देना।

अदल करें ते कुंबदे जावन अचियाँ शानां वाले
फ़ज़ल करें ते ते बख़्शे जावन में जिए वी मुँह काले

ऐ अल्लाह! अगर आप ने अदल किया तो हम डूब जाएंगे, हम शर्मिन्दा हो जाएंगे, हम ज़लील व ख़्वार हो जाएंगे, हम चेहरा दिखाने के क़ाबिल नहीं हैं। हम तो तुझ से तेरे फ़ज़ल का सवाल करते हैं।

रहमते इलाही को मुतवज्जेह करने वाली दुआ

मेरे दोस्तो! हम नेकों में से नहीं मगर नेकों के साथ तो होना चाहते हैं। इसलिए रब्बे करीम से मांगा कीजिए—

احب الصالحين ولست منهم   لعل الله يرزقني صلاحا

ऐ अल्लाह! मैं नेक नहीं हूँ मगर नेकों के साथ मेरा हश्र चाहता हूँ। जब हम अपने परवरदिगार से यूँ मांगेगे कि क्या अजब है कि अल्लाह तआला हम पर मेहरबानी फ़रमा दे और हमारे इन दो आँसुओं को क़ुबूल फ़रमाकर हमारी ज़िंदगी के गुनाहों को माफ़

फ़रमा दे। क्या अजब है कि अल्लाह तआला हमें ऐसी ज़िंदगी अता कर दे जो हमारी गुज़री हुई ज़िंदगी का कफ़्फ़ारा बन जाए, क्या अजब है कि अल्लाह की रहमत का दरिया जोश में आए और हमारे गुनाहों पर पानी बहा दिया जाए बल्कि इन गुनाहों को नेकियों से बदल दिया जाए। इलाही! आप तो इतने अता करने वाले हैं कि अगर एक बदकार औरत किसी कुत्ते को पानी पिलाती है तो ज़िंदगी भर के गुनाहों को धो दिया जाता है। इलाही! हमारे हाल पर भी रहम फ़रमा दीजिए और हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा कर हमें भी अपने क़रीबी लोगों में शामिल फ़रमा लीजिए। (आमीन)

❋ ❋ ❋

शबे बरा'त की फ़ज़ीलत

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفىٰ اما بعد
فاعوذ بالله من الشيطن الرجيمo بسم الله الرحمٰن الرحيمo
وما من دآبة فى الارض الا على الله رزقها. وقال الله تعالىٰ فى مقام
اخر نحن قسمنا بينهم معيشتهم. وقال الله تعالىٰ فى مقام اخر وان من
شىء الا عندنا خزائنهٗ وما ننزلهٗ الا بقدر معلوم. سبحان ربك رب العزه
عما يصفون وسلام على المرسلين. والحمد لله رب العالمين.

क़ुदरते इलाही के नज़ारे

इंसान अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तख़्लीक़ का बड़ा कारनामा है। ﴿لقد خلقنا الانسان فى احسن تقويم.﴾ के मिस्दाक़ इंसान सारी मख़्लूक़ से अशरफ़ है। ﴿ولقد كرمنا بنى آدم﴾ का हुक्म देकर परवरदिगार ने इसे फ़ज़ीलत बख़्शी। उसके लिए ज़मीन व आसमान के बीच महल सजा दिया। ज़मीन के बारे में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿والارض فرشنها فنعم الماهدون.﴾ ज़मीन को अल्लाह तआला ने फ़र्श की तरह बना दिया। आसमान के बारे में फ़रमाया ﴿وجعلنا السمآء سقفا محفوظا﴾ और हमने आसमान को महफ़ूज़ छत बना दिया फिर इस छत को अल्लाह तआला ने अपने बंदों को ख़ूबसूरत नज़र आने के लिए सजा दिया। इर्शाद फ़रमाया ﴿ولقد زينا السمآء الدنيا

﴿بمصابيح وجعلنها رجوما للشيطين﴾ अल्लाह तआला ने सितारों की शमाएं आसमान के ऊपर रोशन कर दीं। अल्लाह तआला ने अपनी कामिल क़ुदरत से आसमान को कैसा बनाया ﴿بغير عمد ترونها﴾ तुम देखते नहीं हो कि बग़ैर सतूनों के आसमान खड़ा है। तुम उसकी तरफ़ ग़ौर से देखो ﴿هل ترى من فطور﴾ क्या तुम्हें उसमें कोई कमी नज़र आती है? ﴿ثم ارجع البصر كرتين ينقلب اليك البصر خاسئا وهو حسير﴾ फ़रमाया, देखने वाले! तू दूसरी दफ़ा फिर उसे देख, तेरी निगाह नाकाम वापस लौटेगी और तुम्हें परवरदिगार के इस आसमान की बनावट में कोई कमी कोताही नज़र नहीं आएगी। ज़मीन का फ़र्श बनाया तो इंसान की ज़रूरतों के लिए इसमें फल-फूल, मेवे और खेती पैदा फ़रमा दी

افلم ينظروا الى السماء فوقهم كيف بنينها وزينها وما لها
من فروج. والارض مددنها والقينا فيها رواسى وانبتنا
فيها من كل زوج بهيج. تبصرة وذكرى لكل عبد منيب.

इसमें उस बंदे के लिए इबरत की बातें हैं जिसके अंदर रुजू होता है, जिसके अंदर इनाबत होती है। फिर परवरदिगार आलम ने इंसान की ज़रूरत के लिए सूरज, चाँद और सितारों का निज़ाम बना दिया :

﴿والشمس تجرى لمستقر لها ذلك تقدير العزيز العليم.﴾

यह सूरज अपनी मंज़िल की तरफ़ रवां-दवां है। क़ुदरत ने जो काम उनके ज़िम्मे लगा दिए हैं वे अच्छे तरीक़े से अंजाम दे रहे हैं। ﴿لا الشمس ينبغى لها ان تدرك القمر﴾ सूरज को ज़ेब नहीं दे सकता कि वह पकड़ सके चाँद को ﴿ولا اليل سابق النهار﴾ और रात भी दिन

से पहले नहीं आ सकती ﴿وكل فى فلك يسبحون﴾ यह सूरज, चाँद और सितारे अपने अपने दायरों में तस्बीह बयान कर रहे हैं। गोया परवरदिगार आलम ने एक निज़ाम बनाया और फिर इंसान से कहा कि ऐ इंसान! तू ज़रा आँख खोलकर मेरे इस निज़ाम को तो देख। अल्लाह तआला ने इंसान को मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से अपनी तरफ़ मुतवज्जेह किया है। कहीं 'अलम तरा' इर्शाद फ़रमाया तो कहीं 'अलम तरव' के साथ बंदों को मुतवज्जेह किया गया। सूरः ग़ाशिया में इर्शाद बारी तआला है:

افلا ينظرون الى الابل كيف خلقتo والى السمآء كيف رفعتo والى الجبال كيف نصبتo والى الارض كيف سطحتo

क्यों नहीं देखते? क्या हक़्क़ानियत की दलील नहीं है और कभी अपनी तरफ़ मुतवज्जेह करने के लिए फ़रमाया :

﴿الم نجعل لهٗ عينين ولسانا وشفتين وهدينٰه النجدين.﴾

क्या हमने उसके लिए दो आँखें नहीं बनायीं, ज़बान नहीं दी, दो होंट नहीं बनाए और कहीं :

﴿الم نجعل الارض مهٰداo والجبال اوتاداo وخلقنكم ازواجاo﴾

गोया अल्लाह तआला इंसान को आँखें खोलकर क़ुदरत के नज़ारों पर नज़र डालने की दावत दे रहे हैं कि आँख खोल और ज़रा देख मेरे इस कारनामे को। इसमें ग़ौर कर, तुझे मेरी क़ुदरत का पता चलेगा, तुझ पर मेरे कमालात खुलेंगे कि मैं कामिल क़ुदरत वाला क्या-क्या कर सकता हूँ।

इंसान के बनाने का मक़सद

अल्लाह तआला अपने बंदों को इन अल्फ़ाज़ के साथ अपनी

तरफ़ मुतवज्जेह करते हैं कि क्या हमने तेरे लिए यह नहीं बनाया, यह नहीं बनाया ताकि इंसान इन चीज़ों को देखे, ग़ौर करे और अपने हक़ीक़ी परवरदिगार की नेमतों का शुक्र अदा करे। इन तमाम चीज़ों को बनाकर फिर इंसान को बताया गया कि :

﴿ان الدنيا خلق لكم وانا كم خلقتم للآخرة﴾

यह सारी की सारी दुनिया तुम्हारे लिए बनाई गई है मगर तुम्हें हमने आख़िरत के लिए बनाया है।

दुनिया में हूँ दुनिया का तलबगार नहीं हूँ
बाज़ार से गुज़रा हूँ ख़रीदार नहीं हूँ

मोमिन दुनिया में तो होता है मगर दुनिया का तलबगार नहीं होता। यह दुनिया के लिए नहीं बल्कि दुनिया इसके लिए बनाई गई है।

खेतियाँ सरसब्ज़ हैं तेरी ग़िज़ा के वास्ते
चाँद सूरज और सितारे हैं ज़िया के वास्ते
बहरो बर शम्सो क़मर मा ओ शुमा के वास्ते
यह जहाँ तेरे लिए है तू ख़ुदा के वास्ते

यह सब कुछ परवरदिगार ने हमारे लिए बनाया और हमें उसने अपनी इबादत के लिए पैदा किया है। लिहाज़ा इर्शाद बारी तआला है :

﴿وما خلقت الجن والانس الا ليعبدون.﴾

और जिन्नों और इंसानों को हमने अपनी इबादत के वास्ते पैदा किया है।

गोया हमारा मक़सदे ज़िंदगी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की बंदगी है।

बंदगी किसे कहते हैं?

बंदगी किसे कहते हैं? बंदगी यह है कि इंसान अपने आक़ा के हुक्म के मुताबिक़ अपनी ज़िंदगी गुज़ार रहा हो और अपनी मर्ज़ी को मौला की मर्ज़ी में गुम कर चुका हो।

एक मिसाल से वज़ाहत

आपने देखा होगा कि जब बक़र-ईद होती है तो कुछ लोग कई-कई माह पहले दुंबा या बकरा लेकर पालते हैं। वे उसे ख़ूब खिलाते पिलाते हैं और सजाते हैं। वह दुंबा या बकरा उनसे काफ़ी घुलमिल जाता है। यहाँ तक कि जब कभी वह शाम को अपने दुंबे को लेकर घर से निकलते हैं तो वे उस जानवर की रस्सी नहीं पकड़ते बल्कि जब मालिक चलता है तो वह भी साथ चलता है और जब मालिक रुकता है तो वह भी साथ ही रुक जाता है। ऐसे जानवर को पंजाबी में 'राखावां लैलाया दुंबा' कहते हैं। जिस तरह वह जानवर अपने मालिक के नक़्शे क़दम पर चल रहा होता है उसी तरह उम्मती को भी अपने पैग़म्बर अलैहिस्सलाम के नक़्शे क़दम पर चलना ज़रूरी होता है। बिल्कुल क़दम-ब-क़दम ज़िंदगी गुज़ारनी चाहिए। खाना-पीना, सोना-जागना गर्ज़ हर काम नबी अलैहिस्सलाम के तरीक़े के मुताबिक़ करने से इंसान में कमाल पैदा होता है।

जागने के आलम में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत के नुस्ख़े

आज दुनिया कहती है कि जी ऐसा वज़ीफ़ा बताओ जिससे

ख़्वाब में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत नसीब हो जाए। मेरे मोहसिन! मेरे दोस्त! मैं तुझे वह वज़ीफ़ा न बताऊँ कि तो जागने की हालत में नबी अकरम सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत किया करे?

मशाइख़ फ़रमाते हैं कि जो इंसान अपने चलने में, अपनी बोलने में, अपनी आदत में, रात व दिन में, रहन-सहन में यहाँ तक कि हर काम-काज में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नक़्शे क़दम पर चलने में कमाल पैदा कर लेता है अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उसे जीते जागते अपने महबूब की ज़ियारत करवा दिया करते हैं। सोते में देखते हो, जागते में क्यों नहीं देख़ते?

ख़ुदा तलबी बिला तलबी

इसके लिए मगर कुछ करना पड़ता है। अपने आपको बदलना पड़ता है। और हम क्या कहते हैं कि बदले बग़ैर सब कुछ मिल जाए, हम जो हैं सो हैं, अल्लाह तआला ने देना है तो ख़ुद दे दे। यह लापरवाही अल्लाह तआला की नेमतों की नाशुक्री शुमार होती है। बेतलबी और ख़ुदा तलबी दो अलग चीज़ें हैं। तबियत में बेतलबी हो और ज़बान से बंदा ख़ुदा तलब हो यह कैसे हो सकता है? ख़ुदा तलबी के लिए सरापा तलबगार बनना पड़ता है।

एक रुपए के सवाली की हालत

जिस बंदे ने आपसे एक रुपए का सवाल करना हो कभी उसकी शक्ल को देखा करें। उसने हाथ फैलाया हुआ होता है, मिस्कीन चेहरा बनाया हुआ होता है, अजीब व ग़रीब आजिज़ाना

अंदाज़ में खड़ा होता है, आवाज़ से भी बड़ी नरमी ज़ाहिर होती है, आजिज़ी ज़ाहिर होती है। ऐसे बोल बोलता है कि दिल आ जाए। आँखें देखो तो सवाली, हाथ देखो तो सवाली यहाँ तक पूरा जिस्म सवाली बनकर खड़ा होता है और वह आप से एक रुपए का सवाल कर रहा होता है।

दुआ करते वक़्त हमारी हालत

ऐ इंसान! तो परवरदिगार से ख़ुद परवरदिगार के ताल्लुक़ का सवाल करता है और तेरी कैफ़ियत के अंदर कोई फ़र्क़ नहीं आता, भला तेरा यह सवाल कैसे पूरा किया जाएगा। रुपया मांगने वाला तो यूँ आजिज़ बनकर मांगे जबकि हम दुआ मांगते हुए कुछ और सोच रहे होते हैं। दोस्त यह भी बताते हैं कि दुआ पढ़ रहे होते हैं। एक होता है दुआ करना और एक होता है दुआ पढ़ना। दोनों में फ़र्क़ है। आजकल हम दुआएं पढ़ते हैं ﴿ربنا اتنا فی الدنیا، ربنا ظلمنا انفسنا﴾ यह दुआएं पढ़ रहे होते हैं। जब तक दुआएं पढ़ते रहेंगे नतीजा ज़ाहिर नहीं होगा। जब दुआएं करना शुरू करेंगे तब उनके नतीजे भी सामने आना शुरू हो जाएंगे।

दुआ करने का तरीक़ा

दुआ करना क्या होता है? दुआ करते वक़्त इंसान सर के बालों से लेकर पाँव के नाख़ुनों तक सरापा सवाल बना होता है। फिर उसके जिस्म पर एक कैफ़ियत तारी होती है जिसे गिड़गिड़ाना कहते हैं, रोना कहते हैं। इस कैफ़ियत में रोंगटे खड़े हो जाते हैं। फिर अल्लाह तआला की अज़मत को सोचता है कि मैं कोई

हैसियत नहीं रखता और फिर जब परवरदिगार के सामने वह दामन फैलाता है तो परवरदिगार उसके दामने मुराद को गौहर मुराद से भर दिया करते हैं।

दुआएं लेने के तरीक़े

आजकल के नौजवानों को दुआएं करवाने का शौक़ रहता है, दुआएं लेने का शौक़ नहीं है। दुआ करवाना और चीज़ है और दुआ लेना और चीज़ है। दुआएं करवाना तो यह हुआ कि हज़रत जी! दुआ कीजिए, अब्बू! दुआ कीजिए, अम्मी! दुआ कीजिए। और एक दुआ लेना होता है। वह इस तरह कि सालिक वज़ाइफ़ व अवराद में और सुन्नत की इत्तिबा में इतनी पाबंदी करे कि शेख़ की नज़र पड़े तो उसका दिल बाग़-बाग़ हो जाए और शेख़ के दिल से बेइख़्तियार दुआएं निकलना शुरू हो जाएं। इसी तरह बेटा इतना फ़रमांबरदार बने कि बाप की उसके चेहरे पर नज़र पड़े तो बाप के दिल से बेटे के लिए दुआए निकल रही हों। बेटा माँ की इतनी ख़िदमत करे कि माँ बेटे की तरफ़ नज़र उठाए तो माँ की ज़बान से दुआएं निकलती चली जाएं। अल्लाह तआला हमें दुआएं लेने वालों में से बना दे। काम तभी बनता है जब इंसान किसी की दुआएं लेता है।

नौजवानों के दिल में माँ-बाप की हैसियत

आजकल नौजवान माँ की कोई हैसियत नहीं समझते। माँ को तो समझते हैं कि बस अल्लाह मियाँ की गाय हैं जो घर में पल रही है। कहते हैं कि यह तो मुफ़्त की ख़ादिमा मिली हुई है, मैं

राज़ी हूँ या नाराज़ इसने तो मेरी ख़िदमत करनी है, यह मेरी मुहब्बत की मारी हुई है, मैं जो मर्ज़ी कहूँगा उसने तो सुनना ही है और बाप के बारे में यह हाल होता है कि ज़रा अठ्ठारह बीस साल की उम्र हुई तो बाप से यूँ नफ़रत करता है जैसे कोई पाप से नफ़रत किया करता है। उससे पूछा जाए कि तुम्हारे हाथ में कोई लाठी दे दी जाए तो सबसे पहले किसके सर पर मारेगा तो कहेगा कि बाप के सर पर। नौजवानो! जब तुम्हारा यह हाल है तो फिर बताओ कि कैसे कामयाबी पाओगे?

औलाद के नमाज़ी बनने के लिए दुआएं

ग़ौर कीजिए कि आज अगर एक छः साल का बच्चा नमाज़ पढ़ना सीख लेता है तो वह अत्तहियात के आख़िर में क्या पढ़ रहा होता है ﴿ربی اجعلنی مقیم الصلوۃ ومن ذریتی﴾ ऐ अल्लाह! मुझे और मेरी औलाद को नमाज़ का पाबंद बना दे। इस छः साल के बच्चे को औलाद तो नहीं होती मगर वह छः साल की उम्र से मांग रहा होता है। क्यों? इसलिए कि अल्लाह तआला के इल्म में है कि जब यह बच्चा बड़ा होगा तो उसकी शादी होगी। अब इस बच्चे की कैफ़ियत तो सोचिए जिसने छः साल की उम्र में अपनी औलाद के नमाज़ी बनने की दुआएं मांगी और जब उसके बाल सफ़ेद हो गए अपने बच्चे जवान हो गए तो वह उनको नमाज़ के लिए कहता है मगर यह सीधे मुँह बाप से बात नहीं करते। क़ुर्बे क़यामत की निशानी है कि इंसान अपने दोस्त को अपना समझेगा और माँ-बाप के साथ नफ़रत करेगा।

माँ-बाप को मिलने की फ़ज़ीलत

माँ-बाप को अल्लाह तआला ने क्या मुक़ाम अता फ़रमाया है, सुब्हानअल्लाह। कोई आदमी अगर अपने घर से यह नियत लेकर चले कि मैं माँ-बाप से जाकर मिलूंगा तो हर क़दम उठाने पर अल्लाह तआला उसको एक नेकी अता फ़रमाते हैं, एक गुनाह माफ़ करते हैं और जन्नत में उसका एक दर्जा बुलंद फ़रमा देते हैं। माँ या बाप के चेहरे पर मुहब्बत और अक़ीक़दत की एक नज़र डालने पर इस आदमी को एक हज या एक उमरे का सवाब अता कर दिया जाता है। सहाबा किराम ने पूछा, ऐ अल्लाह के नबी! जो बार-बार देखे? नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जितनी बार देखेगा उतनी बार हज या उमरे का सवाब उसके आमालनामे में लिखा जाएगा।

माँ-बाप की दुआओं का मुक़ाम

माँ-बाप की दुआओं को क्या समझते हो? याद रखना कि यह माँ ही है कि जब कभी हाथ उठा दिया करती है तो उसकी दुआ सीधी अर्श पर जाया करती है। आसमान के दरवाज़े खुलते चले जाते हैं। अल्लाह तआला और उस दुआ के बीच कोई पर्दा नहीं रहता और दुआ को परवरदिगार के हुज़ूर पहुँचा दिया जाता है।

ज़रा संभलकर क़दम उठाना

एक बुज़ुर्ग की माँ फ़ौत हो गयीं। अल्लाह तआला ने इल्हाम फ़रमाया, ऐ मेरे प्यारे! जिसकी दुआ तेरी हिफ़ाज़त किया करती थीं वह हस्ती इस दुनिया से उठ गई है, अब ज़रा संभलकर क़दम उठाना।

अनोखी तमन्ना

न दुआएं लीं पीर, उस्ताद की और न दुआएं लीं माँ-बाप की और तमन्ना क्या है कि अल्लाह मिल जाए। तुझे अल्लाह तो नहीं मिलेगा अलबत्ता 'खल्ला' मिलेगा। पंजाबी ज़बान का लफ़्ज़ है, इसका मतलब पूछते फिरना कि खल्ला क्या होता है।

रजब, शाबान और रमज़ान के फ़ज़ाईल

आज की रात दुआएं मांगने की रात है। तीन महीने रजब, शाबान और रमज़ान आगे पीछे आते हैं। हदीस मुबारक में इन तीनों महीनों की फ़ज़ीलत बताई गई है। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया रजब को साल के बाक़ी महीनों पर ऐसी फ़ज़ीलत हासिल है जैसे क़ुरआन मजीद को बाक़ी किताबों पर फ़ज़ीलत हासिल है और इर्शाद फ़रमाया कि शाबान को बाक़ी महीनों पर वह फ़ज़ीलत हासिल है जैसी मैं मुहम्मद रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बाक़ी अंबिया अलैहिमुस्सलाम पर फ़ज़ीलत हासिल है और फ़रमाया कि रमज़ान को बाक़ी महीनों पर वह फ़ज़ीलत हासिल है जैसी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को अपनी मख़्लूक़ात पर फ़ज़ीलत हासिल है।

लफ़्ज़े शाबान की तश्रीह

बाज़ उलमा ने लिखा है कि शाबान का लफ़्ज़ 'शाबा' से निकला है। यह लफ़्ज़ उर्दू में भी इस्तेमाल होता है। काम के किसी हिस्से को शोबा कहते हैं। शाबान का लफ़्ज़ बना ही इसलिए है कि इस महीने में अल्लाह तआला की रहमत और

फ़ज़ल का ख़ास शोबा जात काम करना शुरू करना शुरू कर देते हैं। मिसाल के तौर पर जब मुल्क के अंदर इलैक्शन होने लगते हैं तो कई शोबे काम करने लगते हैं जो आम हालात में काम नहीं कर रहे होते हैं या थोड़ा काम कर रहे होते हैं। मगर उन दिनों उनका काम बढ़ा दिया जाता है। इसी तरह अल्लाह तआला की रहमत और फ़ज़ल का काम तो हर वक़्त हो रहा है मगर रजब, शाबान और रमज़ान में इन शोबों का काम फैला दिया जाता है।

हर्फ़ के एतिबार से शाबान की फ़ज़ीलत

बाज़ मशाइख़ ने फ़रमाया कि इस महीने को इसलिए शाबान कहते हैं कि इसके पाँच हर्फ़ हैं। 'शीन', 'ऐन', 'बा', 'अलिफ़', 'नून'। इन हर्फ़ों की फ़ज़ीलत अपनी जगह पर है। 'श' शराफ़त से लिया गया है, 'ऐन' उलू मर्तबत से लिया गया है, 'बा' बिर (नेकी) से लिया गया है, 'अलिफ़' उलफ़त से लिया गया है यानी अल्लाह तआला की मुहब्बत और 'नून' नूर से लिया गया है। इन पाँच लफ़्ज़ों के पहले हर्फ़ों को मिलाकर यह लफ़्ज़ बना दिया गया है ताकि बंदों को पता चल जाए कि अगर हम इस महीने में इबादत करेंगे तो परवरदिगार की तरफ़ से पाँच नेमतें अता कर दी जाएंगी।

रिज़्क़ के फ़ैसलों की रात

बाज़ रिवायतों में आया है कि 15 शाबान की रात रिज़्क़ के फ़ैसलों की रात है। रिज़्क में बीवी, बच्चे, सेहत, इज़्ज़त, माल व दौलत, कपड़ा, मकान हर चीज़ शामिल है। गोया आज हमारी

जितनी परेशानियाँ हैं वे सारी की सारी आमतौर से रिज़्क से ही जुड़ी होती हैं। आइंदा साल के फ़ैसलों की रात आज है। फ़हरिस्तें आज रात ही बनती हैं और ये रमज़ान में लैलातुल क़द्र में फ़रिश्तों के हवाले कर दी जाती हैं। जैसे डिपार्टमैंट के अंदर फ़हरिस्ते बनती हैं और फिर टैक्निशियन के हवाले कर दी जाती हैं कि उस पर अमल कर लिया जाए।

पंद्रह शाबान का रोज़ा

इसलिए नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि इस रात में आदमी के आइंदा साल ज़िंदा रहने या मरने के फ़ैसले होते हैं और मैं चाहता हूँ कि जब वह फ़ैसला हो तो मैं उस वक़्त रोज़े के साथ हूँ। अय्यामे बीज़ (महीने के बीच के तीन दिनों) के तो वैसे भी रोज़े रखने चाहिएं। पंद्रह शाबान का रोज़ा रखना मुस्तहब है।

सब ख़ज़ानों का मालिक कौन?

इर्शाद बारी तआला है ﴿ومامن دابة في الارض الا على الله رزقها﴾ कि ज़मीन में चलने फिरने वाली हर चीज़ का रिज़्क़ अल्लाह तआला के ज़िम्मे है। अलबत्ता तक़्सीम उसकी अपनी है। फ़रमाया ﴿نحن قسمنا بينهم معيشتهم﴾ हमने उनके दर्मियान रोज़ी को बांट दिया है ﴿وان من شيء﴾ जो कोई भी चीज़ है ﴿الا عندنا خزائنه﴾ उसके पास ख़ज़ाने हैं ﴿وما ننزله بقدر معلوم﴾ मगर हम एक मालून मिक़्दार के मुताबिक़ उसे उतारते हैं। ख़ुशी के ख़ज़ाने भी उसी के पास, ग़म के ख़ज़ाने भी उसी के पास, आराम के ख़ज़ाने भी उसी के पास,

बेआरामी के ख़ज़ाने भी उसी के पास, इज़्ज़त के ख़ज़ाने भी उसी के पास, ज़िल्लत के ख़ज़ाने भी उसी के पास, सेहत के ख़ज़ाने भी उसी के पास, बीमारी के ख़ज़ाने भी उसी के पास। जब सब ख़ज़ानों का मालिक वही है ﴿لہٗ مقالید السموات والارض﴾ उसी के हाथ में आसमान और ज़मीन के ख़ज़ानों की कुंजियाँ हैं तो क्यों न हम आज रात अपने लिए रहमतों के ख़ज़ानो की नेमतें मांग लें। हम क्यों न परवरदिगार से यह सवाल कर लें कि ऐ अल्लाह! हमारे लिए ख़ैर के फ़ैसले फ़रमा दे, हमारे लिए फ़ज़ल व करम के फ़ैसले फ़रमा दे।

अल्लाह के ज़िक्र से मुँह मोड़ने का वबाल

हमारी अपनी गड़बड़ियों और ग़फ़लतों की वजह से अल्लाह तआला रिज़्क़ को समेट लेते हैं। फ़रमाया ﴿ومن اعرض عن ذکری﴾ जिसने मेरी याद से, मेरे क़ुरआन से मुँह मोड़ा ﴿فان لہٗ معیشۃ ضنکا﴾ हमने उसकी रोज़ी को तंग कर दिया ﴿ونحشرہ یوم القیامۃ اعمٰی﴾ और क़यामत के दिन हम उसको अंधा खड़ा कर देंगे। यह दुनिया में हमारे हुक्मों से अंधा बना रहा। इसलिए हम इसको क़यामत के दिन अंधा करके खड़ा करेंगे।

परेशानियों की असल वजह

मेरे दोस्तो! हमारी परेशानियाँ हमारे अपने हाथों की कमाई हैं। इर्शाद बारी तआला है ﴿ما اصابکم من مصیبۃ فبما کسبت ایدکم﴾ जो मुसीबतें तुम्हें पहुँचती हैं वे तुम्हारे अपने हाथों की कमाई हैं। अगर हम अपनी ज़िंदगियों पर ग़ौर करें तो यह बात रोज़े रोशन

की तरह साफ़ हो जाएगी कि हम में से किसी की परेशानी माल की होगी। ऐसा बंदा चारों तरफ़ नज़र दौड़ा कर देखता है तो उसको यूँ महसूस होता है कि बस इतने पैसे मिल जाएं फिर मेरी परेशानियाँ ख़त्म हो जाएंगी। किसी के पास माल तो है मगर औलाद नहीं। वह समझता है कि अगर मुझे औलाद मिल जाए तो मेरी ज़िंदगी में बहार आ जाए। किसी के पास औलाद तो है मगर औलाद की सेहत ठीक नहीं। वह सोचता है कि मेरी यह बेटी ठीक हो जाए तो मेरे घर में सकून आ जाए। हक़ीक़त यह है कि यह हमारे गुनाहों का वबाल है। अगर हम गुनाह करना छोड़ दें तो अल्लाह तआला हमें ग़ैब के ख़ज़ानों से खिलाना शुरू कर दें।

औलिया अल्लाह कहाँ से खाते हैं

याद रखना अल्लाह तआला अपने औलिया को वहाँ से खिलाते हैं जहाँ से वह अपने अंबिया किराम को खिलाया करते थे। क्या अंबिया किराम इस दुनिया में नौकरियाँ करते थे? वे तो दीन का काम करते थे और परवरदिगार इस दीन के काम के सदक़े उनको दुनिया की नेमतें अता फ़रमा दिया करते थे। हम भी अगर दीन का काम करेंगे तो यह दुनिया क़दमों में निछावर होगी।

अच्छे आलिम की पहचान

अच्छा आलिम वह होता है जिसके दिल में इस्तिग़ना हो। उलमा और तलबा की ख़िदमत में गुज़ारिश है कि अल्लाह के ख़ज़ानों पर नज़र रखिए। किसी की जेब पर नज़र रखने की ज़रूरत नहीं। इन दुनियादार ग़ाफ़िलों को इस्तिग़ना की छुरी से

ज़िक्र कीजिए। इल्म का वक़ार पैदा कर लीजिए। फिर देखिए कि कैसी इज़्ज़तें मिलती हैं। हर बंदे को अल्लाह तआला ही रिज़्क़ पहुँचाते हैं और फिर रिज़्क़ में बरकत भी वही देते हैं।

बंद पत्थर में रोज़ी

हमारे एक एक एमबीबीएस डाक्टर थे। वह एक बार बीवी-बच्चों को साथ लेकर सवात के इलाक़े में सैर करने के लिए गए। वहाँ एक जगह पर गोल सा ख़ूबसूरत पत्थर पड़ा देखा। उन्हें अच्छा लगा। बीवी ने भी कहा कि इस का वही रंग है जो हमारे ड्राइंगरूम के पेंट का रंग है, हम इसलिए इसे ले जाते हैं, ड्राइंरूम में सजाएंगे। इन बेचारों को रंग मिलाने से फ़ुर्सत नहीं मिलती। मियाँ ने कहा बहुत अच्छा। वह उठा के उसको ले आए और ड्राइंगरूम में सजा दिया। दो साल वह पत्थर उनके घर में पड़ा रहा। एक दिन वह डाक्टर साहब उस पत्थर को उठाकर देखने लगे। अचानक वह पत्थर उसके हाथ से नीचे गिरकर टूट गया। उसके दो टुकड़े हो गए। उसने क्या देखा कि पत्थर के बीच एक ख़ाली जगह है और ख़ाली जगह के अंदर एक कीड़ा है। जब पत्थर टूटा तो कीड़े ने चलना शुरू कर दिया। अब बताएं कि बंद पत्थर में उस कीड़े को किस परवरदिगार ने रिज़्क़ अता किया।

एक इल्हामी बात

अता बिन रबाह रह० मशहूर ताबईन में से हैं। आपका शुमार इमाम अबू हनीफ़ा रह० के उस्तादों में होता है। आप ग़ुलाम थे मगर दिल के बादशाह थे। आप इल्हामी बातें इर्शाद फ़रमाया

करते थे। फ़रमाते हैं कि एक बार अल्लाह तआला ने मेरे दिल में बात डाली कि ऐ अता! मैं भी तुझे रिज़्क़ देकर रहूंगा यह कैसे मुमकिन है कि तू रो-रो कर मुझ से रिज़्क़ मांगे और फिर मैं तुझे रिज़्क़ अता न करूं।

रिज़्क़ से बरकत निकलने की वजह

मेरे दोस्तो! अल्लाह तआला तो हमें रिज़्क़ अता फ़रमा देते हैं मगर हम रिज़्क़ का इस्तेमाल ग़लत तरीक़े से करते हैं। जिसकी वजह से इस रिज़्क़ से बरकत निकल जाती है। जब बरकत उठ जाती है तो जितना कमाते चले जाएंगे ज़रूरतें उससे ज़्यादा होती चली जाएंगी। यहाँ तक कि इंसान करोड़ों की फ़ैक्टरियों का मालिक होकर भी रोता फिरता है कि मैं क़र्ज़े में दबा हुआ हूँ।

एक मैनेजर का रोना-धोना

मुझे एक मैनेजर साहब तक़रीबन बारह साल पहले मिलने के लिए आए उस वक़्त उनकी तंख़्वाह सत्तर हज़ार रुपए थी। उसे फ़ैक्टरी की तरफ़ से दो कारें, कोठी, गार्ड और मैडिकल फ़्री की सहूलतें मिली हुई थीं। उसके तीन बच्चे थे। उन्होंने आकर अपने हालात सुनाए और आँसुओं से रो पड़े। मैंने पूछा आप क्यों रो रहे हैं? कहने लगे, मैं किसके सामने दिल खोलूँ कि मेरे ख़र्चे पूरे नहीं होते। मैंने पूछा वह कैसे? उन्होंने बताया कि मैंने एक नई गाड़ी निकलवाई, चार दिन भी नहीं हुए थे कि एक्सीडेंट से वह गाड़ी बिल्कुल ख़त्म हो गई और अब तक मुझे सात लाख रुपए का नुक़सान हो चुका है। बेचारे हज़ारों कमाते हैं और लाखों गंवा

बैठते हैं। और इतना कमाकर भी रोते थे कि मेरे ख़र्चे पूरे नहीं होते। अल्लाह तआला रिज़्क़ तो देते हैं मगर हमारे करतूत रिज़्क़ की बरकत को ज़ाए कर देते हैं।

रिज़्क़ की इतनी बरकत

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में एक आदमी था। वह बड़ा ग़रीब था, बासी रोटी को भी तरसता था। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहने लगा, ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! आप कोहे तूर पर जाकर अल्लाह तआला से बात करते हैं। ज़रा इस बार मेरी फ़रियाद भी पहुँचा दीजिए कि ऐ अल्लाह! ज़िंदगी के जितने दिन भी बाक़ी हैं उन दिनों का मेरा जो रिज़्क़ बनता है वह एक ही दफ़ा मुझे दे दीजिए। मक़सद यह था कि मैं कुछ दिन तो पेट भरकर खा लूंगा। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कोहे तूर पर जाकर यह फ़रियाद पहुँचा दी। लिहाज़ा उस बंदे को उसकी पूरी ज़िंदगी का रिज़्क़ मिल गया। उसके बाद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपने काम में मशग़ूल हो गए।

दो चार साल गुज़रने के बाद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को अचानक ख़्याल आया कि पता नहीं कि वह बंदा ज़िंदा है या नहीं। लिहाज़ा जब जाकर पता किया तो देखा कि उस जगह पर महल बना हुआ है, दस्तख़्वान लगा हुआ है, ख़ुदा की मख़्लूक़ खा रही है और वह ख़ुद भी बैठकर ठाठ की ज़िंदगी गुज़ार रहा है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बड़े हैरान हुए कि या अल्लाह! इस आदमी को जो सारी ज़िंदगी का रिज़्क़ मिला था वह तो बहुत थोड़ा सा था। अब तो इसके वारे के नियारे हो चुके हैं। रब्बे

करीम ने फ़रमाया, ऐ मेरे प्यारे पैग़म्बर! अगर वह अपनी ज़ात पर इस्तेमाल करता तो उसका रिज़्क़ तो वही था जो हम ने उसे दे दिया था। उसने इस रिज़्क़ से नफ़ा देने वाली तिजारत की कि उसने फ़क़ीर व मिस्कीनों को खिलाना शुरू कर दिया और जो मेरे रास्ते में ख़र्च करता है मैं उसको कम से कम दस गुना वापस लौटा देता हूँ। इसको इस तिजारत में इतना नफ़ा हुआ कि वह आज मालदार बना हुआ है।

हज़रत मौलाना क़ासिम साहब नानौतवी रह० और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च

हज़रत मौलाना क़ासिम साहब नानौतवी रह० को माहाना तीन रुपए तंख़्वाह मिलती थी। दो रुपए से घर का ख़र्च पूरा करते थे और एक रुपया अल्लाह की राह में ख़र्च किया करते थे। उलमा व तलबा यह बात ज़रा दिल के कान खोलकर सुनें। आज हम सैंकड़ों की तंख़्वाह लेकर भी कोई पैसा ख़र्च नहीं करते और यह समझते हैं कि हमारी अपनी ज़रूरतें पूरी नहीं होतीं। इससे बेबरकती होती है। अगर हम अल्लाह के वायदों पर भरोसा करते हुए ख़र्च करेंगे तो अल्लाह तआला उसको सत्तर गुना ज़्यादा बनाकर हमें वापस लौटा देंगे।

ख़्वाजा अब्दुल मालिक सिद्दीक़ी और अल्लाह की राह में ख़र्च

ख़्वाजा अब्दुल मालिक सिद्दीक़ी रह० का यह हाल था कि जब कभी ख़र्च करते करते पैसे कम हो जाते तो जो रह जाते उनको

भी जल्दी से सदक़ा कर देते थे और फ़रमाते थे कि जब जेब ख़ाली हो जाएगी तो अल्लाह तआला ख़ुद जेब को भर देते हैं और हमारी हालत यह है कि जो बच जाए उसको हम संभालकर रखते हैं। क्यों? इसलिए कि दिल पैसों से लगा हुआ है।

दुनियादारों के लिए चैलेंज

मैंने एक बार कराची में तक़रीर की। मैमन हज़रात का मजमा था। मैंने कहा कि आप तो ताजिर लोग हैं, दुनिया को देखने वाले हैं। ज़रा बताइए आपने कभी किसी आलिम बाअमल को या हाफ़िज़ को भूख और प्यास से ऐड़ियाँ रगड़ते हुए मरते देखा है? कोई मिसाल सुनी हो तो बता दीजिए। पूरा मजमा ख़ामोश था। किसी के पास कोई मिसाल नहीं थी। मैंने कहा मैं एम०ए०, एम०एस०सी० की तो बात नहीं करता मैं एक पी०एच०डी० डाक्टर की मिसाल देता हूँ। एक पी०एच०डी० डाक्टर ने अपनी उम्र में एक ऐसा वक़्त देखा कि जहाँ उसको ऐड़ियाँ रगड़ते-रगड़ते मौत आ गई। उसको रोटी देने वाला और उसकी ख़ैर-ख़बर लेने वाला कोई नहीं था। तो फिर बताओ कि रिज़्क़ किस रास्ते से मिलता है? दीन के रास्ते से या दुनिया के रास्ते से।

औलाद की तर्बियत की पहली ईंट

आज हम अपनी औलाद को भाग-भाग कर अंग्रेज़ी पढ़ाते हैं। पढ़ाइए अंग्रेज़ी मगर इससे पहले बच्चे को मुसलमान तो बना लीजिए। इस्लाम तो पढ़ाइए। यह क्या बात है कि बच्चा पैदा हुआ और वह ज़बान खोलने के क़रीब हुआ तो माँ ने पढ़ाना शुरू

कर दिया–

Twinkle twinkle littile star

How I wonder what you are

सहाबा किराम अपने बच्चों को कलिमा पढ़ाया करते थे। क़ुरआन की आयतें याद कराते थे, अल्लाह का नाम याद कराते थे। आज माँए इस बच्चे को शुरू में डैडी और मम्मा का नाम सिखाती हैं। जब पहली ईंट ही टेढ़ी रख दी तो दीवार जितनी ऊँची जाएगी उतना ही उसका टेढ़ापन बढ़ता चला जाएगा। इसलिए बच्चों को सबसे पहले दीन पढ़ाइए। जब दीनदार बनकर पूरब से पश्चिम तक जाएंगे तो अल्लाह तआला उनको उनका रिज़्क़ पहुँचा देंगे।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० की फ़क़ीराना ज़िंदगी

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० वक़्त के ख़लीफ़ा थे। एक बार आप अपने कमरे में बैठे हुए थे। आपने बेटी को आवाज़ दी कि बेटी! मेरे लिए पानी का प्याला लाओ। काफ़ी देर गुज़र गई मगर बेटी न आई। आपने फिर सख़्ती से बुलाया। बीवी ने आकर पूछा, क्या हुआ? फ़रमाया कि मैंने बेटी से कहा कि पानी का प्याला ला, इतनी देर हो गई है वह अभी तक पानी का प्याला लेकर नहीं आई। कितनी नाफ़रमान बनती चली जा रही है। बीवी फ़ातिमा रह० ने कहा, आपकी बेटी नाफ़रमान नहीं है, उसने जो कपड़ा पहना हुआ था (शलवार का) वह फट गया था।

वह दूसरे कमरे में उस शलवार को उतारकर बैठी सी रही है, उसको सिए बग़ैर वह कैसे आ सकती थी। वक़्त का ख़लीफ़ा हो और उसकी बेटी के पास पहनने के लिए सिर्फ़ एक लिबास हो, यह उन हुक्मरानों के अमीन होने की दलील है। इसमें शक नहीं है कि वह ख़ज़ानों की कुंजियो के मालिक थे मगर उनका ग़लत इस्तेमाल नहीं किया करते थे। शाही मिलने के बावजूद उन्होंने फ़क़ीराना ज़िंदगी अपनाई हुई थी।

बेटे गर्वनर बन गए

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० के ग्यारह बेटे थे। आप जब वफ़ात पाने लगे तो एक आदमी आपके पास आया और उसने कहा, उमर बिन अब्दुल अज़ीज़! आपने अपने बच्चों के साथ इंसाफ़ नहीं किया। आपने कहा, वह कैसे? उसने कहा, आपसे पहले जो लोग हुक्मरान थे उन्होंने तो अपनी औलादों के लिए इतनी जाएदादें बना लीं, इतने लाख दिरहम व दीनार छोड़े ओर आपने अपनी औलाद के लिए कुछ भी न किया। यह सुनकर आपको उस वक़्त ग़ुस्सा आया और चेहरे पर सुर्ख़ी ज़ाहिर हुई। आपने फ़रमाया, मुझे ज़रा उठाकर बिठा दो। लिहाज़ा आपको टेक लगाकर बिठा दिया गया। आपने फ़रमाया अगर मैंने अपनी औलाद को नेकी सिखाई है तो मेरे परवरदिगार का वायदा है ﴿وهو يتولى الصالحين﴾ कि नेक लोगों का वली ख़ुद परवरदिगार होता है। मैं अपने बेटों को अल्लाह तआला की सरपरस्ती में छोड़कर जा रहा हूँ। और अगर ये नेक नहीं हैं तो मुझे भी परवाह नहीं कि उनके साथ दुनिया में क्या होता है।

आप तो वफ़ात पा गए मगर इमाम शाफ़ई रह० या इस तरह के कोई दूसरे बुज़ुर्ग हस्ती थी, वह फ़रमाते हैं कि मैंने देखा कि पहले वाले हुक्मरान जिन्होंने अपनी औलादों के लिए लाखों दिरहम व दीनार छोड़े उनकी औलाद को देखा कि कि वह जामा मस्जिद के दरवाज़े पर भीख मांग रही थी और मैंने उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० के बेटों को देखा कि उनके ग्यारह बेटे अलग-अलग इलाक़ों के गर्वनर बने हुए थे क्योंकि लोगों को उनसे बेहतर बंदा कोई मिलता न था।

एक इबरतनाक वाक़िआ

इसी शहर (झंग) में एक आदमी था जिसके पास बहुत माल पैसा था। उसकी बड़ी ज़मीनें थीं। यहाँ तक कि एक से ज़्यादा रेलवे स्टेशन उसकी ज़मीन में लगते रहे और वह करोड़ों का मालिक था। वह कहा करता था कि मेरे पास इतनी दौलत है कि मेरी सात नस्लों से भी ख़त्म नहीं होगी।

उसकी वफ़ात के बाद उसका इकलौता बेटा उसकी जायदाद का वारिस बना। जवानी की उम्र थी और माल की ज़्यादती थी। लिहाज़ा जवानी वाले कामों में पड़ गया। रोज़ के नए मेहमान आना शुरू हो गए। पैसा पानी की तरह बहने लगा। इस मुहिम में उसने मुल्क के बहुत से शहरों के सफ़र किए। जब यहाँ से दिल भर गया तो दोस्तों ने मश्वरा दिया कि मुल्क से बाहर चलते हैं। लिहाज़ा बाहर मुल्क का सफ़र किया। ऐश व आराम और लज़्ज़तों की ख़ातिर ज़मीनें बिक गयीं, सारे पैसे ख़र्च हो गए यहाँ तक कि जिस मकान में रहता था वह मकान भी बिक गया। जिस आदमी

ने यह वाक़िआ मुझे बयान किया उसने इस फ़ज़ूल ख़र्ची करने वाले को इस शहर के चौक में खड़े होकर भीख मांगते हुए देखा।

मेहमान का रिज़्क़

इसी शहर में एक हकीम अंसारी साहब रहते थे। वह वफ़ात पा चुके हैं। हम स्कूल जाया करते थे तो रास्ते में उनकी दुकान आती थी। उस वक़्त उनके बाल सफ़ेद थे। उनका ताल्लुक़ भी मिस्कीनपूर शरीफ़ में सिलसिला नक़्शबंदिया से ही था। जब हमारा भी इस सिलसिले के साथ ग़ुलामी का ताल्लुक़ हुआ तो हम भी उनसे दुआएं लेने के लिए अक़ीदत व एहतिराम के साथ उनके पास जाते थे।

उन्होंने एक वाक़िआ सुनाया और फ़रमाया कि मैं इस वाक़िए का आँखों देखा गवाह हूँ। वाक़िआ यूँ है कि इस शहर से कुछ फ़ासले पर एक गाँव में एक साहब की अपनी बीवी के साथ कुछ अनबन हो गई। अभी झगड़ा ख़त्म नहीं हुआ था कि इस बीच में उनका एक मेहमान आ गया। शौहर ने उसे बैठक में बिठा दिया और बीवी से कहा कि फ़लां रिश्तेदार मेहमान आया है। उसके लिए खाना बनाओ। वह ग़ुस्से में थी, कहने लगी न तुम्हारे लिए खाना है और न तुम्हारे मेहमान के लिए। वह बड़ा परेशान हुए कि लड़ाई तो हमारी अपनी है अगर रिश्तेदार को पता चल गया तो बिला वजह की बातें होंगी। लिहाज़ा ख़ामोशी से आकर मेहमान के पास बैठ गया।

इतने में उसे ख़्याल आया कि चलो अगर बीवी रोटी नहीं बनाती तो सामने वाले हमारे पड़ोसी बहुत अच्छे हैं, ख़ानदान वाली

बात है, मैं इन्हें एक मेहमान के खाना पकाने के लिए कह देता हूँ। लिहाज़ा वह उनके पास गया और कहने लगा कि मेरी बीवी की तबियत ख़राब है (अब कैसे कहता कि नियत ख़राब है)। लिहाज़ा आप हमारे मेहमान के लिए खाना बना दीजिए। उन्होंने कहा, बहुत अच्छा, जितने आदमियों का कहें खाना बना देते हैं। वह मुतमइन होकर मेहमान के पास आकर बैठ गया कि कम से कम मेहमान को खाना तो मिल जाएगा जिससे इज़्ज़त भी बच जाएगी।

थोड़ी देर के बाद मेहमान ने कहा कि ज़रा ठंडा पानी तो ला दीजिए। वह उठा और घड़े का ठंडा पानी लाया। अंदर गया तो देखा कि बीवी साहिबा ज़ार व क़तार रो रही थीं। वह बड़ा हैरान हुआ कि यह शेरनी और इसके आँसू। कहने लगा क्या बात है? उसने पहले से भी ज़्यादा रोना शुरू कर दिया। कहने लगी बस मुझे माफ़ कर दीजिए। वह भी समझ गया कि कोई वजह से ज़रूर बनी है। इस बेचारे ने दिल में सोचा होगा कि मेरे भी नसीब जाग गए हैं। कहने लगा कि बताओ तो सही कि क्यों रो रही हो? उसने कहा कि पहले आप मुझे माफ़ कर दें फिर मैं आपको बात सुनाऊँगी। ख़ैर उसने कह दिया कि जो लड़ाई झगड़ा हुआ है मैंने वह दिल से निकाल दिया है और आपको माफ़ कर दिया है। कहने लगी कि जब आपने आकर मेहमान के बारे में बताया और मैंने कह दिया कि न तुम्हारे लिए कुछ पकेगा और न ही मेहमान के लिए, चलो छुट्टी करो तो आप चले गए मगर मैंने दिल में सोचा कि लड़ाई तो मेरी और आपकी है और यह मेहमान रिश्तेदार है। हमें उसके सामने तो यह पोल नहीं खोलना चाहिए।

लिहाज़ा मैं उठी कि खाना बनाती हूँ। जब मैं बावर्चीख़ाने में गई तो मैंने देखा कि जिस बोरी में हमारा आटा पड़ा होता है। एक सफ़ेद दाढ़ी वाला आदमी उस बोरी में से कुछ आटा निकाल रहा है। मैं यह मंज़र देखकर सहम गई। वह मुझे कहने लगा, ऐ औरत! परेशान न हो, यह तुम्हारे मेहमान का हिस्सा था जो तुम्हारे आटे में शामिल था। अब क्योंकि यह पड़ौसी के घर में पकना है इसलिए मैं वही आटा लेने के लिए आया हू। जी हाँ मेहमान बाद में आता है जबकि अल्लाह तआला उसका रिज़्क़ पहले भेज देते हैं।

नेक दिल औरत की सख़ावत

हमारे इस ज़िले में फ़ैसलाबाद रोड पर एक गाँव में एक नेक औरत रहती थी। वह बहुत ज़्यादा सख़ावत वाली थी। वह इतनी नेक दिल, इतनी मेहमान नवाज़ और इस क़दर ग़रीबों पर ख़र्च करने वाली थी कि लोग उसे हातिम ताई की बेटी कहते थे। वह गाँव सड़क के क़रीब ही था। पहले तो कोई मुस्तक़िल बस स्टाप न था मगर देहाती लोगों की आने-जाने की वजह से आहिस्ता आहिस्ता सड़क के ऊपर बस स्टाप बन गया। अंदर के इलाक़ों के देहाती लोग पाँच, दस मील चलकर वहाँ आते कि हम ख़रीद व फ़रोख़्त के लिए बस पर बैठकर शहर को जाएंगे। कभी-कभी ऐसा होता है कि बस का वक़्त ख़त्म हो जाता तो उन बेचारों के पास वहाँ रहने के लिए कोई इंतिज़ाम नहीं होता था। वे इसी हाल में बैठकर रात गुज़ारते। भूखे प्यासे रहते। अगर औरतें साथ होतीं तो और ज़्यादा परेशानी होती। उस औरत ने महसूस किया कि यहाँ

तो उनके लिए कोई बंदोबस्त होना चाहिए। लिहाज़ा उसने अपने शौहर से कहा कि क्यों न हम लोगों की सहूलत के लिए एक मेहमानख़ाना बनवा दें ताकि वे लोग जो रात को आगे या पीछे नहीं जा सकते वह आसानी से रात गुज़ार सकें और वे अगले दिन अपने काम के लिए रवाना हो जाया करेंगे।

शौहर को यह बात पसंद आई। उसने मेहमानख़ाना बनवाया और एक आदमी रखकर उनके लिए खाना पकाने का बंदोबस्त कर दिया। अब लोग आने-जाने लगे। और जो रात के वक़्त आगे पीछे नहीं जा सकते थे वे रात को वहीं से खाना खाते और रात को आराम से सो जाते। फिर रात गुज़ारकर अपने काम के लिए चले जाते। उनमें से कुछ लोग शैतान की वजह से ख़ैरख़्वाह भी बन जाते हैं। लिहाज़ा एक 'ख़ैरख़्वाह' ने शौहर का मशवरा दिया कि आपकी बीवी तो आपको कंगाल कर देगी। रोज़ाना इतना-इतना पकता है और फ़ालतू लोग आकर खा जाते हैं, ऐसी सख़ावत का क्या फ़ायदा।

जब दोस्तों ने ख़ाविंद को बार-बार मशवरा दिया तो ख़ाविंद के दिल में भी यह बात आ गई कि भई! यह तो वाक़ई लोगों ने तमाशा बना लिया है। लिहाज़ा उसने एक दिन फ़ैसला कर लिया कि मेहमानख़ाना बंद कर दिया जाए। बीवी को पता चला तो परेशान हुई कि जब परवरदिगार ने हमें इतनी ज़मीनें दी थीं कि हमारी गेहूँ से ही रोटी बनती थी और सारा साल मेहमान नवाज़ी का सवाब मिलता था। अब यह नेकी का ज़रिया बंद हो गया। लेकिन जब ख़ाविंद ने कह दिया तो बीवी ख़ामोश हो गई। नेक बीवियां फिर बात करने के लिए मौक़ा ढूंढा करती हैं, झगड़े नहीं

करतीं। इसलिए वह मौके की तलाश में रही।

एक दिन मियाँ से कहने लगी कि आज मेरी तबियत कुछ उदास सी है। घर में रह-रह कर कुछ तंग सी आ गई हूँ, क्यों न मैं ज़मीनों पर ज़रा हो आऊँ। उसने कहा बहुत अच्छा। मियाँ उसको ज़मीन पर लेकर चला गया। वहाँ कुँआ, बाग़ और फ़सलें थीं। वह थोड़ी देर चली फिरी और फिर आकर कुँए के किनारे पर बैठ गई और कुँए के अंदर देखना शुरू कर दिया। मियाँ भी इधर-उधर फिरता रहा। काफ़ी देर के बाद कहने लगा, भागवान! चलें देर हो रही है। कहने लगी, बस चलते हैं। फिर कुँए के अंदर दोबारा झांकना शुरू कर दिया। थोड़ी देर के बाद उसने फिर कहा। वह फिर जवाब में कहने लगी, अच्छा अभी चलते हैं और फिर कुँए में देखती रही। आख़िर मियाँ ने कहा, खुदा की बंदी! कुँए में क्या देख रहा हो? कहने लगी कि मैं देख रही हूँ कि ख़ाली डोल पानी में जा रहे हैं और भर-भर कर वापस आ रहे हैं। मगर कुँए का पानी जैसा है वैसा ही है। उसने कहा, खुदा की बंदी! तू अगर सारा दिन और सारी रात बैठी रहेगी तो यह पानी तो ऐसे ही रहेगा, ख़ाली डोल भर-भर कर के आते रहेंगे मगर पानी में कमी नहीं आएगी। जब ख़ाविंद ने यह बात कही उस नेक औरत ने कहा, अच्छा क्या कुँए का पानी ख़त्म नहीं होता? उसने कहा वाक़ई कुँए का पानी ख़त्म नहीं होता। यह सुनकर वह कहने लगी, अल्लाह तआला ने हमारे घर के अंदर भी एक कुँआ जारी किया था। लोग ख़ाली पेट आते थे और पेट का ढोल भरकर जाते थे। तुम्हें क्यों डर हुआ कि अल्लाह तआला तुम्हारे इस कुँए के पानी को कम कर देंगे?

बीवी की बात सुनकर मियाँ के दिल पर चोट पड़ी कि कहने लगा, मैं मेहमानख़ाने को दोबारा जारी करता हूँ। लिहाज़ा वह औरत जब तक ज़िंदा रही इस इलाक़े में वह मेहमानख़ाना उसी तरह जारी रहा।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ

मेरे दोस्तो! इंसान अल्लाह तआला के रास्ते में जितना ख़र्च करेगा अल्लाह तआला उतना ज़्यादा अता करेंगे। इस रिज़्क़ के फ़ैसले होने की रात आज है। इन अवक़ात को ग़नीमत को जान लीजिए। मालूम नहीं कि आइंदा साल हमें शाबान और रमज़ान तक पहुँचना नसीब भी होगा या नहीं होगा। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम दुआ किया करते थे :

﴿اللهم بارك لنا فى رجب وشعبان وبلغنا الى رمضان.﴾

ऐ अल्लाह! हमें रजब और शाबान में बरकत अता फ़रमा और हमें रमज़ान तक पहुँचा।

एक अजीब नुक्ता

दुआ मांगने के बारे में एक नुक्ता समझ लीजिए कि जब दुआ मांगते हैं कि ऐ अल्लाह हमें नेक बना दे। तो इस दुआ के मांगने का एक फ़ायदा तो कम से कम यह है कि कल क़यामत के दिन जब अल्लाह तआला पूछेंगे कि ऐ मेरे बंदे! तू नेक क्यों न बना? तो वह बंदा कह सकेगा कि ऐ मेरे परवरदिगार! मैं आपसे दुआ तो मांगता था। जब आमाल नामे में दुआ मौजूद होगी तो अल्लाह तआला इसी दुआ को उज़्र बनाकर इस बंदे की मग़फ़िरत फ़रमा

देंगे कि हाँ भाई हम से दुआ मांगता तो था कि ऐ अल्लाह! मुझे नेक बना दे। इसलिए सब से पहली दुआ यह मांगिए कि ऐ अल्लाह! मुझे नेक बना दे।

अल्लाह से अल्लाह का इश्क़ मांगिए

आज अल्लाह तआला से दुनिया का माल मांगने वाले, ख़ूबसूरत बीवी मांगने वाले, दुनिया के ओहदे मांगने वाले, सेहत और शोहरत मांगने वाले बहुत ज़्यादा हैं मगर आज अल्लाह तआला से अल्लाह तआला को मांगने वाले बहुत थोड़े हैं। कहीं ऐसे चेहरे नज़र नहीं आते हैं कि अल्लाह तआला के लिए उदास फिर रहे हों। क्या ऐसे नौजवान हैं जो रात के आख़िरी पहर में उठकर 'ला इलाहा इल्लल्लाह' की ज़र्बें लगाते हों। इसलिए आज अल्लाह तआला से उसका इश्क़ मांग लीजिए और ज़बान हाल से कहिए–

तेरे इश्क़ की इंतिहा चाहता हूँ
मेरी सादगी देख क्या चाहता हूँ

इश्के इलाही वह नेमत है कि जब बंदे को मिल जाती है तो फिर अल्लाह तआला उसको दुनिया की सरदारी दे देते हैं।

सलातुत्तस्बीह पढ़ने का तरीक़ा

आज रात सलातुत्तस्बीह पढ़िए। इस नमाज़ में चार रकअतें हैं और हर रकअत में पिचहत्तर बार ﴿سبحان الله والحمد لله ولا اله الا الله والله اكبر﴾ 'सुब्हानअल्लाहि वल् हम्दुलिल्लाहि वला इलाहा इल्लल्लाहु अल्लाहु अकबर' पढ़ा जाता है। हर रक्अत में पिचहत्तर

बार पढ़ने की तर्कीब यह है कि तकबीरे तहरीमा के बाद सना पढ़कर यह तस्बीह पंद्रह बार पढ़ी जाती है। फिर सूरः फ़ातेहा पढ़ी जाती है। फिर कोई सूरत या आयत मिलाई जाती है। फिर रुकू करने से पहले दस बार पढ़ी जाती है। फिर रुकू में जाकर 'सुब्हाना रब्बियल अज़ीम' पढ़ने के बाद दस बार यह तस्बीह पढ़ी जाती है। फिर रुकू से उठकर क़ौमे में दस बार यह तस्बीह पढ़ी जाती है। फिर पहला सज्दा किया जाता है। उस सज्दे में 'सुब्हाना रब्बियल आला' पढ़कर यह तस्बीह दस बार पढ़ी जाती है। फिर जब पहले सज्दे के बाद उठकर बैठते हैं उस वक़्त दस बार यह तस्बीह पढ़ी जाती है। फिर दूसरे सज्दे में 'सुब्हाना रब्बियल आला' पढ़ने के बाद दस बार पढ़ी जाती है। इस तरह एक रक्अत में यह पिचहत्तर बार तस्बीह पढ़ी जाती है और चार रक्अतों में कुल तीन सौ बार हो जाती है। अगर किसी रुक्न में पढ़ना भूल जाएं तो अगले रुक्न में इसकी तादाद पूरी कर ली जाए और गिनने का तरीक़ा यह है कि जैसे हाथ बांधे खड़े हों उसी हालत में उंगलियों के पोरे दबाकर गिनना जाए।

सलातुत्तस्बीह की फ़ज़ीलत

सलातुत्तस्बीह की फ़ज़ीलत का ज़िक्र करते हुए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि इस नमाज़ की इतनी बरकत है कि आदमी को चाहिए कि वह रोज़ाना एक बार पढ़े। अगर रोज़ाना नहीं पढ़ सकता तो हर जुमा के दिन यानी हफ़्ते में एक दिन पढ़ लिया करे। अगर हफ़्ते में एक दफ़ा नहीं पढ़ सकता तो महीने में एक दफ़ा पढ़ लिया करे। अगर महीने में भी एक

बार नहीं पढ़ सकता तो साल में एक बार पढ़ लिया करे और अगर साल में भी एक बार नहीं पढ़ सकता तो कम से कम ज़िंदगी में एक ज़रूर पढ़ ले क्योंकि अल्लाह तआला इसकी बरकत से गुनाहों का माफ़ फ़रमा देते हैं।

क़ुबूलियत दुआ का राज़

मेरे दोस्तो! दुआ दिल का अमल है, ज़बान से तो सिर्फ़ इज़्हार होता है। इसलिए दिल से गिड़गिड़ाकर दुआ मांगेगे तो अल्लाह तआला हमारी दुआओं को ज़रूर क़ुबूल फ़रमाएंगे। एक बुज़ुर्ग जब मजमे में दुआ मांगते तो फ़रमाते कि हमारी दुआ क़ुबूल हो गई। किसी ने कहा, हज़रत! आप कैसे कह सकते हैं कि हमारी दुआ क़ुबूल हो गई। आपने फ़रमाया, इतना मजमा अगर किसी सख़ी के दरवाज़े पर चला जाए और उससे जाकर वह एक चवन्नी का सवाल करे तो बताओ कि वह इतने मजमे को ख़ाली हाथ भेजेगा या चवन्नी देकर भेजेगा? उसने कहा, हज़रत वह ख़ाली तो नहीं भेजेगा, एक चवन्नी तो दे ही देगा। आपने फ़रमाया इस दुनियादार का चवन्नी देना मुश्किल काम है और परवरदिगार के लिए उन सबको माफ़ कर देना आसान काम है।

बख़्शिश का अजीब बहाना

अब एक नुक्ता समझिए कि हर बंदे की हिफ़ाज़त के लिए फ़रिश्ते तय हैं। इर्शाद बारी तआला है :

﴿وان عليكم لحافظين كراما كاتبين يعلمون ما تفعلون.﴾

आमाल नामा लिखने वाले मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं। यहाँ

अदलते बदलते रहते हैं मगर एक बुज़ुर्ग ने बड़ी अजीब बात लिखी है कि जब अल्लाह तआला किसी बंदे से ख़ैर का इरादा कर लेते हैं तो उसके गुनाह लिखने वाले फ़रिश्ते तो नहीं बदलते मगर नेकियाँ लिखने वाले फ़रिश्ते को बदलते रहते हैं। गोया गुनाह लिखने वाला फ़रिश्ता वही रहा और नेकियाँ लिखने वाले फ़रिश्ते बदलते रहे। जब क़यामत के दिन आमाल नामा खुलेगा तो गवाहियाँ देने वाले फ़रिश्ते दो तरह के होंगे। गुनाहों की गवाहियाँ देने वाला फ़रिश्ता एक होगा और नेकियों की गवाही देने वाले फ़रिश्तों की एक जमात होगी। अल्लाह तआला इस बात को बहाना बना लेंगे कि मैं एक की बात मानूं या जमात की बात मानूं। लिहाज़ा जमात की बात क़ुबूल करके अल्लाह तआला अपने बंदों की मग़फ़िरत फ़रमा देंगे।

रोज़े जज़ा का मालिक

अल्लाह तआला ने अपने बारे में यह नहीं फ़रमाया कि मैं क़यामत के दिन का मुन्सिफ़ हूँ बल्कि ﴿مالك يوم الدين﴾ फ़रमाया, मैं रोज़े जज़ा का मालिक हूँ। इसमें हिकमत यह है कि मुंसिफ़ ख़ुद भी उसूल का पाबंद होता है। किसी की हिमायत करना उसके लिए मना होता है लेकिन जब कोई मालिक बन गया तो अब उसके पास इख़्तियार है कि वह जब चाहे, जिसको चाहे बख़्श दे। वह गुनाहों को नेकियों में बदल दे तो परवरदिगार इसका भी हक़ रखता है और वह किसी की नेकियों को ठुकरा देने का हक़ रखता है क्योंकि वह क़यामत के दिन का मालिक है। जब हमारा मामला ﴿مالك يوم الدين﴾ से है तो क्यों न हम आज ही उस मालिक को मना लें ताकि वह हमारे गुनाहों पर क़लम फेर दे और हमारे

गुनाहों को नेकियों से बदल दे।

आज की रात इस हवाले से बड़ी अहम रात है। इसलिए आज ख़ुसूसी दुआएं मांगिए। क्या अजब है कि अल्लाह तआला आज की रात में हमारे लिए ख़ैर के फ़ैसले फ़रमा दे।

❋ ❋ ❋

इंसान की चार बड़ी ग़लतियाँ

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفى اما بعد
فاعوذ بالله من الشيطن الرجيمo بسم الله الرحمن الرحيمo
ومن اراد الاخرة وسعى لها سعيها وهو مومن فاولئك
كان سعيهم مشكوراo سبحان ربك رب العزة عما
يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.

मंज़िल पर पहुँचने की दो शर्तें

ومن اراد الاخرة وسعى لها سعيها وهو مومن
فاولئك كان سعيهم مشكوراo

जो इंसान आख़िरत का इरादा करे और उसके लिए कोशिश करे जैसे कोशिश करने का हक़ होता है तो अल्लाह तआला ऐसे लोगों की कोशिशों को क़ुबूल फ़रमाता है।

और फ़रमाया कि ﴿انى لا اضيع عمل عامل منكم من ذكر او انثى﴾ मर्द हो या औरत, मैं तुम में से किसी के भी किए हुए अमलों को बर्बाद नहीं करता। जब अल्लाह तआला इतने क़दरदान हैं तो इंसान को चाहिए कि अपना रुख़ सीधा कर ले और पक्के इरादे के साथ

क़दम उठाए। किसी भी मंज़िल पर पहुँचने के लिए क्योंकि इन दो चीज़ों का होना शर्त है। रुख़ अगर ठीक न हो तो इंसान कभी मंज़िल पर नहीं पहुँच सकता और अगर रुख़ तो ठीक हो मगर इंसान क़दम ही न उठाए, फिर भी मंज़िल पर नहीं पहुँच सकता।

इंसान और आज़माइश

इंसानियत की तारीख़ पर अगर ग़ौर किया जाए तो यह बात खुली हुई है कि इंसानियत को कई इम्तिहानों और आज़माइशों से गुज़रना पड़ा। अलग-अलग मौक़ों में इंसान को अलग-अलग इम्तिहानों का सामना करना पड़ा। आज जिस दौर में हम ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं इस वक़्त इंसान पर आमतौर पर चार बड़ी ग़लतियाँ कर रहा है जिनकी वजह से आज इंसानियत परेशान नज़र आ रही है।

पहली ग़लती

पहली ग़लती यह है कि इंसान ने आख़िरत को छोड़कर इस दुनिया को अपनी मेहनत का मैदान बना लिया है। उसका ध्यान आख़िरत से हटकर दुनिया की तरफ़ ज़्यादा हो रहा है जबकि दुनिया एक आरज़ी जगह है जहाँ की ख़ुशी और ग़म दोनों वक़्ती हैं। हम दुनिया में आख़िरत की तैयारी के लिए भेजे गए हैं। इसलिए हमें चाहिए कि हम आख़िरत की तैयारी करते रहें। दुनिया की ज़िंदगी तो जैसी कैसी है गुज़र जाएगी—

ऐ शमा तेरी उम्र तबई है एक रात
हँस कर गुज़ार दे या कि रो कर गुज़ार दे

खुशी में गुज़री तो भी गुज़र गई, ग़मी में गुज़री तो भी गुज़र गई, चिकनी-चुपड़ी खाकर गुज़री तो भी गुज़र गई, रुखी-सूखी खाकर गुज़री तो भी गुज़र गई। देखना यह है कि आख़िरत भी बनी है कि नहीं बनी।

यहाँ ऐसे रहें कि वैसे रहे
वहाँ देखना है कि कैसे रहे

यह बात तो समझ आती है कि जो इंसान ग़रीब है, जिसके घर में खाने को रोटी नहीं और फ़ाक़ा की हालत है, वह बेचैनी की हालत में हो वह तो रात दिन दुनिया की फ़िक्र में लगा हुआ है मगर एक अमीर आदमी क्यों इसके पीछे लगा हुआ है। वह भी चौबीस घंटे दुनिया की सोच में लगा रहता है जबकि वह करोड़ों और अरबों रुपए में खेलने वाला है।

छत्तीसवीं मील का ग़म

एक दफ़ा एक साहब ने रात के तीन बजे मुझे फ़ोन किया और कहा, हज़रत! मैं इस वक़्त बहुत परेशान हूँ, रात को सोया भी नहीं हूँ, मैंने सोचा कि आपका तहज्जुद के लिए उठने का वक़्त हो गया, मैं आपसे दुआओं के लिए कहूँगा। मैंने पूछा, भाई! आपकी परेशानी की क्या वजह है? कहने लगा, मेरी पैंतीस मीलें तो हैं लेकिन सुबह एक नई मिल के शेयर खुलने हैं। दुआ करें कि अच्छा खुल जाए। अब बताएं कि पैंतीस मिलें होने के बाद छत्तीसवीं मिल का इस पर ग़म सवार है कि उसकी रात की नींदें उड़ गयीं। वजह क्या है? इसकी वजह यह है कि आख़िरत की बजाए हमने दुनिया को मेहनत का मैदान बना लिया है। जिसकी

वजह से दिलों में सकून नहीं है।

इंसान के लालच की हद

हम जितनी भी दुनिया हासिल करते जाएं हमारे दिलों को कभी तसल्ली नहीं मिलेगी। हदीस पाक में आता है कि किसी को एक वादी सोने की बनी हुई दे दी जाए तो वह तमन्ना करेगा कि एक और वादी मिल जाए। उसके बाद और तमन्ना करेगा। यहाँ तक की पूरी दुनिया सोने की बनी हुई दे दें तो तमन्ना करेगा कि इसका बनाने वाला भी मैं होता। दुनिया के सोने और चाँदी में यह कैफ़ियत नहीं है कि इंसान के पेट को भर सकें। याद रखें कि इंसान का पेट दुनिया कभी नहीं भर सकता, इसे सिर्फ़ क़ब्र की मिट्टी भरेगी।

दूसरी ग़लती

दूसरी ग़लती यह कि इंसान ने रूह के बजाए माद्दे (चीज़ों) को अपनी मेहनत का मैदान बना लिया है। मग़रिब की दुनिया में आज चीज़ों पर इतनी मेहनत हो रही है कि उनको इंसान सुनकर हैरान हो जाता है।

अमरीका में माद्दे (चीज़ों) पर मेहनत करने वालों की कसरत

जब हम इंजीनियरिंग युनिर्वसिटी में पढ़ा करते थे उस वक़्त युनिर्वसिटी में तीन हज़ार तलबा हो गए थे। युनिर्वसिटी में शोर मच गया कि तीन हज़ार तालिब इल्म हो गए हैं जबकि अमरीका

की आम युनिवर्सिटियों में पिचहत्तर हज़ार तालिब इल्म होते हैं। अगर किसी युनिवर्सिटी में पचास हज़ार तालिब इल्म हो जाएं तो उसे बड़ी युनिवर्सिटी नहीं समझा जाता। अब बताइए कि एक-एक युनिवर्सिटी में पिचहत्तर-पिचहत्तर हज़ार तलबा पढ़ रहे हैं और यह सबके सब चीज़ों पर मेहनत करने वाल हैं। क़ुरआन व हदीस पढ़ने वाले नहीं हैं।

ख़ला (आंतरिक्ष) में सब्ज़ियाँ उगाना

वहाँ माद्दी तरक़्क़ी बहुत आम हो रही है। वाशिंगटन में एक अजाएब घर बना हुआ है। वहाँ पर एक नया प्रोजेक्ट शुरू कर रहे हैं कि आइंदा सब्ज़ियाँ ज़मीन पर उगाने के बजाए ख़ला में उगाई जाएं। वे कहते हैं कि ज़मीन कुछ और अच्छे काम के लिए इस्तैमाल करेंगे। वे सब्ज़ियाँ इस आजिज़ ने खुद अपनी आँखों से देखीं। एक कमरे में उन्होंने ख़ला पैदा किया हुआ था और उसमें सब्ज़ियाँ उगाई हुई थीं। उसके लिए मिट्टी की ज़रूरत ही नहीं है। माद्दे पर मेहनत की वजह से उन्होंने मिट्टी के बजाए सिर्फ़ पानी की बुनियाद पर वे सब्ज़ियाँ उगा लीं। अब सब्ज़ियाँ ख़ला में उगा करेंगी। ज़मीन पर आएंगी और उनको इंसान खाया करेंगे।

तरबूज़, टमाटर और खीरे पर मेहनत

आपने लाल रंग का तरबूज़ देखा होगा। अब उन्होंने पीले रंग का भी तरबूज़ बना लिया है। आपने बीज वाले तरबूज़ देखें होंगे, अब बग़ैर बीज का तरबूज़ बन गया है। मैंने पहली बार बग़ैर बीज का तरबूज़ खाया तो हैरान हुआ। पूरे तरबूज़ में आपको शर्तिया तौर पर एक बीज भी नहीं मिल सकता न पक्का न

कच्चा, यहाँ तक कि बीज का निशान ही नहीं मिल सकता। मीठा इतना जितना आपका दिल चाहे। उन्होंने टमाटर एक किलो वज़न का बना लिया है। खीरे चाहे जितने साइज़ के बना लें। चाहें तो छोटे और चाहें तो बड़े।

गमले में बड़ का पेड़

जापान में एक गमले में बड़ का पेड़ उगाया गया। जिसकी उम्र अब एक सौ साल से ज़्यादा हो चुकी है। अब उसको देखें तो ज़ाहिर में उसकी हालत ऐसी ही है जैसे एक सौ साल पुराने पेड़ की होती है मगर उसका साइज़ दो ढाई फिट के क़रीब है। एक सौ साल तक बड़ के पेड़ को गमले में उगाए रखना कोई आसान काम नहीं है। यह माद्दे पर मेहनत करने का नतीजा है।

घास की सफ़ें

हम लोग घास लगाते हैं तो घास लगाते हुए कई दिन लग जाते हैं लेकिन वहाँ घास की सफ़ें मिलती हैं। जैसे आप मस्जिदों की सफ़ें लपेटकर रख देते हैं ऐसे ही उन्होंने घास की सफ़ें बनाकर रखी होती हैं। जितनी जगह पर घास लगाना है आप उसमें सफ़ें बिछाते जाएं और पीछे से उसको पानी की फ़ुवार देते जाएं, घास उगता चला जाएगा। इस तरह आप एक दिन में जितने हिस्से में घास उगाना चाहें तो घास उगा लें।

अमरीका में एक बाग़ का मंज़र

अमरीका में एक बाग़ देखने का मौक़ा मिला। उनका दावा है कि पूरी दुनिया में हर फूल जो कहीं भी उगता है, वह हमने यहाँ

इस बाग़ में उगाया हुआ है। हम पहले तो यह बात सुनकर बहुत हैरान हुए और अक़्ल हर्गिज़ इस बात को मानती नहीं थी कि यह कैसे हो सकता है क्योंकि दुनिया में तो बर्फ़ वाले मुल्क भी हैं और कुछ मुल्कों में इतनी धूप होती है कि गोया आग बरस रही हो। इस तरह ठंडे और गर्म मुल्कों के फूलों को एक ही जगह पर उगाना बहुत मुश्किल काम है। लेकिन वहाँ जाकर अजीब मंज़र देखा कि शीशों के कमरे बने हुए हैं। कुछ कमरों में तो बर्फ़ की सी ठंडक पैदा की हुई थी और बर्फ़ानी मुल्कों के फूल उगे हुए थे और कुछ कमरों में हीटर लगाकर इतनी गर्मी कंट्रोल की हुई थी कि जैसे गर्मियों के मौसम में दोपहर के वक़्त सख़्त धूप होती है। वहाँ पर गर्म मुल्कों के पौधे लगाए हुए थे।

ख़लाई (आंतरिक्षी) जहाज़ों में सफ़र की तैयारी

अब ये कोशिशें हो रही हैं कि हवाई जहाज़ों में सफ़र करने के बजाए ख़लाई जहाज़ों में सफ़र किया जाए। वे कहते हैं कि हवाई जहाज़ में सफ़र करने में देर लगती है। वह देर कैसे लगती है? इसकी तफ़्सील यह है कि अगर यहाँ ज़मीन में इतना गहरा सुराख़ किया जाए कि ज़मीन के दूसरे तरफ़ निकल जाए तो वह जिस जगह निकलेगा उसका नाम कैलिफ़ोर्निया होगा। कैलिफ़ोर्निया अमरीका की एक रियासत का नाम है। हम कैलिफ़ोर्निया के बिल्कुल मुख़ालिफ़ सिम्त में ज़मीन के दूसरे किनारे पर हैं। यहाँ के दिन के बारह बजे होते हैं और वहाँ रात के बारह बजे होते हैं और जब वहाँ दिन के बारह बजे होते हैं तो उस वक़्त यहाँ रात के बारह बजे होते हैं। एक आदमी अगर यहाँ से हवाई जहाज़ पर

बैठे तो वह बाइस घंटों के बाद कैलिफ़ोर्निया में उतर रहा होता है। गोया आधी दुनिया का सफ़र आज इंसान 22 घंटों में कर रहा है। अब वे यह कहते हैं कि इस तरह बहुत ज़्यादा देर लगती है। यह सफ़र इससे भी जल्दी होना चाहिए। इसकी बुनियादी वजह यह है कि हवाई जहाज़ तो हवा में चलता है और हवा में चलते हुए हवाई जहाज़ की स्पीड 500 मील फ़ी घंटा की रफ़्तार से ज़्यादा नहीं बढ़ाई जा सकती क्योंकि हवा होती है और अगर रफ़्तार इससे ज़्यादा बढ़ाई जाए तो उसके ऊपर की जसामत का टैम्प्रेचर बढ़ जाता है। लिहाज़ा अब उसकी स्पीड बढ़ा तो नहीं सकते। इसलिए इसकी जगह अब ख़ला में जहाज़ चलाने का प्रोग्राम बना रहे हैं जहाँ इंसान का वज़न ही नहीं होता। वहाँ आप पचास हज़ार फ़ी घंटा की रफ़्तार से भी चलें तो पता ही नहीं चलेगा क्योंकि वहाँ कशिश सक़ल ही नहीं होती इसलिए कहते हैं कि वक़्त इतना लगना चाहिए कि यहाँ से चलें और ख़ला में पहुँच जाएं और फिर ख़ला में दो मिनट के अंदर दुनिया के जिस कोने में जाना चाहें पहुँच जाएं और वहाँ जाकर फिर नीचे उतर जाएं। इस तरह आने वाले वक़्त में दुनिया के मुल्क दुनिया के मौहल्ले बन जाएंगे। इसलिए आज किताबों में दुनिया को आलमी गाँव Global Village (ग्लोबल विलेज) लिखना शुरू कर दिया गया है।

काएनात पर क़ाबू

इंसान तो ख़ला में ब्लैक होल्स (Black Holes) खोज चुका है जो शिहाब साक़िब को अपना एक ही लुक़्मा बना लेते हैं बल्कि वे कहते हैं कि अब तो हम मरीख़ पर जा रहे हैं। और वाक़ई आप आइंदा कुछ सालों में सुनेंगे कि इंसान ने मरीख़ पर क़दम

टिका लिया है। इसके बाद वे नई से नई दुनियाएं तलाश करने की कोशिश करेंगे क्योंकि अल्लाह तआला खुद तस्ख़ीरे काएनात का सबक़ देते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं कि ﴿سخر لكم﴾ तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र कर दिया गया है ﴿ما في السموات وما في الارض﴾ जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है। ये सूरज, चाँद, सितारे, सुरैय्या और कहकशाएं आसमान और ज़मीन के बीच ही तो हैं। जिनकी तरफ़ इंसान क़दम बढ़ा चुका है लेकिन अफ़सोस कि इंसान ने सिर्फ़ इन्हीं माद्दी चीज़ों को अपनी मेहनत का मैदान बना लिया है और रूहानियत के दर्स को भूल गया है।

तीसरी ग़लती

तीसरी ग़लती यह है कि इंसान ने अपने मन को छोड़कर अपने तन को मेहनत का मैदान बना लिया है। आज हमें जितनी फ़िक्र अपने ज़ाहिर की है उससे ज़्यादा अपने बातिन को संवारने की फ़िक्र होनी चाहिए। हमारे चेहरे पर ज़रा सी कोई चीज़ लगी हुई हो तो हम लोगों में जाना पसंद नहीं करते लेकिन दिल पर मैल चढ़ी हुई होती है और हम इसी हालत में अल्लाह तआला के हुज़ूर पहुँच जाते हैं। हमें परवाह ही नहीं होती कि वह मालिकुल मुल्क हमें क्या कहेगा। जिस चेहरे को दुनिया देखती है उस चेहरे को संवारने के लिए हम दिन में कई दफ़ा आइना देखते हैं और जिस चेहरे को उस मालिकुल मुल्क ने देखना होता है उसको आइने में एक दफ़ा भी नहीं देखते।

मुँह देख लिया आइने में पर दाग़ न देखे सीने में
जी ऐसा लगाया जीने में मरने को मुसलमां भूल गए

हमें दिल के आइने को चमकाने की ज़रूरत है। हदीस पाक में आता है,

ان اللہ لا ینظر الی اجسامکم ولا الی صورکم
ولکن ینظر الی قلوبکم و اعمالکم.

बेशक अल्लाह तआला तुम्हारे जिस्मों के और शक्ल व सूरत को नहीं देखते बल्कि वह तो तुम्हारे दिलों को और तुम्हारे आमाला को देखते हैं। इसलिए वह चेहरा जो दुनिया देखती है उसको दिन में अगर कई बार देखते हैं तो जिस चेहरे को हमारा परवरदिगार देखता है हम उस चेहरे को भी अपने ज़मीर के आइने में थोड़ी देर के लिए देखा करें कि यह इंसानों वाला चेहरा है या हैवानों वाला।

भरे बाज़ार में कुत्ते बिल्ली और सुअर

हज़रत मौलान अहमद अली लाहौरी रह० एक बार बाज़ार से गुज़र रहे थे। आपने देखा कि एक साहिबे नज़र बुज़ुर्ग बाज़ार से गुज़र रहे थे। उनके चेहरे की नूरानियत बताती थी कि वह साहिबे नज़र हैं। आप फ़रमाते हैं कि मैंने उनके क़रीब होकर सलाम किया। उन्होंने मुझे देखते ही पहचान लिया और फ़रमाया, अहमद अली! इंसान कहाँ बसते हैं? कहने लगे मैं घबरा गया कि हज़रत ने कैसा सवाल पूछा है। मैंने कहा, हज़रत! ये सब इंसान ही तो हैं। उन्होंने बड़ी अजनबियत की नज़र लोगों पर डाली और हसरत भरे लहजे में फ़रमाया, ये सब इंसान हैं? उनकी बात में ऐसा असर था कि यह सुनकर मेरे दिल की कैफ़ियत बदल गई और मैंने थोड़ी देर के लिए बाज़ार पर नज़र डाली तो मुझे पूरा बाज़ार

कुत्ते, बिल्ली और सुअरों से भरा हुआ नज़र आया। जब मेरी यह कैफ़ियत ख़त्म हुई तो मैंने देखा कि वह बुज़ुर्ग ग़ायब हो चुके थे।

हज़रत यह वाक़िआ दर्स क़ुरआन में सुनाया करते थे और फ़रमाते थे, लोगो!

मालिक तो सबका एक है मगर मालिक का कोई एक

और वाक़ई

लाखों में न मिलेगा करोड़ों में तू देख

मन का अंधेरा

दुनिया आज तहक़ीक़ात में पड़ी हुई है लेकिन उसे अपने अंदर की तहक़ीक़ का पता नहीं। इसलिए सुबह उठते हैं तो जितनी फ़िक्र अख़बार पढ़ने की होती है उतनी मुराक़बा करने की नहीं होती। दुनिया जहाँ की ख़बरें मालूम करने का शौक़ तो होता है मगर अपने अंदर की दुनिया को देखना पसंद नहीं करते। यही वजह है कि सारी दुनिया को क़ुमक़ुमों से रोशन करने वाला इंसान आज अपने मन में अंधेरा लिए फिरता है। किसी शायर ने क्या ही अच्छी बात कही है–

ढूंढने वाला सितारों की गुज़रगाहों का
अपने अफ़कार की दुनिया में सफ़र कर न सका
जिसने सूरज की शुआओं को गिरफ़्तार किया
ज़िंदगी की शबे तारीक सहर कर न सका

एक और शायर ने कहा–

जिस क़दर तसख़ीर ख़ुरशीद व क़मर होती गई
ज़िंदगी तारीक से तारीक तर होती गई

काएनात माह व अंजुम देखने के शौक़ में
अपनी दुनिया से यह दुनिया बेख़बर होती गई

चौथी ग़लती

चौथी ग़लती यह है कि इंसान ने अपने दिल को छोड़कर अपने अक़्ल को मेहनत का मैदान बना लिया है। साइंस, टैक्नालोजी, कंप्युटर और बाक़ी तमाम इल्म जिनका ताल्लुक़ इंसान के दिमाग़ के साथ है उन सब की जड़ और धुरी अक़्ल है। आज दुनिया में इन इल्मों की तूती बोल रही है। जिससे साफ़ ज़ाहिर होता है कि अक़्ल पर मेहनत हो रही है। लेकिन अक़्ल एक कमज़ोर बुनियाद है। अल्लामा इक़बाल रह० ने कहा–

अक़्ल अय्यार है सौ भेस बना लेती है
इश्क़ बेचारा न वाइज़ न ज़ाहिद न ख़तीब

दिल पर मेहनत करने की वजह

इंसान को अक़्ल के बजाए दिल पर मेहनत करनी चाहिए थी लेकिन अक़्ल दिल के ताबे है, इरादे भी दिल में उठते हैं, तमन्नाएं भी दिल में पैदा होती हैं और अक़्ल उन तमन्नाओं को पूरा करने की तर्कीब बताती है। अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम ने इंसान के दिल को मेहनत का मैदान बनाया।

देखें, मुहब्बत का जज़्बा कहाँ पैदा होता है? दिल में, नफ़रत का कहाँ होती है? दिल में, इंतिक़ाम की आग कहाँ भड़कती है? दिल में। गोया तमन्नाओं का मर्कज़ व धुरी इंसान का दिल होता

है। दिल में जिस तरह के जज़्बात होंगे वैसे ही इंसान के दिमाग़ की कैफ़ियत होगी। दिल में नफ़रत हो तो इंसान का दिमाग़ उसके बारे में ग़लत सोचना शुरू कर देता है और जब दिल में मुहब्बत होती है तो आँखों पर ऐसी पट्टी बंध जाती हे कि इंसान को अपने महबूब में कोई बुराई नज़र नहीं आती। लिहाज़ा इंसान के दिल पर मेहनत करना बहुत ज़रूरी है। क़ुरआन पाक इस पर गवाही देता है, फ़रमाया ﴿فلهم قلوبهم يعقلون بها﴾ ऐ काश! उनके दिल होते जो उन्हें अक़्ल सिखाते, ﴿او اذان يسمعون بها﴾ उनके कान होते जिनसे वे हिदायत की बात सुनते, ﴿فانها لا تعمى الابصار﴾ बेशक आँखें अंधी नहीं होतीं ﴿ولكن تعمى القلوب التى فى الصدور﴾ बल्कि सीनों के अंदर दिल अंधे होते हैं।

कैलिफ़ोर्निया में चोरी

अमरीका की एक रियासत कैलिफ़ोर्निया है। उसका रक़्बा और आबादी सऊदी अरब के रक़्बे और आबादी के बराबर है। इस रियासत के बाशिंदे का जो ज़िंदगी का मैयार है वह भी सऊदी अरब के आदमी की ज़िंदगी के मैयार के बराबर होगा। लेकिन अजीब बात यह है कि कैलिफ़ोर्निया में सिर्फ़ चोरी को रोकने के लिए इतना बजट ख़र्च किया जाता है कि वह पाकिस्तान के बजट से दस गुना ज़्यादा होता है। क्या ऐसी क़ौम को पढ़ी लिखी और तहज़ीब वाली क़ौम कहा जा सकता है? हर्गिज़ नहीं, क्योंकि उनको अल्लाह का डर है नहीं बल्कि वीडियो कैमरों ने रोका हुआ है। उन्हें पता होता है कि पुलिस वाले कैमरे से देख रहे होते हैं। एक दफ़ा चंद मिनट के लिए वहाँ बिजली बंद हुई तो कई अरब

डॉलर का माल उन पढ़े-लिखे लोगों ने चोरी कर लिया। मालूम यह हुआ कि दिल नहीं बदले, सिर्फ़ डंडे के ज़ोर पर क़ाबू किया हुआ है।

इस्लामी तालीमात का हुस्न

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें जो निज़ामे ज़िंदगी दिया है वह कोई और था। वह निज़ामे ज़िंदगी दिल को ऐसा बदल देता है कि महफ़िल हो या तन्हाई, किसी की पड़ी हुई चीज़ को आँख उठाकर देखता ही नहीं। यहाँ तक कि अगर कोई कंबल गिरे तो वह वे पड़े-पड़े मिट्टी बन जाते थे लेकिन मुसलमानों की नज़र उस पर नहीं पड़ती थी क्योंकि वे समझते थे कि इस वक़्त अगर चाहे दुनिया कोई आदमी नहीं देख रहा है मगर परवरदिगार तो देख रहा है। इस्लामी तालीमात का यही हुस्न है।

फ़िक्र की घड़ी

मेरे दोस्तो! आप ऐसे लोग बहुत थोड़े देखेंगे जो इसलिए हैरान व परेशान होंगे कि आज हमारे दिल की हालत अच्छी नहीं है, हमारे दिल में ग़लत ख़्याल क्यों आते हैं, हमारे दिल में गुनाहों के जज़्बे क्यों पैदा होते हैं, हमारे दिलों में हक़ीक़ी ईमान का जो मज़ा आना चाहिए था वह क्यों नहीं आ रहा है। लिहाज़ा अपने ध्यान का रुख़ ठीक करने की ज़रूरत है। जब वह दिन आ गया कि हमने दुनिया के बजाए आख़िरत पर मेहनत करना शुरू कर दी, माद्दे के बजाए रूहानियत पर मेहनत शुरू कर दी, तन के बजाए

अपने मन पर मेहनत करना शुरू कर दी और अक़्ल के बजाए दिल पर मेहनत करना शुरू कर दी तो फिर हमारे ध्यान का रुख़ ठीक हो जाएगा और जो क़दम भी उठेगा वह मंज़िल के क़रीब से क़रीब कर देगा।

दुआ है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें आख़िरत का फ़िक्र नसीब फ़रमाए और जब दुनिया से जाने लगें तो आवाज़ आ रही हो :

يا ايتها النفس المطمئنة ٥ ارجعي الى ربك راضية
مرضية ٥ فادخلي في عبدي وادخلي جنتي ٥ آمين ثم
آمين. واخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمين.